राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक
पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि
[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य
भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पूना; गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(ग्रानरेरि डायरेक्टर)—भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ४८

मुंहता नैणसी विरचित

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग १

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

मुंहता नैणसी विरचित

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग १

सम्पादक

बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१६
प्रथमावृत्ति ७५०

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८१

खिस्ताब्द १९६०
मूल्य ८ ५० न. पै

मुद्रक—पृ. १ से ५६ राजस्थान टाइम्स प्रेस, अजमेर; पृ. ५७ से १०४ जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर और शेष सामग्री साधना प्रेस, जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१ प्रमाणमंजरी–तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.०० । २. यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५ । ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५ । ४. तर्कसंग्रह–प० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.०० । ५. कारकसम्बन्धोद्योत–प० रभसनन्दि, मूल्य १.७५ । ६. वृत्तिदीपिका–प० मौनिकृष्ण मूल्य २.०० । ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.०० । ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९. शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २.७५ । १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–प० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५० । ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५ । १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५ । १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५ । १४. उक्तिरत्नाकर–प० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५ । १५. दुर्गापुष्पाञ्जलि–प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५ । १६ कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५० । १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५० । १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.०० । १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.०० ।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५ । २. क्यामखारासा–कवि जान, मूल्य ४.७५ । ३. लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३.७५ । ४ वाकीदासरी ख्यात–महाकवि वाकीदास, मूल्य ५.५० । ५. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, मूल्य २.२५ । ६ जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५ । ७ कवीन्द्रकल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २.०० । ८. भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५ । ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५० । १०. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न पै ।

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित । २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा । ३ करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर । ४ बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–प० कृष्णमिश्र । ६. काव्यप्रकाशसंकेत–भट्ट सोमेश्वर । ७. वसन्तविलास फागु । ८ नृत्यरत्नकोश भाग २ । ९. नन्दोपाख्यान । १०. वस्तुरत्नकोश । ११ चान्द्रव्याकरण । १२ स्वयम्भूछंद–स्वयंभू कवि । १३. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ । १४ मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह । १५ कविकौस्तुभ–प० रघुनाथ मनोहर । १६ दशकण्ठवधम–प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी । १७. भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा. पद्मनाभ । १८ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध ।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुहता नैणसी । २ गोरावादल पदमिणी चउपई–कवि हेमरतन । ३. वंशावली–कवि मोतीराम । ४ सुजान सवत–कवि उदयराम । ५ राजस्थानी दूहा संग्रह । ६ वीरवाण–ढाढी बादर । ७. रघुवरजसप्रकाश–किसनाजी आढा । ८ राठोडारी वंशावली । ९. राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रंथ सूची । १० राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २ । १३ देवजी बगडावत और प्रतापसिंह वार्ता । १४ पुरोहित बगसीराम और ग्रंथ वार्ता । १५ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १ ।

इन ग्रंथोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है ।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थानी भाषामें लिखित गद्य-साहित्यके अन्तर्गत अनेक ख्यातें प्राप्त होती हैं, जिनमें बांकीदासरी ख्यात, मुंहता नैणसीरी ख्यात, राठोड़ांरी ख्यात, दयालदासरी ख्यात, सीसोदियांरी ख्यात, कछवाहांरी ख्यात, जोधपुररी ख्यात, महाराजा मानसिंघजीरी ख्यात और चहुवांण, सोनगरांरी ख्यात विशेष प्रसिद्ध हैं। इन ख्यातोंका साहित्यिक और ऐतिहासिक दोनों ही प्रकारसे विशेष महत्व है, किन्तु इनमेंसे अधिकांश ख्यातें अब तक अप्रकाशित हैं तथा साहित्य-क्षेत्रमें थोड़े ही व्यक्तियोंको इनके विषयमें परिचय प्राप्त है।

प्रस्तुत ख्यात-साहित्यका निर्माण मुख्यतः हमारे पूर्वजोंमें जागृत हुए ऐतिहासिक गौरवाभिमानके कारण हुआ है और इस कार्यके लिये हमारे ख्यात-लेखकोंको विभिन्न-विषयक सामग्री खोजने और उसको विधिवत् सङ्कलित करनेमें पर्याप्त परिश्रम करना पड़ा है। हमें भारतीय साहित्यिक और ऐतिहासिक इतिवृत्त लिखनेमें ऐसी ख्यातोंसे विशेष सहायता मिल सकती है किन्तु अद्यावधि इनका उपयोग नाम मात्रके लिये ही हुआ है। इसका एक कारण इन ख्यातोंका अप्रकाशित रहना भी है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके अन्तर्गत "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाका" प्रकाशन प्रारम्भ करनेके साथ ही हमने निश्चय किया था कि महत्वपूर्ण ख्यातें शीघ्र ही सुसम्पादित रूपमें प्रकाशित करदी जावें। तदनुसार "बांकीदासरी ख्यात" और "मुहता नैणसीरी ख्यात" प्रेसमें दी गईं। "बांकीदासरी ख्यात" तो हम पहले ही साहित्य-जगत्में प्रस्तुत कर चुके हैं और चिर प्रतिक्षित "नैणसीरी ख्यात" प्रथम भाग को अब प्रकाशित करनेका अवसर प्राप्त हो रहा है।

"मुहता नैणसीरी ख्यात"का हिन्दी अनुवाद कुछ वर्षों पहले काशीकी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हुआ है किन्तु यह अनुवाद अविकल हो ऐसा ज्ञात नहीं होता। इस अनुवादमें अनेक घटनाएँ विपर्यस्त रूपमें लिखी गई हैं जिससे ग्रन्थकी वास्तविकताका अपेक्षित परिचय नहीं मिल पाता। "नैणसीरी ख्यात"की राजस्थानी भाषा-शैली हमारे साहित्यमें विशेष महत्वपूर्ण है और गद्यकी यह एक परिमार्जित एवं प्रौढ़ कृति है। किसी भी साहित्यिक कृतिका रसास्वाद मूल पाठके बिना नहीं प्राप्त किया जा

मकता, इसलिये हम प्राचीन कृतियोंके सम्पादन एवं प्रकाशनमे मूल रचनाके पाठको प्रधानता देते है।

"मुहता नैणसीरी ख्यात"के प्रकाशनमे हमे कई कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है। कार्य-विस्तारका अनुमान करते हुए हमने पहले राजस्थान टाइम्स प्रेस, अजमेरमे इसका मुद्रण प्रारम्भ करवाया किन्तु उक्त प्रेसके बन्द हो जानेसे यह कार्य जयपुरमे जयपुरप्रिन्टर्सको और तत्पश्चात् प्रतिष्ठानके नव-निर्मित भवनमे जोधपुर स्थानान्तरित हो जाने पर साधना प्रेस, जोधपुरको दिया गया। हमने इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य श्री बदरीप्रसादजी साकरियाको तत्परतापूर्वक एवं समय पर सम्पादित कर देनेके उनके आग्रह और श्री अगरचन्दजी नाहटाके अनुरोधसे सौपा था किन्तु कतिपय अन्तर-बाह्य कारणोसे अपेक्षित समयमे कार्य पूर्ण नही हो सका। ग्रन्थके पूर्ण होनेमे अब भी विलम्बका होना अनुभव करते हुए आज हम यह प्रथम भाग प्रकाशित कर रहे है। ख्यातका लगभग इतना ही अवशिष्ट अंश, ख्यात-संबधी विशेष ज्ञातव्य और ख्यातगत विशेष नामोंकी अनुक्रमणिका आदि दूसरे भागमे प्रकाशित किये जावेंगे।

हम इस ख्यातके शेप भागको भी शीघ्र ही प्रकाशित करनेके लिए प्रयत्नशील है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।
माघ शुक्ला १४, सं० २०१६ विक्रमीय

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

RAJASTHANA PURATANA GRANTHAMALA

General Editor - Acharya Jinavijaya Muni, Puratattvacharya
[Honorary Director, Rajasthan Prachyavidya Pratisthana, Jodhpur]

MUNHATA NAINSI-RI KHYAT

[Rajasthani]

First Part

Published by
The Rajasthana Prachyavidya Pratisthana
[The Rajasthan Oriental Research Institute]
Government of Rajasthan
JODHPUR

V.S 2016] *[1960 A D.*

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ-संख्या

॥ ॐ शिव ॥

मुंहता नैणसीरी ख्यात

॥ अथ सीसोदीयांरी ख्यात[1] लिख्यते[2] ॥

॥ दं० ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ आदि सीसोदीया[3] गैहलोत[4] कहिजै । एक वात यू सुणी । इणांरी ठाकुराई पेहली दिखणनू[5] नासिक त्रंबक हुती । सु इणांरै पूर्वजरै सूर्यरो उपासन हुतो । माँताधेन[6] करता । तद सूर्य प्रतक्ष आय हाजर हूतो । तिणसू[7] को[8] जुत्र जीप[9] सकतो नही । सु राजा घणी धरतीरो धणी हुवो । सु राजारै पुत्र नही । तरै[10] सूर्यजीसू पुत्ररी वीनती की । तरै सूर्य कह्यो–"आंबाइ देवी[11] मेवाड़ ईडररै गड़ासंध[12] छै । उठारी[13] जात[14] बोलो । इछना[15] करो । आधान[16] रहसी, तठा पछै[17] जात करज्यौ ।" पछै जात इंछी । रांणीरै आधान रह्यौ । पछै राजा राणी आवाइरी जातनू[18] चालीया । सु रांणी चालता राजारो मत्र आवाहन रह्यो । तरै ग्रासीयां[19] कांठळिया[20] दाव लाधौ[21], सूर्यरो उपासन मिटियो । तरै सिगळा[22] भेळा हुय राजा ऊपर आया । राजा वाज मूओ[23] । गढ वासलो[24] भोमियां लीयो । राणी आँबायरी जात कर नै गांव नागदहै[25] वाभणांरै[26] आंण

---

1 ख्यात–प्राचीन इतिहास-वार्ता, किसी किसी पोथीमें इसके बाद 'वार्ता लिख्यते' ऐसा वाक्य भी लिखा मिलता है । 2 लिखी जाती है । 3 सीसोदा गांवमें रहनेके कारण सीसोदिया कहलाये । उदंपुरके महाराणा सीसोदिया हैं । 4 सीसोदिया पहले गहलोत कहलाते थे, गुहिलके वंशज होनेसे गहलोत कहलाये । 5 दक्षिणकी ओर । 6 मान्यता और ध्यान । 7 उससे । 8 कोई । 9 जीत नहीं सकता था । 10 तब । 11 गुजरातकी एक प्रसिद्ध देवी । 12 समीप । 13 वहांकी । 14 पुत्र आदिकी प्राप्तिके निमित्त किसी देवी देवताकी यह मान्यता करना कि पुत्रकी प्राप्ति हो, हो जाने पर उसको साथमें लेकर दिन निर्धारित कर निश्चित परिमाणमें प्रसादी चढ़ानेको, देवी देवताकी यात्राको जाना । 15 मनवांछितकी प्राप्तिके लिये दृढ़ विश्वाससे याचना करना । 16 गर्भ । 17 जिसके बाद । 18 को । 19, 20, 21 भाग लेनेवाले और प्रति समय सेवामें रहनेवाले सरदारोंको अवसर मिला । 22 समस्त । 23 लड़कर मर गया । 24 गढ़का नाम । 25 एकलिंगजीके समीप एक गांव । अब खंडहर मात्र है । 26 ब्राह्मण ।

डेरो कीयो[1]। वांसां[2] घरांसू सुणावणी[3] आई । पाघ[4] आई । रांणी बळणनुं तयार हुई । चह[5] खिड़क तयारी करी । तिण वेळा[6] नागदहा गांवरै वांभणां राणीनु कह्यो – "पेट आधांन थकां[7] बलियां दोखण[8] घणो छै । थांरै दिन पिण पूरा हुआ छै[9] ।" दिन १५ तथा २० रांणी छूटी[10] । बेटो जायो । तठा पछै रांणी १५ तथा २० वळे[11] रहि नै माथो धोयो[12] । पछै चह तयार हुई । रांणी बळणनू चाली छै । डावड़ो[13] रांणीरी गोद मांहै थो । सु उण ठोड़ कोटेस्वर महादेव छै । तठै वांभण विजयदत पुत्र अर्थ सेवा करै छै । तिणनू[14] से[15] रांणी तेड़ नै[16] पटोला[17] सू वीटनै[18] बेटो दीयो । वांभण विजैदत्त जांणीयो क्युंइ[19] माल छै । सु विजैदत्त उरो लीनो[20] । तितरै[21] डावडो रोयो तरै वांभण कयो – "ओ रजपूतरो बेटो[22] हू कियो[23] करू ? सवारै[24] ओ[25] सिकार रमै । जिनावर मारै । मोटो हुवै । तरै वैर-वाद[26] करै दुनीसू[27] । हूं अधर्म भेळो होऊ । म्हारो कर्म-धर्म जाय । मोसौ[28] ओ दान लीयो नही जाय ।" तरै रांणी विजैदत वांभणनू कह्यो – "थे वात कही सु सही, पिण[29] जो हूं सतसू[30] बळू छू, तो इण डावडारी ओलादरा[31] राजा हुसी[32], तिके[33] दस पीढी थाहरै[34] कुळरै आचार हालसी[35] । थांनू[36] घणो सुख देसी[37] ।" तरै वांभणनू डावडो दीयो । सु वाभण विजैदत्त लीयो । कितरोइक[38] ऊपर गहणो, क्युइक[39] रोकड दीयो । तद वांभण डावडानू ले घर गयो । राणी बळी । तठा पछै विजैदतरै उण डावडारी ओलाद हुई सु पीढी १० वाभणारी क्रिया चालीया । नागदहा वाभण कहांणां ।

---

1 आ कर डेरा डाला । 2 पीछेमे । 3 मृत्यु-समाचार । 4 पगड़ी । 5 चिता । 6 समय । 7 गर्भ होते हुए । 8 दूषण पाप । 9 गर्भके नौ मास पूरे होने आये हैं । 10 रानीको प्रसव हुआ । 11 और । 12 सूतिका स्नान किया । 13 पुत्र । 14 उसको । 15 उस । 16 बुलाकर । 17 वस्त्र । 18 लपेटकर । 19 कुछ माल । 20 ले लिया । 21 इतनेमें । 22 में । 23 क्या । 24 कल, भविष्यमें । 25 यह । 26 शत्रुता और लड़ाई । 27 दुनियासे । 28 मेरेसे । 29 परन्तु । 30 पातिव्रतकी सत्यतासे । 31 सतानके । 32 होंगे । 33 वे । 34 तेरे । 35 अनुकरण करेंगे । 36 तुमको । 37 देंगे । 38 कितनाक । 39 कुछ ।

पीढीयांरी विगत –

१. बिजैदत	७. भोगादित
२. सीमदत सूर्यवंसी गैहलोत	८. देवादित
३. सिलादत	९. आसादित
४. ग्रहादित	१०. भोजादित
५. केसवादित	११. गुहादित
६. नागादित	१२. रावळ बापो

वात[1] – रावळ बापो गुहादितरो । तिण[2] हारीत-रिखरी[3] सेवा करी । पछै हारीत-रिखीश्वर प्रसन हुय, बापानूं मेवाड़रो राज दीयो, नैं[4] हारीत-रिख बीमान[5] बैस[6] चालतो थो । सु बापानूं तेडियो[7] थो, सु मोडेरो[8] आयो । सु पछै बापानूं रथ बैसता[9] बाह झाली[10] । बापारी देह हाथ दस वधी । पछै तबोळ[11] हारीत-रिख बापानूं आपरो[12] देह अमर करणनूं[13] देतो हुतो[14], सु मुहडा मांहे पड़ न सकियो । बापारै पग ऊपरै पड़ियो । तरै हारीत कह्यो–"मुंहडै मांहि पडियो हूत[15] तो देह अमर हूत[16] । तोही[17] पग ऊपर पड़ियो छै । थाहरै पगसूं[18] मेवाडरो राज नही जाय ।" नै बापानूं ऋखीश्वर कह्यो–"फलांणी[19] ठोड़ छपन कोड़[20] सोनइया[21] छै । तिके उठायी[22] ले नै सामान कर । नै चीतोड मोरी[23] धणी छै, सु मार नै गढ उरो लेजो[24] ।" सु बापै ओ माल उरो ले[25], सामान कर नै गढ लीयो ।

कवित रावळ बापा रो –

राव बुहारै बार, राव घर पाणी आणै,
राव करै माजणो, राव मोजडिया ताणै ।

---

1 वर्णन, कथा । 2 उसने । 3 हारीत ऋषिकी । 4 और । 5 विमान । 6 बैठकर । 7 बुलाया । 8 देरीसे । 9 बैठते हुए । 10 पकड़ी । 11 तांबूल, पान । 12 उसका । 13 करनेको । 14 था । 15 होता । 16 हो जाती । 17 तो भी । 18 तेरे वशजोंमे । 19 अमुक । 20 करोड़ । 21 सुवर्ण मुद्राएं । 22 वहांसे । 23 मौर्यवंशका । 24 ले लेना । 25 ले कर ।

कवित्तका अर्थ – रावल बापाके कई राजा तो द्वार पर झाड़ू लगाते हैं, कई पानी भर कर लाते हैं, कई बरतन रगडते हैं, कई जूतियां पहनाते हैं ।

· राव पान ग्रह रहै, राव पोहरै निन जागै,
राव तेग* गहि पुळै, राव लुळपावै लागै ।
गज चड रथ चड तुरिय चड, राव न को माडत रंण,
चिनवै च्यार चक्कह तणा, मह राव बापा सरण ॥ १ ॥

रावळ खूमांण बापारो[1] – तिणरो[2] कवित –

जिनै लक्ख पायक्क, लक्ख मत्ता तोखारह,
सहस एक छत्रपती, हुये गहमह दरबारह ।
खड़े सेन रारहंड, धूण लीधी धर धारह,
परमारा दळ पट्ट, दीध प्रसणा पाहारह ।
पचास लक्ख मालवपती, मेवाड़े मोह गांजियो,
खूमांण राव बापै-तणै, सिद्धराव भड भांजियो ॥ २ ॥

कवित रावळ अलु - मेंहदरारो[3] –

तीन लक्ख तोखार, हसत सो तीन तयासी,
पंच लक्ख पायक्क, करै ओळग मेवासी ।

---

1 बापाका पुत्र रावल खूमाण । 2 उसके सम्बन्धका । 3 अल्लट महेन्द्र ।

कई हाथमें पान लिये खड़े रहते हैं, कई रातमें जग कर पहरा देते हैं, कई रावलका शस्त्र पकड़ कर उसके आगे - आगे चलते हैं, कई झुककर उसके चरणोंका स्पर्श करते हैं । और हाथी, घोड़े और रथों पर चढ़नेवाले कोई भी राजा रावल बापासे युद्ध रचनेका तो साहस ही नहीं करते । अपितु चारों दिशाओंके समस्त राजा लोग रावल बापाकी शरणमें रहनेकी इच्छा करते हैं ॥ १ ॥

कवित्तका अर्थ – रावल खूमाणकी सेनामें दो लाख पादातिक और एक लाख पुष्ट घोड़े हैं । एक सहस्र राजा लोग जिसके दरबारकी शोभाको बढ़ाते हैं । उसने अपनी सेनाके साथ तीव्र गतिसे चढ़ाई करके और तलवारसे युद्ध करके पृथ्वीको जीता । परमारोंके दलका नाश कर शत्रुओं पर प्रहार किया । मालवपतिके पास पचास लाख सेना थी उस सबका नाश कर दिया । ऐसे रावल बापाके पुत्र खूमाणने वीर सिद्धरावको भी मार भगाया ॥ २ ॥

रावल अल्लूकी सेनामें तीन लाख घोड़े, तीन सौ तेयासी हाथी और पांच लाख पादातिक हैं और मेवासी लोग जिसकी सेवामें रह कर प्रशंसा करते हैं ।

* यहां 'तेग' अशुद्ध प्रयोग होता है, क्योंकि कोई भी राजा अपना शस्त्र किसीको नहीं सौंपता । इसके स्थान 'तुरंग' शब्द उपयुक्त है और यही संगत भी है । 'तुरंग'में एक मात्रा बढ़ती है अतः 'तुरंग' किम्वा 'तुरग' होना चाहिये ।

आउर नयर नरेस, माल माडव उग्रावै,
घर बैठां डर हूंत, भेट गुज्जरह पठावै ।
आठ ही पोहर आलू भए, तयण नींद कोय न करै,
गहलोत गजां दळ चालता, अवर राय ओद्रक मरै ॥ ३ ॥

रावळ आलूरी ठाकुराई गढ आहोर हुई । तिका[1] आहोर उदैपुरसू कोस १० झांलांवळी सादड़ी कनै[2] छै । पीढचांरी विगत –

रावळ आलू	रावळ करनादित
,, सीहो	,, भादु
,, सकतकुमार	,, गात्रड
,, सालीवाहन	,, हंस
,, नरवाहन	,, जोगराज
,, अंबापसाव[3]	,, वैरड
,, कीरतब्रह्म	,, वैरसी
,, नरदेव	,, श्रीपुंज
,, उत्तम	,, करण

रावळ करण श्रीपुंजरो, तिणरै[4] दोय बेटा हुवा – राहप, तिकणनू[5] रांणाई[6] दी । चीतोड पाट[7] । माहपनू रावळाई[8] दी । वागड़ पाट । रावळ वैरडरो कवित – वैरड जोगराजरो –

गूजरवै नह नमै, नमै नह डाहल रायह,
डाहालू श्रव चिंत, लीध संभर वैचायह ।

1 वह । 2 पास । 3 अंबाप्रसाद । 4 उसके । 5 जिसको । 6, 7. चित्तोड़की गद्दी और 'राना'की उपाधि दी गई । 8 वागड़को गद्दी और रावलको पदवी दी गई ।

आहोर नगरका नरेश रावल आलू मांडवपतिसे करके रूपमें द्रव्य प्राप्त करता है और गुर्जरपति तो डरके मारे घर बैठे हो भेंट भेज देता है । आलूके भयसे आठों पहर शत्रु नींद नहीं ले सकते । गहलोतके हाथियोंके दलके चलनेसे अन्य राजा लोग भयसे घबरा कर ही मर जाते हैं ॥ ३ ॥

कवित्तका अर्थ – रावल वैरड़ने न तो गुजरात और न डाहलके राजाको अपना सिर झुकाया । परन्तु उल्टा डाहालुओंसे सांभरका वेंट लेकर उन सभीको बड़ी चिन्तामें डाल दिया ।

वार मत्त पंचाम, गुडै गैमर गळ गजै,
लम्ब एक तोखार, ठिल्ल अरीयण घड भंजै ।
पानाल सेस पडिहाइयो, दुर देस राव डंडवै,
वाकडो राव वैरड वसुह, मुणम हेक मेवाडवै ॥ ४ ॥

वात राणा राहपरी ।

(३२) रांणो राहप
( ) ,, नरपति[1]
(३३) ,, दिनकर
(३४) ,, जसक
(३५) ,, नागपाळ

दूहो, रांणा नागपाळरो —

नागपाळ रायाँ-सु गुर, जिण भंजै खुरसांण ।
चक्रवत सोह चेला किया, हेम सेत लग आंण ॥ १ ॥

(३६) रांणो पुनपाळ
(३७) ,, (पेथड़) प्रथम[2]
(३८) ,, भुणंगसी[3]
(३९) ,, जैतसी
(४०) ,, गिड़[4]मंडलीक लखमसी
(४१) ,, अरसी
(४२) ,, हमीर
(४३) ,, खेतो
(४४) ,, लाखो
(४५) रांणो मोकल
(४६) ,, कूंभो
(४७) ,, रायमल
(४८) ,, सांगो
(४९) ,, उदयसिंघ
(५०) ,, प्रताप
(५१) ,, अमरसिंघ
(५२) ,, करन
(५३) ,, जगतसिंघ

(५४) रांणो राजसिंघ

॥ इति ॥

---

1 नरपतिका नाम दूसरी ख्यातोंमें नहीं है। मेवाड़के इतिहासमें और हमारी इस प्रतिमें है।

2 हमारी प्रतिमें 'रांणो प्रथम' लिखा है किन्तु कइयोंमें 'पेथड़' और पृथीप ।

3 भीमसिंह अथवा भुवनसिंह । 4 सिंहोंके बीचमें 'शूअर'के समान निर्भय। लक्ष्मणसिंह, रावल रत्नसिंहकी सहायतामें अलाउद्दीन खिलजीसे लड़ा और रत्नसिंहके काम आ जाने पर स्वयं चित्तोड़के राज्यके लिये अपने कई बेटों सहित वीरगतिको प्राप्त हुआ।

वैरड़ने ५७ बार कई सजे हुए और पाखर किये हुए हाथियों और एक लाख घोड़ोंको शत्रुओं पर डालकर उनका नाश किया। इसकी सेनाके भारसे पातालमें शेष नाग घबराने लगा। वैरड़ने दूर-दूरके देशोंके राजाओंको दंड दिया। मनुष्योंमें मेवाड़की भूमि पर एक वैरड़ ही ऐसा रणबंका राजा उत्पन्न हुआ।

दूहेका अर्थ – राजाओंमें गुरु रूप नागपालने कई बादशाहोंको हराया और समस्त चक्रवर्ती राजाओंको अपना शिष्य बनाया एवं हिमालयसे सेतुबंध तक अपनी आज्ञा मनाई।

वार्ता दूसरी –

रावळ बापै हारीत-रिखरी सेवा करी[1]। मेवाड़रो राज लीयो। तिणरी साखरा[2] कवित, रावळ बापारा –

आदि मूळ उतपति, ब्रह्म पिण खत्री जाणां,
आणंदपुर सिणगार, नयर आहोर वखांणां।
दळ समूह राव राण, मिळै मडळीक महाभड,
मिळै सबै भूपती, गरू गहलोत नरेसर।
एकल्ल मल्ल ध्रू ज्युं अचळ, वहै राज बापै कीयो,
एकलिंगदेव आहूठमा राजपाट इण पर दीयो ॥ १ ॥

छपन कोड सोव्रन, रिखी हारीत समर्प्पै,
सदेही श्रग गयौ, राय-राया उथप्पै।
अतरीख ले अमृत, सिद्ध पिण आघो कीन्हो,
भयो हाथ दस देह, सस्त्र वज्र मई सु दीन्हौ।
आवध्र अग लगै नहीं, आदि देव इम वर दीयौ,
गुहादित-नर्णं भैरव भणै, मेदपाट इण पर लीयो ॥ २ ॥

हर हारीत पसाय, सात-वीसा वर तरणी,
मगळवार अनेक, चैत वद पचम परणी।

---

1 की। 2 साक्षी रूप।

कवित्तका अर्थ – बापा रावलके वंशकी उत्पत्तिका मूल कारण ब्राह्मण हैं, जो अब क्षत्री जाने जाते हैं। वे आनंदपुरके शृंगार हैं। वह नगर आहोर नामसे प्रसिद्ध है। कई बड़े २ राजा, राना, मंडलीक और महाभट भूपति मिले, जिनमें गहलोत नरेश्वर रावल बापा सबका गुरु माना जाता है। एकल-मल्ल रावल बापाको ध्रुवके समान अचल राज्य करने वाला कहा जाता है। एकलिंग महादेवने प्रसन्न होकर रावल बापाको इस प्रकार किसीके द्वारा नहीं जीता जाने वाला राज्यपाट दिया ॥ १ ॥

हारीत ऋषिने बापाको छप्पन करोड सुवर्ण-मुद्राएँ दीं। कई राजाओंको उथल कर वह सदेह स्वर्गको गया। सिद्ध हारीत ऋषिने उसे अंतरिक्षमें उठाकर अमृत द्वारा उसका सन्मान किया, जिससे उसकी देह दस हाथ हो गई और उसे वज्रके समान शस्त्र प्रदान किया। आदि देव महादेवके द्वारा अमृत दिये जानेके कारण बापाके शरीरमें कोई शस्त्र नहीं लग सकता था। कवि भैरव कहता है कि गुहादित्यके पुत्र बापाको इस प्रकार मेवाड़का राज्य दिया ॥ २ ॥

महादेव और हारीत ऋषिकी कृपासे रावल बापाने चैत्र कृ० ५ मंगलवारको एक साथ १४० युवतियोंसे विवाह किया।

चित्रकोट कैलास, आप वस परगह कीधौ,
मोरी दळ मारेव, राज रायां गुर लीधौ ।
बारह लख बोहतर सहस, हय गय दळ पैदल वण,
नित मूडो मीठो ऊपड़ै, भूजाई बापा तणै ॥ ३ ॥
खडग धार पाहार, नित भैंयसा दुय भंजै,
करै आहार छ वार, ताम भोजन मन रंजै ।
पट्टोळो पैंतीस हाथ, पेहरण पहरीजै,
पिछोड़ो सोळै हाथ, तेण तन नहीं ढकीजै ।
पय तोडर तोल पचास मण, खडग बतीसां मण तणौ,
मुण बापा सेन मम्मं चलै, जिण भय कांपै गज्जणौ ॥ ४ ॥
जाळंधर कसमीर, सिंध सोरठ खुरसाणी,
ओडीसा कनवज्ज, नगरथट्टा मुलतांणी ।
कुकण नै केदार, दीप सिंघळ मालेरी,
द्राविड मावड़ देस, आंण तिलँगाणह फेरी ।
उतर दिखण पूरब पछिम, कोई पांण न दख्खवै,
सावन एक एकाणवै, बापा समो न चक्कवै ॥ ५ ॥

अथ सीसोदियारा भेद –

सीसोदो गांव उदैपुरसूं तठै घणा दिन रह्या तिण वास्ते सीसोदिया गाव लारै कहावै छै । नागदहा कहावै छै सु घणा दिन नागदहै गाव वसीया तिण कारण ।

एक वात यूं सुणी छै – आगै अै बांभण हुता । राजा परीखतरै वैर जनमेजै नाग होमाया, तिकै इणां[1] होमिया । नागदहो गाँव एकलिंगसूं कोस १ छै । सीसोदीयांरो विरद 'आहूठमा-नरेस' कहावै छै । तिणरो भेद आढै महेस समत १७०६ में कह्यो । एक तो आहूठ हाथ - माग आदमी - तिण सारारो धणी । एक आहूठ कोड़

[1] इन्होंने ।

राजाओंके गुरु रावल बापाने मोर्य वंशके समूहको मार उनका राज्य अपने अधीनमें किया और कैलाशके समान चित्रकूट (चित्तोड़) पर्वत पर परिग्रह सहित अपना वास-स्थान बनाया । बापाने हाथी, घोड़े और पैदल, सब मिलाकर बारह लाख बहत्तर हजारकी अपनी सेना बनाई । बापाकी रसोईमें नित्य एक मूड़ा परिमाण नमक ही उठ जाता था ॥ ३ ॥

प्रथी, तिण सारैरा धणी आहूठमा नरेस कहावै । कैलपुरा कहावै सु के दिन कैलवै वसीया । आहाड़ा कहावै सु के दिन आहाड़ वसीया । वात राँणा चीतोड़रा धणीयांरी –

एक तो उपरलै[1] पांनै ४९७ लिखी छै नै वात एक पोकरणै वांभण[2] कवीसर जसवंतरो भाई जोसी मनोहरदास इण भांत मंडाई[3] छै –

इणरो विजैपांन गोत्र । ब्रह्मारो वेटो विजेपांन हुवो । तिणरो परवार –

अै[4] घणां दिन वांभण थका[5] वडा रिखीश्वर[6] हुवा । वड़ी तपसीया करी । इतरी पीढी ताई श्रै सर्मा[7] कहाणां । पीढीयांरी विगत –

१. ब्रह्मा	२. विजैपांन	३. देवसर्मा	४. अग्नसर्मा
५. विजैसर्मा	६. खेमसर्मा	७. रिखीसर्मा	८. जगसर्मा
९. नरसर्मा	१०. गजसर्मा	११. वायसर्मा	१२. दतसर्मा
१३. जयसर्मा	१४. वसुसर्मा	१५. केसवसर्मा	१६. जायसर्मा
१७. चीरसर्मा	१८. विजैसर्मा	१९. लेखसर्मा	२०. राजसर्मा
२१. विराजसर्मा	२२. हरखसर्मा	२३. पीचसर्मा	२४. वेदसर्मा
२५. हृदैसर्मा	२६. कलससर्मा	२७. जनसर्मा	२८. लिलाटसर्मा
२९. वामतमर्मा	३०. नरसर्मा	३१. हरसर्मा	३२. धर्मसर्मा
३३. सुक्रतसर्मा	३४. सुभाख्यसर्मा	३५. सुवुद्धसर्मा	३६. विश्वसर्मा
३७. वरदेवसर्मा	३८ कामपतिसर्मा	३९. नरनाथसर्मा	४०. पीतसर्मा
४१. हेमवर्णसर्मा	४२. जनकारसर्मा	४३. राजासर्मा	४४. गालवदेवसर्मा
४५. गालवसर्मा	४६.गालवसुरसर्मा	४७. पालदेवसर्मा	४८. हर्जनरसर्मा
४९.हर्जनकारसर्मा	५०. दरमादिसर्मा	५१. गोविदसर्मा	५२. गोवरधनसर्मा
५३. गोदसीससर्मा	५४. वाक्यसर्मा	५५. विराटसर्मा	५६. वेगसर्मा
५७ नित्यानदसर्मा	५८ वनसर्मा ।		

शुभ भवतु ॥

---

1 उपरोक्त । 2 ब्राह्मण । 3 लिखाई है । 4 ये । 5 रहते हुए । 6 ऋषीश्वर । 7 शर्मा ।

अठा आगे[1] इतरी पीढी रांणारा पूरवज[2] 'दीत[3]- ब्राह्मण' कहांणां –

१. गोदसीदित्य   २. अजादित्य   ३. ग्रहादित्य
४. माधवादित्य   ५. जलादित्य   ६. विजलादित्य
७. कमलादित्य   ८. गोतमादित्य   ९. भोगादित्य
१०. जालमालादित्य   ११. पदमादित्य   १२. देवादित्य
१३. कृस्नादित्य   १४. जगादित्य   १५. हेमादित्य
१६. कलादित्य   १७. मेघादित्य   १८. वेणादित्य
१९. रामादित्य   २०. कर्मादित्य   २१. हर्खमादित्य
२२. देवराजादित्य   २३. विक्रमादित्य   २४. जनकादित्य
२५.नेमकादित्य   २६. रामादित्य   २७. केसवादित्य
२८. करणादित्य   २९. यमादित्य   ३०. महेद्रादित्य
३१. गंजमादित्य   ३२. गंगाधरादित्य   ३३. गोविदादित्य
३४. गंगादित्य   ३५. गोवरधनादित्य   ३६. मेरादित्य
३७. मेवादित्य   ३८. माधवादित्य   ३९. मर्दनादित्य
४०. घनादित्य   ४१. रनादित्य   ४२. वेणादित्य
४३. वीकादित्य   ४४. नाराइणादित्य   ४५. खेमादित्य
४६. खेकादित्य   ४७. विजयादित्य   ४८. केसवादित्य
४९. नागादित्य   ५०. भोगादित्य   ५१. भागादित्य
५२. ग्रहादित्य   ५३. देवादित्य   ५४ अंबादित्य
५५. भोगादित्य।

इतरी पीढा इणारी[4] 'दीत[5]' हुवा। ब्राह्मण कहांणां।

राजा परीख्यतनु[6] साप खाधो[7]। तिणरै वैर जनमेजय परीख्यतरै बेटै नागासू धेख[8] कीयो तरै[9] सारा ब्राह्मणांनै भेळा[10] किया, कह्यो–"म्हारै बापरै वैर नाग होमीया[11] चाहीजै" तरै आ वात किणही रिखीश्वर ब्राह्मण कबूल की नही, तरै राणारा पूर्वज आ

1 इससे आगे। 2 पूर्वज। 3 आदित्य - ब्राह्मण। 4 इनकी। 5 आदित्य। 6 परीक्षतको। 7 सर्प डसा था। 8 द्वेष। 9 तब। 10 सम्मिलित किये। 11 यज्ञमें होमना चाहिये।

वात कबूल की । पछै नागदहो गांव मेवाड़में छै। उदैपुरसूं कोस[1] छै तठै नाग होमीया । सु कुंड अजे[2] जिग्यरा[3] छै । तठै नाग होमीया तिणथी नागदहा कहांणा[4] । वात –

श्रीएकलिंगजी कनै राठासण देवी छै । तठै हारीत रिख बारै वरस वडी तपस्या करी । तठै वापो रावळ टोघड़ा[5] चारतो, बांभणरो बेटो थको[6] । सो इण हारीत रिखरी बारै वरस घणी सेवा करी। पछै रिखीस्वररी तपस्या पूरी हुई। रिखीस्वर चालणरो विचार कीयो तरै क्यू ई बापानै देणरो विचार कीयो । तरै हारीत राठासण देवी ऊपर कोप कीयो । कह्यो –"बारै वरस थांसू[7] निकट तपस्था करी, थे म्हारी कदेइ[8] खवर न लीनी ।" तरै प्रतख्य[9] हुय देवी कह्यो –"मोनू कासू[10] अग्या करो छो ।" तरै हारीत रिखीस्वर कह्यो– "म्हारी इण डावड़ै[11] वापै घणी सेवा करी, इणनुं अठारो[12] राज दीयो चाहिजै ।" तरै देवी कह्यो–"श्रीमहादेवजी प्रसन[13] करो । राज महादेवजीरी सेवा बिना पाईजै[14] न छै।" तरै हारीत रिख महादेवजीरो ध्यान कीयो । उग्र स्तुत करी । तिणथी पाहाड़ प्रथी फाड़ नै जोतल्यंग[15] श्रीएकल्यगजी प्रगट हुवा । तरै हारीत रिख वळै[16] महादेवजीरी उग्र स्तुती करी । महादेवजी प्रसन हुवा । कह्यो –"हारीत ! कासू माँगै छै ? सु कहि । म्हे वर दां[17] ।" तरै रावल बापारी[18] वीनती करी । बापो मेवाड़रो राज पावै । तरै महादेवजी देव राठासण प्रसन हुआ । वर दीयो । राज दीयो । सु हमैं रांणानु आश्रीवाद[19] दीजै छै । तरै हर हारीत प्रसन कहीजै छै। महादेव प्रसन कर नै हारीत आयो । 'तितरै[20] बापो आय हाजर हुवो । बापानुं रिखीस्वर आग्या[21] दी – तै म्हारी घणी सेवा करी । म्हे तोनूं[22] मेवाड़रो राज महादेवजी देवीजी प्रसन कर दीरायो छै ।

---

1 १ कोस=दो मील । 2 अभी। 3 यज्ञ। 4 कहाये। 5 गायोके बछड़े। 6 होते हुए। 7 तुम्हारे पास । 8 कभी । 9 प्रत्यक्ष । 10 क्या । 11 लड़के । 12 यहाका । 13 प्रसन्न । 14 प्राप्त नहीं होता है । 15 ज्योतिलिंग श्रीएकलिंगजी । 16 पुनः । 17 दें । 18 बापाके लिये । 19 आशीर्वाद । 20 इतनेमें । 21 आज्ञा । 22 तेरेको ।

इण ठोड़ एकलिंग प्रकट हुवा छै । और देवी राठासण छै । उणरी तू घणी सेवा करजै । राज ताहरो अविचल रहसी । नै तू रात घड़ी[1]-च्यार ४ पाछली थकी आए । वळै तोनै कुंहीक[2] कहणो छै, सु कहीस[3] । तरै बापो घरै जाय सूय रह्यो[4] । मोड़ो[5] जागीयो । तरै दोड़'र गयो । आगै हारीत रिख विमान बैसतो थो तिण वेळा गयो । विमान ऊंचो हुवो । बापारी रिखीस्वर बांह झाली[6] । हाथ दस बापारो डील[7] वधीयो । रिखीस्वर मुखरो तबोळ देतो थो । जाँणीयो इणरा मूडा मांही पड़सी[8] तो इणरी देही[9] अमर हुवै । सु तंबोळ चूक नै पग ऊपर पड़ियो । तरै रिखीस्वर कह्यो —"थाहरा[10] पगसूं मेवाड़रो राज कदे जाय नही । नै बापानु कह्यो — फलांणी[11] ठोड़ छपन कोड़ सोनइया छै सु उरा लेजो । सामान कर नै चीतोड़ ऊपर जा । मोरी[12] आगे राज करै छै । सु मार नै राज चीतोड़रो उरो ल्यो । संमत ५० कहै छै । बापानु हुवो । बापै मोरी मार नै चीतोड़रो राज लीयो । इतरी पीढी रावळ कहांणा —

१. भोजादित्य	१२. बिबपसाव रावळ
२. बापो रावळ	१३. नरबिब ,,
३. खूमाण ,,	१४. नरहर ,,
४ गोयद ,,	१५. उदतराज ,,
५. सीहेन्द्र ,,	१६. करणादित ,,
६. आलुस ,,	१७. भाडू ,,
७. सीहड ,,	१८. गात्र ,,
८ सकतकुमार	१९. हंस ,,
९. सालवाहन	२०. जोगराज ,,
१०. नरवाहन	२१. वडसीस ,,
११. अवपसाव	२२. बीरसीह ,,

---

1 पिछली रातको चार घडी रात रहे तब आना । 2 कुछ । 3 कहूंगा । 4 सो रहा । 5 देरसे । 6 पकड़ी । 7 देह बढ़ गई । 8 पडेगा । 9 शरीर । 10 तुम्हारे पांवोंसे अर्थात् वंशवालोंसे मेवाडका राज्य कभी नहीं छूटेगा । 11 अमुक । 12 मौर्य वंशके ।

२३. समरसी रावळ	२६. नवखंड रावळ
२४. रतनसी रावळ पदमणी वाळो प०	२७. कुरमेर ,,
	२८. जैतसी ,,
२५. सिरपुंज रावळ	२९. करन ,,

अठा-सूधा[1] पाट २९सु चीतोड़रा धणी रावळ कहांणा[2]। रावळ करनैरैं बेटा दोय माहप नैं राहप हुवा। मु वडा बेटा महापनुं फोज वडी साथै दे नैं मेड़ते कोई रांणो हुतो, तिण ऊपर मेलीयो[3] हुतो। सु रुत[4] उनाळारी[5] हुती। कवर जाय भाखरां[6] मांहे ठाढी छांह झरणा देख वैस रह्यो। उमराव सारानुं[7] घरांरी विदा करी कह्यो – "हमार[8] गरम-रुत[9] छै। मास २ मेह[10] हुवां आपै मेड़ते ऊपर जास्यां[11]।" रांणो करन अठै वैठो वाट देखे सु कवररो कदे कागद पत्र आवै नही। कवर माहप पाटवी नैं रांणी सुहागणरैं[12] पेटरो, तिण वास्तैसू[13] कोई[14] जाणैं, पिण परधांन खवास पासवांन कोई आ वात रावळ करननु सुणावै नही। रावळ जोर[15] आतुर हुवो कहै –"कंवररी खबर न आई।" तरैं किणहीक[16] कह्यो –"कंवर तो गरम रुतरैं वासतैं मेड़ते ऊपर गयो नही। मेह वूठा[17] जासी[18]। साथनुं ही घरांरी सीख दीवी छै[19]। तिण वासतैं राजनुं अरदास[20] न आवै छै।" मु रावळ वात सुण नैं हैरांन हुवो। मन मांहे जांणियो – 'ओ कवर पाट जोग नहीं'। तरैं और फोज लोहड़ा – वेटा[21] राहपरैं साथे दे विदा कीयो। राहप तिणहीज वेळा[22] चढीयो। इळगार[23] कर मेडता ऊपर तूट पड़ीयो। मेड़तो मारीयो[24]। मेड़तारो धणी रांणो पकड़ीयो नैं चीतोड़ ल्यायो। रावळ करन लोहड़ा वटासूं वोहत राजी हुवो। रांणो पकड ल्यायो, तेथी[25] इणनुं रांणारो किताव[26]

---

1 यहा तक। 2 कहाये। 3 भेजा था। 4 ऋतु। 5 ग्रीष्मको। 6 पहाड़। 7 सबको। 8 अभी। 9 ग्रीष्म ऋतु। 10 अपन। 11 जायेंगे। 12 कृपापात्र रानीके। 13 इस बातको। 14 'सूं कोई' के स्थान 'स कोई' पाठ होना चाहिये। स कोई - सब कोई। 15 अत्यन्त। 16 किसी एकने। 17, 18 वर्षा हो जाने पर जायगा। 19 साथ वालोंको घर चले जानेको आज्ञा दे दी,। 20 सामाचार, निवेदन। 21 छोटा पुत्र। 22 उसी समय। 23 संपूर्ण सेनाके साथ और क्रोधित होकर। 24 मेड़तेको जीत लिया। 25 जिससे। 26 पदवी, खिताब।

दे आपरै पाटवी कीयो। माहपनुं अगली रावळाई[1] दे नै डूंगरपुर वासवाळो दियो। तिणरी ओलाद डूगरपुर वासवाळै छै। नै रांणा राहपरा चीतोड़रा धणी छै[2]।

रतनसी अजैसीरो, भड़ लखमसीरो भाई। पदमणीरै[3] मामलै लखमसी नै रतनसी अलावदीसूं लड़ काम आया। एक वार पातसाह चढ खड़ीया[4] हुता सु पछै उदैपुररा* डेरांसूं इणां पाछो तेड़ायो[5]। बारै[6] दिन एक एक बेटो लखमणसीरो गढ़सूं उतर लड़ीयो। तेरमै[7] दिन जुहर[8] कर राणो लखमणसी रतनसी कांम आया। भड़ लखमसी, रतनसी, करन तीनै भाई गढ – रोहै[9] काम आया। भड़ लखमसीरो बेटो अनंतसी जाळोर परणीयो[10] हुतो, सु उठै कांनड़दे साथै कांम आयो, सु जाळोरमे डूंगरी बाजे छै[11]। अरसी साथै काम आयो। तिणरो बेटो रांणो हमीर चीतोड़ वरस ६४ मास ७ दिन १ राज कीयो। १ अजैसी गढ-रोहै काढीयो[12]। तिणरा कुंभावत १, ककड़ १, मांकड़ कांम आया। १ ओभड़ १ पेथड़रा भाखरोत। तठा आगै[13] इतरी[14] पीढी चीतोड़ रांणा हुवा –

---

1 माहपको परंपरागत 'रावल'की पदवी देकर डूंगरपुर और बांसवाड़ेका देश दिया। 2 राना राहपके वंशज चित्तोड़के स्वामी हैं। 3 परम सुन्दरी महाराना रत्नसिंहकी रानी पद्मिनी, जिसको प्राप्त कर अपनी बेगम बना लेनेकी उत्कट अभिलाषासे अलाउद्दीन खिलजीने चित्तोड़ पर चढ़ाई की। भयंकर युद्ध हुआ। लखमसी और रतनसी दोनों इस मामलेमें काम आये। 4 रवाना हुए थे। 5 बुलाया। 6 बारह, 7 तेरहवें। 8 युद्धमें मारे जानेके पश्चात् शत्रुओं द्वारा उनकी स्त्रियोंका अपमान न हो अतः जौहर करनेको (धधकती हुई अग्निमें कूद कर जल जानेको) आज्ञा दे कर राना लखमणसी और रतनसी काम आ गये। 9 शत्रुको गढ़में प्रवेश न करने देनेके लिये गढ़के द्वार पर की जाने वाली भीषण मुठभेड़। 10 विवाह किया था। 11 जालोरमें जिस पहाड़ी पर अनंतसी काम आया वह पहाड़ी 'अनतसीरी डूंगरी' कहलाती है। 12 युद्धमें घायल हो जाने पर अजैसीको वंश-रक्षाके लिये गढ़-रोहेंसे बचा कर बाहर निकाल लिया। 13 जिसके आगे। 14 इतनी।

* 'उदैपुर' पाठ अशुद्ध है। "·········सु पछै उणनै पुररा डेरासूं इणां पाछो तेड़ायो।" पाठ अधिक सगत है। लिपिकारको इतिहासका ज्ञान नहीं होनेसे प्रतिमें स्पष्ट 'पुर' शब्दके पूर्व अस्पष्ट अक्षरोंको 'उदै' समझ कर 'उदैपुर' कर दिया है। उदैपुर तो उस समय था ही नहीं।

१- राहप रांणो, करन रावळरो ।

२- देहु रांणो, ३- नरू रांणो, ४- हरसूर रांणो, ५- जसकरन रांणो, ६- नागपाल रांणो, ७- पुणपाल रांणो, ८- पेथड़ रांणो, ९- भवमी रांणो, १०- भीमसी रांणो, ११- अजैसी रांणो ।

१२- भड़ लखमसी रांणो, बारै बेटांसूं काम आयो चीतोड़ ।

१३- अरसी रांणो, १४- हमीर रांणो, १५, खेतसी राणो ।

१६- रांणो लाखो खेतारो । राव चूंडारी[1] बेटी हंसबाई परणी हुती[2], तैरै[3] पेटरो रांणो मोकल ।

१७- राणो मोकल, राव रिणमलरो[4] भांणेज ।

१८- ,, कूंभो, वावण - विसनरो अवतार कहांणो[5] ।

१९- ,, रायमल, कूंभारो ।

२०- ,, सांगो, रायमलरो ।

२१- रांणो उदयसिंघ, २२- रांणो प्रताप, २३- रांणो अमरसिंघ, २४- रांणो करन, २५- रांणो जगतसिंघ, २६- रांणो राजसिंघ।

२७- हमीर, अरसीरो बेटो । देवी सोनगरीरे पेटरो । कोई दिन[6] सभणोर कनै[7] उनावो गांव छै तठे[8] रहचा । मा उठै[9] रहता तिण परसग[10] ।

राणा हमीरसुं पाटवीयांरा बेटांरी विगत –

१ रांणो खेतो १ लूणो १ खगार वैरसल, हमीररो ।

रांणा खेतारा बेटा –

२ रांणो लाखो २ रांणो भाखर । भाखररै वसरा भाखरोत । चाचारा दिखणनुं - भुहसाजळ - साहजी[11], सिवो[12] २ मेरो, खातणरै[13] पेटरा ।

---

1 राठोड राव वीरमका पुत्र चूंडा, जो मारवाडके प्रचलित राठोड़ वंशके राजाओंके पूर्वजोंमें मंडोरका सर्व प्रथम स्वामी बना था । 2 व्याही थी । 3 जिसके । 4 राठोड़ राव चूडेके १४ पुत्रोंमेंसे सबसे बड़ा । किन्तु अपने छोटे भाई कान्हा और राव सत्ताके बाद मंडोरका स्वामी बना । 5 विष्णु भगवान्‌का वामन अवतार कहलाया । 6 किसी समय । 7 पास । 8 वहा । 9 वहां । 10 कारण । 11 चाचाका पुत्र शाहजी भोंसला । 12 मरहटोंका राज्य स्थापित करने वाला वीर छत्रपति शिवाजी । 13 खाती जातिकी स्त्री, खातिन ।

दे आपरै पाटवी कीयो । माहपनुं अगली रावळाई[1] दे नै डूंगरपुर वांसवाळो दियो। तिणरी ओलाद डूगरपुर वासवाळै छै । नै रांणा राहपरा चीतोड़रा धणी छै[2] ।

रतनसी अजैसीरो, भड़ लखमसीरो भाई। पदमणीरै[3] मामलै लखमसी नै रतनसी अलावदीसूं लड़ काम आया । एक वार पातसाह चढ खड़ीया[4] हुता सु पछै उदैपुररा* डैरांसूं इणा पाछो तेड़ायो[5] । बारै[6] दिन एक एक बेटो लखमणसीरो गढसूं उतर लड़ीयो। तेरमै[7] दिन जुहर[8] कर रांणो लखमणसी रतनसी कांम आया । भड़ लखमसी, रतनसी, करन तीनै भाई गढ – रोहै[9] कांम आया । भड लखमसीरो बेटो अनंतसी जाळोर परणीयो[10] हुतो, सु उठै कांनड़दे साथै कांम आयो, सु जाळोरमें डूंगरी वाजे छै[11] । अरसी साथै काम आयो । तिणरो वेटो रांणो हमीर चीतोड़ वरस ६४ मास ७ दिन १ राज कीयो । १ अजैसी गढ - रोहै काढीयो[12] । तिणरा कुंभावत १, ककड़ १, मांकड़ कांम आया । १ ओभड़ १ पेथड़रा भाखरोत । तठा आगै[13] इतरी[14] पीढी चीतोड़ रांणा हुवा –

---

1 माहपको परंपरागत 'रावल'की पदवी देकर डूंगरपुर और बाँसवाड़ेका देश दिया । 2 राना राहपके वंशज चित्तोड़के स्वामी हैं । 3 परम सुन्दरी महाराना रत्नसिंहकी रानी पद्मिनी, जिसको प्राप्त कर अपनी बेगम बना लेनेकी उत्कट अभिलाषासे अलाउद्दीन खिलजीने चित्तोड़ पर चढ़ाई की । भयंकर युद्ध हुआ । लखमसी और रतनसी दोनों इस मामलेमें काम आये । 4 रवाना हुए थे । 5 बुलाया । 6 बारह, । 7 तेरहवें । 8 युद्धमें मारे जानेके पश्चात् शत्रुओं द्वारा उनकी स्त्रियोंका अपमान न हो अतः जौहर करनेकी (धधकती हुई अग्निमें कूद कर जल जानेकी) आज्ञा दे कर राना लखमणसी और रतनसी काम आ गये । 9 शत्रुको गढ़में प्रवेश न करने देनेके लिये गढ़के द्वार पर की जाने वाली भीषण मुठभेड़ । 10 विवाह किया था । 11 जालोरमें जिस पहाड़ी पर अनंतसी काम आया वह पहाड़ी 'अनतसीरो डूगरी' कहलाती है । 12 युद्धमें घायल हो जाने पर अजैसीको वंश-रक्षाके लिये गढ-रोहेंसे बचा कर बाहर निकाल लिया । 13 जिसके आगे । 14 इतनी ।

* 'उदैपुर' पाठ अशुद्ध है । "·········सु पछै उणनै पुररा डेरांसूं इणां पाछो तेड़ायो ।" पाठ अधिक संगत है । लिपिकारको इतिहासका ज्ञान नहीं होनेसे प्रतिमें स्पष्ट 'पुर' शब्दके पूर्व अस्पष्ट अक्षरोंको 'उदै' समझ कर 'उदैपुर' कर दिया है । उदैपुर तो उस समय था ही नहीं ।

१- राहप रांणो, करन रावळरो ।
२- देहु रांणो, ३- नरू रांणो, ४- हरसूर रांणो, ५- जसकरन रांणो, ६- नागपाल रांणो, ७- पुणपाल रांणो, ८- पेथड़ राणो, ९- भवसी रांणो, १०- भीमसी रांणो, ११- अजैसी रांणो ।
१२- भड़ लखमसी राणो, वारै बेटांसूं कांम आयो चीतोड़ ।
१३- अरसी रांणो, १४- हमीर रांणो, १५, खेतसी रांणो ।
१६- राणो लाखो खेतारो । राव चूडारी[1] बेटी हंसबाई परणी हुती[2], तैरै[3] पेटरो रांणो मोकल ।
१७- राणो मोकल, राव रिणमलरो[4] भांणेज ।
१८- ,, कूंभो, बावण - विसनरो अवतार कहांणो[5] ।
१९- ,, रायमल, कूंभारो ।
२०- ,, सांगो, रायमलरो ।
२१- रांणो उदयसिघ, २२- रांणो प्रताप, २३- रांणो अमरसिंघ, २४- रांणो करन, २५- रांणो जगतसिंघ, २६- रांणो राजसिंघ ।
२७- हमीर, अरसीरो बेटो । देवी सोनगरीरे पेटरो । कोई दिन[6] खभणोर कनै[7] उनावो गाव छै तठे[8] रहचा । मा उठै[9] रहता तिण परसग[10] ।

राणा हमीरसुं पाटवीयांरा बेटांरी विगत –
१ रांणो खेतो १ लूणो १ खंगार वैरसल, हमीररो ।

रांणा खेतारा बेटा –
२ रांणो लाखो २ रांणो भाखर । भाखररै वसरा भाखरोत । चाचारा दिखणनु - भुहसाजळ - साहजी[11], सिवो[12] २ मेरो, खातणरै[13] पेटरा ।

---

1 राठोड राव वीरमका पुत्र चूडा, जो मारवाड़के प्रचलित राठोड़ वंशके राजाओंके पूर्वजोंमें मंडोरका सर्व प्रथम स्वामी बना था । 2 ब्याही थी । 3 जिसके । 4 राठोड़ राव चूडेके १४ पुत्रोंमेंसे सबसे बडा । किन्तु अपने छोटे भाई कान्हा और राव सत्ताके बाद मंडोरका स्वामी बना । 5 विष्णु भगवान्‌का वामन अवतार कहलाया । 6 किसी समय । 7 पास । 8 वहां । 9 वहा । 10 कारण । 11 चाचाका पुत्र शाहजी भोंसला । 12 मरहटोंका राज्य स्थापित करने वाला वीर छत्रपति शिवाजी । 13 खाती जातिकी स्त्री, खातिन ।

२ महियो २, भवणसी २, भूवरा भूवरोत, २ सलखारा सलखणोत, २ सिखरा सिखरावत।

२ राँणो लाखो –३ चंडैरा चंडावत, ३ राघवदे पितर[1] हुवो, ३ ऊदारा ऊदावत, ३ रुदारा रुदावत, ३ दुलहरा दूलावत, ३ गजसिंघरा गजसिंघोत, ३ डूगररा भाँडावत।

राँणो मोकल लाखावत - राव चूंडारी बेटी हंसवाईरो। राव चूंडारो दोहीतरो[2]। तिणनु[3] चाचे, मेरे - राँणा खेतेरै बैटां खातणरै पेटरा मारीयो। पछै चाचो मेरो पईरै डूगरे[4] चढीया, तिके[5] घेर नै राव रिणमल मारीया।

४- राँणो कुंभो मोकलरो। राँणे कूंभे कुंभलमेर वसायो। तद वडी वसती[6] हुई। घणो लोक पारपखै[7] आय वसीयो। तिण समै कहै छै कुंभलमेरमे देहुरा[8] सातसै ७०० हुता। तठै झालर ७०० वाजती[9]। नै घर ७०० श्रीमाली - बाँभणाँरा हुता। तिण(थी[10]) कहै छै एकूके घर दीट[11] थाळी ७०० थी। पछे राँणो उदैसिंघ पिण केइक दिन कुंभलमेर रह्यो। राँणो कूभो मोकलरो।

४- खीवाग देवळियेरा धणी। ४- सूआरा सूआवत। ४ सतारा कीतावत। ४- अढूरा अढुओत। ४ गढूरा गढुओत। ४- वीरम।

राँणो कुंभो मोकलरो। मोकल मारीयाँ पछै राव रिणमल चाचा मेरनूं मार नै चीतोड़ पाट वैसाँणीयो[12]। पछै कूभो मोटो[13] हुवो। (माहवी[14]) मारीरी[15] मुदार[16] राव रिणमल ऊपर। मु मेवाडरा रजपूतां नै स्हावै[17] नही। पछै सीसोदीयै चूंडै लाखावत

---

1 प्रेतरव मुक्त मृत - पूर्वज। 2 दौहित्र। 3 जिसको। 4 पई नामक पहाडी। 5 जिनको। 6 बस्ती। 7 प्रसार। 8 मंदिर। 9 जहाँ ७०० घडियाल एक साथ बजती थीं। 10/11 जिससे कहा जाता है कि उन प्रत्येक सात सौ घरोंमें ७०० थालियें सागें (नेगको) दे जाती थी। 12 राठोड़ रिणमलने चाचा मेराको मार कर कुंभाको चित्तोड़की गद्दी पर बैठाया। 13 बड़ा। 14 शासनाधिकार, मालिकपन। 15 सबकी। 16 मूल आधार। 17 सुहाना नहीं।

पवार महिपै राँणा कूभानूं भखायनै[1] राव रिणमलजीनूं सूतानूं[2] मारीयो। कवर जोधो बीजा राव रिणमलरा बेटा चीतोड़री तळहटी-डेरे[3] था सु नीसरींया[4]। कूभै फोज मेल मारवाड़ एक वार ली। पछै राव जोधेजी रांणारो थांणो[5] मार नै मंडोवर लीयो। पछै रांणा कूंभारो चित टळ गयो[6]। तरै कूंभारै बेटे उदै रांणा कूभानूं मारीयो। पछै रजपूतां मेवाड़रा ऊदानूं कवूल न कीयो[7]। रायमल कूंभावतनूं टीको दीयो।

५ रांणो रायमल। ५ ऊदो, जिण रांणा कूभानूं मारीयो। पछै ओ अठारो काढीयो[8] केई दिन सोभत रह्यो।

५ नगारा नगावत ५ गोयंद अऊत गयो[9]। ५ गोपाळ अउत गयो।

५ रांणो रायमल कूंभारो, चीतोड़ धणी हुवो। बेटो वड़ो वालाइ[10] हुवो।

६ उडणो-प्रणो प्रथीराज निपट झाळपूळा हुवो[11]। टोडो नै जाळोर एक दिनरै वीच मारीया[12] तरै आ वात पातसाह सुणी। तरै उडणो प्रथीराज कहांणो। असख प्रवाड़ै जैतवादी रांणो रायमल जीवत ही मुग्रो[13]।

७ वणवीर।

६ जैमल रायमलोत। प्रथीराज मुवाँ पछै[14] टीकायत[15] रायमल राणै कीयो। पछै वदनोर राव सुरतांण सोळंकी तारादेरै वाप

---

1 बहका कर। 2 सोते हुएको। 3, 4 '''चित्तोड़के गढ़की तलहटीके डेरोंमें थे सो वहांसे निकले। 5 मंडोरकी रक्षाके लिये राना कुंभाने वहां एक थाना लगा रखा था, जिसमें रहनेवाले मनुष्योको मार कर राव जोधाने मंडोर पर पुनः अपना अधिकार कर लिया। 6 राना कुंभाका चित्त विक्षिप्त हो गया। 7 स्वीकार नहीं किया। 8 यह वहांसे निकाला गया। 9 अपुत्र मरा। 10 बली। 11 एक स्थान पर विजय करके उसी दिन अन्य शत्रुके किसी दूरके स्थान पर तीव्र गतिसे भाग कर प्रतिज्ञाके साथ दूसरो विजय करने वाला प्रिथीराज अत्यन्त उग्र और तेजस्वी हुआ। 12 जेंपुर डिवीज़नके टोडा-रार्यासह और मारवाड़के जालोर, इन दोनो पर्याप्त दूरस्थ स्थानोंको एक दिनमें विजय किया। 13 प्रिथीराज, उसके बाप राना रायमलके जीवन कालमें ही मर गया। 14, 15 प्रिथीराजके मरनेके बाद रायमलने जैमलको युवराज बनाया।

ऊपर गयो। वे वदनोर छाड़ नीसरीया[1] । रांणै वांसो कीयो[2] । अटाळी कनै आवतां गाडानूं पोहता[3] । तठै राव सुरतांणरो परधांन सांखलो रतनो साळो पिण हुतो। तिण एकल असवार पाछा वाळीया[4] । रात पाछली घड़ी ४ रही थी । सारा उंघावता था[5] । जैमल घुड़ वैहल[6] बैठो थो। रतनो आइ साथ भेळो[7] हुवो । आवतो २ रांणारी वैहल निजीक आयो। खुर[8] घोड़ो कर ने जैमलरै रतने सांखले वरछी छाती माँहै लगाई। मरमरी लागी। राँणो मुवो। पारवतीरै[9] रतनानूं मारीयो।

६. जैसो पिण सुणियो छै[10] । जैमल मुंवां पछै रायमल मुदायत कीयो[11] पछै राँणो रायमल असमाधियो[12] । तरै जैसो लायक नहीं। रजपूत राजी नही। तरै सांगानुं तेड़ नै[13] हाजर कीयो। राँणो रायमल धरती घालीयो[14] । पछै राँणो रायमल मुंवो । साँगानूं टीको[15] हुवो। गीत राँणा साँगारो–

> आयो आगरै जक दनी जवनपुर, समहर संग सप्रांणो।
> ढिलड़ी तणी धरा धक घूणे, रोस चईनो रांणो॥ १॥
>
> पारम माल पसरीयो परखंड, अत साहस ऊलटीयो।
> ढिलड़ी जोय जयं धवळागिर, हिंदुवो रांणो हठीयो॥ २॥

---

1 छोड़ कर निकल गये। 2 रानाने पीछा किया। 3 अटाली गांवके पास आते ही उनके गाड़ोंको पकड़ लिया। 4 पीछा लौटा दिया। 5 सब नींदमें थे। 6 घोड़ोंका रथ। 7 शामिल हुआ। 8 घोड़ेके अगले पांवोंको (रथके ऊपर) उठा कर। 6 पासवालोंने। 10 'जैसा' के लिये भी सुना गया हैं। 11 जैमलके मरनेके बाद रायमलने उसको अधिकारी बनाया। 12 मरणासन्न हुआ। 13 बुला कर। 14 राना रायमलको धरती पर लिटाया। 15 राज्यतिलक हुआ।

गीतका भावार्थ–

युद्ध करनेमें महाबली, राना सांगा दिल्लीकी धराको नष्ट करता हुआ जिस दिन क्रोधावेशमें यवनोंके नगर आगरेमें आया, उसको देख लोग चकित हो गये॥ १॥

पहले राना रायमलने पृथ्वीके दूसरे खंडोंमें अति साहससे आक्रमण किया था, किंतु अब दिल्ली प्रदेश और हिमालय तक जहाँ देखो वहाँ हिंदुपति राना सांगा (विजय करनेके लिये) अपनी हट पर चढ़ा हुआ है॥ २॥

नरवर गोग़ा चलै नीवते, समपे सिखर सवाही ।
सुण सुरतांण जु कीनी सांगै, मुकंद तणा घर मांही ॥ ३ ॥
माल-तणौ सझीयो मोगरयट, लोह तणै रस लागो ।
पूरब देस भंगाण पड़ंते, भौ निण पँडवो भागो ॥ ४ ॥

६. रांणो सांगो रायमलरो वडो भाग वळी[1] हुवो । घणी धरती खाटी[2] । मांडवरो पातसाह सांगे दोय वार पकड़ नै छोडीयो । पीळीयाखाल[3] सूधी[4] एक वार हद कीवी[5] । पछै बाबर पातसाहसूं वेढ़[6] हुई, तठै रांणो सांगो भागो । सांगानूं कवर बाघा सूजावतरी बेटी धनाई परणाई थी, तिणरो बेटो रांणो रतनसी ।

६ किसनारा किसनावत ।
६ धनो रायमलरो अउत[7] ।
६ देवीदास अउत ।
६ पतो रांमो अउत ।

संमत् १५३९ रा वैसाख वद ९ सांगारो जनम । संमत् १५६६ जेठ सुद ५ रांणो सांगो पाट वैठो । संमत् १५९४ रा काती सुद ५ सीकरी बाबर (हुमायूं) पातसाहसूं वेढ हारी । रांणो सांगो वडो प्रतापवळी[8] ठाकुर हुवो । घणी धरती खाटी । संमत् १५३९ रा वैसाख वद ९ रो जनम । घणो तपीयो[9] । उडणो प्रथीराज मुंवां पछै सुदै[10] हुवो । पेहली घणो विखै फिरीयो । पछै वडो ठाकुर हुवो । इसड़ो चीतोड़ रांणो कोई न हुवो । दोय वार मांडवरो पातसाह पकड़ छोडीयो । पीळीयेखाल जाय बाबर पातसाहसूं लड़ीयो तिका

जिस राना सांगाको, गोगा नरवर नगर और उसके समस्त शिखर आदि प्रदेश अर्पण करते हुए और सिर झुका कर चलता बना । हे सुलतान ! सुन, बूंदेलेके राजा मुकुंदके घरमें उस राना सांगाने जो की (वह क्या साधारण बात थी?) ॥ ३ ॥

वीरोंमें अग्रणी रायमलका पुत्र राना सांगा खड्गके रसमें अनुरक्त होनेके कारण पूर्वके देशोंमें भगदड़ मचनेसे भयके कारण पँडुवा वहांसे भाग गया था ॥ ४ ॥

1 भाग्यशाली । 2 जीत कर प्राप्त की । 3 गांवका नाम । 4 तक । 5 सीमा बनाई । 6 लड़ाई । 7 अपुत्र, निःसंतान । 8 प्रतापी । 9 खूब शानके साथ बहुत समय तक राज्य किया । 10 राज्याधिकारी हुआ । 11 पहाड़ और जंगलमें संकटके मारे छिप कर रहना ।

वेढ हारी । वळे राँणै सांगै चंदेरी[1] (मारी) थी । वंधवैरै[2] बाघेले मुकंदसूं वेढ हुई । मुकंद भागो । हाथी घणा पड़ाउ-आया[3] । खिड़ीये खीवराज[4] वात कही ।

राँणो रतनसी कंवर वाघारो दोहीतो, धनाईरै पेटरो । तिको हाडा सूरजमल नारणदासोतसूं लड़ काँम आयो । मामलो भैंसरोडरै गाँव किवाजणै[5] हुवो । गाँव चीतोड़थी[6] कोस २२ । बूंदीसूं कोस १० ।

७. राँणो विक्रमादित करमेती[7] हाडीरा पेटरो । उदैसिंघरो वडो भाई । रतनसी मारांणै टीके बैठो[8] । पछै विक्रमादित चीतोड़ थकां[9] संमत १५९९ जेठ सुद १२ पातसाह वहादर चीतोड़ ऊपर आयो । गढ लीयो[10] । हाडी करमेती जुहर कीयो । रजपूत काँम आया । पछै वळे हमाउ पातसाह विक्रमादितरी मदत[11] करी । हमाउ चीतोड़ आयो । वहादरनूं घंच काढीयो । विक्रमादितनूं पाछो चीतोड़ वैसांणीयो[12] । पछै पूतळ[14] छोकरीरै वेटे विक्रमादित रमतानुं मारीयो[14] । वणवीर चीतोड़ लीवी ।

७. राँणो उदयसिंघ सांगारो । वडो प्रतापवळी ठाकुर हुवो । विक्रमादित मारीयो तद कोई दिन कुंभलमेर रह्यो[15] । पछै वणवीर आय कुंभलमेर घेरीयो[16] मु राँणो उदयसिंघ सोनगरा अखैराज रिणधीरोतरी वेटी परणीयो हुतो[17] । पछै अखैराजनूं उदैसिंघ कहाड़ीयो-[18] म्हानूं मुसकल आय वणी छै[19] । माहरी[20] मदत करज्यो, पछै अखैराज घणो साथ[21] ले नै आयो । कूंपो मेहराजोत[22], राँणो

---

1 गांवका नाम । 2 बांधवगढ । 3 घायल पड़े हुए हाथ आये । 4 खिड़िया जातिका चारण खीवराज । 5 गांवका नाम । 6 से । 7 राना सांगाकी स्त्री । 8 रतनसीके मारे जाने पर, विक्रमादित्यका राज्यतिलक हुआ । 9 चित्तोड़में विक्रमादित्यके शासनकालमें । 10 चित्तोड़गढ़को बहादुरशाहने जीत लिया । 11 मदद । 12 विक्रमादित्यको पुनः चित्तोड़के सिंहासन पर बैठा दिया । 13, 14 दासीपुत्र बनवीरने खेलते हुये विक्रमादित्यको मार डाला । 15 विक्रमादित्यके मारे जानेके बाद चित्तोड़ पर बनवीरका अधिकार हो गया इसलिये उदैसिंहको बहुत समय तक कुंभलमेरमें रहना पड़ा । 16 बनवीरने कुंभलमेर पर घेरा डाल दिया । 17 बेटीसे विवाह किया था । 18 कहलाया । 19 मेरेमें आपत्ति आ पड़ी है । 20 मेरी । 21 सेनाको ले कर आया । 22 राठोड़ राव रिणमलका पौत्र मेहराजका पुत्र कूंपा ।

अखैराजोत[1], भदो, कल्ह पंचायणोत[2], जैसो भैरवदासोत[3]। मारवाड़रो सारो[4] साथ[5] ले नै[6] उदयसिघरी मदत अखैराज आयो। वणवीरसूँ गांव माहोली वडी वेढ[7] हुई। कोई कहै छै वणवीर मारीयो[8]। कोई कहै छै वणवीर भागो नै उदैसिंघ चीतोड़ धणी हुवो[9]। महा उग्र तेज हुवो[10]। तठा पछै[11] अकबर पातसाह चीतोड़ ऊपर आयो[12]। संमत् १६२४ राणो भाखरे गयो[13]। जैमल सीसोदीयो, पसो[14] जगावत और घणो साथ काम आयो[15]। पछै संवत १६२४ रांणै उदैसिंघ चीतोड़ छोड़ उदैपुर वसायो। आगे आ ठोड़ देवड़ारा गाव ५० गरवो कहीजतो[16]। उदैसागर तळाव बंधायो। संवत १५७९ रा भादवा सुद ११ रो जन्म। संवत १६२९ रा फागुण सुद १५ राणो उदैसिंघ काल प्राप्त हुवो[17]।

७ भोजराज सांगावत[18]। इणनु, कहे छै मीरांबाई राठोड़ परणाई हुती[19]।

७ करन रतनसीरो भाई।

राणा उदैसिंघरा बेटारी विगत—

९ राणो प्रताप, सोनगरा अखैराजरो दोहीतो।

९ कल्ह, करमचन्द पवाररो दोहीतो।

९ फरसराम।

९ भोजराज।

९ दुरजनसिंघ।

९ रुद्रसिंघ।

---

1 राव रिणमलके पुत्र अखैराजका पुत्र रांणा। 2 भद्दो और काह्ना, अखैराजके पुत्र पंचायणके पुत्र हैं। 3 भैरवदासका पुत्र जैसा। 4 समस्त। 5 सरदारो सहित सेना। 6 ले कर। 7 लड़ाई। 8 मारा गया। 9 उदैसिंह चित्तोड़का स्वामी बना। 10 अत्यन्त तेजस्वी हुआ। 11, 12 जिसके बाद अकबर बादशाह चित्तोड़ पर चढ़ कर आया। 13 राना उदैसिंह भाग कर पहाड़ोमें चला गया। 14 जगाका पुत्र पता ('पसो" अशुद्ध है)। 15 बहुत सरदार और सेना काम आ गई। 16 पहले इस स्थान पर देवड़े चौहान राजपूतोंके ५० गांव थे जो 'गरवा' नामसे प्रसिद्ध थे। 17 स्वर्ग वासी हुआ। 18 सांगाका पुत्र। 19 कहा जाता है कि भक्त शिरोमणि 'मीरांबाई मेड़तणी' इसको व्याही गई थी।

९. नगो, तिणरा नगावत ।

९. साँम ।

९. साहब खाँन ।

९. माधोसिंघ । राँणा जगतसिंघ कना[1] छाड नै[2] पातसाहरै वास वसीयो । भाला हरदासनै ताजणेरै माँमले मारीयो[3] ।

९. जैतसिंघ ।

९. सुरतांण । कल्यांणमल जैतमलोतरै[4] वास थो[5] ।

९. वीरमदे ।

९. लूंणो ।

९. सादूळ ।

९. सुजाँणसिंघ ।

९. महेस ।

९. जगमाल । राँणा उदैसिंघरो । रावळ लूंणकरनरी[6] बेटी धीरबाईरै पेटरा[7] । भाई ५–८ जगमाल, ८ सगर, ८ अगर, ८ साह, ८ पंचाइण । तिण माँहि[8] जगमाल वडो काँमरो माँणस थो[9] । सीरोहीरा राव माँनसिंघरी बेटी परणी थी । सो मानसिंहरै बेटो कोई न हुवो । टीको[10] राव सुरतांण भांणरानू[11] हुवो । सु महाराज रायसिंघजीनू[12] गिरनार सोरठरी हुई[13] । सोवो हुवो थो[14], सु जावता छा[15] । सु तद[16] राव सुरतांणदे बीजै हरराजोत आदो दीयो[17] । तैसू[18] राव सुरताण महाराज रायसिंघजीसूं मिळीयो । आपरी[19] हकीकत कही । राजा सुरतांण ऊपर कीयो[20] । आधी सीरोही

---

1 पास । 2 छोड़ कर । 1, 2, 3 राना जगतसिंहके पास रहना छोड़ कर बादशाहकी सेवामें रहा । चाबुकके मामलेमें माधोसिंहने झाला हरदासको मार दिया था । 4 जैतमलका पुत्र । 4, 5 सुरतांण, जेतमलके पुत्र कल्याणमलकी सेवामें रहता था। 6, 7 जैसलमेरके रावल् लूणकरणकी बेटी धीरबाईकी कोखसे उत्पन्न पांच (पुत्र) भाई । 8 जिनमें । 9 जगमाल बडे कामका मनुष्य था । 10 राज्य तिलक, 11. भांणके पुत्रको । 12, 13 बीकानेरके महाराज रायसिंहको सौराष्ट्र देशका गिरनार प्रदेश मिला । 14 संदेह हुआ था । 15 सो जाते थे । 16 तब । 17 अपनी । 18 सहायता की ।

पातसाहजीरैं कीनी । आधी सिरोही राव न दीनी । तिको[1] आधरो वंट[2] पातसाह जगमालनूं दीनो । जगमाल तालिको ले आयो[3] । राव आध परो दीयो[4] । जगमालनूं विजो आय मिळीयो । विजैं भखायो[5] । कह्यो – सुरतांण कुण ? तूं रांणा सांगारो पोतो, मांनसिंघरो जमाई । सारी सिरोही उरी काय न लै[6] ? पछै एक दो दाव घाव मोहलां[7] ऊपर कीया । पाघरैं ऊपर वया[8] । तरैं जगमाल खिसांणो पड़ वळे दरगाह गयो[9]। फरीयाद करी[10]। पछै पातसाह जगमालरी मदत राव चन्द्रसेनरा बेटानूं सोभत दे, रावाई[11] दे, रायसिंघनूं, सिघ कोळीनूं[12] मदत मेलीया[13]। पछै अै[14] सीरोही आया । तरैं सुरतांण राव सहर छोड़ भाखरां पैठो[15]। पछै अै पिण उठी गयां पछै संवत् १६४० रा दतांणी डेरां ऊपर आया । वेढ़ हुई । जगमाल, रायसिंघ, सिंघ कोळी तीनों काम आया । संमत १६११ रा असाढ वदि ५ रिववाररो जनम ।

रामसिंघ जगमालरो ।

स्यांमसिंघ ।

(१० मनोहर) ।

रूपसिंघ, देवीदास जैतावतरो[16] दोहीतो ।

रुद्रसिंघ ।

रांणो सगर उदैसिंघरो, जगमालरो सगो[17] भाई । सु जगमालनूं राव सुरतांण मारीयो । तरैं सगर जाणीयो म्हे तो दीवांणरैं[18] ग्रैन छां[19], पिण दीवांण छोटा ही गोतीरो ऊपर करैं छै[19], तो

---

1 उस । 2 भाग । 3 जगमाल जागीरीका प्रमाणपत्र (पट्टा) ले आया । 4 रावने आधा भाग दे दिया । 5 विजैने जगमालको भरमाया । 6 समस्त सिरोहीका राज्य क्यों नहीं ले लेता है ? 7, 8 पीछे एक दो बार अवसर देख महलोंमें जा कर जगमालने सुरतांणके ऊपर प्रहार किये, किन्तु वे पघडीके ऊपर लगे । 9 तब जगमाल लज्जित हो कर फिर बादशाहके दरबारमें पहुँचा । 10 पुकार की । 11 राव पदवी दे कर । 12 सिघ नामके कोली राजपूतको । 13 भेजे । 14 ये । 15 पहाड़ोंमें घुस गया । 16 जैताका पुत्र । 17 सहोदर भाई । 18 मेवाड राज्यके अधीश्वर इकलिंग महादेव माने जाते हैं और राना अपनेको उनके महामन्त्री-'दीवान' मानते हैं । 19 अति समीप कुटुम्बके और मुख्य हैं ।

जगमाल मारीयांरो दावो रांणो अमरसिंघ राव कनै मांगसी[1] सु दीवांण कदे रावनूं ओळभो[2] ही दिरायो नही, नै रावसूं सामो[3] घणो सुख[4] कीयो। रावनूं वेटी परणाई। तरै सगरनूं इण वातरो घणों इमरस[5] आयो। तरै सगर दरगाह आयो। मेवाड़री सारी वात पातसाह जहांगीरनुं गुजराई[6]। वात सहल[7] कर दिखाई। तरै रांणासूं विखो कीयो[8]। पातसाह जहांगीर सगरनूं राणाई दीवी[9]। चीतोड़ मेवाड़ सारो दियो। ऊपर[10] नागोर अजमेर वळै[11] घणा परगणा दीया। घणी मया करी[12]। सगर वरस उगणीस १९ चीतोड़ राज कीयो। निपट वडो ठाकुर हुवो।

पछै संमत १६७१ पातसाह जहांगीर आप आय अजमेर वैठो। साहजादो खुरम आय उदैपुर वैठो। तरै राणो अमरसिंघ खुरमसूं मिळीयो। असवार १००० सूं चाकरी कबूल करी। तरै मेवाड़ पाछो रांणा अमरसिंघनूं दीयो[13]। सगरनूं रावताई[14] दीवी। पूरवमें जागीरी दीवी। श्रीवाराहजीरो देहुरो पोकर माथै सगर संवरायो[15] संमत १६१६ भादवा वद ३ रो सगररो जनम छै। सगररा वेटारी विगत–

९ इंद्रसिंघ सेखावतांरो भांणजो। सगर जीवतां मूंवो[16]।

९ मानसिंघरो जनम सगर वांसै[17] रावताई पाई तैसूं, संमत १६३९ रो।

१० हरीसिंघ।

१० मोहकमसिंघ।

---

1 जगमालको मारनेसे उत्पन्न हुई शत्रुताके वदलेका दावा राना अमरसिंह राव सुरताणसे मांगेगा अर्थात् वैरका वदला लेगा। 2 उपालम्भ। 3 उल्टा। 4 प्रेम। 5 अमर्ष। 6 निवेदन की। 7 वातको सुगम कर दिखाया। 8 रानाको संकटमें डाला। 9 राना वना दिया। 10 इनके अतिरिक्त। 11 और। 12 कृपा की 13 तव मेवाड़ पुनः राना अमरसिंहको दे दिया। 14 और सगरको रानासे रावत वना कर पूर्वमें कुछ जागीरी दे दी। 15 तीर्थ गुरु पुष्करके श्री वाराह मन्दिरका सगरने जीर्णोद्धार करवाया। 16 सगरके जीवन कालमें मर गया। 17 मानसिंहका जन्म १६२६, पाटवी इन्द्रसिंहके मरजानेके कारण रावताई इसे मिली।

१० आसकरन ।
१० मोहणसिंघ । सगर जीवतां मूंवो ।
१० वैरीसाल ।
१० रुघनाथदास
१० मदनसिंघ । पेट मार मूंवो[1] ।
१० हरीरांम । राजा रायसिंघजीरो चाकर रह्यो छौ[2] ।
१० फतैसिंघ ।
१० जगतसिंघ । गोड़ वीठलदासरै कांम आयो ।
९ अगर । रांणा उदैसिंघरो । पातसाही चाकर थो ।
९ जसवंत । जोधपुर वास वसीयो[3] । गांव १२ सूं सोभतरो सिणलो दीयो[4] । पछै संवत १६७३ छाडीयो[5] । ब्राहनपुर मोहबतखांनरै रह्यो[6] । संमत १६९० वळे रावळे वसीयो[7] । घोळहरो गांव १२ सूं दीयो हुतो[8] । पछै मोहबतखांन कह्यो, मत राखो । तद सीख दीवी ।
९ सवलसिंघ । जोधपुर संमत १६७९ वास वसीयो ।
गांव ४ जालोररा कुरड़ासूं[9] । दीया ।.......दीवी दस ।
१० सवळसिंघ । ९ कल्यांणदास ।
९ साह । रांणा उदयसिंघरो ।
१० दुरजनसिंघ । राजा जैसिंघरो मांमो ।
१० माघोसिंघ । मुथरादास ।
१० पंचाइण । राणा उदैसिंघरो । ९ किसनसिंघ ।
९ वलू । चूंडावतां वैरमें मारीयो[10] ।

---

1 पेटमें कटारी मार कर मर गया । 2 बीकानेरके राजा रायसिंघके यहां नौकर रहा था । 3 जोधपुरमें आकर रह गया । 4 जोधपुरके महाराजा सूरसिंघने उसे बारह गांवोंके साथ सोजत परगनेमें सिणला गाव जागीरमें दिया । 5 मारवाड़ छोड़ दिया । 6 बुरहानपुर जा कर मोहबतखानके यहां नौकर रहा । 7/8 सं० १६९० में पुनः जोधपुर आ कर बस गया, तब उसे, १२ गांवोंके साथ घोलेरा गांव जागीरमें दिया था । 9 घासके निमित्त जो गांव थे उनमेंसे चार उसे दिये । 10 चूंडावतोंने वैरका बदला लेनेके लिये उसे मारा ।

१० सूरसिंघ । ११ भीव ।

८ सकतो । रांणा उदैसिंघरो । पातसाही चाकर हुवो । इणरा वेटा वडा निपट आछा रजपूत हुवा नै इणरो परवार घणो। सकतारा पोतरांरी आज वडी साख हुई छै[1] । सकतावत कहावै ।

९ भांण सकतावत । मोटा राजारी[2] वेटी राजकवर परणी हुंती ।

१० सांमसिंघ । महाराज श्रीजसवंतसिंघजीरै सगो मांमो[3] ।

११ करमसेन । जोधपुर वास । चंडावळरो पटो ।

१२ सिवरांम । १२ जगरूप । १० पूरो भांणोत । राजा ।

११ सबलसिंघ पूरावत ।

११ सत्रसल । १२ मोहकमसिंघ ।

१० मांनसिंघ भांणोत[4] । राजा भीवरो चाकर । भीव कांम आयो तद कांम आयो ।

१० गोकलदास भांणोत । मोटा राजारो दोहीतो । राजा भींवरो चाकर । भीव कांम आयो तद पूरे लोहे पड़ीयो[5] । तरै राजा गजसिंघजी उपाड़ीयो[6] । घाव वंधाया । पछै राहिण रु. २९००० रो पटो दे वास राखीयो[7] । पछै संमत १६९४ खुरम तखत वैठो तरै पातसाहरै वसीयो । वडो दातार । वडो झुझार मोत मूंओ[8] ।

११ सुदरदास । ११ जूझारसिंघ । ११ वीरमदे । ११ कल्यांणसिंघ ।

१० केमोदास भाणरो । मोटा राजारो दोहीतो । राजवाई

---

1 सकतेके पौत्रोंकी बड़ी शाखा फैली । 2 जोधपुरके मोटा राजा उदैसिंघकी कन्या राजकंवर भाणको ब्याही थी । 3 सगो मांमो=माताका सहोदर भाई । 4 भाणका पुत्र । 5-6 शरीर पर शस्त्रोंके खूब प्रहार हो जाने पर गिर गया तो राजा गजसिंहने स्वयं उसे उठा कर दूर किया । 7 मेड़ते परगनेका राहिण नामक, रु. २९०००) की आयका गांव दे कर अपने पास रखा । 8 बड़े जूझारोंकी मौत मरा ।

भटीयांणी नांनी हुवै । केसोदास को[1] दिन जोधपुर नांनी कनै रह्यो । गांव सरेचो मोटे राजा पटै दीयो हुतो ।

९ अचलो सकतावत[2] । वेगम पटै[3] । राव कहीजतो । आपरो गळो आपरै हाथ काट मूंवो ।[4]

१० रावत नरहरदास । ११ जसवंत रावत । ११ विजो ।

११ पतो । ११ कांन । ११ रावत केसरीसिंघ ११ जगनाथ ।

११ रतनसी । ११ सादूळ । ११ भीम ।

१० रावत नाराणदास । रांणा सगररै वास वसीयो । सगर रावताई दी थी ।

११ रावत किसन । ११ कल्यांण । ११ स्यांम । ११ भावसिंघ ।

११ धरमांगद ।

९ वलू सकतावत । रांणो उंटाळै झूंबीयो तद कांम आयो[5] ।

१० लाडखां । ११ साहिब । १० कमो । १० खंगार । ११ सुजांण ।

१० रांमचंद । १० सांवळदास । १० कचरदास ।

९ भगवांन सकतावत । रांणारी दी बूट पटै[6] ।

९ जोध सकतावत । वडो आखाड़ सिध[7] रजपूत हुवो । रांणारो चाकर जीहरण थांणै हुतो[8] । पछै रावत भांनो देवलीयेरो धणी मनदसोररा फौजदारनूं ले नै आयो । असवार २००० पाळा ८२००० ले ऊपर आयो । जोध असवार ६० सूं हुतो । सु मैदांनरी लड़ाई करी । रावत भांनो, सैद मांखन दोनांनूं मार मुंओ[9] ।

१० भाखरसी । १० नाहरखान । अरजन । १० मांडण सकतावत

९ दलपत । १० गिरधर । १० गजसिंघ । अजबसिंघ ।

९ भोपत । १० नगो । ९ मोहण । ९ माल । १० हररांम ।

---

1 केशोदास कई दिन जोधपुरमें अपनी नानीके पास रहा । 2 3 अचला सकतेका पुत्र जिसको वेगम ठिकानेका पट्टा है, राव कहा जाता । 4 जो अपना गला अपने हाथसे काट कर मरा था । 5 राना ऊंटाले गांवमें लड़ा वहां बलू काम आया । 6 रानाकी ओरसे दिया हुआ बूट गांव उसके अधीन है । 7 रणरूपी अखाड़ेका सिद्ध अर्थात् अकेला ही युद्धको जीतने वाला । 8 रानाका नौकर जोहरण नामक गांवके थानेमें रहता था । 9 रावत भाना और सैयद माखनखां दोनोंको मार कर मर गया ।

१० सूरसिंघ । ११ भीव ।

८ सकतो । रांणा उदैसिंघरो । पातसाही चाकर हुवो । इणरा बेटा वडा निपट आछा रजपूत हुवा नै इणरो परवार घणो । सकतारा पोतरांरी आज वडी साख हुई छै[1] । सकतावत कहावै ।

९ भांण सकतावत । मोटा राजारी[2] बेटी राजकवर परणी हुंती ।

१० सांमसिंघ । महाराज श्रीजसवंतसिंघजीरै सगो मामो[3] ।

११ करमसेन । जोधपुर वास । चंडावळरो पटो ।

१२ सिवरांम । १२ जगरूप । १० पूरो भांणोत । राजा ।

११ सबलसिंघ पूरावत ।

११ सत्रसल । १२ मोहकमसिंघ ।

१० मांनसिंघ भांणोत[4] । राजा भीवरो चाकर । भीव कांम आयो तद कांम आयो ।

१० गोकलदास भांणोत । मोटा राजारो दोहीतो । राजा भीवरो चाकर । भीव कांम आयो तद पूरे लोहे पड़ीयो[5] । तरै राजा गजसिंघजी उपाडीयो[6] । घाव बंधाया । पछै रांहिण रु. २९००० रो पटो दे वास राखीयो[7] । पछै संमत १६९४ खुरम तख्त बैठो तरै पातसाहरै वसीयो । बडो दातार । बडो झुझार मोत मूंओ[8] ।

११ सुदरदास । ११ जूझारसिंघ । ११ वीरमदे । ११ कल्यांणसिंघ ।

१० केसोदास भाणरो । मोटा राजारो दोहीतो । राजबाई

---

1 सकतेके पौत्रोंकी बड़ी शाखा फैली । 2 जोधपुरके मोटा राजा उदैसिंघकी कन्या राजकंवर भाणको ब्याही थी । 3 सगो मांमो=माताका सहोदर भाई । 4 भांणका पुत्र । 5–6 शरीर पर शस्त्रोंके खूब प्रहार हो जाने पर गिर गया तो राजा गजसिंहने स्वयं उसे उठा कर दूर किया । 7 मेड़ते परगनेका रांहिण नामक, रु. २९०००) की आयका गांव दे कर अपने पास रखा । 8 बड़े जूझारोंकी मौत मरा ।

भटीयांणी नांनी हुवै । केसोदास को[1] दिन जोधपुर नांनी कनै रह्यो । गांव सरेचो मोटे राजा पटै दीयो हुतो ।

९ अचलो सकतावत[2] । वेगम पटै[3] । राव कहीजतो । आपरो गळो आपरै हाथ काट मूंवो ।[4]

१० रावत नरहरदास । ११ जसवंत रावत । ११ विजो ।

११ पतो । ११ कांन । ११ रावत केसरीसिंघ ११ जगनाथ ।

११ रतनसी । ११ सादूळ । ११ भीम ।

१० रावत नाराणदास । रांणा सगररै वास वसीयो । सगर रावताई दी थी ।

११ रावत किसन । ११ कल्यांण । ११ स्यांम । ११ भावसिंघ ।

११ धरमांगद ।

९ वलू सकतावत । रांणो उंटाळै झूंबीयो तद कांम आयो[5] ।

१० लाडखां । ११ साहिव । १० कमो । १० खंगार । ११ सुजांण ।

१० रांमचंद । १० सांवळदास । १० कचरदास ।

९ भगवांन सकतावत । रांणारी दी बूट पटै[6] ।

९ जोध सकतावत । वडो आखाड़ सिध[7] रजपूत हुवो । रांणारो चाकर जीहरण थांणै हुतो[8] । पछै रावत भांनो देवलीयेरो धणी मनदसोररा फौजदारनूं ले नै आयो । असवार २००० पाळा ८२००० ले ऊपर आयो । जोध असवार ६० सूं हुतो । सु मैदानरी लडाई करी । रावत भांनो, सैंद मांखन दोनांनूं मार मुंओ[9] ।

१० भाखरसी । १० नाहरखान । अरजन । १० मांडण सकतावत

९ दलपत । १० गिरधर । १० गर्जसिंघ । अजवसिंघ ।

९ भोपत । १० नगो । ९ मोहण । ९ माल । १० हररांम ।

---

1 केशोदास कई दिन जोधपुरमें अपनी नानीके पास रहा । 2 3 अचला सकतेका पुत्र जिसको वेगम ठिकानेका पट्टा है, राव कहा जाता । 4 जो अपना गला अपने हाथसे काट कर मरा था । 5 राना ऊंटाले गांवमें लड़ा वहां वलू काम आया । 6 रानाकी ओरसे दिया हुआ बूट गांव उसके अधीन है । 7 रणरूपी अखाड़ेका सिद्ध अर्थात् अकेला ही युद्धको जीतने वाला । 8 रानाका नौकर जीहरण नामक गांवके थानेमें रहता था । 9 रावत भाना और सैयद माखनखां दोनोंको मार कर मर गया ।

११ विजो । ९ चत्रभुज । १० भोज । ११ वलरांम ।
१२ महासिंघ ।
९ वाघ । १० जगमाल । ११ मोहणसिंघ । १२ कल्ह ।
९ राजसिंघ । १० कीतो ।
११ सूरसिंघ ।
१२ रांणो प्रताप, रांणा उदयसिंघरो। सोनगरा अखैराजरो दोहीतो। संमत १५९६ जेठ सुद ३ रविवाररो प्रताप रांणारो जनम ।

रांणै प्रतापरा बेटा –
९ रांणो अमरसिंघ, संमत १६१६ रा चैत सुद ७ रो जनम । पूरबीयां पवारांरो भांणेज । संमत १६७१ रा फागुण मांहे वरस नवरा विखाथी खुरमनू मिलीयो[1] । संमत १६७६ उदैपुरमें काल कीयो[2] ।
९ सेखो प्रतापरो ।
१० चतुरभुज, जोधपुर वसीयो थो। संमत १६६९ गांव ६ सूं । करमावस[3], सिवांणेरो पटो दीयो ।
९ कल्यांणदास ।
९ कचरो ।
९ सहसो प्रतापरो। वडो ठाकुर। विखा माहे रांणा अमरसिंघरी घणी कीवी चाकरी ।
१० भोपत सहसावत । वडो दातार हजार छै आदमी लीयां दरगाह चाकरी रांणारो मेलीयो करतो[4] ।
१० केसरीसिंघ ।
९ पूरणमल प्रतापरो । जोधपुर वास वसीयो । संमत १६६४ मेडतारो गाव समत १६६६ ढाहो[5] गांव ५ सूं दीयो ।

---

1 पैदल नौ वर्ष तक गुप्त रूपसे जगल और पहाड़ोंमें रहनेके संकट सह कर फिर खुर्रमसे मिला। 2 मरा । 3 समदड़ी से दक्षिण लूनी नदीके किनारे सिवाने परगनेका एक गांव। 4 छ हजार मनुष्योंके साथ रानाकी ओरसे भेजा हुआ बादशाहके यहां नौकरी करता था। 5 गांवका नाम ।

९ जसवंत । ९ हाथी । ९ मांनो । ९ गोपालदास । ९ चंदो ।
९ सांवल । ९ करमसी । ९ भगवांन ।

रांणो अमरसिंघ नै[1] जहांगीर पातसाहरै वात हुई[2]। रांणो अमरो साहिजादे खुरमसूं घोघूंदेमें[3] मिलीयो। तद रांणानूं मेवाड़ ऊपर इतरी[4] ठोड़ जागीरमें दे नै[5] पंच हजारी असवाररो मुनसब कीयो[6]। असवार ह. १००० चाकरी थापी[7]।

१ मांडलगढ संमत १७११ तागीर कीयो थो। संमत १७१५ वळे दीयो[8]। २००००) एक।

१ वदनोर संमत १७११ तागीर कीयो। संमत १७१५ वळे दीयो।

१ फूलीयो संमत १६९४ जागीर कीयो।

१ नीमच,[9] गांव २४५ छै चीतोड़ थी कोस १५ रु. २२५०००)।

१ जीहरण, गांव १२ देवलियारो गड़ासिंघ[10]।

१ वसाड़, संमत १३९४ रावत केसरीसिंघनूं मार नै जांनसाखांन उरी लीवी[11] मनदसोररै निजीक[12]।

१ भैंसरोड, गांव १२४ खखर भखररी ठोड़[13]।

१ सुणेर, गांव १२ रांमपुरा कन्है[14]। संमत १६९४ तागीर।

१ डूंगरपुर, संमत १६९४ तागीर कीयो। संमत १७१५ औरगजेब पूठो दीयो[15]।

१ हंसवाहलो[16]। समत १७१५ दीयो।

१ देवलियो। पछै रावल जसवत मारीयो·······उरो लीयो[17]।

१ वेधम गांव ९४ चोतोड़सूं गांउ[18] २२ वूंदीरै कांकड़[19]। रेख रु. १००००)।

---

1 और। 2 परस्पर मंत्रणा हुई। 3 गावका नाम। 4 इतनी। 5 जागीरमें दे कर। 6 पांच हजार घोड़े और उनके असवारोंके साथ मनसबदार बनाया। 7 बदलेमें असवार १००० की सेवा निश्चित की। 8 पुनः दे दिया। 9 गांवका नाम। 10 जब्त। 11 ले ली। 12 पास। 13 खखर-भखरको (जंगल और पहाड़ों की) जगह। 14 पास। 15 वापिस दे दिया। 16 बांसवाड़ा। 17 ले लिया। 18 गाउ (गव्यूत) = दो मील। 19 सीमा।

रांणो अमरसिंघ, रांणा प्रतापरो । संमत १६१६ चैत सुद ७ रो जनम । पवार-पूरबीयांरो[1] भांणेज । पातसाह जहांगीरसुं वरस नवरो विखो जाजरीयो[2] । घणी लड़ाई करी विखा मांहे । मालपुरो (साहिजादो खुरम) राजा मांनसिंघ उदैपुर वैठां मारीयो[3] । अकबररै दोर मांहे[4] । पछै पातसाह जहांगीर जोर हठ ऊपर आयो[5] । सगर वडो ग्रासियो हुवो चीतोड़ आइ वसीयो[6] । धरतीरा रजपूत कितराहेक मिलीया[7] और मिलणनूं तयार हुवा । पातसाह जहांगीर आप आय अजमेर वैठो, तरै आपरो दाव[8] देख रांणो अमरसिंघ साहिजादानूं घोघुंदे आय मिलीयो । असवार १००० री चाकरी कबूल करी । पछै साहिजादे खुरम दिन १ रांणानूं राख सीख दीनी[9] । कंवर करननूं ले नै खुरम अजमेर आयो संमत १६७१ रा फागुण मांहे । संमत १६७६ रांणे अमरसिंघ उदैपुर काल कीयो[10] ।

रांणा अमरसिंघरा वेटा –

१० रांणो करन । संमत १६४० रा सावण सुदी १२ रो जनम । संमत १६९४ फागुणमें काल प्राप्त हुवो[11] ।

१० अरजन अमरारो । सदा रांणारो चाकर हीज रह्यो । देवड़ा विजारो दोहीतो ।

१० सूरजमल अमरारो ।

११ सुजाणसिंघ । पातसाही चाकर । फूलीयो पटै ।

११ वीरमदे । पातसाही चाकर ।

१० राजा भीम, वडो रजपूत हुवो । विखे सारे मांहे ठोड़ ठोड़ भीव पातसाही फोजांसूं लड़ीयो । पछै विखै मिटीयै[12] साहिजादा खुरमरै चाकर रह्यो । संमत १६७९ राजाई

---

1 पूरबिये परमारोंका । 2 सहन किया । 3 खुर्रम और मानसिंह कछवाहाके उदयपुरमें बैठे हुए मालपुराको लूट लिया । 4 अकबरके शासनकालमें । 5 बादशाह जहांगीर अत्यन्त हठ पर चढ़ा । 6 सगर ग्रासियेकी (लूट खसोट करनेवाला) स्थितिमें होते हुए भी चित्तौड़ आकर बस गया । 7 देशके कितने ही राजपूत उससे मिल गये । 8 अवसर । 9 जानेकी आज्ञा दी 10 उदैपुरमें मरा । 11 मरा । 12 संकट मिटने पर ।

किताब पायो[1]। मेड़तो जागीरमें पायो। विखे मांहे खुरम साथे फिरीयो। संमत १६९१ काती सुदी पूरवनुं ढस नदी ऊपर लड़ाई हुई परवेज मोहवतखांनसूं। तठै[2] कांम आयो।

११ किसनसिंघ।

११ राजा राइसिंघ। संमत १६९५ राजाई पाई। नाराणदास पातावतरो दोहितरो।

१० वाघ, रांणा अमरारो। संमत १६६५ एक वार रावलै वसतो थो। गांव २० दूधवड़[3] देता था, पण रह्यो नहीं।

११ सवळसिंघ। पातसाही चाकर हुवो। वाघ प्रथीराजोतरो दोहितरो।

१० रतनसी, रांणा अमरारो।

१० रांणो करन अमरारो। संमत १६७६ टीके बैठो। सु संतोसी ठाकुर हुवो।

रांणा करनरा बेटा –

११ रांणो जगतसिंघ। संमत १६६४ रा भादवा सुद १२ रो जनम। मेहवेचा-राठोडांरो[4] भांणेज।

११ गरीबदास। घणा दिन रांणाजी कनै रह्यो। पछै पातसाही चाकर हुवो। संमत १७१४ रा जेठ मांहे धवलपुररी लड़ाई कांम आयो, मुरादबगस साथे।

११ छत्रसिंघ।

११ मोहणसिंघ सुरतेरो।

११ राजसिंध।

रांणो जगतसिंघ संमत १६९४ में उदेपुर टीके बैठो। संमत १७१० काळ प्राप्त हुवो। जगतसिंघ वडो दातार विवेकी ठाकुर हुवो। कलजुग[5] मांहे वडा २ सुक्रत कीया। वडा २ दांन दीया।

---

1 राजाका पद मिला। 2 वहां। 3 बीस गाँवों सहित दूधोड़का पट्टा देते थे फिर भी नहीं रहा। 4 मारवाड़के मालानी प्रान्तमें मेहवा नगरके नाम पर मेहवेचा - राठोड़ोंकी एक शाखा। 5 कलियुग।

१२ रांणा राजसिंघ ।

१२ अरसी ।

वात[1] एक रांणो उदैसिंघ उदेपुर वसाइयांरी[2]–

संमत १६२४ चैत सुद ११ अकबर पातसाह चीतोड़ लीवी । सीसोदीयो पतो जगावतरो जैमल वीरमदेओत,[3] ईसर वीरमदेओत और ही घणो साथ गढमें कांम आयो। चीतोड़ छूटां रांणो उदयसिंघ एक वार कुंभलमेर आयो । तठा[4] पछै वेगो हीज उदैपुर वसायो । उदैपुररी ठोड़ अठै[5] देवड़ा वसता गांव ५२ गिरवाररा[6] कहावता । तिका गांवांरी विगत –

" गिरवार देवड़ांरो । अजेस[7] देवड़ा इणां गांवां मांहे मांणस[8] हजार २००० रहे छै । १ पीछोली । १ पालड़ीरी । ठोड़ उदैपुर ।

	१ आहाड़ ।	१ दहबारी ।	१ टीकली ।
१ लकड़वा ।	१ कलड़वा ।	१ मटूंण ।	१ कोटड़ो ।
१ तीतरड़ी ।	१ भवणो ।	१ आंबरी ।	१ बेदलो ।
१ रुआंध ।	१ छापरोळी ।	१ लखाहोळी ।	१ वेहड़वा ।
१ चीखलवा ।	१ वड़गांव ।	१ देवड़ी ।	१ मूंडखसोल ।
१ वड़ी ।	१ थूर ।	१ कवीथो ।	१ वरसड़ो ।
१ नाई ।	१ बुजड़ो ।	१ सीसारमो ।	१ धार ।

देवड़ो वलू उदेभांणोत[9] देवड़ांमें वडेरो[10] । दीवांणरो चाकर छै। टका५०००सूं इये जायगा[11] आपरै नांवे[12] पाधर[13] मांहे पीछोला तळाव ऊपर सहर उदैपुर वसायो । गाव निजीक छोटोसो माछळो मगरो[14] छै । माछळारा मगरासूं उतरनै[15] सहर छे। दीवांणरा मोहल[16] पीछोळारी पाल ऊपर छै । मोहलांथी[17] आथवणनूं[18] तळाव लगतो[19] सहर छै। कोस २ रै फेर छै[20]। सहररी एक कांनी[21]

1–2 राणा उदैसिहने उदयपुर बसाया जिसका एक वर्णन । 3 वीरमदेका पुत्र । 4 जिसके बाद तुरत ही उदयपुर बसाया । 5 यहां । 6 देवड़ोंके इन गांवोंका समूह पहाड़ोंसे घिरे हुए रहनेके कारण गिर वार=गिरि वाला कहलाता था । 7 अभी तक । 8 मनुष्य । 9 उदैभाणका पुत्र । 10 पुरखा । 11 इस जगह । 12 अपने नामसे । 13 समतल भूमि । 14 पहाड़ । 15 उत्तर दिशाकी ओर । 16 महल । 17 से । 18 पश्चिममें । 19 लगता हुआ । 20 दो कोसके घेरेमें है । 21 ओर ।

माछळारो मगरो छै। एकण-कानी[1] खरक-[2] दिस मिमरवारो मगरो छै। तळाव घणो भरीजै तरै [3] पाणी मगरै तांई[4] जाय छै[5]। तळावमे पांणी माछळारा मगरारो, सीसरवारा मगरारो घणो आवै छै। तळाव निपट [6] वडो छै। मांहे मगरमछ रहै छै। तळाव ऊंडो घणो छै। ते[7] तळावरी मोरी[8] छूटै छै। तिणथी[9] घणी धरती दोळो[10] फिरै छै। तिणरो घणो हासल हुवै छै[11]। पछै तळावरो पांणी वेडच नदी भेळो हुवै छै,[12] अहाड़री पाखती जातो थको[13]। पीछोला पाखती दीवांणरा कोट, महल, महर छै। मोहलांसूं निजीक तळाव पीछोला माहे लाखोटारी[14] ठोड़ तळाव विचै रांणे अमरसिंघ वादळ-महल करायो छै। तळावरी पेली तीर [15] रांणे जगतसिंघ मोहण-मिदररा मोहल कराया छै मु छै[16]। वाग छै। सहररी पाणीरी मुदार[17] तळाव पीछोला ऊपर छै। बीजो[18] पाणीरो निवाण[19] तिसड़ो[20] सहररी पाखती थाट्र छै[21]। वाग-वाडी छै[22]। सहर मांहे देहुरा[23] १५ तथा २० छै। जैनरा, सिवरा।

सहररी वसतीरो उनमान[24]–

१. घर २००० महाजनारा – ओसवाळ, महेसरी, हूबड, चीतोडा, नागदहा, नरसिंघपुरा, पोरवाड।[25]

२. घर १५०० ब्राह्मणारा।

३ घर ५०० पचोळीयारा घणा[26], दूसरा भटनागर।

---

1 एक ओर। 2 वाय-य और पश्चिम दिशाके बीचकी दिशा। 3 तब। 4 5 तक जाता है। 6 अत्यन्त। 7 उस। 8 नालो। 9/10 जिसमे पानी बहुत सी भूमिके चारों ओर फिर जाता है। 11 जिसका बहुत लगान प्राप्त होता है। 12 वेडच नदीमें मिल जाता है। 13 आहाड गांवके पास जाते। 14 किनारेमे पानीकी दूरी और गहराईका अनुमान लगानेके लिये बनाया हुआ मान सूचक टीबा एव तैराकोंकी प्रतिस्पर्द्धामें निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुंच जानेका चिह्न या स्थान (लक्ष्य घट्ट)। 15 परले किनारे। 16 कराये हैं सो हैं। 17 आधार। 18 दूसरा। 19 जलाशय। 20 जैसा। 21 कम है। 22 बाग बगीचे हैं। 23 मंदिर। 24 अनुमान। 25 महाजनोंकी (वणिक समाजकी) सात जातियोंके नाम। 26 कायस्थ और भटनागरोंके मिलकर ५०० घर, जिनमें कायस्थोंके अधिक।

४. घर ६० भोजग[1]।

५. ५०० खाट भील[2]।

६. ५००० माहिलवाडियो लोक[3]।

७. घर १५०० रजपूत।

८. ९००० पूणजात[4]।

सहररी बसती घर हजार बीसरो उनमांन छै।

उदैसागर तळाव संमत १६२० तथा संमत १६२१ राणे उदैसिंघ बंधायो। कोस १० रै फेर[5] पाणी छै। पाळ लंबी गज ५००री बंधेज छै[6]। आडी गज २५०[7]। ऊंची गज ७० पाणीमें। गज पाणी बारै उघाड़ी[8]। नाळो[9] गज ५० ऊंडो, गज १२ रै पनै[10] भाखर वाढ काढियो छै।

पीछोलो राणा लाखारी वार[11] माहे किणही विणजारे बँधायो[12]। पाणी कोस ८ रै फेरमें छै।

श्रीएकलिंगजी सहरसूं कोस ५, देहुरो मगरा ऊपर छै। उदैपुरसूं भरहेर[13] कूंण माहे छै। गाव देलवाडो झाला कल्याणवाळो एकलिंगजीथी कोस १ छै। देवी राठासणरो[14] देहरो भाखर[15] ऊपर छै, सु एकलिंगजीथी कोस २। एकलिंगजीरा देहराथी बेउ[16] तरफ भाखरारी गाळ[17] छै। देहुरारा दोळो छोटो कोट छै। देहुरो एकलिंगजीरो चौमुखो[18] छै। चार दरवाजा छै। देहुरा ऊपर डंड कळस[19] सोनारो छै। पारवती औरै ही देहुरा घणा छै, नै एकलिंगजीरा देहुरा

1 शाकद्वीपी अर्थात सेवक जाति। 2 भोल, नायक आदि। 3 कृषि कर्म करने वाली समस्त जातियें, जिनमें चारण आदि आश्रित जातियें और भील, थोरी, नायक आदि भी सम्मिलित हैं। 4 इसके अतिरिक्त पवन अर्थात् शेष जातियों के ६००० घर हैं। (ब्राह्मण आदि चार वर्णोंके अंतर्गत समस्त जातियोंके समूहको छत्तीस-पवन कहा जाता है)। 5 घेरमें। 6 7 जिसकी लंबाईका बांध ५०० गज और चौड़ाईका २५० गज है। 8 बारह गज पानीके ऊपर। 9 10 नालेकी गहराई ५० गज, जिसकी चौड़ाई १२ गज-पहाड़को काट कर निकाला गया है। 11 समय। 12 किसी बनजारेने उसे बंधवाया था। 13 ईशान और पूर्वके बीचकी दिशा। 14 राष्ट्रश्येना देवी। 15 पहाड़। 16 दोनों। 17 दर्रे। 18 चार मुंहों (द्वार) वाला। 19 मंदिरके शिखरके ऊपरका ध्वजदण्ड और कलश सोनेके हैं।

निजीक उदैपुर दिसा निजीक कुंड छै। एकलिंगजीथी निजीक[1] उदैपुर दिसा[2] कोस १ नागदहो गाव छै। नागदहा गांवरा उगवण वडो तळाव छै। पडिया-माजा घणा देहुरा छै[3]। नागदहाथी सीसोदिया नागदहा कहावै छै। इण गांव डणांरा वडेरा रह्या छै। तळाव उदैसागर उदैपुर सहरसूं कोस ३ उगवणानूं छै, दहवारीरी घाटीसूं निजीक। तळाव निपट वडो। कोस २० चोगिरद विसतार छै भरीजै तरै[4]। घोवूंदै कुंभलमेररै मगरांरो पाणी आवै। तिणरी नदी वेडच आवै छै, सु तळाव माहे आवै छै। थोडो वहुत पाणी वेडचमें सदा वहतो रहै छै नै तळाव उदैसागर दोळा चोगरद मगरा छै। पावडा २०० तथा २५० उदैसागररी पाळरो बंधेज छै। सिगळो[5] नाळो मोरीरुखो[6] सदा वहतो रहै छै। तळाव हेठै[7] पाणी नाळारो वहै छै, तिण ऊपर रांणै जगतसिंघरा कराया मोहल छै।

घाटी राहरी हकीकत[8]–

दहवारी घाटी सहरथी कोस ३ छै। केवडारी नाळ सहरसूं कोस १ कूंण रूपाराम[9] माहे छै। सहरसूं कोस ८ डूंगरपुर वासवाळा गुजरातरै पैडे[10] भाखर नाळ कोस ७ छै। केवडो गाव नाळारै पैले ढाळ छै[11]। दोना कानी भाखर छै। जावररी नाळ सहरसूं कोस ४ दिखणादनूं। चावडेरानूं पैडै। दीवाणरै विनाण[12] चावड मगरा छै। विखेरी मदार[13] इणा मगरा माथै छै। जावररी खाण रूपारी[14] रोज १ रु० ६००) तथा ५००) आवै। जसद, रूपो नीसरै[15] घोवूंदो कोस ९ आथूणनूं[16]। जीमणैरो[17] घाटनूं पैडो। समणोररो घाटो सहरती[18] कोस ३ ईशाण-कूंणनूं[19] मारवाडनूं घाटो। मायररो

---

1 एकलिंगके पास। 2 उदयपुरकी ओर। 3 टूटे-फूटे और बिना टूटे-फूटे अनेक मंदिर हैं। 4 तब। 5 समस्त। 6 जिधर मोरी है उस रुखमें। 7 नीचे। 8 वर्णन। 9 पूर्व और अग्निकोणके बीचकी दिशा। 10 मार्ग। 11 उस ओरकी ढलाईमें। 12 सङ्कटकालमें राणाके गुप्त रूपसे रहनेके लिये चावडके पहाड़ हैं। 13 आधार। 14 जावरकी चांदीकी खानसे ६००) व ५००) की आय होती है। 15 उसमेंसे चांदीके साथ जसद भी निकलता है। 16 पश्चिमकी ओर। 17 दहिनी ओर। 18 शहरसे। 19 ईशानकोण।

घाटो कोस १८ पंचाध-कूंणनूं[1]। आवड़-सावड़रा वडा मगरा छै। घाटारै ढाळ देहुरो राणपुरमे श्रीआदनाथजीरो सा धरणरो[2] करायो। वडो प्रसाद[3] छै। पहली अठै वडो सहर वसतो। ऊदा-कूंभावतारो वसायो। हमै तो[4] सहर सूनो[5] छै। रांणपुर आगे कोस तीन मादडी वसै छै। घाणेरारो[6] घाटो उदैपुरसूं कोस १९ वायव[7] कूंणमें, गढ कुंभलमेर निजीक। जिल्हवाड़ारो घाटो सहरथी[8] कोस २३। मानपुरैरो घाटो महरथी कोस ४० सारण उत्तरे।

गिरवारी हकीकत–

उदैपुररी गिरदवारी कोस ५। आगे गिरवो[9] कहीजै। गांव ५२ देवडारो उतन[10] छो। तिण माहे उदैपुर वसिया वे तूट गया[11]। हळखडसा[12] अजै[13] गांवा माहे छै।

च्यार-छपनरी[14] विगत–

उदैपुर कोस[15] छपनिया-राठोड़ांरो[16] उतन छै। अै छपनिया राठोड सोनगरा पोतरा। वडा भूमिया[17]। राणो उदैसिंघ इणांरै मेवाड वास तोडणनू हुवो थो[18], सु राणा प्रतापरी वार[19] माहे जाता तूटा। पिण छूटा-फूटा[20] छपनिया अजेस-ताई[21] छपनरा गावां माहे छै। मेवास[22] को नही।

च्यारै छपनरा गाव २२४–

५६ एक भाडोलरी लार[23]।

५६ एक सलूंबर लार।

---

1 उत्तर और वायव्य कोणके बीचकी दिशा। 2 शाह धरणका बनवाया हुआ राणपुरमें आदिनाथजीका मंदिर। 3 बडा मंदिर है। 4 अब तो। 5 खाली। 6 घाणेराव नामक गांव। 7 वायव्य कोण। 8 से। 9 उसके पूर्व गिरवा कहलाता था। 10 जन्म-भूमि। 11 उदैपुर बसा तब वे टूट गये। 12 हल चला कर कृषि पर निर्वाह करने वाले (कृषक)। 13 अब भी। 14 राठोड़ोंके छप्पन-छप्पन गांवोंके चार समूह। 15 कोसोंकी संख्या मूल प्रतिमें नहीं है। 16 चार समूह वाले छप्पन-छप्पन गांवोंमें रहने वाले राठोड़ राजपूत, जो अब भी छपनिया राठोड़ भी कहलाते हैं। 17 बड़े जागीरदार। 18/19 राना उदयसिंह इनका मेवाड़में रहना उखाड़नेको तत्पर हुआ था सो राना प्रतापके समयमें ये टूटे। 20/21 फिर भी छूटे-फुटे छप्पनिये अभी तक इन छप्पनके गांवोंमें हैं। 22 छिपे हुए रह कर लूट-खसोट करनेकी स्थितिमें कोई नहीं है। 23 छप्पन गांवोंका एक समूह भाडोल गांवके अन्तर्गत।

५६ सैवरारी लार।

५६ चावँड लार।

उदैपुरसूं इतरै[1] कोसे[2] अै सहर छै–

२९ चीतोड़। ४० सोझत।
२० कुंभलमेर। ९० अहमदावाद।
३५ सीरोही। ४५ ईडर।
३० डूंगरपुर। ४० देवळियो।
५२ मनंदसोर[3]। ३५ जोजावर।
४० मीमच[4]। २० कपासण।
२० तांणो। १७ मोही।
६७ जोधपुर। ६० मेडतो।
५० जाळोर। ६० मालपुरो।
६५ अजमेर। ४५ वधनोर।
३० वांसवाळो। ९० उजेणसूं अजमेर[5]।
४५ मांडलगढ। ५० बूंदी।
३५ करहेडो। १२ घोघूंदो।
११ ऊंटोळाव[6]।

चीतोडसूं इतरा[7] सहर इतरै कोसे–

२९ उदैपुर। ४० बूंदी।
४० गढ रिणथंभोर। १३ पुर।
३५ बधनोर। ५० वांसवाहळो।
२४ कोठारियो। २७ दसोर[8]।
२५ फूलियो। ६० उजेण।
१७ मांडलगढ। ६७ मेडतो।
१५ वेघम। १७ माडल।
७० ईडरगढ। ३० देवळियो।

1 इतने। 2 कोसों पर। 3 मंदसोर। 4 नीमच। 5 उज्जैन हो कर अजमेर ९० कोस। 6 ऊंठाला। 7 इतने। 8 मंदसौर।

१५ मीमच[1] । ५७ मूळपुरो[2] ।

४५ मिरवाड ।

दीवांणरी हद, कोसां, दिसावारी विगत–

मारवाड़ कूंण-वायव[3] । उत्तरथा डावी[4] । अजमेरसूं कोस ६०, व्यावर राणारी । समेळ खालसा[5] अजमेररी । मानपुरारो घाटो[6] । मारण घाटावळ[7] । जाजपुरसूं हद लागै[8] ।

रामपुरासूं कोस ४५ तथा ५० हद । उगवणथा कूंण जीवणी दिस गाव जारोडो रांमपुरारो[9] ।

देवळियासूं कोस ४२, दखणरी डावी तरफ[10] दीवाणरो गाव धीरावद नै[11] आगै देवळियो कोस ५ विचै छोटो गांव भैसरोड़ दीवाणरी[12] ।

बूंदी कोस ६५ तथा ७० उगवण[13] था[14] क्यूंई[15] डावेरी[16] दसोर दिसा[17] हद । कोस २५ तथा २७ दिखणथा डावेरी रूपारास[18] नीमच दीवाणरी । लिखमड़ी दसोररी ।

डूंगरपुर वासवाळा बीच भीड़वाड़ो मूंडूलो गांव दीवांणरो छै । डूंगरपुरसूं हद कोस १९ दिखण खरक[19] दिसा ।

सोमनदी सीव कोस १९ । सलूंबर, सेवाडी, आसपुर, ईडरसूं कोस ३० खरक कूंण मांहे । पानोरो भीलारो मेवास, दीवांणरा थको छै[20] । गाव छाळी-पूतळी राणारी । दलोल ईडररो । डूंगरपुर वासवाहळा बीच गाव जवाछ भीलांरो मेवास छै, सु दीवांणरा थका छै ।

---

1 नीमच । 2 मालपुरा । 3 वायव्य कोणकी ओर मारवाड़ । 4 उत्तरसे बाईं ओर । 5 समेल । अजमेरके अंतर्गत बादशाही गाव है । 6 दर्रा । 7 बड़ा दर्रा । 8 जहाजपुरको सीमा लगती है । 9 पूर्वसे दाहिनी ओर रामपुरेका जारोडा गांव । 10 दक्षिणकी बाईं ओर । 11 और । 12 धरियावद गांवके आगे देवलिया ५ कोस, उसके बीच छोटा गांव भंसराडगढ़ जो दीवानका (महाराणाका) है । 13 पूर्व दिशा । 14 से । 15 किंचित् । 16 बाईं ओर । 17 ओर । 18 एक गांवका नाम (मारवाड़की १६ दिशाओंमेंसे 'रूपारास' एक दिशा भी है जो आग्नेय और पूर्व दिशाके बीचमें है) । 19 मारवाड़की १६ दिशाओंमेंसे एक दिशा जो वायव्य और पश्चिम दिशाके बीचमें है । 20 भीलोंकी रक्षाका (गुप्त) स्थान 'पानोरा' जो दीवाणका (महाराणाका) है ।

सीरोहीसूं हद कोस २५ आथुण[1] दिसा ।

वांसवाहळो उदैपुरसूं कोस ४० वीच डूंगरपुर । कांकड[2] नही ।

उदैपुरसूं कोस ५० ईडर । इण मारग[3]–

९ उदैपुरसूं सीगड़ियो । ३ चंदवासो । ४ आहोर । ७ भीमरो ओगो (गोडो) । ७ पानोरो भीलांरो । ९ छाळी पूतळी रांणारी । ३ दलोल कलोल ईडररी । ९ ईडर ।

उदैपुररी हवेलीरा[4] गाव निजीक[5] तिणरो[6] हैसो[7] भोगरो[8] वरसाळी[9]-हैसो ३ लाग सूधो[10] आवो । ऊनाळी[11]हैसो ३ आध पडै ।

वात–

कछवाहो मानंसिघ कवरपदै[12] । अकवर पातसाह गुजरात मेलीयो छौ[13] । तद चीतोड़धणी प्रताप छै । सु राणेजी मांनसिंघ कनै[14] सोनगरो मानसिंघ अखैराजोत, डोडियो भीव[15] सांडावत मेल्नै हळभळ कराई हुती[16] । मु मानसिंघ कछवाहो पाछो वळतो[17] डूंगरपुर आयो । उठै[18] रावळ सैसमल मेहमानी करी[19] । उठाथी[20]सलूंबर आयो । तरै सीसोदिये रावत खंगार रतनसीयोत मेहमांनी करी । रांणोजी तद घोघूंदै रहै छै । रावत खंगार मांनसिघरी रीत-भांत दीठी[21] । प्रकत एकण भांतरी छै[22] । मु रांणाजीनू कहाड़ियो[23]–'राज! मांनसिंघसूं मत मिळो । ओ एकण भातरो आदमी छै ।' रांणो वरजियो रह्यो नही[24] । आय मिळियो । मेहमानी करी । जीमण पगा[25] विरस[26] हुवो । तद मानसिंघ दरगाह गयो । राणा ऊपर मुहम

---

1 पश्चिमकी ओर । 2 सीमा । 3 उदैपुरसे ईडर जाते समय निम्न प्रकार गाँव अंकित संख्याकी दूरीसे मार्गमें आते हैं । 4 निजी । 5 समीप । 6 जिसका । 7 हिस्सा । 8 कृषककी ओरसे (खेत भोगनेके उपलक्षमें) खेतके स्वामीको दिया जाने वाला अन्नके रूपमें अमुक परिमाणमें निश्चित किया हुआ एक कर । 9 खरीफ (बरसाती या सावनू) फसलका भाग । 10 सहित । 11 रबी (वसंत ऋतु) की उपजका भाग । 12 कुमार-पद पर । 13 भेजा था । 14 पास । 15 डोडिया शाखाका क्षत्रिय साडाका पुत्र भीम । 16 तैयारी कराई थी । 17 पीछे लौटना । 18 वहाँ । 19 भोजन आदिसे सन्मान किया अतिथि-सत्कार किया । 20 वहासे । 21 तौर-तरीका, चालढाल । 22 प्रकृति एक निराल ही ढगकी है । 23 कहलवाया । 24 मना करने पर भी माना नहीं । 25 भोजनके कारण । 26 मनोमालिन्य ।

१५ मीमच[1] । ५७ मृळपुरो[2] ।

४५ मिरवाड ।

दीवाणरी हद, कोसां, दिसावारी विगत–

मारवाड कूंण-वायव[3] । उत्तरथा डावी[4] । अजमेरसूं कोस ६०, व्यावर राणारी । समेळ खालसा[5] अजमेररी । मानपुरारो घाटो[6] । मारण घाटावळ[7] । जाजपुरसूं हद लागै[8] ।

रामपुरासूं कोस ४५ तथा ५० हद । उगवणथा कूंण जीवणी दिस गाव जारोडो रामपुरारो[9] ।

देवळियासूं कोस ४२, दखणरी डावी तरफ[10] दीवाणरो गाव धीरावद नै[11] आगै देवळियो कोस ५ विचै छोटो गांव भैंसरोड़ दीवाणरी[12] ।

वूंदी कोस ६५ तथा ७० उगवण[13] था[14] क्यूंई[15] डावेरी[16] दसोर दिसा[17] हद । कोस २५ तथा २७ दिखणथा डावेरी रूपाराम[18] नीमच दीवाणरी । लिखमडी दसोररी ।

डूंगरपुर वासवाळा बीच भीडवाडो मूंडूलो गांव दीवांणरो छै । डूंगरपुरसूं हद कोस १९ दिखण खरक[19] दिसा ।

सोमनदी सीव कोस १९ । सलूंबर, सेवाड़ी, आसपुर, ईडरसूं कोस ३० खरक कूंण माहे । पांनोरो भीलांरो मेवास, दीवांणरा थको छै[20] । गाव छाळी-पूतळी रांणारी । दलोल ईडररो । डूंगरपुर वासवाहळा बीच गांव जवाछ भीलांरो मेवास छै, मु दीवांणरा थका छै ।

---

1 नीमच । 2 मालपुरा । 3 वायव्य कोणकी ओर मारवाड । 4 उत्तरसे बांई ओर । 5 समेल । अजमेरके अतर्गत बादशाही गांव है । 6 दर्रा । 7 बड़ा दर्रा । 8 जहाजपुरको सीमा लगती है । 9 पूर्वसे दाहिनी ओर रामपुरेका जारोडा गाव । 10 दक्षिणको बांई ओर । 11 और । 12 धरियावद गांवके आगे देवलिया ५ कोस, उसके बीच छोटा गांव भंसरोडगढ जो दीवानका (महाराणाका) है । 13 पूर्व दिशा । 14 से । 15 किंचित् । 16 बांई ओर । 17 ओर । 18 एक गांवका नाम (मारवाडकी १६ दिशाओमेंसे 'रुपारास' एक दिशा भी है जो आग्नेय और पूर्व दिशाके बीचमें है) । 19 मारवाडकी १६ दिशाओमेंसे एक दिशा जो वायव्य और पश्चिम दिशाके बीचमें है । 20 भीलोंकी रक्षाका (गुप्त) स्थान 'पानोरा' जो दीवाणका (महाराणाका) है ।

सीरोहीसूं हद कोस २५ आथुण[1] दिसा ।
वांसवाहळो उदैपुरसूं कोस ४० वीच डूंगरपुर । काकड[2] नही ।
उदैपुरसूं कोस ५० ईडर । इण मारग[3]–

९ उदैपुरमूं सीगड़ियो । ३ चंदवासो । ४ आहोर । ७ भीमरो
ओगो (गोडो) । ७ पानोरो भीलांरो । ९ छाळी पूतळी
रांणारी । ३ दलोल कलोल ईडररी । ९ ईडर ।

उदैपुररी हवेलीरा[4] गांव निजीक[5] तिणरो[6] हैंसो[7] भोगरो[8] वरसाळी[9]-हैंसो ३ लाग सूधो[10] आधो । ऊनाळी[11]हैंसो ३ आध पड़ै ।

वात–

कछवाहो मानसिघ कवरपदै[12] । अकवर पातसाह गुजरात मेलीयो छौ[13] । तद चीतोड़धणी प्रताप छै । मु राणेजी मांनसिंघ कनै[14] सोनगरो मानसिंघ अखैराजोत, डोडियो भीव[15] सांडावत मेलनै हळभळ कराई हुती[16] । सु मांनसिंघ कछवाहो पाछो वळतो[17] डूंगरपुर आयो । उठै[18] रावळ सैसमल मेहमांनी करी[19] । उठाथी[20]सलूंबर आयो । तरै सीसोदिये रावत खगार रतनसीयोत मेहमानी करी । राणोजी तद घोघूंदै रहै छै । रावत खंगार मांनसिघरी रीत-भात दीठी[21] । प्रकत एकण भांतरी छै[22] । मु रांणाजीनूं कहाडियो[23]–'राज! मानसिंघसूं मत मिळो । ओ एकण भातरो आदमी छै ।' रांणो वरजियो रह्यो नही[24] । आय मिळियो । मेहमानी करी । जीमण पगा[25] विरस[26] हुवो । तद मानसिघ दरगाह गयो । राणा ऊपर मुहम

1 पश्चिमकी ओर । 2 सीमा । 3 उदैपुरसे ईडर जाते समय निम्न प्रकार गाँव अंकित संख्याकी दूरीसे मार्गमें आते हैं । 4 निजी । 5 समीप । 6 जिसका । 7 हिस्सा । 8 कृषककी ओरसे (खेत भोगनेके उपलक्षमें) खेतके स्वामीको दिया जाने वाला अन्नके रूपमें अमुक परिमाणमें निश्चित किया हुआ एक कर । 9 खरीफ (बरसाती या सावनू) फसलका भाग । 10 सहित । 11 रबी (वसंत ऋतु) की उपजका भाग । 12 कुमार-पद पर । 13 भेजा था । 14 पास । 15 डोडिया शाखाका क्षत्रिय सांडाका पुत्र भीम । 16 तैयारी कराई थी । 17 पीछे लौटना । 18 वहाँ । 19 भोजन आदिसे सन्मान किया अतिथि-सत्कार किया । 20 वहांसे । 21 तौर-तरीका, चालढाल । 22 प्रकृति एक निराले ही ढंगकी है । 23 कहलवाया । 24 मना करने पर भी माना नहीं । 25 भोजनके कारण । 26 मनोमालिन्य ।

मांग लीधी[1] । घोड़ा ४०००० रे ऊपर आयो । निजीक आया तठै दुरदास परबतसिंघरो पूरवियो नै सीसोदियो नेतो भाखरोत बे[2] वांसै[3] मेलिया था[4], मु मानसिंघरो डेरो बनास ऊपर गांव मोळेळा हुवो छै । नै रांणारो डेरो लोहसिंगे हुवो छै। उदैपुरसूं कोस ९ उत्तरनू । कोस ३ रो बीच छै । तद मांनसिंघ सिकार-रमतो[5] असवार हजार १००० राणारा डेरासूं कोसेक[6] आयो नै आपरो[7] डेरो कोस २ इक[8] वांसै रह्यो, तरै[9] इण दावमूं दीठो[10] । वडी घातमें आयो[11] । राणानू जाय कह्यो "वेगा हुवो[12], ज्यूं बैठा छौ त्यूं चढो[13] । मानसिंघ वडी घातमें[14] । चाळीस हजार घोड़ा वांसै मेल-नै हजार असवारमूं आयो । रावळो वडो भाग[15] । केई मार लांछां केई भाज जाय छै[16] ।" तद रांणेजी चढणरी तयारी करी । पण भाले बीदे चढण न दिया। सवारै[17] खंभणोर बनासरै ढाहै[18] वेढ[19] हुई । रांणा कनै असवार हजार ९००० तथा दस हुता । कछवाहै वेढ जीती । राणे हारी । इति संपूर्ण ॥

अथ मेवाडरा भाखरारी[20] वात लिख्यते—

रूपजी-वासरोड[21] देसरै फळसै[22] छै । रूपजीसूं कोस ३ जीलवाळो दिखणनू[23] छै। जीलवाळाथी कोस ३ रीछेर उगवणनूं छै। रीछेर बाघोरारी खांभ[24] छै । जीलवाडा नै रीछेर वीच अमजमाळरो वडो भाखर छै । लांबो कोस ५ छै । उलै-कांनी[25] कैलवो छै। बाघोररै आगै घाटो गाव छै। तठा आगै[26] भोरड़ारो पहाड लांबो कोस ५ उत्तर-दिखण छै । तठै भोरड़ नै मछावळा वीच

1 सेना मांग कर ली। 2 दोनोंको । 3 पीछे । 4 भेजा था । 5 शिकार खेलता हुआ । 6 कोस भर निकट आ गया । 7 अपना (उसका) । 8 दो कोस भर । 9 तब । 10 दुरसदासने देखा कि मानसिंह अच्छे दावमें आ गया है । 11 आक्रमण कर दें ऐसी स्थितिमें आ गया है । 12/13 शीघ्रता करो । जैसे बैठे हो वैसे ही चढ़नेकी तैयारी करो । 14 मानसिंह बड़ी घातमें आ फँसा है । 15 श्रीमान्का बड़ा भाग्य । 16 कइयोंको मार लेंगे और कई भाग जाते हैं । 17/18/19 दूसरे दिन प्रातःकाल खमनोरके पास बनास नदीके तट पर युद्ध हुआ । 20 पहाड़ोंकी । 21/22 रूपजी-वासरोड मेवाड़ देशकी सीमा-द्वार पर स्थित है । 23 को । 24 पर्वतकी मोडमें आया हुआ है । 25 इस ओर । 26 वहांसे आगे ।

समीचो गांव कूंभावतां सीसोदियांरो उतन छै । उदैपुरसूं समीचो कोस १७, रूपजीथी कोस १२ छै । कूंभळमेरसूं कोस १० समीचो छै । तठा आगै मछावळो पहाड़ कोस ७ लांबो छै । गांव ९ मछावळा दोळा[1] छै–१ समीचो । १ मदार । १ मचीद । १ मदारड़ो । १ वरदाड़ो । १ वरणो । १ गमण । १ ओरूं । मछावळा ऊपर पांणी घणो । झाड़[2] घणा । वेरणी नावै[3] । तठा आगै वरवाड़ो । तठासूं वर नदी नीसरी छै । बनास नीसरी छै[4] । तठा आगै घांसेररो मगरो कोस १ लांबो छै । तठा आगै पीडरझांपरो मगरो छै । घांसेर नै पीडरझांप वीच झांसनाळो कोनरो कोस २ छै । तठा आगै खमणरो मगरो छै । तठै लोहसीग गांव छै । तठै एक छोटी-सी नदी नीसरी छै । खमणरो मगरो उत्तर दिखण कोस २ छै । तठा आगै ईसवाळरो मगरो छै । कड़ी गांव वसै[5] छै । गिरवारा भाखरांसू जाय लागो छै । ईसवाळ उदैपुरसूं कोस ५ उत्तर पछिमनू छै । जीलवाड़ाथी कोस ५ देसूरी । देसूरीथी कोस १ घांणेरो[6], कुंभळ-मेररी तळेठी[7] तठै । आगै कोस २ कुंभळमेररो पहाड़ कोस १५ री गिरदवायमें[8] छै । सादड़ी, रांणपुर, सेवाड़ी तांई[9] कुंभळमेररो मगरो छै । सेवाड़ी कुंभळमेरसूं कोस ७ छै । तठा आगै राहगरो मगरो छै । निपट वडी ऐदी[10] ठोड़ छै । पांणी पहाड़ मांहे निपट घणो छै । गांव २५ राहग दोळा वसै छै । राहग कोस १६ लांबो छै । रांणारै विखो[11]विनांण रहणनू वडी ठोड़ छै । राहग सीरोहीरा सरणउआरै मगरै जाय लागो छै । राहग कोस १५ लांबो, कोस १५ पनरै पहळो[12] छै । कोस ३० री गिरदवाई छै । गांवां रैत[13]– सीरवी[14], वांभण[15], वांणीया[16] वसै छै । गांवांरी विगत –

भाटोद, भूणोद, माल्हणसू, नाँणो, वेहड़ो, पाद्रोड़, पीडवाड़ो सिरोहीरो । वेकरीयारो घाटो । जूही नदी उठै छै । राहग वालीसांरो

1 चारों ओर । 2 वृक्ष । 3 वर्णन करनेमें नहीं आवै । 4 जहासे वर और बनास नदियें निकली है । 5 बसा हुआ है । 6 घाणेराव । 7 तलहटी । 8 विस्तार में 9 । तक । 10 अत्यन्त विकट स्थान है । 11 सुरक्षाके लियें संकट कालमें । 12 चौड़ा । 13 प्रजा । 14 एक कृषक जाति । 15 ब्राह्मण । 16 वनिये ।

उतन[1] । जरगा नै राहग वीच आ ठोड़ देसेहरो देस कहीजै । उणां गांवां रजपूत, सांसण[2] वसै छै । खरवड़, चंदेल, वोडांणा, चांदण वसै छै । रैत ज्यूं भोग दै[3] । चावळ, गोहूं[4], चिणा, उड़द घणा नीपजै । आंबा छै । विचली-पाख[5] मछावळा नै जरगा वीच कुहाड़ियो नळो[6] कहीजै छै । उदैपुरसू कोस २० छै । कुहाड़ीयो नळो कोस १० लांवो छै । कळूंझो रेवली उठै गांव छै । जरगो कुहाड़िया नळासू जीमणो छै । जरगारी पैली-कांनी[7] केलवाड़ो नै दिखणनू रोहिड़ो गांव छै । केलवाड़ाथी कोस ९ रोहिड़ो छै । दोळा-दोळा[8] जरगारा गांव छै । ऊपर–१ सायरो । १ आंतरी । १ गुढो । १ काकरवो । १ कीसेर । १ गूदाळी । जरगा ऊपर राजा हरीचंदरी थापी गुसाईरी पादुका छै[9] । तठै त्रिसूल छै । जरगा ऊपर पांणी घणो । तठा आगै नाहेसर भाडेरेरा मगरा कोस सात ७ रोहिड़ासूं छै, सु रोहिड़ासू लागे छै । धरती निपट बांकी[10] । गाव अठै घणा छै । मेवाड़ सीरोहीरी कांकड । नै[11] मारग पिण सीरोहीनै[12] उदैपुरसू जाय । गांव–१ ढोल, १ कमोल, १ सीघाड़, १ बोखड़ा । घोघूद भाखर उलै-कांनै [13] भाडेरथी कोस ४ उरै पूरवनू । गाव दिखणनूं–गांव अठै पार-वाहिरा[14] छै । श्रै निपट[15] वडा मगरा । टगरावती, झड़ोलरा मगरा, गढ आहोररा मगरा, नाहेसररा मगरा,

---

1 नियास, ठिकाना । 2 सांसण (शासन) = साधु ब्राह्मण आदिको किसी राजा या जागीरदारकी ओरसे प्रायः उसकी मृत्युके समय संकल्प करके दानमें दिये हुए खेत या ग्राम आदि जिन पर उनका निजी शासन रहता है और उनसे किसी भी प्रकारका कर नहीं लिया जाता है । किन्तु यहा 'सासण' शब्द दानमें दी हुई भूमिके अर्थमें व्यवहृत नहीं हुआ है । इस प्रकारकी भूमिके भोक्ताओंसे तात्पर्य है । मंदिर, मठों आदिका पूजा आदि प्रबंध निरतर चलते रहनेके निमित्त एवं चारण, भाटों आदिकी काव्य रचनाओं पर भेंट स्वरूप दी जाने वाली भूमि या ग्राम भी 'सांसण' कहलाते हैं । कहीं-कहीं 'शासण' और डोंसोलो, किंचित् अंतर होते हुए भी एक ही मानने है । 3 खरवड़, चंदेल आदि राजपूत जो यहा रहते हैं (उन्हें राजपूत होनेके नाते कोई मुआफी नहीं है) साधारण प्रजाकी भांति भोग आदि कर देते हैं । 4 गेहूं । 5 मध्य-पार्श्वमें । 6 नाला । 7 उस ओर । 8 चारों ओर, आसपास । 9 जरगा पहाड़के ऊपर राजा हरिश्चन्द्र द्वारा स्थापित गुसाईंकी चरण-पादुका है । 10 विकट । 11 और । 12 को । 13 इस ओर । 14. अपार । 15 अत्यन्त ।

पनोरा भाडेरा मगरा, पई-मथारारा मगरा, देवहररा मगरा। इणाँ आगै मांणचरा मगरा कोस १५ खरक मांहे। भील वसै।

इणाँ-आगै[1] ईडर दिसा[2] गंगादासरी सादडीरा मगरा, भील वसै। इणां आगै छाळी-पूतळीरा मगरा, दलोल कलोलरा मगरा ईडरसू कोस ७ उरै। डूंगरपुर नै देव गदाधर वीच जवाछरा मगरा छै। भील वसै। ईडर डूंगरपुरसू कोस १० छै। पीपळहड़ी सीरोड़रा मगरा, छपन चावड नै जवाछ, जावर वीच उदैपुरसू कोस १७। चावळ, गोहूं हुवै। झाड़, पाहाड़ घणा छै। सूरज दीसै नहीं। बारबरड़ांरा मगरा, भील वसै। चावळ, गोहूं ऊपजै। आंवा फूलाद[3] घणो। तठा आगै डूंगरो[4] देस छै। डूंगरपुरसू डावो[5] वांस-वाहळौ छै। वांसवाहळाथी[6] देवळिया वीच मेवाड़रा गांव छपनरा जांनो,[7]जगनेर[8] छै। सु[9] देस मूडल[10] कहीजै। गांव धीरवद वडवाळारो परगनो छै। अठै वडा भाखर छै। घणा झाड़ छै। राठोड़ छपनिया अर चहवांण वसै छै। तठा-उरै[11] धीरवदथा आथुणनू मेवलरा मगरा छै। तठै अै गांव छै –

१ सलूवर। चूडावताँरो उतन।

१ बाहरड़ो। सलूवरथी १२।

१ बांभोरो। सारंगरो। सारंग देओतांरो[12] उतन।

वाहरड़ा सलूवर वीच वडा पाहाड़ छै। बाहरड़ाथी कोस ३ उदैसागर आथवणनू छै।

उदैसागरसू कोस १ दहवारी छै।

दहवारीथी कोस २ आहाड़ छै।

आहाड़थी कोस १ उदैपुर छै। पीछोलारी पाळ मोहल[13] छै। उदैपुरसू कोस ५ सीगड़ियारो भाखर पछमनू[14] छै। वडो मगरो छै। तठा आगै धाररो पाहाड़ कोस ३ उदैपुरसूं छै। लाखाहोळी

---

1 इनके आगे। 2 ओर। 3 पुष्पों वाले वृक्ष पौधे आदि। 4 डूंगरपुरका। 5 बांया। 6 से। 7/8 गांवोंके नाम। 9 वह। 10 मण्डल ? 11 जहांसे इस ओर। 12 सारंगदेवके वंशजोंका। 13 महलमें। 14. पश्चिममें।

उतरनूं छै । तठै चीरवारो घाटो उतरनूं छै । आंबेरी गांव छै । चीरवाथी[1] कोस २ एकलिंगजी छै । उदैपुरसूं कोस ५ एकलिंगजी छै ।

एकलिंगजीसूं कोस १ राठासणरो मगरो छै । कोस २ गिरदवाई छै । पांणी नहीं ।

एकलिंगजीसूं कोस १ झालांवाळो देलवाड़ो छै ।

देलवाड़ाथी कोस ७ कोठारियो चहुवांणारो[2] छै । उदैपुरसूं कोस १२ छै । अठै देलवाड़ा कोठारिया बीच सहलसा[3] मगरा छै ।

कोठारियासूं-उगवणनूं मेवाड़रो मंझ[4] देश चौड़ो छै ।

कोस २५ चीतोड़ कोठारियासूं छै, उगवणनूं ।

चीतोड़थी कोस १ अरवणरा मगरा मोटा छै । पिण ऊपर पांणी नहीं । नै अरवणरा मगराथी कोस २ पठार[5] छै । भाखर ऊपर गाव छै । तिकां[6] गांवांरी विगत–

पठाररा गांव–

४४ खैरवरा । रैत गूजर, बांभण ।

८४ रतनपुररी चोरासी[7], चूडावतांरी ठोड़ । गोहूं, चिणा नीपजै[8] ९४ वेघमरो बडो मुलक । वडी पनवाड़ी । गोहूं, चिणा नीपजै । चूडावतारी ठोड़ ।

वेघमथी कोस ७ बीझोली पँवार इंद्रभांणरी ।

महीनाळ तीरथ मांडलगढथी कोस ७ बीझोली । गाँव २४ ऊपरमाळरा छै ।

बीझोलीथी कोस ९ भैसरोड़गढ । वडा भाखर छै ।

भैसरोडथी कोस ९ कोटो । पळाइतो[9] हाडांवाळो छै ।

भैसरोडथी कोस १ बूंदी छै ।

---

1 मे । 2 चौहानों । 3 थोड़ी और छोटी पहाड़ियें हैं । 4 मध्य । 5 पहाड़की ऊपरी समतल भूमि । 6 उन । 7 ८४ गांवो वाले एक प्रान्तको 'चौरासी' कहा जाता है । 8 उत्पन्न होते हैं । 9 हाडा शाखाके चौहानोंका पलाइता गांव है ।

भैंसरोडथी कोस ४ रिख-विसळपुर मेवास[1] छै । भील वसै छै । भैंसरोड पंचळदेस[2] । गांव २५ लागै । गांव बारै हवेलीरा[3] भैंसरोडसूं लागै ।

तठा-आगै[4] गांव ४५ कूंडाळरा । मोहिल-मांकड़ारो परगनो कहावै छै[5] । उदैपुरथी कोस ५० ।

भैंसरोडसू कोस २० रांमपुरो । दखणनूं कोस १२ ताँई[6] रामपुरै दिसा भैंसरोड़री हद छै । भैंसरोड हेठै[7] चांमळ[8] नदी वहै छै । तीन नदी भैंसरोडरा कोट दोळी फिरै छै । भैंसरोड कोट १ भींतरो छै । बीजो खाई गढरै आकार पड़ गई छै[9] । घर ४०० कोट मांहे वसै छै।

नदी तीनरी विगत–१ चांवल[10] । १ वांभणी[11] । १ पगधोई ।

मेवळ मेरांरी[12] नै पटे बंभारारै[13] । मांहे सीसोदिया सारंग-देओतांरो उतन । इणांरो[14] एक छेह[15] उदैपुरथी कोस ६ उदैसागररै नाळै हद । बीजो[16] छेह देवळियाथी कोस ३ वडो मेरवाड़ो हुतो[17] । बूरड़, बरगड़, बुजमा, लड़मर, इणां[18] जातांरा मेर गांव १४० मांहे रहता, सु एक वार रांणै जगतसिंघ काढिया हुता[19] । पछै झाले कल्यांण अरज कर नै उरा अणाया[20] । हमार[21] रांणै राजसिंघ मेर परा काढ नै[22] सिगळा[23] गांवामे सीसोदिया, चूंडावत, सकतावत, रांणावत, वसीयां[24] सूधा[25] वसाया छै । नै मेर देवळियांरै मेरवाड़े गया । विगाड़ करै छै । देवळियानै मेवल बीच मूंडळरो मुलक कहावै छै । मुदै[26] ठोड़ धीरावद, तठै[27] ही मेर वसता । रैत हुवा चालता के[28] मेवासी हुवा चालता ।

---

1 वीसलपुर वालोंका 'रिख' नामक मेवास (लुटेरोंका रक्षा स्थान) भैंसरोडसे चार कोस पर स्थित हैं । 2 पाञ्चाल देश । 3 राजा व जागीरदारकी निजी सम्पत्तिके । 4 वहांसे आगे । 5 कहलाता हैं । 6 तक । 7 नीचे । 8 चम्बल । 9 गढीके समान एक दूसरी खाई बन गई हे । 10 चंबल । 11 ब्राह्मणी (ब्रह्मणी) 12/13 मेवल मेर-क्षत्रियोंकी और बंभाराकी जागीरोमें । 14 इनका । 15 छोर । 16 दूसरा । 17 था । 18 इन । 19 निकाल दिया था । 20 पीछे कल्याणसिंह झालाने अर्ज करके वापिस बुलवा लिया । 21 अभी । 22 निकाल करके । 23 समस्त । 24 वसीवान, जागीरदारके कामदार आदि वे लोग जिनसे किसी प्रकारका टॅक्स नहीं लिया जाता हैं । नाई, कुम्हार आदि कई जातियां भी जागीरोमें वसीवान होती हैं । 25 सहित । 26 मुख्य स्थान धीरावद 27 । वहां ही । 28 कई ।

गांव १४० लागै । मु रांणै राजसिंघ परा काढ नै रजपूत सारंगदेओत वसाया छै । पिण उठै पांणी घणो लागै छै[1] । न वसै[2] ।

नाहेसर भील धणी[3] । वडा स्यांमधरमी[4] । रांणारै चाकर छै । वडेरा रावत कहावै[5] । हमार रावत नरसिंघदासरै मुदै[6] छै । भाखररो नांव नाहेसर छै । मुदै ठोड़रो नांव गांव जूड़ो । परगनो पिण जूड़ारो कहावै छै । उदैपुरसू कोस २५ घोघूंदै लगतो छै । सीरोहीरा भीतरोठ लगतो उगवण दिसा नाहेसर । उलै ढाळ[7]नै आथुण दिसा भाखररै ढाळ सीरोहीरो भीतरोठ[8] छै । अबावथी कोस १० तथा १२ नाहेसररा गांव ९०० री केहवत[9] छै । धरती मांहे रैत भील, कुळबी[10], वांणीया, गूजर रहै छै ।

एक भाखर भाडेररो । कोस १० लांबो, कोस २ पहुळै[11] । नाहेसर कोस १२ लांबो, पैनै[12] कोस २ । तिण बीच जूडारो मुलक । गांव १ वांसै[13] वीघा ५०० तथा ७०० खेती लायक । बीजी[14] धरती भाखरां हेठै । झाड़ - आंबा, रांयण[15] पिण आंबली झाड़ घणा । धांन साळ[16], गोहूं, चिणा, मकी, उड़द घणा नीपजै । वालरण-काकड़ी[17] घणी नीपजै । दीवांणरै नास-भाज विखानू[18] वडी ठोड़ इतरी[19]–

इतरा गांवां मांहे–

९०० नाहेसर, नरसिंघदासजी ।

२० पनोर, रांणो दायाळदास भील ।

९४ गंगादासरी सादड़ी, गंगादासरा पोतरा[20] छै ।

१४० झाड़ोली, टगरावटी । भील रैत थका रहै छै[21] । पटै झालांरै[22] ।

---

1 परन्तु वहांका पानी अधिक लगने वाला (अस्वास्थ्यकर) है । 2 अतः वहां नहीं रहते । 3 नाहेसरका स्वामी भील । 4 स्वामीभक्त । 5 मुख्य वयोवृद्ध रावत कहलाता है । 6 अभी प्रमुख रावत नरसिंहदास भील है । 7 इस ओरके उतारमें । 8 सिरोही राज्यका एक प्रान्त । 9 कहे जाते हैं । 10 कलबी एक कृषक जाति, पटेल । 11 चौड़ाईमें । 12 चौडा । 13 पीछे, लिये । 14 दूसरी । 15 खिरनीका वृक्ष । 16 लाल चावल, शालि । 17 एक प्रकारकी ककडी जो अम्लरहित और लंबी होती है; वालम वा वालण ककड़ी । 18/19 विपत्तिके समय महाराणाके भाग कर जानेके लिये इतने सुरक्षाके बड़े स्थान हैं । 20 पौत्र । 21 भील प्रजाकी स्थितिमें रहते हैं । 22 झाला राजपूतोंकी जागीरोंमें ।

२५ छाळी-पूतळी । ईडररी कांकड़ दलोल-कलोससू लागै ।

२५० जवाच । भील रहै । डूगररै पूठवाड़ै[1] भील खंगार भगारो रहै छै । कोस १५० मांहे भील छै ।

बनास नदी नीसरी[2] तैरी[3] हकीकत –

जरगारा भाखरथी नीसरी । तिको[4] जरगो उदैपुरसूं कोस २९ छै । उठाथी[5] रोहिड़ै गांव आवै । जको राजा हरचंदरो वसायो छै । उठाथी कोस २ गांव वरवाड़ो मेवाड़रो तठै[6] आवै । आगै कठाड़ गांव मदाररै गांव माछमें नै घांसाररै मगरे बीच नीसरै नै कांम-सकराही गांव वसै छै तठै आवै । उठाथी खमणोर आवै, उदैपुरथी कोस १२ । उठाथी कोठारिये आवै । तठा आगै गांव मोही तुंवराताळे आवै । तठा आगै गाव कुराज आवै । तठा आगै मीरमी पहुमै[7] आवै । उठा आगै गांव छाकरलो[8] पुररो छै । पुरसू कोस ६ आगै मांडळगढरै आकोले आवै । उठा आगै जावद-नंदराय बीच नीसर नै गाव चीहळी आवै, उठै चोलेररो पारसनाथ छै । उठा आगै पाड़लोळी जाजपुररो गाव छै, तठै आय नै जाजपुर आवै । तठाथी[9] सावड़रै गाव देवळी आवै । आगै डावर तोडारै[10] गाव आवै, तठै खारी[11] वधनोर वाळी भेळी हुई । आगै तोडाथी कोस ४ गोकर्ण राह छै[12] । वडो तीर्थ छै । मधुकीटभ[13] तपस्या की छै । रांवण तपस्या की छै तठै आवै । तठा आगै तोडारा गाव विसळपुर रावर आवै । तठै सीसोदीये रायसिघ मोहल[14] कराया छै । तठा आगै वणहड़ै हुय[15] टूक आई । पछे मलीरणैरै गाव झूपड़ाखेड़ै[16] सोहड़ भगवतगढ सैसभारिजै मलीरणैरै वीछूदैनै हुय[17] जीरोतरो गाव हाडोतीरो हुय नै आगै खंडरगढ चांवळ भेळी हुई[18] । तठै देवी वरवासणरो थान छै[19] ।

---

1 पोछेकी ओर । 2 निकली । 3 जिसकी 4 वह । सो । 5 वहांसे । 6 वहां । 7 हो कर । 8 गांवका नाम । अन्य प्रतियोंमें 'बाकरलो' लिखा हैं । 9 वहांसे । 10 गांवका नाम टोडाका । 11 एक नदीका नाम । 12 टोडासे आगे ४ कोस गोकर्ण महादेव नामक प्रसिद्ध तीर्यस्थानको जानेका मार्ग हैं । 13 पुराणोंमें वर्णित मधुकैटभ दैत्य । 14 महल । 15 हो कर । 16 गांव 17 को हो कर 18 से मिल गई । 19 जहां पर कछवाहोंकी कुलदेवी 'वरवासण'का मदिर हैं ।

गांव १४० लागै । मु रांणै राजसिंघ परा काढ नै रजपूत सारंगदेओत वसाया छै । पिण उठै पांणी घणो लागै छै[1] । न वसै[2] ।

नाहेसर भील धणी[3] । वडा स्यांमधरमी[4] । रांणारै चाकर छै । वडेरा रावत कहावै[5] । हमार रावत नरसिंघदासरै मुदै[6] छै । भाखररो नांव नाहेसर छै । मुदै ठोड़रो नांव गांव जूड़ो । परगनो पिण जूड़ारो कहावै छै । उदैपुरसूं कोस २५ घोघूंदै लगतो छै । सीरोहीरा भीतरोठ लगतो उगवण दिसा नाहेसर । उलै ढाळ[7]नै आथुण दिसा भाखररै ढाळ सीरोहारो भीतरोठ[8] छै । अंबावथी कोस १० तथा १२ नाहेसररा गांव ९०० री केहवत[9] छै । धरती मांहे रैत भील, कुळवी[10], वांणीया, गूजर रहै छै ।

एक भाखर भाडेररो । कोस १० लांबो, कोस २ पहुळै[11] । नाहेसर कोस १२ लांबो, पैंनै[12] कोस २ । तिण बीच जूडारो मुलक । गांव १ वासै[13] वीघा ५०० तथा ७०० खेती लायक । बीजी[14] धरती भाखरां हेठै । झाड़ - आंवा, रांयण[15] पिण आंवली झाड़ घणा । धांन साळ[16], गोहूं, चिणा, मकी, उड़द घणा नीपजै । वालरण-काकड़ी[17] घणी नीपजै । दीवांणरै नास-भाज विखानूं[18] वडी ठोड़ इतरी[19]–

इतरा गांवां मांहे–

९०० नाहेसर, नरसिंघदासजी ।

२० पनोर, रांणो दायाळदास भील ।

९४ गंगादासरी मादड़ी, गंगादासरा पोतरा[20] छै ।

१४० झाड़ोली, टगरावटी । भील रैत थका रहै छै[21]। पटै झालांरै[22]।

---

1 परन्तु यहांका पानी अधिक लगने वाला (अस्वास्थ्यकर) है । 2 अतः यहां नहीं रहते । 3 नाहेसरका स्वामी भील । 4 स्वामीभक्त । 5 मुख्य वयोवृद्ध रावत कहलाता है । 6 अभी प्रमुख रावत नरसिंहदास भील है । 7 इस ओरके उतारमें । 8 सिरोही राज्यका एक प्रान्त । 9 कहे जाते हैं । 10 कणबी एक कृषक जाति, पटेल । 11 चौड़ाईमें । 12 चौड़ा । 13 पोते, सिरे । 14 दूसरी । 15 खिरनीका वृक्ष । 16 लाल चावल, शालि । 17 एक प्रकारकी ककड़ी जो अम्लरहित और लम्बी होती है; वालम या बालम ककड़ी । 18/19 विपत्तिके समय महाराणाके भाग कर जानेके लिये इसमें गुफाके बड़े स्थान हैं । 20 पौत्र । 21 भील प्रजाकी स्थितिमें रहते हैं । 22 झाला राजपूतोंकी जागीरोंमें ।

२५ छाळी-पूतळी । ईडररी कांकड़ दलोल-कलोससूं लागै ।

२५० जवाच । भील रहै । डूगररै पूठवाड़ै[1] भील खंगार भगारो रहै छै । कोस १५० मांहे भील छै ।

वनास नदी नीसरी[2] तैरी[3] हकीकत –

जरगारा भाखरथी नीसरी । तिको[4] जरगो उदैपुरसूं कोस २९ छै । उठाथी[5] रोहिड़े गांव आवै । जको राजा हरचंदरो वसायो छै । उठाथी कोस २ गांव वरवाड़ो मेवाड़रो तठै[6] आवै । आगै कठाड़ गांव मदाररै गांव माछमें नै घांसाररै मगरे वीच नीसरै नै कांम-सकराही गांव वसै छै तठै आवै । उठाथी खभणोर आवै, उदैपुरथी कोस १२ । उठाथी कोठारिये आवै । तठा आगै गांव मोही तुवरावाळे आवै । तठा आगै गांव कुराज आवै । तठा आगै मीरमी पहुनै[7] आवै । उठा आगै गांव छाकरलो[8] पुररो छै । पुरमू कोस ६ आगै माडळगढरै आकोले आवै । उठा आगै जावद-नंदराय वीच नीसर नै गाव चीहळी आवै, उठै चोलेररो पारसनाथ छै । उठा आगै पाड़लोळी जाजपुररो गांव छै, तठै आय नै जाजपुर आवै । तठाथी[9] सावड़रै गाव देवळी आवै । आगै डावर लोडारै[10] गाव आवै, तठै खारी[11] वधनोर वाळी भेळी हुई । आगै तोडाथी कोस ४ गोकर्ण राह छै[12] । वडो तीर्थ छै । मधुकीटभ[13] तपस्या की छै । रांवण तपस्या की छै तठै आवै । तठा आगै तोडारा गाव विसळपुर रावर आवै । तठै सीसोदीये रार्यासिंघ मोहल[14] कराया छै । तठा आगै वणहड़ै हुय[15] टूक आई । पछे मलोरणैरै गाव झूपड़ाग्वेड़ै[16] सोहड़ भगवंतगढ सैंसभारिजै मलीरणैरै वीछूदैनै हुय[17] जीरोतरो गांव हाडोतीरो हुय नै आगै खडरगढ चाबळ भेळी हुई[18] । तठै देवी वरवासणरो थान छै[19] ।

---

1 पोछेकी ओर । 2 निकनो । 3 जिसको 4 वह । सो । 5 वहांसे । 6 यहां । 7 हो कर । 8 गांवका नाम । अन्य प्रतियोंमें 'बाकरलो' लिखा है । 9 वहांसे । 10 गांवका नाम टोडाका । 11 एक नदीका नाम । 12 टोडासे आगे ४ कोस गोकर्ण महादेव नामक प्रसिद्ध तीर्थस्थानको जानेका मार्ग है । 13 पुराणोंमें वर्णित मधुकैटभ दैत्य । 14 महल । 15 हो कर । 16 गांव 17 को हो कर 18 से मिल गई । 19 जहां पर कछवाहोंकी कुलदेवी 'वरवासण'का मंदिर है ।

वात पहली यूं[1] सुणी थी । संवत १६२४ चीतोड़ तूटी । तठा पछै रांणै उदैसिंघ आय उदैपुर वसायो[2], सु खिड़ीये खीवराज कह्यो[3]– चीतोड़ तूटी पेहली वरस ५ तथा १० उदैपुर रांणै उदैसिंघ वसायो थो । उदैसागर पण पेहली करायो छो[4] । चीतोड़ तूटी पछै रांणो उदैसिंघ आयोई नहीं[5] । घोघूंदै हीज रह्यो । रांणै उदैसिंघ संमत १६२९ घोघूंदै काळ कियो[6] । राणा प्रतापनूं टीको घोघूंदै हुवो[7] ।

कछवाहो मांनसिंघ कँवर थको[8] गुजरात गयो थो । पाछो वळतो[9] नीसरियो[10] तरै सलूंबर आयो, तरै रांणो घोघूंदै छो । उदैपुर मांनसिंघनै मेहमांनी करी, तिणसूं वेरस[11] हुवो । पछै मांनसिंघ पातसाह कनै गयो । हकीकत कही । तद मेवाड़ ऊपर वहीर हुवो[12] । खंभणोर वेढ हुई । तठा पछै रांणामें विखो हीज रह्यो । संमत १६७१ रांणो अमरसिंघ साहजादे खुरमसूं मिळियो । तठा पछै रांणो अमरसिंघ उदैपुर आयो । तठा पछै राजथांन[13] उदैपुर हुवो । रांणानूं मेवाड़ हुई, तद मेवाड ऊपर पचहजारी जात,पंच हजार असवाररो मुनसब दियो छो[14] । तिणरी जागीरमें इतरी ठोड़ दीवी छी[15]–

१ मांडळगढ, संमत १७११ उतरियो थो[16] । संमत १७१५ वळे पाछो दियो । रुपिया २०००००)

१ वधनोर, समत १७११ उतरीयो थो । संमत १७१५ वळे दियो छै ।

१ फूलियो, उरो लियो संमत १६९४ पातसाह साहिजहां[17] ।

१ जिहरण गाव १२, देवळियारी गड़ासिंध[18] छै ।

---

1 इस प्रकार । 2 वि० स० १६२४ में चित्तोड़ टूट गया (चित्तोडमें पराजय हो गई), जिसके बाद राना उदयसिंहने आ कर उदयपुर बसाया । 3 जिसके सम्बन्धमें खिड़िया चारण खींवराजने इस प्रकार कहा । 4 था । 5 आया ही नहीं । 6 मर गया । 7 राना प्रतापको राज्य तिलक घोघूदामें हुआ । 8 राजकुमारकी स्थितिमें । 9 पीछे लौटता । 10 निकला । 11 मनोमालिन्य । 12 जब मेवाड़ पर चढ़ कर रवाना हुआ । 13 राजस्थान । 14 रानाको जब मेवाड़ मिली तब मेवाड़ पर (रानाको) पाच हजार जात और पांच हजार सवारका मनसब दिया था । 15 जिसकी जागीरमें इतने स्थान दिये थे । 16 जब्त हो गया था । 17 फूलिया, जो पहिले मेवाडमें था और शाहजहाने जिसे वि० सं० १६९४ में जब्त कर लिया था (उसे वापिस नहीं दिया) । 18 निकट ।

१ भैंसरोड, गांव १२४ खखर-भखररी[1] टोड़ छै, रांणारै ।

१ मीमच, गांव ४५ छै । चीतोड़सू कोस १५, रु० २,२५०००) ।

१ वसाड़, संमत १६९४ पैंजारखान रावत केसरीसिंघ मार लीयो । मनदसोर निजीक ।

१ मुणेर, गांव १२ रांमपुरा कनै । संमत १६९४ में तागीर[2] ।

१ डूंगरपुर, संमत १६९४ तागीर कियो । संमत १७१५ वळे दियो ।

१ देवळीयो तागीर कियो थो । संमत १७१५ वळे दियो[3] ।

१ वांसवाहळो एक वार उतरीयो छो । हमै तो रांणारै छै[4] ।

१ वेघम, गांव ९४, चीतोड़सूं कोस १२, वूंदीसूं काकड़ । रु० १०,०००) ।

वात १ चारण आसीये गिरधर कही । संमत १७१९ रा भादवा सुदी १ नै–

मांडवरो पातसाह वहादर एक वार गढ चीतोड़ ऊपर आयो[5] । गढ़ घेरियो तिण दिन चीतोड़ टीके रांणो विक्रमादित्य सांगारो, वाळक छै । हाडी करमेती हाडा नरवद भांडावतरी वेटी । तिणरै पेटरो[6] उदैसिंघ, विक्रमादित सगो भाई[7] छै । पछै कितरैहेक[8] दिन गढ एकण तरफ भिळियो[9] । सीसोदीया खांडारै मुंहे गया[10] । तठै आदमी १४ सिरदार कांम आया । तितरै मांहले वाहरले वात कीवी[11] । गढ ऊपर पातसाहरा आदमी गया, तरै रांणारा आदमी तळेटी आय नै सला करी । उदैसिंघनू कौल-वोल दे नै पातसाहरै पावै ले गया[12] । चाकरी राणा उदैसिंघरी कवूल करी । वहादर पातसाह उदैसिंघनू ले नै कूच कियो । कितराहेक[13] दिन हुवा । पातसाह वहादररै वेटो न छै[14], तरै अमरावे[15] पधार नै अरज पोहचाई ।

---

1 स्थान विशेषका नाम (वन पर्वत) । 2 जब्त । 3 पुन दे दिया । 4 अब तो रानाके अधिकारमें है । 5 चित्तोड़गढ़ पर चढ कर आया । 6 कोखका । 7 सहोदर भाई । 8/9 कितनेक दिन वाद गढ़में एक ओरसे प्रवेश कर अधिकार कर लिया । 10 शिशोदिया तलवारके मुहसे काम आये । 11 इतनेमें भीतर और वाहर वालोंने परस्पर वात-चीत की । 12 उदैसिहको वचन दे कर वादशाहके चरणोंमें ले गये । 13 कितनेक दिन हो जानेके वाद । 14 नहीं है । 15 तव राजाओंने जा कर अर्ज पहुंचाई ।

पातसाह तो पुत्रता[1] हुवा छै। कोई एक भतीजो खोळै ल्यो[2]। तरै पातसाह कह्यो–'रांणारो भाई खूब[3] छै। वडा घररो छोरू छै[4]। इणनूं हूं मुसलमांन कर नै खोहळै लेइस[5]।' आ वात मुसकस थयी[6]। (उदैसिंघरा चाकरां आ वात सुणी) उदैसिंघनूं खबर हुई। इणे[7] विचार कर नै रातरा नास आयो[8]। परभात हुवां[9] पातसाहनै खबर हुई, कह्यो–उदैसिंघ नास गयो। तरै पातसाह तुरत वांसै चढियो। मताबी[10] गढ आय घेरियो। तरै उदैसिंघ, विक्रमादित्य दोयांनूं[11] काढ नै[12] इणांरी[13] मा हाडी करमेती जूहर कर बळी[14]। हाडी करमेती माथै इतरी बळी—

१ हाडी करमेती।

१ करमेतीरी बेटी १। खीची भारथीचंदनूं परणाई हुती[15]।

१ वैर[16] विक्रमादितरी १, हाडी कल्ला जगमालोतरी[17] बेटी।

१ रा. देवीदासरी बेटी। इतरी करमेती साथै बळी।

इण मामलै[18] इतरा रजपूत कांम आया–

१ रावत दूदो रतनसीरो।

१ सीसोदियो कमो रतसीरो।

१ रावत बाघो सूरमचदरो।

१ हाडो अरजन नरबदरो।

१ रावत सतो रतनसीरो।

१ रावत बाघो सूरजमलोत।

१ सोनगरो मालो, बालारो। इणरो उनन देवळीयारी गांकड़।

१ सोळंकी भैरवदास नापावत। पोळ कांम आयो, सु चीतोड भैरव पोळ कहावै छै[19]।

१ रावत देवीदास सूजावत[20]।

1 वृद्ध। 2 गोद में लो लिया। 3 बहुत अच्छा है। 4 बड़े घरका पुत्र है। 5 इसको मैं मुसलमान बना कर गोद में लूंगा। 6 प्रकट हुई। 7 इसने। 8 भाग कर आ गया। 9 होने पर। 10 सीधा ही। 11 दोनोंको। 12 निकाल कर। 13 इनकी। 14 जौहर कर जल गई। 15 ब्याही थी। 16 पत्नी, पत्नी। 17 जगमालका पुत्र। 18 युद्ध में। 19 जिसमें मारा गया वह चित्तौड़ का दरवाजा भैरव पोल कहलाता है। 20 सूजेका पुत्र।

१ सीसोदियो नगो सिंघावत[1]। जगारो भाई।

१ झालो सिंघ अजारो। इतरा रजपूत कांम आया।

बात एक रांणा कूंभा चित भरमियारी[2]–

कोई समंद मांहे साह गयो थो। तिकै[3] एक मृतक देह दीठी[4] थी। तिणरी वात रांणा कूंभानूं कही। तद रांणो कूंभो चित-भरमीयो हुवो। क्यूंही[5] रोवै, क्यूंही बोलै। तद कूंभळमेर रहता, सु गढ ऊपर एक ठोड़ मांमा-कुंड छै। मामा वड़ छै। तठै रांणो वैठो थो। कूंभारै बेटो मुदायत[6] ऊदो थो, तिण कूंभानूं कटारीयां मार नै आप पाट वैठो[7]। तद भला-भला रजपूत तिणां घणो बुरो मांनियो[8]। आपती[9] सको[10] वडा ठाकर मन खांच रह्या[11]। कोई दरवार आवै न छै। नै भाई बेटा मेल दीया छै[12]। पछै रायमल ईडर थो, तिणसू कहाव करनै छांनै तेड़ायो[13]। रायमल आयो तरै वडा ठाकरांरा बेटा ऊदै कनै रहता, तिणांनूं[14] पांच वडे ठाकुरै कहाड़ीयो[15]–उदानूं मिस कर नै[16] कठीक[17] दिन ४ रेक[18] सिकारनू ले नीसरो[19]। पछै वो कंवरांरो साथ ले नीसरियो। वांसै रायमलनूं वडा ठाकुर हुता सु ले नै चीतोड़रै गढ ऊपर ले आंण सीघासण वैसाणियो[20]। टीको काढियो। वाजा वजाया। कवरांनूं उमरावे तेड़ लिया[21]। ऊदानूं कहाड़ मेलीयो[22]– थारो काळो मूंहडो[23], तू परो जावै[24], नही तो तोनूं रायमल मारसी[25]। पछै ऊदो सोझत आयो। केई दिन वसीरै दुहरै[26] रह्यो।

एक वात सुणी हुती–कवर वाघारी बेटी परणियो हुतो। पछै वीकानेरनूं गयो। उठी हीज मूवो। उणरी ओलादरो तो कोई वीकानेररी तरफ छै।

---

1 सिंघका पुत्र। 2 विक्षिप्त। 3 जिसने। 4 देखी। 5 कभी, कुछ। 6 राज्यका मुख्य अधिकार रखने वाला। 7 गद्दी पर बैठा। 8 जिन्होंने बहुत बुरा माना। 9 आपसे। 10 समस्त। 11 मन खींच लिया। 12 भेज दिया है। 13 बुलाया। 14 जिनको 15 कहलाया। 16 बहाना करके। 17 कहीं भी। 18 चारेक। 19 ले निकलो। 20 पीछेसे रायमलको, बड़े ठाकुर जो थे उन्होंने उसको ला कर चित्तोड़के गढ सिंहासन पर बिठा दिया। 21 बुला लिया। 22 कहला भेजा। 23/24/25 तेरा काला मुंह, तू यहांसे चला जा, नहीं तो तुझे रायमल मार देगा। 26 मंदिरमें।

दूहो साखरो[1]–

ऊदा बाप न मारजै, लिखियो लाभै राज ।
देस वसायो रायमल, सरघो न एको काज[2] ॥

रांणा राजसिंघनूं पातसाही तरफरी इतरी जागीरी छै–तिणरी विगत लिखी छै–

छ हजारी जात । छ हजार असवार त्यां-मांहे[3] पाँच उवांरा-उरदी[4] । एक हजार दुअसपाह[5] ।

रुपिया-दांम[6] आसांमी १७०००००) ६९००००००) ।

तलब जात[7] छ हजारी ३०००००) १२००००००) ।

खास जात[8] छ हजारी १४०००००) ५६००००००) ।

ताबीनदार[9] असवार ६००० तिणमें एक हजार दुअसपाह १७०००००), ६९००००००), ५०००००), २००००००) ।

इनांम २२०००००), ९९००००००) ।

तिनखाह १२५०००), ९६००००००) ।

सूबै अजमेर रु० १२५००००). ४७५००), १९००००) ।

सिरकार अजमेर परगनो १ । ४७५००) १९ ।

प्र० जोजावर १७२७५००), ६९१०००००) ।

सरकार चीतोड़ महल २७–२५०००), १००००००) ।

प्र० हवेली मोकीली मोहल २–५५०००), २२००००) ।

प्र० उदैपुर महल ३ । ४०००), २२०००००) ।

प्र० अरणो महल २७५०००), ११०००००) ।

प्र० इसलांमपुर कोसाथळ ३७५०), १५००००) ।

प्र० इसलांमपुर मोही ९७५००), ३५००००) ।

प्र० ऊपरमाल व भैंसरोड महल २–५००००), २००००) ।

---

1 साक्षीका । 2 दोहेका भावार्थ—हे उदयसिंह ! तुझे अपने पिताको नहीं मारना चाहिये था । राज्य तो भाग्यमें लिखा हो तो मिलता है । तेरा एक भी काम सिद्ध नहीं हुआ । राज्य तेरे छोटे भाई रायमलको बदा था जो देशको बसानेका अधिकारी हुआ । 3 तिनमें । 4 बिना वरदीके । 5 द्विगुणित । 6 रुपयेका चालीसवां भाग । 7 व्यक्तिगत वेतन सम्बन्धी । 8 मुख्य २ व्यक्तियोंके वेतन सम्बन्धी । 9 प्रत्येक समय हाजिर रहने वाले सवार ।

प्र० वेघू २००००), ९०००००)।
प्र० वणोर २०००००), ९००००००)।
प्र० पुर ७५०००), ३०००००)।
प्र० जीरण २७५०००)।
प्र० साहिजिहानावाद कपासण १२५०००), ५०००००)।
प्र० सादड़ी २५०००), १००००००)।
प्र० साहिजिहानावाद कणवीर ७५००), ३००००)।
प्र० घोसमन ३५०००), २०००००)।
प्र० मदारे ५०००००), २०००००)।
मीमच महल ३१२५०), ५००००)।
प्र० हमीरपुर २५००००), १०००००००)।
प्र० बधनोर २०००००), ९००००००)।
प्र० मंडलगढ ४०००००), १६००००००)।
प्र० डूंगरपुर २०००००), ९००००००)।
प्र० वांसवाहळो १७२७५००), ६९१०००००)।
३७५०००), १५००००००)।

सिरकार कूभलमेर मेहल ९५ त्यां माँहे महल ६२ पहाड़ां मांही।

वाकी महल २३ त्यां माहे महल ३ साहिजादे खुरम रांणा अमर ऊपर आयो[1] तद राजा सूरजसिंघनूं इनाम दिया था, त्यारी जमै न थी, सु राणा राजसिंघरै छै[2]—१ गोढवाड। १ सादड़ी। १ नाडूल।

वाकी महल २० त्यारा नाम पढिया न जाय। २१५००००), ९६००००००), ५००००), २००००००) सूबो मालवै परगनो।

१ वसाड २००००००), ९९००००००)।

वात १ सीसोदिया राघवदे लाखावतरी। राघवदेनूं रांणै कूंभै, राव रिणमल मारियो—

तिकण समय[3] राणो कूभो मोकळोत चीतोड राज करै नै राघवदे धरती माहे क्यूही[4] उजाड़-विगाड[5] करै। तरै रांणै कूंभै राघवदेनूं

1 चढ़ कर आया। 2 जिनको जमा नहीं थी, वे राणा राजसिंहके अधिकारमें हैं। 3 उस समय। 4 कहीं कुछ। 5 लूट-खसोट।

मारणो तेवड़ियो[1]। पछै एक दिन राघवदे दरबार आवतो थो। पहरणनू आंगी[2] हुती। तिणरी बांह ढीली हुती, सु आधी काढ़ी थी। तरै आय नै एक बांह राणै कूभै पकडी नै एक पाखती[3] राव रिणमल पकड़ी। नै दोनां ब्रगला राघवदेरै कटारी लगाई। सु राघवदे कटारी लागता आपरी[4] कटारी दांतांसू काढी[5]। तरै इणां बांह छोड़ दी। तरै ओ जलेवखानानू[6] नीसरियो। इणां हाथ छोड़ दिया। जाणियो कटारी सवळी लागी छै, आपै हेठो पड़सी[7]। नै तितरै[8] प्रोळरै बारणै[9] आयो। तितरै एक रजपूत झटकारी दीनी सु माथो तूट पड़ियो। सु माथो पड़ियां ही उठ दोड़ीयो[10]। तरै सगळाई[11] अळगा[12] हुवा, तरै आपरो[13] माथो दुपटीसौ[14] कड़ियांरै[15] दोळो बाध जलेव[16] आय नै आपरै[17] घोडे चढियो नै आपरा घरानूं खड़िया[18]। परभात हुवो तरै पडावल चीतोड़सूं कोस १७ छै, तठै गांव निजीक आयो। तरै कोई बैर[19] पिणहार जिण दीठो। तरै कह्यो–'देखो कोई माटी[20] माथा विगर चढियो जाय छै।' सु वा बैर मैले-माथै हुती[21]। तिणरी छाया पडी। तरै राघवदे घोड़ासू छिटक पड़ियो[22]। उठै ५ क[23] सात बैरां राघवदेरी, पड़ावलथी आय नै बळी[24]। सु राघवदे सीसोदियो पूजीजै छै।

साखरो गीत–

> राय-आंगण राण [कुंभकन रूठै,
> हाथा ग्रहे हिंदुवै-राय।
> काढी राघव भली कटारी–
> दांतां, सरसी ऊपर[25] डाय ॥ १ ॥

---

1 विचार किया। 2 अंगरखो। 3 एक ओरसे। 4 अपनी। 5 निकाली। 6 पासकी राज्य-सभा। 7 अपने आप नीचे गिर जायगा। 8 इतनेमें। 9 बाहिर। 10 सिर गिर जाने पर भी उठ कर दौड गया। 11 सब ही। 12 अलग। 13 अपना 14 दुपट्टेसे। 15 कमर। 16 पास। 17 अपने। 18 चलाया। 19 पनिहारिन-स्त्री। 20 मनुष्य 21 वह स्त्री रजस्वला थी। 22 गिर गया। 23 अथवा 24 पडावलसे आ कर सती हुई। 25 गीतका अर्थ — हिंदुपति राजा कुंभकर्णने क्रोध करके राज्य आंगनमें राघवदेवके हाथ पकड़ लिये। उस समय राघवदेवने अपने दांतोसे अपनी कटारीको खूब निकाला, जो उसके ऊपर दाव = आक्रमण करनेवालोंसे एक श्रेष्ठ (पराक्रम) की बात थी।

वात १ वीठू झाझण[1] कही–

माडवरा पातसाहरो मेवाड़ जेजियो[2] लागतो। सु जद रांणो रायमल राज करै। सु रायमल स्यांणो[3] ठाकुर हुवो, सु क्यूंही[4] बोलतो नही। रायमलरै बेटो प्रथीराज हुवो। सु प्रथीराज सिकार रमणनूं गयो थो। सु सिकार रमतां एक लुगाई घडो भरियां जावती थी, तिणरै सोकलारी[5] लगाई। सु गोढवाड़रो लोक ओछो-बोलो[6] तो हुवै छै। तरै उण लुगाई कह्यो–"कंवरजी मांरो घड़ो कांई फोडियो। इसडा[7] तरवारिया[8] छो, तो मेवाड़ जेजियो लागै छै सु परो छोड़ावो[9]। तितरै[10] पाखतीरा[11] ऊभा था[12] तिणां उणनूं डराई। कह्यो–"तू बोल मती।" नै प्रथीराज बोलियो–"क्यू हो ठाकरा! आ कांई कहै छै?" किणहेक कह्यो, आ यू कहै छै–"आखो[13] मेवाड़नू मांडवरा पातसाहरो जेजियो लागै छै, सु कंवरजी छुड़ावो नी क्यूं?[14]" तरै आप कह्यो–"जेजियो ले छै सु कुण छै?" तिण कह्यो–"तिके पाटण कोट मांहे हीज रहै छै। वे दीवांणरा चाकर न छै। वे मांडवरा पातसाहरा चाकर छै। जेजियो उघरावै[15] छै।" तद दीवांण कुंभळमेर रहता। नै कंवर आ वात सुण नै सिकार रम पाछो

---

1 झाझण नामक वीठू जातिका चारण। 2 जजिया नामक एक कर जो बादशाही समयमें हिंदुओसे लिया जाता था। 3 शान्त स्वभावका। 4 कुछ भी। 5 शस्त्रका अग्रभाग, चूकला, नोक। (यह शब्द 'चूंकलो' वा 'चूंकली' होना चाहिये। मारवाड़में 'चूंक' नोकदार कीलको कहते हैं। गाडीमें जुते हुए बैलो आदिको चलानेके लिये लकड़ीके अग्रभागमें पैनी चूक लगा कर बनाई हुई 'चूकली' काममें लाई जाती है, जिसे 'आर' वा 'परांणो' भी कहते हैं। गोढ़वाड़में 'च' 'छ' आदि वर्णोंका उच्चारण 'स' की भांति ही किया जाता है अतः यहां 'चूकलो' वा चोकलोके स्थान 'सोकलो' लिखा गया है। 6 अपशब्द बोलने वाले। (प्रसंगमें तो स्त्रीकी ओरसे ओछा बोलना नहीं प्रतीत होता। इसके विरुद्ध प्रिथीराजके ओछे व्यवहार और प्रजाकी एक स्त्रीके साथ दुर्व्यवहार और अपमानका साहसपूर्ण, समुचित और प्रेरणादायक कटाक्षमय उत्तर है, जो वास्तविक और समयोचित है। यही नहीं, जो उस समयके शासकगणोंकी कर्त्तव्य-हीनता और निरकुंशता एवं दूसरी ओर सर्वसाधारणमें देश और जातिके अपमानके अनुभवका परिचायक है।) 7 ऐसे। 8 तलवार चलाने वाले। 9 हटवा दे। 10 इतनेमें। 11 पास वाले। 12 खड़े थे। 13 समस्त। 14 उसको कुंवरजी क्यों नहीं हटवाते? 15 जजिया वसूल करते हैं।

मारणो तेवड़ियो[1]। पछै एक दिन राघवदे दरबार आवतो थो। पहरणनू आंगी[2] हुती। तिणरी बांह ढीली हुती, सु आधी काढ़ी थी। तरै आय नै एक बांह राणै कूभै पकड़ी नै एक पाखती[3] राव रिणमल पकड़ी। नै दोनां बगलां राघवदेरै कटारी लगाई। सु राघवदे कटारी लागतां आपरी[4] कटारी दांतांसू काढ़ी[5]। तरै इणां बांह छोड़ दी। तरै ओ जलेबखानानू[6] नीसरियो। इणां हाथ छोड़ दिया। जाणियो कटारी सबळी लागी छै, आपै हेठो पड़सी[7]। नै तितरै[8] प्रोळरै बारणै[9] आयो। तितरै एक रजपूत झटकारी दीनी सु माथो तूट पड़ियो। सु माथो पडियां ही उठ दोड़ीयो[10]। तरै सगळाई[11] अळगा[12] हुवा, तरै आपरो[13] माथो दुपटीसौ[14] कड़ियांरै[15] दोळो बांध जलेब[16] आय नै आपरै[17] घोड़े चढियो नै आपरा धरांनू खड़िया[18]। परभात हुवो तरै पड़ावल चीतोड़सू कोस १७ छै, तठै गांव निजीक आयो। तरै कोई वैर[19] पिणहार जिण दीठो। तरै कह्यो–'देखो कोई माटी[20] माथा विगर चढियो जाय छै।'सु वा वैर मैले-माथै हुती[21]। तिणरी छाया पड़ी। तरै राघवदे घोड़ासू छिटक पड़ियो[22]। उठै ५ क[23] सात वैरां राघवदेरी, पड़ावलथी आय नै बळी[24]। सु राघवदे सीसोदियो पूजीजै छै।

साखरो गीत–

राय-आंगण राण 'कुंभकन रूठै,
हाथा ग्रहे हिंदुवै-राय।
काढी राघव भली कटारी–
दांतां, सरसी ऊपर[25] डाय॥ १॥

---

1 विचार किया। 2 अंगरखी। 3 एक ओरसे। 4 अपनी। 5 निकाली। 6 पासकी राज्य-सभा। 7 अपने आप नीचे गिर जायगा। 8 इतनेमें। 9 बाहिर। 10 सिर गिर जाने पर भी उठ कर दौड़ गया। 11 सब ही। 12 अलग। 13 अपना 14 दुपट्टेसे। 15 कमर। 16 पास। 17 अपने। 18 चलाया। 19 पनिहारिन-स्त्री। 20 मनुष्य 21 वह स्त्री रजस्वला थी। 22 गिर गया। 23 अथवा 24 पड़ावलसे आ कर सती हुई। 25 गीतका अर्थ — हिंदुपति राजा कुंभकर्णने क्रोध करके राज्य आंगनमें राघवदेवके हाथ पकड़ लिये। उस समय राघवदेवने अपने दांतोंसे अपनी कटारीको खूब निकाला, जो उसके ऊपर दाव = आक्रमण करनेवालोंसे एक श्रेष्ठ (पराक्रम) की बात थी।

वात १ वीठू झाझण[1] कही—

मांडवरा पातसाहरो मेवाड़ जेजियो[2] लागतो। सु जद रांणो रायमल राज करै। सु रायमल स्यांणो[3] ठाकुर हुवो, सु क्यूंही[4] वोलतो नहीं। रायमलरै बेटो प्रथीराज हुवो। सु प्रथीराज सिकार रमणनूं गयो थो। सु सिकार रमतां एक लुगाई घड़ो भरियां जावती थी, तिणरै सोकलारी[5] लगाई। सु गोढवाड़रो लोक ओछो-बोलो[6] तो हुवै छै। तरै उण लुगाई कह्यो—"कंवरजी मांरो घड़ो कांई फोड़ियो। इसडा[7] तरवारिया[8] छो, तो मेवाड़ जेजियो लागै छै सु परो छोड़ावो[9]। तितरै[10] पाखतीरा[11] ऊभा था[12] तिणां उणनूं डराई। कह्यो—"तू वोल मती।" नै प्रथीराज वोलियो—"क्यू हो ठाकरा! आ कांई कहै छै?" किणहेक कह्यो, आ यू कहै छै—"आखो[13] मेवाड़नूं मांडवरा पातसाहरो जेजियो लागै छै, सु कंवरजी छुड़ावो नी क्यूं?[14]" तरै आप कह्यो—"जेजियो ले छै सु कुण छै?" तिण कह्यो—"तिके पाटण कोट मांहे हीज रहै छै। वे दीवांणरा चाकर न छै। वे मांडवरा पातसाहरा चाकर छै। जेजियो उघरावै[15] छै।" तद दीवांण कुंभळमेर रहता। नै कंवर आ वात सुण नै सिकार रम पाछो

---

1 झाझण नामक वीठू जातिका चारण। 2 जजिया नामक एक कर जो बादशाही समयमें हिंदुओंसे लिया जाता था। 3 शान्त स्वभावका। 4 कुछ भी। 5 शस्त्रका अग्रभाग, चूंकला, नोक। (यह शब्द 'चूकलो' वा 'चूंकलो' होना चाहिये। मारवाड़में 'चूंक' नोकदार कीलको कहते हैं। गाडीमें जुते हुए बैलों आदिको चलानेके लिये लकड़ीके अग्रभागमें पैनी चूंक लगा कर बनाई हुई 'चूकली' काममें लाई जाती है, जिसे 'आर' वा 'परांणो' भी कहते हैं। गोढ़वाड़में 'च' 'छ' आदि वर्णोंका उच्चारण 'स' की भांति ही किया जाता है अतः यहां 'चूंकलो' वा चोकलोके स्थान 'सोकलो' लिखा गया है। 6 अपशब्द बोलनें वाले। (प्रसगमें तो स्त्रीको ओरसे ओछा बोलना नहीं प्रतीत होता। इसके विरुद्ध प्रिथीराजके ओछे व्यवहार और प्रजाकी एक स्त्रीके साथ दुर्व्यवहार और अपमानका साहसपूर्ण, समुचित और प्रेरणादायक कटाक्षमय उत्तर है, जो वास्तविक और समयोचित है। यही नहीं, जो उस समयके शासकगणोंकी कर्त्तव्य-हीनता और निरकुशता एवं दूसरी ओर सर्वसाधारणमें देश और जातिके अपमानके अनुभवका परिचायक है।) 7 ऐसे। 8 तलवार चलाने वाले। 9 हटवा दे। 10 इतनेमें। 11 पास वाले। 12 खड़े थे। 13 समस्त। 14 उसको कुंवरजी क्यों नहीं हटवाते? 15 जजिया वसूल करते हैं।

आयो, तेरे साथनू कह्यो[1] –"आपै[2] तुरकांनू मारस्यां[3] । खबरदार रह्ज्यो" तद साथ कह्यो–"दीवांणसू गुदरावो[4]" प्रथीराज कह्यो–"म्हे[5] दीवांणसू गुदरावस्यां[6] । मार ल्यो ।" पाछो कोटमें आवतसमा[7] तूट पड़िया[8] । डेरा ऊपर मार लीया । पछै दीवांण आ वात सुणी । तरै प्रथीराजसू रीसाणा[9] । प्रथीराज कह्यो–"दीवांण ! आप तो घणाई दिन धरती भोगवी[10] । हमै म्हे मोटा हुआ । दीवांण ! विराज्या रहो[11] । म्हे धरतीरी खबर लेस्यां[12] ।" सु मांडवरा पातसाहरो उमराव ललाखान तोडै रैतो सु उणरी तावीनरो[13] लोक अठै जेजियो उघरावणनू आवतो सु प्रथीराज मारियो – आ पुकार ललाखांन कनै पूगी । तरै ललाखांन चढियो । चढती ही नै मगरोप, आकोलो, अै मेवाड़रा गाव छै, सुं मारिया[14] । लोक बंध किया[15] । तरै पुकार आई, प्रथीराज कनै । तद प्रथीराज कूभळमेरसूं चढियो दिन-आथवतारो[16] । मु परभात जाय तोडै ललाखांननू मारियो । मार नै साथनू पूछियो–क्यू ठाकुरां ! अठाथी सूरजमल खीवावतनू किण ताकथी मारियो जाय[17] ? तरै किणहेक कह्यो–हां राज ! सूरजमल आठमरो-आठम[18] गांव ऊंटाळावरै कनै चारण देवी छै तिणरै आवै छै[19] ।"

वात–

मेवाड़ रांणा अमरारो विखो छै[20] । पातशाह जहांगीर दृढ़ लागो छै[21] । साहिजादो खुरम, अबदुलो लारै छै[22] । सु इणासू[23] उदैपुर

---

1 और कुमारने इस बातको सुन कर जब वह शिकार खेल कर वापस आया, तब अपने साथ वालोंको उसने कहा । 2/3 अपन तुर्कोंको मार देंगे । 4 अर्ज करो, पूछा जाय । 5 हम । 6 अर्ज कर देंगे । 7 आते समय । 8 टूट पड़े । 9 नाराज हुआ । 10 आपने तो बहुत दिनो तक देशका राज्य कर लिया । 11 दीवान ! आप अब बैठे रहें । 12 हम देशकी सार-सम्हाल करेंगे । 13 उसकी अधीनताके मनुष्य । 14 लूट लिया । 15 वहांके मनुष्योंको कैद कर दिया । 16 सध्या समय । 17 किस प्रकार मारा जाय । 18 प्रति अष्टमी । 19 चारण देवी है उसके दर्शनको आता है । नोट—प्रसंग अपूर्ण लिखा हुआ प्रतीत होता है । 20 मेवाड़का राणा अमरसिंह गुप्त रीतिसे पहाड़ोंमें विपत्तिके दिन काट रहा है । 21 हठ पर चढ़ा हुआ है । 22 पीछे लगे हुए हैं । 23 इनसे ।

छूटो छै। कितराएक दिना चावडांरा ही मगरा[1] अवदूळे छुड़ाया। मु रांणो अमरसिंघ घणो हीज पछतावो करै छै। भींवनू कहै छै– "भीव! देख! आंपांथी[2] चावडांरा मगरा छूटा। आ वड़ी ठोड़ छूटी[3]। मोनूं[4] उदैपुर छूटांरो धोखो न हुवो तितरो[5] इण ठोड़ छूटांरो पछतावो हुवै छै[6]। इण ठोड़-छूटतां एक रातीवासो[7] ओ[8] बीजो अवदूलै सूनो कियो तो घणो वुरो दोससी[9]। तरै भीम तसलीम कर[9A] कह्यो–"अवस दीवांण! आज अवदूलाथी इसो मामलो करूं[10], लड़तो २ अवदूलारी डोढियां ताईं[11] जाऊ'" दीवांणसू कहनै[12] विदा हुवो[13]। सु आ खबर अवदूलैनै हुई, जु! भीव बीदा हुवो सु कहै छै[14]–"हू[15] लड़तो २ अवदूलारी डोढियां तांईं[16] जाईस[17]।" सु अवदूलै ही घणा[18] पातसाही लोक उमराव था सु दोढियां राखिया छै। भींव दिन घडी ४ चढतां विदा हुवै छै। मु पहली तो केई आपरी[19] धरतीरा लोक तुरकांसू जाय मिलीया था, त्यांसू[20] मामलो कियो। पछै रात आधी एकरो[21] अवदूलारा लसकर ऊपर तूट पड़ीयो मु पेहली तो आडै धस[22] आया मु वाढ नाखीया[23]। घणा घोड़ा, रजपूत, पातसाही लोक डेरा मारिया[24]। यू करतां मारतो कैहतो "आवै माहराणो अमरसिंघ[25]।" मु असवार हजार दोयसू दोढियांरै मुंहडै[26] आयो। अवदूले ही घणी जावता[27] कीवी थी। दोढी घणो साथ[28] मु अठै लडाई हुई। घणो तरवारियारो रीठ पड़ियो[29]। पातसाही लोक, सिरदार, माणस[30] ५० तथा ६० वडा उमराव मारिया। अठै

---

1 पहाड। 2 अपनेमे। 3 रक्षाका यह वडा स्थान भी छूट गया। 4 मुझको। 5 इतना। 6 पश्चाताप होता है। 7 रातको रहनेका (भय रहित) स्थान। 8 यह। 7/8/9 यह दूसरा रात्रिनिवासका स्थान भी अवदुल्लेने अपनेसे छुटवा कर सूना कर दिया तो बहुत बुरा दीखेगा। 9A प्रणाम करके। 10 युद्ध करू। 11 तक। 12/13 कह कर रवाना हुआ। 14 भीम अपने ऊपर चड कर रवाना हुआ हैं और वह कहता हैं कि। 15 मैं। 16/17 ड्योढी तक चला जाऊंगा। 18 बहुत से। 19 अपनी ही। 20 उनसे। 21 लगभग आधी रातको। 22 सामने। 23 काट डाले। 24 डेरोंका नाश किया। 25 यो मारता जाता और कहता जाता था कि 'महाराणा अमरसिंह आ गया हैं'। 26 ड्योढ़ीके द्वार पर आ गया। 27 प्रबंध किया था। 28 सैनिक। 29 तलवारोंमे घमासान युद्ध हुआ। 30 मनुष्य।

भीवरा ही मांणस २० तथा २५ जीनसाळिया[1] पड़िया। पड़िया-पड़िया कहता "दोढियां तांई तो गया[2] । आघी चूरी जाय नही[3] ।" आगै तिके बहादर सिलहा-किया[4] ऊठिया। तिणथी डोढी चूरी जावै नही[5] । आगै भीवरै ही लोह[6] एक दोय लागा, नै आप जिण घोड़ै चढियो थो, जिण घोडारो पग पड़ियो[7] । जोयो[8] , ज्यू[9] आघो जाणरो तोल क्यू ही नही[10] । तरै रजपूते भीवनू पाछो वाळियो[11] । कटक बारै[12] आया तरै आपरो[13] घोड़ो छिटकनै पड़ियो। तरै घोड़ारो पग निलंग[14] छिटक पड़ियो। तरै भीव कह्यो-'दोढियां आगै घोड़ारो पग पड़ियो।' बीजै[15] घोड़ै चढ नै चलाया सु दीवांण छपनरै मगरै था। भीव आय मुजरो कियो। रातरा मांमलारी वात कही। दीवांण बोहत राजी हुवा। भीवरी घणी दिलासा[16] करी। कह्यो-"साबास भीव! वडो मांमलो कियो।" पछै[17] इण मामला हुवां पछै[18] अवदूलो च्यार[19] मास ताँई दीवांणरी फोज ऊपर दोड़ियो नही[20] ।

गीत-

खित[21] लागा वाद विनह खूदालम,
सूता अणी सनाहे साथ।
थापै खुरम जेवड़ा थाणा,
भीव करै तिवडा भाराथ॥ १॥
हुवा प्रवाडा हाथ हिंदुवा,
असुर सिघार हुवै आराणा।

---

1 पच्छरैत घोडोके सवार। 2 घायल पडे-पडे कहते थे कि ड्योढियो तक तो पहुँच ही गये। 3 आगे शत्रुओका चूर्ण करके नही पहुँचा जा सकता। 4 कवचधारी। 5 जिससे ड्योढ़ी पर खड़े शत्रुओका नाश किये बिना आगे नहीं जाया जाता। 6। तलवारके घाव। 7 घोड़ेका पाव टूट गया। 8 देखा। 9/10 तो आगे बढ़नेका कोई उपाय नहीं। भीमको पीछा लौटाया। 12 बाहिर। 13 अपना (उसका)। 14 घोड़ेका पाव टूट कर अलग जा गिरा 15 दूसरे। 16 खातिर, सम्मान। 17 फिर। 18 बाद। 19 चार। 20 दीवानकी (महाराणाकी) सेना पर चढ़ाई नही की। 21 पृथ्वीके लिये दोनो (दिल्ली और मेवाड़के) बादशाह ऐसे युद्धरत हुए कि दोनो अपनी सेनाके साथ कवच धारण करके ही सोया करते। खुर्रमने जितने थाने स्थापित किये भीमने वहां जा कर उतने ही युद्ध किये॥ १॥ हिंदुओंके हाथो (यशस्वी) युद्ध हुए जिनमे तुर्कोंका अपार संहार हुआ।

साह आलम मूकै सहिजादो,
रायजदो थाप लियो राण ॥ २ ॥
मंडियो वाद दिली मेवाड़ां,
समहर तिको दिहाड़ै सीव ।
अवस न पैठा किसा भाखरां ?
भाखर किसै न विढियो भीव ? ॥ ३ ॥
आरभ जांम अमर घर ऊपर,
लड़ै अमर छल ताम लग ।
आवढियो घटियो असुरायण,
खूमांण माजसियो खग ॥ ४ ॥

वात–

सोदो–वारहठ[1] थाहरू[2] चीतोड़रो । वूंदी रांणा खेतारी वार[3] मांहे हाडां लाल[4] कनै गयो हुतो[5] । सु लाल वात कहतां कुंई दीवांण दिसा वुरो वोलियो[5 A] । तरै थाहरू पेट मार मूवो[6] । कोई कहै छै–कमळ-पूजा[7] कर मूवो । तिण दावै[8] सीसोदियां हाडांरै वैर पडियो । घणा दिन अदावत वुही[9] । घणो वैर धुखियो[10] । पछै सीसोदियांसू हाडा पौच सकै नही[11] तरै वैर भागो[11 A] । सीसोदियां १२ सिरदार हाडारै परणिया[12], नै गाव[12 A] २४ वूदी राव दायजै[13] दिया, वूदी नै[14]

उधर शाहआलम खुर्रमको भेजता हैं तो इधर राणा अमरसिंहने अपने भाई (रायजादा) भीमको नियुक्त कर दिया हैं ॥ २ ॥ दिल्ली और मेवाड वालोंके परस्पर ऐसा युद्ध जमा जो उन दिनोंके युद्धोकी एक (चरम) सीमा थी । तुर्क कौनसे पहाडोमें नही घुसे और भीमने उनका पीछा कर कौनसे पहाडोमें युद्ध नही किया ? ॥ ३ ॥ अमरसिंह अपने आरभकालसे ही युद्ध लडता रहा । उसने जितने भी आक्रमण किये उनमे मुसलमानोका वल क्षीण होता गया । इस प्रकार खुमाणके वशज अमरसिंहने अपनी तलवारको पवित्र किया ॥ ४ ॥

1 चारणोकी एक शाखा । 2 चारणका नाम । 3 समय । 4 वूंदीके हडा लालसिंह । 5 था । 5 A लालसिंहने वात करते समय दीवान(राना खेता)के सवधमें कुछ वुरे शब्द कहे । 6 तव थाहरू पेटमें छुरी मार कर मर गया । 7 सिर काट कर । 8 इसी कारण । 9 शत्रुता चलती रही । 10 शत्रुता अधिक जग उठी । 11, 11 A फिर जव हाडे सीसोदियोको नहीं पहुँच सके तव जाकर शत्रुता मिटी । 12 वारह सिसोदिया सरदारोंने हाडोंके यहा विवाह किया । 12 A दहेजमें गाव ६ ही दिये हैं भूलसे २४ लिख दिये गये हैं । गावके नाम भी छ ही हैं । 13 दहेज । 14 और ।

मालगढ वीच । गांवांरा नाम–

१ जीलगरी	१ धनवाड़ो	१ वाजणो
१ खिणीयो	१ भीलड़ियो	(१ वंको)

इतरा गांव दिया ।

वात पठाण हाजीखांन रांणै उदैसिंघ वेढ[1] हुरमाड़ै हुई, तिणरी धधवाड़िये खीवराज लिख मेली[2] । संमत १७१४रा वैसाख मांहे–

हाजीखांन पठाण ऊपर मालदेरी फोज अजमेर आई । रा० प्रथीराज जैतावत । तद हाजीखांन राणै उदैसिंघ कनैं आदमी मेलिया[3] । कह्यो–"माहनू राज मारै छै[4] । म्हे तो रावळा थका बैठा छां[5] ।" तरै रांणो असवार हजार ५००० सू तुरत चढियो । अजमेर आयो । तरै राठोड़े भेळा होय नै[6] प्रथीराजनू[7] कह्यो–"आपे ही मरस्या[8] । राव मालदेरै आगै ही[9] वडा ठाकुर था सु सारा कांम आया छै । नै आपै मरस्यां तो ठकुराई हळवी पड़सी[10] । आपै उठै जाय साथ भेळो करनै लडाई करस्यां ।" इण भात राठोड़ै समझाय नै प्रथीराजनू पाछा मारवाड ले गया । सु प्रथीराज खिसांणो थको वगडी रीयो[11] । वारै उतरियो[12] । गावमें न गयो । नै इण मामलै रांणा साथै सिरदार– राव सुरजन, राव दुरगो, राव जैमल मेड़तियो, साथै हुता । तठा पछै राव मालदे वेगो ही कटक कियो । सु रावजीरै मेडतियांसू खुसांण हुती[13] । सु राव मालदे कहै मेडता ऊपर जास्यां । नै राव प्रथीराज कहै अजमेर जाय राणारा साथसू वेढ करस्या । सु पछै रावजी मेड़ते आया । मेडतियासू वेढ हुई । राव प्रथीराज कांम आयो । वेढ हारी । राव राणारी तो वात अठै हीज नीवड़ी । तठा पछै कितरेक[14] दिने रा० तेजसी डूगरसियोत नै वालीसा सूजानू राणै उदैसिंघ कह्यो– थे अजमेर जाय नै हाजीखाननू कहो–"म्हे थानू राव मालदे कना

---

1 युद्ध । 2 दधवाडिया शाखाके चारण खीवराजने लिख भेजी । 3 भेजे । 4 मुझको प्रथीराज मारता है । 5 हम तो आपके आश्रयमें बैठे हैं । 6 इकट्ठे हो करके । 7 को । 8 हम ही परस्पर मरेंगे । 9 पहिले भी । 10 और हम मरेंगे तो अपनी ठकुराई अशक्त हो जायगी । 11 प्रथीराज लज्जित हो कर बगडीमें जा कर रहा 12 बाहिर ठहरा । 13 गटप थी । 14 कितनेक ।

राख लिया छै । थे म्हानूं केहेक[1] हाथी, क्युंहेक[2] सोनो, थाहरै अखाड़ो छै[3] तिणमें रंगराय पातर छै सु म्हानू दो ।" तरै ठाकुरां रांणाजोसूं कह्यो–"हाजीखांन भलो मांणस छै नै विखायत थको छै । दीवांणजी वडो उपगार कियो छै[4] । सु हाजीखांननू आ वात कहाड़ियांरो जुगत न छै[5] ।" सु आ वात दीवांण मांनी नही । यां ठाकरांनै मांडां मेलिया[6] । श्रै अजमेर गया । आ वात कही तरै हाजीखांन कह्यो–"म्हारै देणनै तो क्युंही नही । नै पातर[7] तो माहरी[8] वैर[8A] छै ।" तद इण वात ऊपर हाजीखांन नै रांणारै अदावद[9] हुई । तरै रांणारा परधानांनूं तो सीख दीवी[10] । नै राव मालदे कनै आदमी २ आपरा[11] मेलिया । म्हारी मदत करावो । तरै रावजी असवार १५०० रा० देवीदास जैतावत साथै दे नै मेलिया । देवीदास जैतावत, रावळ मेघराज, लखमण भादावत, जैतमाल जैसावत, वीजा ही[12] घणा ठाकुर साथै दे नै मेलिया । मु अै[13] पिण अजमेर आया । भेळा हुवा । राणो आप पिण उदैपुरसू चढियो । दस देसोत[14] साथै हुवा । राणो हरमाड़ै आयो । हाजीखान पिण हरमाड़ै आयो । वले वीचरा तेजसी नै वालेसो सूजो फिरिया । दीवाणजीनू कह्यो–"वेढ नै कीजै । पांच हज़ार पठांण नै हजार राठोड दोनूरा मरसी ।" सु आ वात दीवांण मानी नही । खेत वुहारीयो । अणी वांटी[16] । तठै[17] हाजीखान दाव कियो । साथ थो सु आग ठेल ऊभो कियो[18] । नै असवार हजार १००० सू आय भाखरीरै ओटै[19] जाय ऊभो रह्यो । नै रांणो आप हरोलांरा[20] अणी माहे थो मु गोळरा अणी माहे जाय ऊभो रह्यो । तरै हाजीखाननूं आ खवर आई तरै हाजीखान गोळरी अणी माथै तूट पडियो[21] । तरै

---

1 कितनेक । 2 कुछ । 3 तुम्हारे पास स्त्रियोंका दल है उसमें रगराय नामकी एक नर्तकी है, जिसको मुझे दो । 4 हाजीखान भला आदमी है और सकटग्रस्त है । 5 अत हाजीखानको यह वात कहलवाना योग्य नहीं है । 6 इन ठाकुरोंको वलात् भेज दिया । 7 नर्तकी । 8 मेरी 8A. स्त्री । 9 शत्रुता उत्पन्न हो गई । 10 रवाना किया । 11 अपने । 12 दूसरे भी । 13 ये । 14 दस वडे ठिकानोंके जागीरदार । 15 रणक्षेत्रको माफ किया । 16 सेनाके अग्रभागमें रहने वाले वीरोंका वटवारा किया । 17 वहा हाजीखानने एक चाल चली । 18 अपनी सेनाको आगे भेज कर खडी कर दी । 19 आडमे । 20 सेनाके अग्रभागम या मो पृष्ठ भागमें आ कर खडा रहा । 21 टूट पडा ।

राव दुरगारो घोड़ो वढियो[1]। तद दुरगो हाथी चढियो। हाजीखांन फोज मांहे ऊभो थो, तिण दुरगारा हाथीनू कटारो वाहो[2]। तीर १ रांणा उदैसिंघरै लागो। तरै फोज भागी। तठै इतरो[3] साथ रांणारो काम आयो–१ रा० तेजसी डूगरसीयोत, १ बालीसा सूजो, १ डोडियो भीव, १ चूडावत खीतर अै तो सिरदार नै आदमी १०० बीजा[4] कांम आया। नै आदमी १५० हाजीखांनरा कांम आया। नै आदमी ४० राव मालदेरा कांम आया। रावजीरै इण मॉमलेमे मेड़तो आयो। तठा पछै हाजीखांन ऊपर पातसाहरी फोज आई। पछै हाजीखांननूं राव मारवाड़ मांहे एक वार जैतारणरै गांव लोटोधरी[5]–नीबोळ आणियो[6]। पछै केई दिन अठै रह्यो। नै पछै हाजीखांन गुजरात गयो। पछै पातसाहनू हुसनकुली मालम कियो। अजमेरसू हाजीखांन मारवाड़ गयो छै। तरै पातसाह हुकम कियो। जिण राखियो छै तिणनू मारल्यो। तरै फौज जैतारण आइ। तरै हाजीखांन तो नीमरियो[7]। पछै राव रतनसीनू नै जैतारण मारी।[8]

वात–

रांणा अमरारै विगै[9], रावत नारायणदास अचलदासोत सकतारो पोतरो[10] रांणा सगरनू जाय मिलियो। तद सगरनू चितोड़ घणा परगनासूं थी। नारणदासरो सगर घणो आदर कियो। गांव ६४सूं वेघम, गांव ६४सूं रतनपुर दियो। तठा हछै कितरेक दिनै रांणा अमरारै नै पातसाहरै मेळ हुवो। तरै सगरसूं चीतोड़ उतरी। सगर परो गयो। चीतोड़ रांणा अमरारो अमल हुवो[11]। पिण वेघम राणारा आदमी गया त्यानूं[12] रावत नारणदास अमल दे नहीं[13]। तरै दीवाण रावत मेघनू वेघम ऊपर विदा कियो। तरै मेघ आदमी २ मेलनै रावत नारणदासनू कहाडियो[14]–"श्री दीवाणजी आपणै[15] माइत[16] छै। आपणा

1 बढ़ा। 2 कटारी चलाई। 3 इतना। 4 दूसरे। 5 गांवका नाम (लोटोधी-नीबोल)। 6 ले आये। 7 निकल गया। 8 राव रतनसीको मार कर जैतारणको लूट लिया। 9 मरने पर। 10 पोता। 11 अधिकार हो गया। 12 उनको। 13 अधिकार करने नहीं देते। 14 कहलाया। 15 सिसोदिया राना (अमरसिंह)। 16 माता-पिता है।

जोररी ठोड़ काई नहीं[1], नै मोनू विदा कियो छै[2], सु आपणो घर एक छै, सु थे मो[3] आवतां पेहली गाँव छोड़ज्यो" तरै राव सही-समधोतरै[4] गॉव छोड वारै गूढो दियो[5], इणा गाँवमें अमल कियो[6], आ वात रांणे अमरसिंघ सुणी। तरै चहुवाँण वलूनू वे घमरी तसलीम कराई[7]। आ वात मेघरै भाई-बधे मुणी। तरै तुरत मेघनू खवर पोहँचाई। मेघ वेघम बलूनूं दीनी सुणी नै घणो वुरो मानियो। कह्यो–मरणरी वेळा म्हानूं[8] नाराणदास ऊपर मेलिजै, नै बाघारो[9] वलूनूं दीजै, तो म्हानूं चाकर जाँणिया नही। वेघम कै[10] चूडावतारी, कै[11] सकतावताँरी। चहुवाँण कुण ? तरै मेघ पाधरो[12] वेघमथी[13] उदैपुर आय नै पटो छोडियो[14]। तरै कवर करन वोल वाह्यो[15]–"इतरो अहंकार करो छो, तो पातसाह कनै जाय मालपुरो पटै करावजो।" पछै मेघ सामांन करनै पातसाह (जहांगीर) कनै गयो। पातसाह रांणारी विखारी वात पूछी। रावत मेघ सारी वात कही। पातसाह राजी हुवो। रावत मेघनू मालपुरो पटै दीयो। तठा पछै[16] कितरेक दिने राणै कंवर (करण) नूं पातसाह कांनीनू चलायो[17]। तद कवर करननूं राणै अमरै[18] कह्यो–"मेघनू दावै त्यू कर[19] मनाय लावज्यो" सु कवर करन मालपुरै आयो, तरै मेघ सामो आयो[20]। मेहमानी करी। पातीयै वैठा[21]। थाळी परूसी[22]। तरै करन हाथ खाच वैठो। तरै मेघ विनती कीनी। कुण वास्तै ? तरै कवर करन कह्यो–"थांनू दीवांणजी बुलाया छै। आवो तो हू जीमू[23]।" तरै मेघ कह्यो–"म्हे थारा

---

1 यह ठौर वल-परीक्षाकी नही है। 2 मुझे ससैन्य भेजा है। 3 मेरे आनेसे पहले ही। 4/5 तब रावने उसके कहनेके अनुसार गावको छोड वाहिर आकर अपने लिये किसी रक्षित स्थानमे डेरा डाला। 6 इन्होंने गाव पर अधिकार कर लिया। 7 तव चहुआन वलूको वेघमका पट्टा कर देनेकी स्वीकृतिके उपलक्षमें मुजरा करवाया। 8 मुझको। 9 जीतम प्राप्त की हुई जागीरी। 10/11 वेघम या तो चूडाके वशजोंकी अथवा सक्ताके वशजोंकी 12 सीधा। 13 से 14 जागीरीका अधिकार छोड दिया। 15 तब कुमार करनने ताना मारा। 16 जिसके वाद। 17 वादशाहकी ओर भेजा। 18 अमर(सिंह)ने। 19 जैसे हो वैसे। 20 तव मेघ स्वागत करनेको सामने आया। 21 भोजन करनेके लिये एक पक्तिमे वैठे। 22 थालीमे भोज्य-पदार्थ परोसे गये। 23 तुम आओ (मेरे साथ चलो) तो मैं भोजन करू।

बिसेरिया-चाकर छां[1] । ज्यू थे कहस्यो त्यू करस्यां[2] । पिण हूँ पातसाहजीसू सीख कर आवस्यां[3] ।" पछै मेघ जाय पातसाहजीसू सीख करी । पछै रांणा अमरसिंघ कनै आयो । पछै रांणै घणी मया करी[4] । रावत मेघ मागियो सु पटो दीयो । तिकां[5] गांवांरी विगत–

वेघम ६४ ।

८४ रतनपुररी चोरासी ४२ गोठोळाव ।

१२ वीनोतो १२ वांसियो-पोपळियो ।

३ गांव, उदैपुर निजीक[6] खड़-ईंधणनू[7] ।

इसडो[8] पटो मेवाडमें किणहीनू[9] हुवो नही । टका लाख २५००००री रेख सुणीजै छै ।

तठा पछै मामलो १ सकतावत नै रावत मेघरै हुवो, तिणरी वात–

रावत मेघनू वेघम पटै छै । सु वेघमरा एक गांव मांहे सीसोदियो पीथो वाघरो[10], सकतावत रहै छै । तिणरै नै रावत मेघरै क्यूहीक अणवणत हुई[11], तरै उणनू मेघ कहाड़ियो । तू म्हारो गांव छाड़ दे । तरै ओ गाव छाडै नही । तरै मेघ पीथा वाळो बाळियो[12] । तद रावत नाराणदास अचलावतनू पातसाहीरी दीधी भणाय पटै[13] । तरै पीथो आय रावत नाराणदास कनै पुकारियो । मांहरै[14] तू वडैरो रावत, नै म्हा मारे[15] मेघ अतरा[16] हवाल[17] किया । तरै नाराणदास खेड[18] करी । राठोड जगमालोत, रतनसीयोत, चांदावत सीसोदियो, आपरा भाई-बंध असवार १२०० करी वेघम ऊपर चलाया । सु मेघ तो तठा पेहली दिन १ तथा २ परणीजण गयो थो । गाव वेघमथी कोस १५

---

1 हम आपके बिसोरिया सेवक हैं । (बिसेरिया चाकर-वशीवानोका एक भेद है, जो वशीवानोसे भी विशेषता रखता है – ये सब प्रकारके लाग और कर आदिसे मुक्त होते है)। 2 ज्यो आप कहेंगे त्यो ही करगे । 3 आज्ञा लेकर आऊगा । 4 कृपा की । 5 उन । 6/7 उदयपुरके समीप तीन गाव घास और ईधनके लिये । 8 ऐसा । 9 किसीको भी । 10 पीथा वाघाका पुत्र । 11 उसके और रावत मेघके कुछ अनबन हो गई । 12 राव मेघने पीथावाला गाव जला दिया । 13 उन दिनो रावत नारायणदासको बादशाहकी ओरसे दिया हुआ 'भिणाय' गाव पट्टे मे । 14 मेरे । 15 मेरम । 16 इतने । 17 दुर्दशा । 18 अपने वीरोको बुलाया ।

छै। तठै पिण थोड़ी बोहत जांण[1] मेघनूं हुई। वांसै[2] मेघरो बेटो नरसिंघदास घरे थो। रावत नाराणदास तो जांएं मेघो घरे छै। आदमी २ नाराणदास आगै वेघम मेलिया। कह्यो–"जाय रावत मेघनू कहो, बारै आव।" नाराणदास आयो। सु आदमी आय देखै तो रावत परणीजण गयो छै नै नरसिंघदास थो तिणनू जाय रावत नाराणदासरै आदमीए[3] कह्यो। तरै नरसिंघ तो बुरो हुवो[4]। कोट जड़ वैस रह्यो[5]। पछै सकतावते वेघम दोळो घोड़ो फेरियो। हाथी १ मेघरो सीव मांहे सैल गयो थो[6], सु उरो लीयो। हाथी १ ले भणाय आया। बीजो विगाड़ क्यू ही न कियो। वडो बोल खाटियो[7]। तठा पछै रावत मेघ परणीजण गयो थो सु आयो। वात सुणी। गाहो लाजियो[8]। बेटा नरसिंघदासथी घणो बुरो मांनीयो[9]। काढ दियो[10]। कह्यो–"म्हांनू मुहडो मत दिखाध[11]" तिण ऊपर चूडावतांरा साथनू मेघ तेड़ा मेलिया[12]। वडी खेड़ करी। वड-वडा रजपूत सको ठाकुर चूडावत आय भेळा हुवा। असवार ५००० हजार ऊपर भेळा हुवा। रावत मेघ वेघमथी चढियो। मजल एक आयो। सकतावत पिण असवार मरणीक[13] भेळा हुवा। पछै रावत मेघ हीज विचार कर दीठो। घर १ छै। गोत कदम हुसी[14]। तरै आपसू हीज पाछो वळियो[15]। भाईबध सिगळा[16] मानसिंघ करणोत बीजे[17] घणो ही कह्यो। सकतावत प्रवाड़ा वदसी[18]। इण आगै कठै ही फिर संका नही। पिण मेघ कह्यो–"जांणो सु दुनी कहो[19]। मोसू[20] तो गोत-हत्या नही हुवै।" उठाथी मेघ फिर आयो। पछै पँवार केसोदाससूं क्यू बोलाचाली हुई। तरै मेघो केसोदास ऊपर आयो। भैंसरोड पटै थित छै। केसोदास बेटा २ सू सामो आयो। वाज मूवो[21]। पछै राएं रीस कर मेघ रावतनू छुडायो।

---

1 जानकारी। 2 पीछे। 3 आदमियोने। 4 नाराज होगया। 5 कोटके किमाडोको बन्द कर अन्दर बैठ गया। 6 मेघका एक हाथी यो ही फिरने चरनेके लिये जगलमे गया हुआ था। 7 मेघके घर पर नहीं होनेसे उसने अपने वचनका पालन किया। 8 खूब लज्जित हुआ। 9 नाराज हुआ। 10 निकाल दिया। 11 मुझको मुह मत दिखाओ। 12 बुलाया। 13 मौतसे नही डरने वाले। 14 गोत्र हत्या होगी। 15 पीछा लौट गया। 16 समस्त। 17 इत्यादिने। 18 सक्तावत विजय कर जायगे। 19 दुनिया चाहे सो कहो। 20 मुझसे। 21 लडकर मर गया।

सीसोदिया चूडावतांरी साख। संमत १७२२ पोह वदी ५ खिड़ियै खीवराज लिखाई–

१ सीसोदियो चूडो लाखावत, २ रावत कांधळ।

२ कूंतल २ मांजो।

२ तेजसी २ रावत कांधळ चूंडावत।

३ रावत रतनसी कांधळोत।

४ रावत दूदो। हाडी करमेतीरै मांमले चीतोड़ काम आयो।

४ सतो। चीतोड़ काम आयो। करमेतीरै मांमले।

४ करमो। चीतोड़ काम आयो। करमेतीरै मांमले।

४ रावत सांईदासरै नु खोळै[1] लियो।

४ रावत खंगार रतनसीरो।

५ रावत प्रतापसिंघ। वांस वाहळै काम आयो।

६ सालवाहण।

५ रावत किसनो खंगाररो।

६ रावत तेजो। ऊँटाळी कांम आयो।

७ रावत मानसिंघ।

८ रावत प्रथीराज।

८ रावत रूघनाथ। सलूवर पटै।

९ रतनसी।

६ लाडखान किसनावत।

७ जसू।

८ फरसराम।

५ रावत गोयद खगाररो। वेघम पटै। नाउवे-वाघरेडै कांम आयो।

६ रावत मेघ।

७ रावत नरसिंघदास।

८ रावत जैतसी। गांव २४, आठांणो पटै।

७ रावत राजसिंघ। वेघम पटै।

८ महासिंघ।

---

1 गोद।

६ जोध गोयंदोत ।
६ केवळदास गोयंदोत ।
६ अचळदास गोयंदोत ।
४ खेतसी रतनसीरो । जिण सगरो बालीसो मारियो ।
५ नाथू (रतनसीरो)।
६ सहंसमल ।
७ वेणीदास ।
३ सिघ कांधळोत ।
४ नगो । करमेतीरै मांमले चीतोड़ खांडेरै[1]मूडै कांम[2] आयो ।
५ बेटो थो सु चीतोड़ जूहरमें बळियो ।
४ जगो । मही नदी ऊपर चहुवांण करमसी सांवळदास मारियो, तठै कांम आयो ।
५ पतो जगावत । संमत १६२४ चीतोड़ कांम आयो ।
६ कलो ।
७ नराइणदास । रांणपुर कांम आयो ।
८ वाघ । नांन्हो थको मूओ ।
६ सेखो ।
७ दलपति ।
८ मोहणसिघ ।
७ रूपसी ।
८ पंचाइण । रूपसीरो ।
८ वालो ।
६ करन पतावत ।
७ नरहरदास ।
८ जगनाथ । मानसिंघरै खोळै ।
८ जसवत ।
८ सुजाणसिंघ ।
७ मानसिंघ ।

1/2 खडगसे मारा गया ।

सीसोदिया चूडावतांरी साख। संमत १७२२ पोह वदी ५ गिड़ियै खीवराज लिखाई–

१ सीसोदियो चूडो लाखावत, २ रावत कांधळ।
२ कूंतल २ मांजो।
२ तेजसी २ रावत कांधळ चूंडावत।
३ रावत रतनसी कांधळोत।
४ रावत दूदो। हाडी करमेतीरैं मांमले चीतोड़ काम आयो।
४ सतो। चीतोड़ काम आयो। करमेतीरैं मांमले।
४ करमो। चीतोड़ काम आयो। करमेतीरैं मांमले।
४ रावत सांईदासरैं नु खोळै[1] लियो।
४ रावत खंगार रतनसीरो।
५ रावत प्रतापसिंघ। वांस वाहळै काम आयो।
६ सालवाहण।
५ रावत किसनो खंगाररो।
६ रावत तेजो। ऊंटाळी कांम आयो।
७ रावत मानसिंघ।
८ रावत प्रथीराज।
८ रावत रूपनाथ। सलूंबर पटै।
९ रतनसी।
६ नाहरखान किसनावत।
७ जगू।
८ फतैराम।
५ रावत गोयंद खंगाररो। बेगम पटै। नाडये-थायरेहूं कांम आयो।
६ रावत मेघ।
७ रावत नरसिंघदास।
८ रावत जैसंगी। गांव २४, आटाणो पटै।
७ रावत रामसिंघ। बेगम पटै।
८ [illegible]सिंघ।

1 गोद।

६ जोध गोयंदोत ।
६ केवळदास गोयंदोत ।
६ अचळदास गोयंदोत ।
४ खेतसी रतनसीरो । जिण सगरो बालीसो मारियो ।
५ नाथू (रतनसीरो)।
६ सहंसमल ।
७ वेणीदास ।
३ सिंघ कांधळोत ।
४ नगो । करमेतीरै मांमले चीतोड़ खांडैरै[1] मूंडै कांम[2] आयो ।
५ वेटो थो सु चीतोड़ जूहरमें बळियो ।
४ जगो । मही नदी ऊपर चहुवांण करमसी सांवळदास मारियो, तठै कांम आयो ।
५ पतो जगावत । संमत १६२४ चीतोड़ कांम आयो ।
६ कलो ।
७ नराइणदास । रांणपुर कांम आयो ।
८ वाघ । नांन्हो थको मूओ ।
६ सेखो ।
७ दलपति ।
८ मोहणसिंघ ।
७ रूपसी ।
८ पंचाइण । रूपसीरो ।
८ वालो ।
६ करन पतावत ।
७ नरहरदास ।
८ जगनाथ । मानसिंघरै खोळै ।
८ जसवत ।
८ सुजाणसिंघ ।
७ मानसिंघ ।

1/2 खड़गसे मारा गया ।

८ केसोदास
८ सूरजमल ।
८ कचरो ।
८ जगतसिंघ ।
७ माधोसिंघ ।
८ गोवरधन ।
८ डूंगरसी ।
८ जगरूप ।
८ रामसिंघ मानसिंहरो ।
८ प्रतापसिंघ ।
७ राजसिंघ करनोत ।
८ गजसिंघ ।
८ सवळसिंघ ।
४ सांगो सिंघोत ।
५ गोपाळदास । वाकारोळीरी वेढ कांम आयो ।
६ वलू । विखामें मीच[1] मूवो ।
६ कचरो ।
७ इद्रभांण ।
७ परसराम ।
६ जीवो ।
७ अमरो ।
७ भोपाळ ।
७ कमो ।
५ दूदो सांगावत । राणपुररी वेढ कांम आयो ।
६ अचळो । माडळ काम आयो ।
७ जैत ।
८ कान ।
७ ऊदो ।

1 मृत्युसे मरा (युद्धमें नहीं) ।

६ ईसरदास ।
७ हमीर ।
७ गोकळदास । कैलवो पटै । टका लाख ४०००००) री रेख ।
७ प्रथीराज ।
५ जैमल सांगावत । वसीरा मगरा[1] कांम आयो । विखेमें ।
६ नराइणदास ।
७ गोइंददास ।
७ गोकळदास । वसीरो परगनो पटै । टकां लाख ३०००००) री रेख ।
६ पूरो जैमळोत ।
६ मानसिंघ जैमलोत ।
४ सूरजमल । राणपुररी वेढ कांम आयो ।
६ मांहणदास ।
७ किसन । साहडां पटै । टका २००००) री रेख ।
७ अजबसिंघ ।
६ जगनाथ ।
६ सहसमल ।
७ करन
७ भोप्त
७ सुदरदास ।
८ चत्रभुज ।
२ कूतळ चूडावत ।
३ नाराणदास ।
४ कमो ।
५ माडो ।
६ जसो ।
६ लूणो ।
७ सवळसिंघ ।
७ रामसिंघ ।

1 वसीके पहाडोंमे ।

७ डूंगरसी ।
२ मांजो चूडावत ।
३ नीबो ।
४ सुरतांण ।
४ सूरो ।
५ सांवळदास ।
६ करमसी ।
६ करन ।
७ राजसिंघ ।
७ सवळसिंघ ।
२ तेजसी चूडावत ।
३ रावळ सावळदास ।

वात सीसोदिया डूगरपुर वांसवाहळांरा धणियारी

अै[1] रावळ करनरै बेटा राहप, माहप हुवा। तिण मांहे राहप रांणारा[2] चीतोड धणी । रावळ माहपरा[3] वागड धणी । अै सदा चीतोडरा राणारी चाकरी करता । पछ सै दिल्लीरा पातसाहाँसूं पिण रजूआत[4] राखै छै । वागड़नू गाव ३५०० सै लागै । आधा डूगरपुर वांसै आधा वासवाहळा वासै हुवा । पेहली तो ठकुराई डूंगरपुर मुदै[6] हुती । पछैसू रावळ उदैसिघ गागैरै सूधी तो वागड़ एक छत्र भोगवी । नै रावळ उदैसिंघरै बेटा २ हुवा—रावळ प्रथीराज नै जगमाल हुवा । सु रावळ प्रथीराज, उदैसिंघ मूवा टीकै वैठो । जगमाल धरती वारै नीसरियो[7]। तिण ऊपर रावळ प्रथीराज काढणनू फोज विदा कीवी । तिण मांहे सिरदार चो० मेरो वागड़ियो, राव परवत लोलाडियो छै। सु अै जगमाल ऊपर गया । आ धरती मांहेता[8] जगमालनूं धेच काढियो[9]। जगमालरा गाडा लूटिया । कई रजपूत मारिया । जगमाल हाथा-पडता[10] नास गयो । भाखरे पैठो[11]। धरती वस करनै

1 ये। 2 राहप राणारे वशज चित्तोडके धणी। 3 और माहपके वशज वागडके धणी। ४ सम्बन्ध। 5 आनेजाने और हाजिरीका सबध। 6 मुख्य। 7 जगमाल अपने देशसे बाहिर निकल गया। 8 मे से। 9 खदेड दिया। 10/11 जगमाल पकडे जानेकी स्थितिमें होते हुए भी अति स्वराग भाग गया और पहाडोमें घुस गया।

अै पाछा डूंगरपुर आया। अै जांणै छै मन मांहे म्हे वडो कांम कर आया छां। सु म्हे क्यूई वधारो पावस्यां[1]। मांहरो घणो मुजरो हुसी[2]। सु रावळरै कोई खवासण-धाइभाई हुतो साथे[3]। सु फोज मांहीथी[4] आगै वध नै घरै आयो थो। तिको पछै रावळ प्रथीराजरै मुजरै आयो[5]। तरै उणनूं जगमाल ऊपर फोज गई ती तिणरी हकीकत एकंत तेड पूछी[6]। तरै अै लोक क्यूंही मरण-मारणरी वात समझै नही। तद रावळ आगै कह्यो–"जगमाल मारणरी घात माहे आयो हुतो, पिण चहुआंण मेरे, रावत परवत टाळो कीयो[7]।" इण पांणीरा पोटला सोह साचा कर वांध्या[8]। वे ठाकुर फोज ले डूगरपुर आया। तरै रावळ प्रथीराज मांहे वैस रह्यो। इणांरो मुजरो ही लियो नही। अै दिलगीर हुय डेरै गया। पछै आपरा इतवारी चाकर खवास पासवांनां साथै इणांनूं घणा ओळंभा कहाडीया। "थे लूणहरांमी हुवा। जगमालनू जाण दीयो। वोहत वुरी की। म्हे थांनू दोनू वास राखां नही[9]।" इणे कह्यो–"म्हे तो भली चाकरी करी छै। रावळजी न जांणियो तो भली हुई।" तरै उण साथै इणानू तीन पानारा बीड़ा मेलिया हुता मु दीया। तद अै रीसायनै चढिया। सु घरै गया नही। जठै[10] जगमाल भाखरे थो, तठै[11] अै दोनू कोस एक ऊपर आय उतरिया। आपरै घरमाहे वडा आदमी परधांन था, सु जगमाल कनै मेलिया। कहाड़ियो–"थांरो दिन वळियो[12]। थारै धरतीरी चाह छै तो वेगा आय म्हासूं मिलो" इणांरा परधांन जगमाल कनै गया। सारी वात समझाई, कही। तरै जगमाल कहण लागो। मोनूं इणा ठाकुरारो वेसास[13] आवै नही। तद परधांनांसू सपत कर[14] जगमालरी हद-भात[15] खातर करी[16]। पछै जगमाल परधानानू साथे कर चहुवाण मेरो परवत कनै वे पाधरा आया। सीलकोल[17] करड़ा हुवै छै[18]। तिसडा[19] करनै इणां ठाकुरांनै जगमाल

---

1 सो हम कुछ (पृथ्वीके रूपमें) और इनाम पायेंगे। 2 सत्कार। 3 रावलके साथमें कोई खवास-धाभाई साथमें था। 4 में से। 5 सेवामें आया। 6 एकान्तमें बुलाकर पूछा। 7 परन्तु चौहानो, मेरो और रावतने पहाडका आश्रय लिया। 8 इसने सभी झूठी बातोंको सच्ची करके दिखादी। 10 जहां। 11 तहा। 12 तुम्हारे दिन फिर गये अर्थात् अच्छे दिन आगये। 13 विश्वास। 14 शपथ। 15 अत्यधिक। 16 आश्वासन दिया। 17, 18, 19 जितनी भी बडी प्रतिज्ञा होती हैं वैसी करके इन ठाकुरोंको जगमालके पास ले गये।

७ डूगरसी ।
२ मांजो चूडावत ।
३ नीवो ।
४ सुरतांण ।
४ सूरो ।
५ सांवळदास ।
६ करमसी ।
६ करन ।
७ राजसिंघ ।
७ सबळसिंघ ।
२ तेजसी चूडावत ।
३ रावळ सांवळदास ।

वात सीसोदिया डूगरपुर वासवाह्ळारा धणियांरी

अै[1] रावळ करनरै बेटा राहप, माहप हुवा। तिण मांहे राहप रांणारा[2] चीतोड धणी। रावळ माहपरा[3] वागड़ धणी। अै सदा चीतोडरा राणारी चाकरी करता। पछ सैं दिल्लीरा पातसाहाँसू पिण रजूआत[4] राखै छै। वागडनू गांव ३५०० सैं लागै। आधा डूगर-पुर वासै आधा वासवाह्ळा वांसै हुवा। पेहली तो ठकुराई डूगरपुर मुदै[6] हुती। पछैसू रावळ उदैसिंघ गागैरै सूधी तो वागड एक छत्र भोगवी। नै रावळ उदैसिंघरै बेटा २ हुवा–रावळ प्रथीराज नै जगमाल हुवा। सु रावळ प्रथीराज, उदैसिंघ मूवां टीकै बैठो। जगमाल धरती बारै नीसरियो[7]। तिण ऊपर रावळ प्रथीराज काढणनूं फोज विदा कीवी। तिण मांहे सिरदार चो० मेरो वागड़ियो, राव परवत लोला-ड़ियो छै। सु अै जगमाल ऊपर गया। आ धरती मांहेता[8] जगमालनूं घेंच काढियो[9]। जगमालरा गाडा लूटिया। कई रजपूत मारिया। जगमाल हाथा-पड़तां[10] नास गयो। भाखरे पैठो[11]। धरती वस करनै

1 ये। 2 राहप राणाके वंशज चित्तोड़के धणी। 3 और माहपके वंशज वागडके धणी। ४ गमरन। 5 आनेजाने और हाजिरीका संबंध। 6 मुख्य। 7 जगमाल अपने देशसे बाहिर निकल गया। 8 मे से। 9 खदेड़ दिया। 10/11 जगमाल पकड़े जानेकी स्थितिमें होते हुए भी अति त्वरासे भाग गया और पहाड़ोंमें घुस गया।

थैं पाछा डूंगरपुर आया । अै जांणैं छै मन मांहे म्हे वडो कांम कर आया छां । सु म्हे क्यूंई वधारो पावस्यां[1]। मांहरो घणो मुजरो हुसी[2]। सु रावळरै कोई खवासण-धाइभाई हुतो साथे[3] । सु फोज मांहीथी[4] आगै वध नै घरै आयो थो। तिको पछै रावळ प्रथीराजरै मुजरै आयो[5]। तरै उणनुं जगमाल ऊपर फोज गई ती तिणरी हकीकत एकंत तेड़ पूछी[6]। तरै अै लोक क्यूंही मरण-मारणरी वात समझै नही। तद रावळ आगै कह्यो–"जगमाल मारणरी घात मांहे आयो हुतो, पिण चहुआंण मेरे, रावत परवत टाळो कीयो[7] ।" इण पांणीरा पोटला सोह साचा कर बाध्या[8]। वै ठाकुर फोज ले डूंगरपुर आया । तरै रावळ प्रथीराज मांहे वैस रह्यो । इणारो मुजरो ही लियो नही । अै दिलगीर हुय डेरै गया । पछै आपरा इतबारी चाकर खवास पासवांनां साथै इणांनूं घणा ओळंभा कहाडीया । "थे लूणहरांमी हुवा । जगमालनूं जाण दीयो । बोहत बुरी की । म्हे थांनूं दोनूं वास राखां नही[9] ।" इणे कह्यो–"म्हे तो भली चाकरी करी छै । रावळजी न जांणियो तो भली हुई ।" तरै उण साथै इणानूं तीन पानारा बीड़ा मेलिया हुता सु दीया । तद अै रीसायनै चढिया । सु घरै गया नही । जठै[10] जगमाल भाखरे थो, तठै[11] अै दोनूं कोस एक ऊपर आय उतरिया । आपरै घरमाहे वडा आदमी परधान था, सु जगमाल कनै मेलिया । कहाड़ियो–"थांरो दिन वळियो[12]। थारै धरतीरी चाह छै तो वेगा आय म्हांसूं मिलो" इणांरा परधांन जगमाल कनै गया । सारी वात समझाई, कही । तरै जगमाल कहण लागो । मोनूं इणा ठाकुरांरो वेसास[13] आवै नही। तद परधांनांसूं सपत कर[14] जगमालरी हद-भात[15] खातर करी[16]। पछै जगमाल परधानांनूं साथे कर चहुवाण मेरो परवत कनै वे पाधरा आया । सीलकोल[17] करडा हुवै छै[18] । तिसडा[19] करनै इणा ठाकुरांनै जगमाल

---

1 सो हम कुछ (पृथ्वीके रूपमें) और इनाम पायेंगे। 2 सत्कार। 3 रावलके साथमें कोई खवास-धाभाई साथमें था। 4 में से। 5 सेवामें आया। 6 एकान्तमें बुलाकर पूछा। 7 परन्तु चौहानों, मेरों और रावतने पहाड़का आश्रय लिया। 8 इसने सभी झूठी बातोंको सच्ची करके दिखादी। 10 जहां। 11 तहा। 12 तुम्हारे दिन फिर गये अर्थात् अच्छे दिन आगये। 13 विश्वास। 14 शपथ। 15 अत्यधिक। 16 आश्वासन दिया। 17, 18, 19 जितनी भी बड़ी प्रतिज्ञा होती है वैसी करके इन ठाकुरोंको जगमालके पास ले गये।

कनै ले गया । इण आपरा आंण जगमालरा गाडां भेळा किया[1] । भेळा हुय सारा धरती विगाड़तां हुवा थांणा ठोड़-ठोड़ मारिया । मास ४ तथा ५ मांहे धरती घणकरी[2] सारी सूनी कीवी । तरै प्रथीराज आपरा परधान हुता[3], तिणनू तेड़ पूछियो[4]– कासू कियो चाहीजै ?[5] तरै उणे कह्यो—"म्हे तो क्यू समझां नही[6] । जिण राजसूं आ वात वीणती करनै कढायो छै, उणरा समझणरी छै ।"[7] तरै प्रथीराज परधानानूं कयो[8]–"हुई सु नीवडी[9] । म्हे थांनू[10] विगर पूछियां विचार कियो, तिणरा फळ म्हे रूडा भोगवां छां ?[11] । हमै थे भलो जांणो ज्यू करो[12] । मोसू धरती रखै रहे नही[13] । तरै प्रथीराजरा परधांन रावळरै कहै वात कराय, बोलवध ले[14], जगमाल, मेरा, परवत कनै गया । वात सारी मेरा परवतसू कीवी । कह्यो – हमै एक हुवो[15] । कहो त्यूं करा । कहो सु जगमालनू दां । कहो सु थांनू वधारो दिरावा ।"[16] तरै राठोडै चहुवाणै कही–वा वात व्हें गई[17] । हमै वात बीजी[18] हुई । थाहरै वात की चाहीजै तो वागडरा हैसा दोय हुसी[19] । दोय रावळ हुसी । आधो-आध धरती बटसी[20] । दूजी वात वणणरी न छै ।"[21] तरै परधान पाछा प्रथीराज कनै गया । वात सारी मांड कही ।[22] तरै रावळ कयो–"कासू कियो चाहीजै ?" तरै परधांन कह्यो–"माठी वात छै[23] । आज पेहली न हुई मु हुवै छै । आ वात मांहरा समझण जोग नही । रावळा उमरावानू वळे[24] इतबारी[25] चाकरानू बोलावो, त्या जोगी वात छै । राज[26] पिण[27] दिन पाच–दस विचार देखो । पछै किणहीनू ओलभो देण पावो नही ।" पछै रावळ प्रथीराज आपरा चाकर छा[28], तिणा सागानू पूछ दीठो । सको[29] कहण लागा–"धरती वसणरी नही ।

---

1 इन्होने अपने गाडोको लाकर जगमालके गाडोके साथ कर दिया । 2 अधिकतर । 3 थे । 4 उनको बुलाकर पूछा । 5 क्या करना चाहिये ? 6 तब उन्होने कहा–"हम तो कुछ समझते नही । 7 जिसने आपको इस बातकी प्रार्थना कर निकलवाया है उसके समझनेकी है । 8 कहा । 9 होनी सो हो गई । 10 तुमको 11 जिसका फल हम अच्छा भुगत रहे है । 12 अब तुम अच्छा समझो वैसा करो । 13 मुझसे किसी भी प्रकार धरती रह नही सकती । 14 वचन लेकर । 15 अब एक हो जाव । 16 कहो जितना वधारा (और अधिक प्रदेश) दिला दें । 17 यह बात तो समाप्त हुई । 18 अब बात दूसरी होगी । 19 तुमको बात करनी ही आवश्यक है तो वागड के दो भाग होगे। 20 बटेगी। 21 दूसरी बात बननेकी नहीं । 22 सब बात अथसे इति तक कही 23 बुरी बात है 24 और पुन 25 विश्वासपात्र 26 आप 27 भी 28 थे 29 सभी ।

जांणो त्यूंकर मेळ करो।" तरै .परधांनांनूं रावळ प्रथीराज सूधो कह्यो–"जाणो सु जगमालनूं दे मेळ कर आवो।" तरै परधांन जगमाल मेरा कनै आया नै वात करी। गांव ३५०० सैंरो आध जगमालनूं दियो। वांसवाहळो पग-ठोड़[1] थापी। दोय रावळ हुवा। दोयां सारीखी[2] राजधानी हुई। तरवार सांमां वासवाहळांरा धणियांरी विसेख हुई।[3]

वात वांसवाहळारा मानसिघरी–

रावळ मांनसिघ, रावळ परतापरै खवास पदमा विणियाणीरै पेटरो[4]। रावळ प्रतापरै और वेटो को न थो, नै मानसिघ निपट सुलखणो[5] हुतो। पांच रजपूत देसरै मिळ मांनसिंहनूं टीको दियो। राज करै छै। पछै चहुवाणारो नारेळ आयो[6]। आप परणीजण उठै गयो। वांसै[7] वासवाहळै आपरा परधान राख गयो हुतो। वासै खुधुरै भीलै क्यू विगाड़ कियो। तरै परवान थोडा हीज साथसूं खुधु ऊपर गया। तठै वेढ हुई। रावळ मानसिघरै साथ नै भीलारै। वा वेढ भीलां जीती[8]। रावळरो परधांन हारियो। उणै[9] वेइजत[10] कर घोडा लेनै छोडिया। पछै रावळ परणीजनै आयो नै आ वात सुणी। मु काकण–डोरड़ा[11] खुल्या नही छै। रावळ मानसिघरै टील आग लागी[12]। खुधु ऊपर चढ दोडियो। जायनै खुधु मारी[13]। गाव चोगिरद घेर नै खुधुरो धणी भील झालियो[14]। नै उणनूं[15] पकडनै लेनै आयो। कोस १० आण डेरो कियो छै। उण भीलरै पगे वेडी छै। हाथ छूटा छै। उणसूं आप टाकर[16] करै छै। डेरे कूचरी तयारी करै छै। चो० मान सावळ-दासोत, रा० सूरजमल जैतमालोत पिण निजीक छै। ओ खुधुरो धणी भील लाजरो[17] आदमी हुतो। तिण जाणियो मोनूं रावळ वेइजत

---

1 रहनेका स्थान, राजधानी। 2 दोनोंके लिये एक सरीखी। 3 तलवारके सम्मुख वासवाडाके स्वामियोंकी विशेषता रही। 4 प्रतापकी घरमें रखी हुई वनियेके स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न रावल मानसिंह। 5 मानसिंह अत्यन्त सुलक्षणों वाला था। 6 फिर चौहानोंकी ओरसे विवाह सम्बन्धके लिये नारियल आया। 7 पीछे। 8 उस युद्धको भीलोंने जीता। 9 उसने। 10 वेइज्जत। 11 विवाह कङ्कण। 12 रावल मानसिंह अत्यन्त कुपित हुआ। 13 जा करके खुंधु गावको लूट लिया। 14 पकड लिया। 15 उसको। 16 डाटते है। 17 लज्जा(प्रतिष्ठा) वाला आदमी था।

करसी। नै कोट गयो तरै मोनू मारसी[1]। तरै भील किणहीकरी तरवार रावळा[2] खोळा मांहे छांनैसे[3] लेनै, रावळरै वांसे आयनै, रावळ मांनसिंघरै झटकारी दीवी। सु झटको वहि गयो[4]। सोर हुवो। चो० मांन रा० सूरजमल आय भीलनू ही मारियो।

मानसिंघरै वेटो को[5] न थो। पछै कोहेक[6] दिन मांन हीज वासवारलारो धणी हुय बैठो। तरै तिण दिनां डूंगरपुर रावळ सहसमल धणी छै। तिण मांनसू कहाव कियो–"जु तू कुण आदमी सु वांसवाहळारी धरती खाय ?[7]" सु आ वात मांनी नही मांन। तद मांहो-माह अदावद[8] हुई। तद रावळ सहसमल चढ़ मांन ऊपर आयो। वेढ हुई। चो० मांन सांवळदासोत वेढ जीती। रावळ सहसमल वेढ हारी। वैस रह्यो[9]। तठा पछै रांणै प्रताप उदैसिंघोत वात सुणी–इए भात मांन मोट-मरद[10] थको वांसवाहळो खाइ छै। तरै वांसवाहळा ऊपर फोज, सीसोदियो रावत रायसिंघ खंगारोत नै सीसोदियो रतनसी कांधळोत नै असवार हजार ४००० दे विदा किया। चहुवांण मान यांरै सांमा आयो। आयनै वेढ करी। रावत रायसिंघ काम आयो। दीवाणरो साथ भागो। मांन चहुवांण वेढ जीती। रांणो ही वैस रह्यो। तठा पछै चहुवांण मांननू सारां वागड़ियां-चहुवांणां मिलनै कह्यो– "तोनू धणी फवी छै[11]। आंपे वासवाहळारा धणी कदै नही[12]। आंपे वासवाहळांरा भड़-किवाड छां[13]। थंभ छां[14]। तू कोहेक पाटवी जगमालरो पोतरो पाट[15] माथै थाप। तद उग्रसेन कल्याणरो मोसाळ[16] थो, तिणनू तेडनै रावळाईरो टोको दियो। रावळां मोहला[17] माहे आधा मोहल मांन लिया। आधा मोहल उग्रसेननू दिया। रावळ कह वोलायो। आधो हासल[18] रावळनूं आधो हासल

---

1 और अपने कोट (स्थान) जाने पर मुझको मारेगा। 2 अपने। 3 गुप्त रीतिसे। 4 तलवारके झटके अपना काम किया। 5 कोई नही था। 6 कई। 7 तू कौन होता है जो बांसवाड़ाकी धरतीका उपभोग कर रहा है। 8 परस्पर। 9 शत्रुता। 10 शान्ति करके बैठ गया। 11 बलपूर्वक। 12 तेरी बहुत फब गई (अनुकूलता मिलती रही)। 13 हम बांसवाड़ेके स्वामी कभी नहीं। 14 हम बांसवाड़ेकी रक्षा करने वाले शूरवीर हैं। 15 स्तम्भ हैं। गद्दी पर स्थापन कर। 16 ननिहाल। 17 महल। 18 राज-कर।

माँन लियो वाँसवाह्ळारो । रावळरो हलण-चलण[1] वासवाह्ळामें नही । माँन निपट आगत्तो[2] चालै । इणरै कीयाँ ही सारै नहीं[3] । रावळरै राजलोक[4] माँहे बेअदवी माँन घणी करै । रावळ घणो ही वळै[5], पिण जोर को चालै नही । तिकाँ दिनाँ राव आसकरन चंद्रसेनोत इणरै परणीयो हुतो । सु आसकरन माराँणो, सु आसकरनरी ठाकुराँणी हाडी राँड थकी[6] उग्रसेनरै राजलोक भेळी छै । वाळक छै, सु वड़ी रूपवंत छै । सु माँन इणसूं बुरी निजर राखै छै । आ वडै घररी वहु हुवै तिसड़ी[7] सीलवंत छै । सु माँननू इण आपरी धाय मेल कहाड़ियो[8]– "तू रावळरो घर घणो ही विगोवै[9] छै, नै तू माँणस[10] छै तो म्हारो नाँम मत लेइ ।" आ चकित थकी रहै छै[11] । माँन आँवो हुवो वहै छै[12] । सु एक दिन उरड़नै[13] इणरै घर माँहे आयो । इण दीठो[14], म्हारो धरम[15] न रहै, तद आ हाडी पेट मार मूई[16] । तिण समै रावत सूरजमल जैतमालोत रावळ उग्रसेनरै वास[17] छै । रुपिया हजार ६००० रो पटो पावै छै । सु आ वात हाडी इण कारण मूई सुणी । इसी कही तद सूरजमलनू घणी खारी लागी[18] । नै सूरजमल रावळनूं कह्यो– "माथै सूत वाँधो छो[19] । हाथे हथियार झालो छो[20] । रजपूतरो खोळियो धारियो छै[21] । मरणो एकरसूं छै[22] । ओ थाँरै घरमें किसो धूकळ ?"[23] तरै रावळ कह्यो–"सोह वात देखाँ छाँ[24] । जाँणाँ छाँ, पिण जोर कोई चालै नही । दाव[25] को लागै नही ।" तरै सूरजमळ रावळनू कह्यो–"वळ वाँध, हीमत पकड, इणनूं दाव-घाव कर परो काढस्यां ।[26]" रावळसूं बोल-कोल किया । पछै सूरजमल माँननूं कवाडियो[27]–रावळरै घर विगोयै न सारियो[28] । राठोडाँ ताँई पोहतो

1 अधिकार । 2 मर्यादारहित । 3 इसके कुछ भी अधिकारमें नही । 4 अन्त:पुर । 5 क्रोध करता है । जलता है । 6 वैधव्य पालन करती हुई । 7 वैसी । 8 कहलाया । 9 कलंकित करता है । 10 मनुष्य । 11 यह सावधान रहती है । 12 मानसिंह मदान्धकी भांति चलता है । 13 बलात् साहस करके । 14 देखा । 15 पतिव्रत धर्म । 16 पेट में कटारी मारकर मर गई । 17 उन दिनों रावत सूरजमल जैतमालोत रावल उग्रसेनकी सेवामें रहता है । 18 बुरी लगी । 19 सिर पर पगडी बांधते हो । 20 हाथमें शस्त्र धारण करते हो । 21 क्षत्रीका शरीर धारण किया है । 22 मरना एक बार है । 23 तुम्हारे घरमें यह कैसा उत्पात । 24 सब बात देखता हूं । 25 कोई उपाय नही लगता । 26 छल कपट कर किसी भी प्रकार इसे निकाल देंगे । 27 कहलाया । 28 रावलका घर बिगाडनेमें काम नहीं बना ।

छै[1] । भली न की छै ।" सु मॉन तो गिनारै ही नहीं[2] । तद राव केसोदास भीवोत चोळी-महेसर[3] छै । वड़ी ठाकुराई छै । राव सूरजमल केसोदास वीच आदमी फेर वात करी[4] । कह्यो–"रावळ उग्रसेनरो ऊपर करो । रावळरी थाँनू वैहन परणावस्याँ । इतरो दायजो देसाँ । फलॉणै दिन अजाँणजकरा[5] आवजो ।" ऊठै माँन चहुआँणनूं तो खवर ही नही । अदावत माथै रावळ उग्रसेन, सूरजमल नै आपरा आदमियाँनै साथ सारा हीनूं सिलै[6] कर वैठा छै । राव केसवदास आदमी १५०० सूं आँण फळसै नगारो दियो[7] । तद मॉन रावळ कनै खवर करणनै आदमी मेलिया था । आगै मॉनरो आदमी देखै तो रावळरो साथ सिलै कर वैठो छै । उण जाय कह्यो–"रावळरै भेदू[8] कोई आवै छै । थाँसूं चूक[9] छै । तद मॉन गढरी वारी कूद नाठो[10] । चाउडो भोजो सायरोत और ही साथ काँम आयो । मॉनरो घर भार-भरत[11] रावळरै हाथ आयो । माँन नास गयो[12] । ठाकुराई रावळरै हाथ आई । पछै सूरजमलनूं रुपिया हजार २५००० पटो दियो । मॉन दरगाह[13] गयो । उठै घणा पईसा खरचनै वाँसवाहळो पटै करायो । फोज मदत ले आयो । तरै रावळ सूरजमल नीसर भाखरे पैठो[14] । सूरजमल साथ लेनै वसी माँही रह्यो । रावळनूं सासरै मेळ दीनो[15] । अै भाखर छै[16] । मॉनरो थाणो भाईवध काळजो[17] वडा २ डीळ[18] छै । सु भीलवण आठा राखिया छै । पछै भीलवणरा थाणा ऊपर एक दिन अजाणजकरा सूरजमल नै रावळरो साथ आय दोपहररा पडिया । कोई दइवरो फेर दियो[19] । रावळरो साथ काँम नायो[20] । नै चहुवाँण मानरा भाईबध असी आदमी वडा-वडा सोह[21] काम आया । मानरै पातसाही फोजरो सिरदार वांसवाहळै थो, तठै

1 अब राठोडो तक पहुंचा है । 2 परवाह ही नहीं करता । 3 गावका नाम । 4 आदमी भेजकर वातचीत की । 5 अचानक । 6 कवच धारण कर । 7 गावके द्वार पर आकर नगाडा बजवाया । 8 गुप्त सहायक । 9 तुम्हारे दगा है । 10 भाग गया । 11 घर गृहस्थीका सामान । 12 भाग गया । 13 बादशाहके दरबारमे । 14 तब रावल सूरजमल निकल कर पहाडोमे घुस गया । 15 रावलको ससुराल भेज दिया । 16 ये पहाडमे रहते है । 17 अपने कलेजेके अर्थात् रक्त सबन्ध वाले । 18 कुटुम्बके बडे बडे शूर वीर है । 19 भाग्यने पलटा खाया । 20 रावलके मनुष्य युद्धमे काम नहीं आये । 21 समस्त ।

खबर आई। वे चढनै भीलवण गया। खेत[1] सभाळियो। तरै सिरदार-मुगल माननं पूछियो—"तीन सै च्यार सै आदमी काम आया छै, इण मांहे थाहरा कितरा नै रावळरा कितरा[2]?" तरै मांन कह्यो—"अै तो सोह म्हांरा कांम आया[3]।" तरै तुरकां कह्यो—"थे लूण-हरामी कीवी, तिसी सभा पाई।[4]" तरै तुरक ऊठ परो गयो। मांनरो बळ छूटो[5]। तरै मांन वांसवाहळो ऊभो मेळनै दरगाह गयो[6]। तद सूरजमल रावळनं खबर मेली। तद रावळ आय वांसवाहळै बैठो। धरती हाथ आई। मांन दरगाह गयो, तठा पछै कितरेक दिने रावळ उग्रसेन नै सूरजमल ही दरगाह आया। मांन पईसारै पांण पातसाही सारी हाथ की छै। इणानूं पाखती[7] कोई वैसण न दे। माननूं वांसवाहळो दीजै छै। तरै सूरजमल रावळनूं कह्यो—"वांमणांनूं वासवाहळै कर लागै छै[8]। सु थे छोडो। म्हे अठै रहां छां[9]। सु मान मारणी आसी तो मारस्यां[10] पछै धरती मांहे कर छोड़ाई[11]। पछै रावळ हालियो। सूरजमल वांसै रह्यो। पछै चहुवांण मांन वीच आपरो रजपूत गांगो गोड़ फिरै। पछै घात[12] देख मांनरा डेरा ऊपर आयो। व्राहनपुर चहुवांण माननूं मार कुसळै सूरजमल कनै गयो।

वात सीसोदिया डूंगरपुर वांसवाहळारा धणियांरी—

संमत १७०७ रै वरस मुहतो नरसिंघदास जैमलोत डूंगरपुर गयो थो। तरै रावळ पूंजारो करायोडो देहरो[13] छै। तिणरै थाभै[14] रावळ पूजै आपरी पीढी[15] मडाई छै। तठाथी लिख ल्यायो[16]। पीढियारी विगत—

१ आदि श्रीनारायण। २ कमल। ३ व्रह्मा। ४ मरीच।

---

1 युद्धक्षेत्रको सम्हाला। 2 कितने। 3 ये तो समस्त मेरे ही काम आ गये (मर गये)। 4 वैसी सजा पाई। 5 मानकी शक्ति टूट गई। 6 तब मान वासवाड़ेके ऊपर अधिकार जमानेकी वात छोड कर बादशाहके दरबारमें गया। 7 इनको पासमें कोई बैठने न दे। 8 ब्रह्मणोंको वासवाड़ेमें कर लगता है। 9 हम यहीं रहते हैं। 10 मानको मारनेका अवसर आयगा तो मार देंगे। 11 पीछे देशको करसे मुक्त किया। 12 मारनेका अवसर। 13 मदिर। 14 स्तम्भ पर। 15 वंशावली। 16 उस स्थानसे लेखकी प्रतिलिपि करके लाया।

५ कस्यप । ६ सूरज । ७ वैवस्वतमनु । ८ (इक्ष्वाकु) इखुक । ९ (विकुक्षि) विकुय । १० जन्हु । ११ पवन्य । १२ अनेरण(अनरण्य) १३ काकस्त (ककुत्स्थ) । १४ विस्वावसु । १५ महामति । १६ च्यवन । १७ प्रदुमन । १८ धनुर्द्धर । १९ महीदास । २० जोवनाव(युवनाश्व) । २१ सुमेवा । २२ मांनधाता । २३ कुरय सुरथ । २४ वेन । २५ प्रिथु । २६ हरिहर । २७ त्रिसंकु । २८ रोहितास । २९ अम्बरीष । ३० नाडजंघ । ३१ नाड़ीजंघ । ३२ धुंधमार । ३३ सगर । ३४ असमंज ३५ अंसुमान । ३६ भागीरथ । ३७ अरिमरदन । ३८ खीरथुर । ३९ नीरुज । ४० दिलीप । ४१ रघु । ४२ अज । ४३ दसरथ । ४४ रामचन्द्र । ४५ कुस । ४६ अतिय । ४७ निसध । ४८ नील । ४९ नाभ । ५० पुडरीक । ५१ खेमधन । ५२ देवाणिक । ५३ अहिनघु । ५४ जितमंत्र । ५५ पारजात । ५६ सील । ५७ अनाभि । ५८ विजै । ५९ वज्रनाभ । ६० वज्रधर । ६१ नाभ । ६२ विनिजैधि । ६३ धिग्तनाश्व (धिपताश्व) । ६४ विस्वनि (विस्वाजित्) । ६५ हनु । ६६ नाभगुरा (नाभगुरा) । ६७ हिरन । ६८ कौसल्य (सौगल्य) । ६९ ब्रहान्य (ब्रह्मान्य) । ७० उदैकर पत्रनेत्र । ७१ हुदनेत्र । ७२ पुसन्वा (सुयन्वा) । ७३ हावगिद्ध । ७४ सुदर्गण । ७५ सहवण (गहवर्ण) । ७६ अगिनीवरण (अग्निवर्ण) । ७७ विजैरथ । ७८ महारथ । ७९ हुहैय (हैहय) । ८० महानंद । ८१ अनदराज । ८२ अचल । ८३ अभगमसेन (अभंगसेन) । ८४ प्रजापाल (जापाल) ८५ गगेन (गनकसेन) ८६ जितगत्र (जिनगत्रु) । ८७ सुजत । ८८ गत्राजीत (गत्राजित = शत्रुजित) । ८९ गवीर । ९० गकन (सुरथ = सुरून) । ९१ गमन (सुमत) ९२ चादगेह (चद्रसेन) । ९३ धीग्गेत (धीरसेन) । ९४ सुजय । ९५ सुजित । ९६ विनागानग । ९७ रगनरमू । ९८ विजैनिन्च । ९९ मागादिन । १०० भोगादिन । १०१ जोगादिन । १०२ पेंगपादित । १०३ पत्तादित । १०४ भोजा-दित । १०५ धागोगगऊ । १०६ ग्रमान रावऊ । १०७ गोपदरागऊ । १०८ गोहिल गावऊ । १०९ अजुगावऊ ११० मादो गवऊ । १११ मोटो गवऊ ११२ गनिगकुमार गवऊ । ११३ गामपाल ग०

(शालिवाहन) । ११४ नरवाहण रावळ । ११५ जसोब्रह्म रावळ । ११६ नरब्रह्म रावळ । ११७ अंबोपसा रावळ (अंबापसाव रावळ) । ११८ कीरत ब्रह्म रावळ । ११६ नरवीर रावळ । १२० उतम रावळ । १२१ भालो रावळ । १२२ सुरपुंज रावळ । १२३ करन रावळ। १२४ गात्रड़ रावळ । १२५ हांस रावळ (हंस रा०) । १२६ जोगराज रावळ । १२७ वीरड़ रावळ । १२८ विरसेह (वीरसेन) रावळ । १२६ राहप रावळ । १३० देदो रावळ । १३१ नस्ता (नरु) रावळ । १३२ अरहड़ रावळ । १३३ वीरसीह रावळ। १३४ अरसी रावळ । १३५ राइसी (रासी) रावळ । १३६ सांमतसी रावळ । १३७ कुमसी (कुमरसी) रावळ । १३८ मयणसी रावळ । १३६ समरसी रावळ । १४० अमरसी रावळ । १४१ रतनसी रावळ । १४२ पूंजो रावळ । १४३ करमसी रावळ । १४४ पदमसी रावळ । १४५ जैतसी रावळ । १४६ तेतसी रावळ । १४७ समरमी रावळ $\frac{2}{139}$ । १४८ रतनसी रावळ $\frac{2}{141}$ । १४६ नरब्रम रावळ । १५० भालो रावळ $\frac{2}{121}$ । १५१ केसरीसिंह रावळ। १५२ सामतसी रावळ$_{136}^{2}$ । १५३ सीहड़दे रावळ । १५४ देदोरावळ$\frac{2}{130}$ । १५५ वरसिह रावळ । १५६ भड़सूर रावळ । १५७ डूंगरसी रावळ । १५८ करम (करमसी $\frac{2}{143}$) रावळ । १५६ प्रतापी रावळ। १६० गोपो रावळ । १६१ स्यामदास रावळ । १६२ गागो रावळ । १६३ उर्दैसिघ रावळ । १६४ प्रथीराज रावळ । १६५ आसकरण रावळ । १६६ सहसमळ रावळ। १६७ करमसीरावळ$\frac{3}{143\ 158}$ । १६८ पूंजोरावळ$\frac{2}{142}$ । १६६ गिरधर रावळ । १७० जसवत रावळ । १७१ खुमाण सिंघ रावळ $\frac{2}{106}$ । १७२ रामसिंघ रावळ । १७३ उर्दैसिंघ रावळ$\frac{2}{163}$ ।

इति पीढ़्यारी विगत ॥

वात सीसोदियारी–

रावळ समरसी चीतोड राज करै छै । मु किणहीक भांत लोहड़ा[1]–भाईनूं कह्यो– "म्हे तोनूं चीतोड़ दीनी ।" खुसी हुय कह्यो– लोहडै-भाई घणी चाकरी कर रीझाया तरै आप घणूं खुसी हुइ

1. छोटा भाई ।

कह्यो–"म्हे तोनूं चीतोड़ दीनी।" तद लोहड़े भाई कह्यो–"मोनूं चीतोड़ कुण देसी[1] ? चीतोड़रा धणी थे छो[2] ?" तरै समरसी कह्यो–"म्हारो बोल[3] छै। चीतोड़ तोनूं दी।" तरै उण कह्यो–"चीतोड़ सरी दी तो रजपूतारो बोल ह्वै तरै[4]।" तद आप रजपूतांनूं कह्यो–"ठाकुरां ! सगळा बोल दो।" तरै रजपूतां कह्यो–"थे खरै-मन दी छै ? म्हा कना बोल समझ नै दिरावज्यो[5]।"

तरै आप कह्यो–"म्हे खरै-मन दी छै। थे निसंक बोल दो।" तरै रजपूते सगळे बोल दियो। तरै ठाकुराई[6] सोह[7] भाईनै दे नै, राणाईरो खिताब[8] देनै, आप आय गांव आहाड़ वसियो। कितरेक दिने कितराक साथमूं कहण लागो[9]–"जु आ धरती म्हे भाईनू दीनी। उण धरती माहे तो मोनूं रहणो धर्म नही। काइक बीजी धरती गाटीजै[10]।"

तरै वाटवडोद डूंगरपुर कनै छै। तठै चोरासी-मिलक[11], भोमिया आदमी ५०० रो धणी छै। तिको, एक डूंम[12] इणरै छै[13], तिणरी वैरमूं चोरासी-मिलक हालै छै[14]। जोरावर थको चोड़ै-चापटै[15]। संक किण हीरी मानै न छै। डूंम घणो ही वल-वल[16] मरै छै। उण डूमरी वैरनू लेनै आप माळिये[17] सूवै, तठा पछै सारी रात वळे डूमनू ओळगाई[18]। किण ही दिन डूंम ओळगण नावै तो मोहकम कूटाड़ै[19]। डूम नागण मतै छै[20]। पिण ऊपर रखवाळा आदमी रहै, तिण आगै पडो ही नाग न सकै। डूम पिण गासतो घात जोवै छै[21]।

1 मुझको चित्तौड़ कौन देगा ? 2 चित्तौड़के स्वामी आप हैं। 3 मेरा वचन है। 4 तब उसने कहा—यदि चित्तौड़ दी हुई है तो तब समझी जायगी जब आपके सरदारोंका वचन भी प्राप्त हो जाए। 5 तब राजपूतोंने कहा–आपने सच्चे मनसे दी है ? हमारेसे वचन समझ करके दिलवाना। 6 राज्य-सत्ता। 7 समान। 8 पदवी। 9 अपने साथवालोंसे कहने लगा। 10 कोई दूसरी धरती प्राप्त करनी चाहिये। 11 चौरासीमालिक। 12 गाने-बजानेका काम करने वाली जातिका एक व्यक्ति। 13 इसके पास है। 14 उसकी स्त्रीसे चौरासी मालिक रमण करता है। 15 जबरदस्तीसे खुले आम। 16 डूम बहुत ही कुढ़ता है। 17 महल। 18 गायन करवाता है। 19 किसी दिन डूम गानेको नहीं आवे तो उसे लूट लिवाता है। 20 डूम भागनेके विचारमें है। 21 डूम भी सदैव (लगातार) भागनेकी घातमें रहता है।

किण[1] कनै जाऊं ? किण कनै पुकारूं ? तरै किणहीक उण डूमनूं कह्यो–"रावळ समरसी चीतोड़ छोड़नै आहाड़ आय बैठो छै। वड़ी जमियत[2] छै कनै। थारी मदत हुसी तो उठासूं[3] हुसी। दूजो घर[4] तोनूं को नही।"

तरै एकण दिन डूंम घात देखनै उठासूं उठ पाधरो[5] आहाड़ रावळ समरसी कनै आयो। डूंम रावळ समरसीनूं कहण लागो–

"अठै बैठा कासूं करो[6] ? हूं[7] कहूं सो करो। थांनूं वड़ोदतीरा[8] चोरासी माराऊं।"

आगै समरसीरो मन नवी धरती लेणनू हूतो हीज[9] सु वात दाय आई[10]। डूमनूं हकीकत पूछी। डूंम सारी वात कही नै कह्यो–

"असवार ५०० सूं वेगा चढो।"

तद डूंमनूं साथे लेनै रावळ समरसी वडोदैनूं चढियो। अजांणजकरा जाय उतरिया। वडोदरै फळसे पागड़ा छाड़ नै[11] अढाई सै आदमी जेल[12] माहे राखिया नै आदमी २५० डूंमनूं लेनै कोटड़ीनूं चलाया। नै आदमी ४० तथा ५० प्रोळरै[13] मूंहडै बैठा था सु मारनै आघा धसीया[14]। घर मांहे चोरासी थो तठै डूंम साथै हुय वतायो। तरै चोरासीनूं पण मारियो। आपरी आण-दांण[15] फेरी। नै कितरोहेक साथ नै ओ डूम अठै राखियो। आप विचार दीठ, आ ठोड़ छोटी। अठै माहरो पूरो पड़ै नही। तद डूंगरपुररी ठोड़ भील आदमी हजार पाचसूं रहै छै। डूंगरपुररी वडी ठाकुराई छै। तठै रावळ समरसीरो चाकर रहणनूं खोट[16] कर आयो। पछै डूंगरसूं मिळियो। डूंगर पूछायो–"कहो राज ! क्यूं आया ?" तरै रावळ समरसी कह्यो–

म्हे चीतोड़ तो भाईनूं दीनीनै जाणा छां कहेक रूड़ी ठोड़ माणस च्यार मास राखै। नै पछै म्हे कठीक रोजगारसूं जावस्यां।

---

1 किसके। 2 घोडे और और सरदारोंका एक समूह। 3 वहांसे। 4 दूसरा स्थान तेरे लिये कोई नही। 5 सीधा। 6 यहा बैठे क्या करते हो ? 7 मैं। 8 वडोदका जागीरी इलाका (तुम्हारे द्वारा वडोदतीके चौरासियोंको मरवा दूं)। 9 याही। 10 यह बात पसद आई 11 वडोदके द्वार पर घोडोंसे उतर कर। 12 अपने साथ। 13 द्वारके। 14 आगे वढे। 15 अपनी आज्ञा प्रवर्त्त की। 16 दगा।

दिलोरै पातसाहरै कै मांडवरै पातसाहरै जावस्यां। जितरै[1] थे कठेक पग-ठोड़[2] दिखावो तो अठै आय रहा।" तरै उण एक वार तो कह्यो–

"थे कालै चोरासी-मिलक मारिया। अवै म्हांनूं थांरो वेसास[3] न आवै।"

तरै समरसी कह्यो–

"चोरासी मारणसू म्हारै कांम को न हुतो। पिण डूंम आय पुकारियो, तरै वा वात हुई। वा धरती डूंम भोगवै छै। रावळै[4] दाय[5] आवै तो, राज रावळा आदमी मेल[6] अमल[7] करो। माहरै उठै को न छै[8]। मांहरै उण धरतीसूं कांम कोई नही।"

डूगरसूघणी लला-पतो[9] मिळाई। तरै डूंगर रावळ समरसीनै राखियो। सु डूंगर भील भाखररी खभ[10] हीमें डूगरपुर वसायो छै, तठै रहतो। रावळनूं डूंगर नेड़ी हीज ठोड पाधर[11] मे वताई। तठै अै आपणा गाडा आंण वसी[12] सूवा[13] छोड़िया। वाड़ वाळिया[14] – टापरा[15] किया। घणी चाकरी करनै डूंगरनै राजी कियो। मास ५ तथा ६ हुआ, सु खरची गाठरो खाय। मांगै क्यूं ही नही। नै मास-खड[16] वळे आडो-पाड[17] नै डूंगरसूं कहाव कियो। कह्यो—

"म्हारै वेटी ४ मोटी हुई छै। हमै म्हेई राज कनै मास १ माहे सीख करस्यां। पिण डावडियांरां हाथ पीळा[18] किया न छै। सु फिकर छै। थे कहो तो डावडिया परणाइ लां।"

डूंगर कह्यो–

"भली वात छै। वेटिया परणावो। म्हे ही हीड़ा[19] करस्यां।" तद समरसी व्याह थापिया। भाई-वध सगानूं कागद मेलाया–"फलाएै[20] दिन घणो साथ लेनै वेगा आवजो।"

---

1 जवतक। 2 पाव रखनेको स्थान। 3 विश्वास। 4 आपके। 5 पसद। 6 भेजकर। 7 अधिकार। 8 हमारा उधर कोई नही है। 9 डूगरमे बहुत सी चापलूसीकी बातें बनाई। 10 पहाडकी नाल और तलहटीमे। 11 खुला मैदान। 12 वशीवान सेवक। 13 सहित। 14 बाड (घेरा) बनाया। 15 झोपड़े बनाये। 16 एक आध मास। 17 और बीचमें डालकर। 18 किन्तु अभी तक कन्याओके विवाह नही किये है। 19 हम भी काममें मदद करेंगे। 20 अमुक।

पछै डूंगरनूं कहाड़ियो–

वडा ठाकुर ठोड़-ठोड़सूं जांनी[1] आवसी। तिणनूं उतारणनूं जोड़ २ सड़ा[2] बंधायनै करावां।"

तरै डूंगर कह्यो–"भली वात।"

तरै सड़ो १ तो निपट वडो, डूंगर रहै छै तठै भाखर कनै निजीक बंधायो। सड़ो १ रावळधरां वांसै ऊंचो निपट सबळो[3] बंधायो। सड़ो १ आपरो गुढो[4] थो तठै बधायो। जांनांरी[5] पिण आवणरी तयारी हुई। कितरो एक साथ आप न्योतिहार[6] तेड़िया, तिके आय भेळा हुवा। व्याहरै साहा[7] पेहली आप डूंगर कनै गया। घणी हलभल[8] की। वीनती की। दिनां दोय मांहे साहो आयो छै। जांन आवसी तरै तो जांनियांरा हीडा करीजसी[9]। पिण मांहरै घणी वात थे छो, जिए भेळा रहा छां। सवारै राज सारा साथ सूधा अठै आरोगो[10]। डूंगर कह्यो–"भली वात!" तरै रावळ रातूं-रात मेहमांनीरी तयारी करी। तिए सारी रसोई माहे धतूरो, वचनाग, जाझो[11] घातियो। दारूफूल उलटारो पुलटियो[12]। सारी तयारी कीवी। पछै सवारै तीजै पोररा[13] डूगरनूं–बेटा, भायां, परधानां सारा साथ सूधो तेड़नै आदमी ७०० साउ[14] वडा भील वडा सड़ा मांहै बैसाणिया[15]। आदमी ४०० चाकर-बाबर[16] बीजा[17] सडा माहे बैसांणिया। भली भांत परूसारो[18] कियो, नै दारू पावता गया। तरै सारा लोट-पोट वेसुध हुवा। तरै सड़ा बेऊ आडा देनै लगाइ दया[19]। कितरा एक बळमुंवा[20]। बाकीरा[21] फळसारै मुहडै आया, मु खीली-खुटका[22] विगर मारिया। और साथ डूंगररा घरां ऊपर मेलियो। सु कोई उठै हुता सुही

1 वराती। 2 एक प्रकारके बडे पडवे वा झोपडे। 3 दृढ। 4 निजी रक्षाका स्थान। 5 वराती। 6 वे सगे सबधी जिनको विवाहमें नोता देना आवश्यक होता है। 7 विवाहका दिन। 8 हलचल। 9 किये ही जायगें। 10 कल आप अपनें कुटुम्ब और नोकर चाकरो सहित मेरे यहा भोजन करिये। 11 अधिक। 12 फूल मद्यको पुन. औटा कर अधिक मादक वनवाया। 13 तीसरे प्रहर। 14 छाटे हुए अच्छे। 15 बिठाया। 16 नोकर चाकर आदि। 17 दूसरे। 18 परोसगारी। 19 तब दोनों सडोको ढककर आग लगादी। 20 जलकर मरगये। 21 शेप 22 विना प्रतिकार और सरल्ता से मार दिये।

मारिया। माल-वित[1] सारो[2] हाथ आयो। इणविध तो डूंगरपुर ले आपरी राजधांनी उठै कीवी। वडी ठकुराई हुई। विणजारा वहण लागा[3]। नै घणो दांण आवै छै।

तिण दिन गळियो-कोट डूंगरपुरसूं कोस १२, तठै टाटळ-रजपूत भोमिया-मांणस[4] हजार दोड-दोयसूं रहै। तिण मांहे असवार ५०० छै। सासता[5] डूंगरपुररी धरती मारै। विगाड़ करै। गळियो-कोट वड़ो कोट। तठै रहै। वाहर वांसै हुवै, तितरै कोटमें पैसै[6]। कोटसूं जोर लागै नहीं। नै कोटरी उणरै जावताई[7] घणी। उवेचकिया रहै[8]। रावळ घात घणी ही करै, पिण दाव लागै कोई नही। तरै रजपूत भाई २ रावळरै इतवारी चाकर था, तिणांनू जोगीरो भेख करायनै गळिये कोट घात जोवणनूं मेलिया। घणो खरच दियो। वे जोगी हुय गळिये कोट गया। वे आगला[9] ओपरा[10] आदमीनूं गांवमें रहण दै नही। नु वे चरचा सुणनै मास १ गांवरै बारै वेस रह्या तळावरी पाळ ऊपर। कठै ही भीख मांगण नै जाय नही। आपरो (भेद) कोई न जांणै त्यूं आधीरा पछै छांनै कर खाय[11]। किणही आवत-जावतसूं बोलै नही। तरै उणरी वडी मांनता[12] हुई। पछै गांवरा साहूकार, परधान, कोटवाळ, वडेरा मांणस हुता तिके गाय माहे जोगिया नूं घणो हठ करने ले गया। अै कहै—'म्हे न हालां[13]।' पिण मारेई[14] ले गया। कोटरै मुहडै[15] ठाकर द्वारो छै, तठै राखिया। अै किणहीरै घर मागण न जाय। किणही सूं घणा बोलै नहीं। इणांरी वडी मानता हुई। तरै वडेरो टाटलागे धणी थो सु वेळा ५ तथा ७ इणांरै दरसणनूं आयो। कहण लागो—

"म्हारो घर प्रवीत[16] करो। कोट माहे पधारो।" इणा वेळा दोय च्यार उजर कियो, पिण कोट माहे ले गया। उठै जिमाड़िया[17]।

---

1 धनधान्य । 2 समस्त । 3 बनजारे उधर होकर चलने लगे । 4 जिनके भोमियोंवाले सभी लोग । 5 निरंतर । 6 बाहर (दुश्मनों को देखकर पीछा करनेवाले) पीछे पहुंचने को होती है, उसके वे वे कोट में घुस जाते हैं । 7 रखवाली । 8 वे खूब सावधान रहते हैं । 9 पहिला बोरवाले । 10 अपरिचित और उटपटांग । 11 आधीरात को छिपकर भोजन बनाकर खाते हैं । 12 मान्यता । 13 हम नहीं चलेंगे । 14 बलात् । 15 सामने । 16 पवित्र । 17 भोजन कराया ।

कौट मांहे हीज राखिया । अै कोटरा लगाव[1] देखै । पिण लगाव को कठै ही निजर नावै[2] । मास छ उणांनूं कोट मांहे रहतांनूं हुवा । प्रोळ जावताई घणी । दाव को लागै नही । सूई संचार कठै ही नही[3] । गळियोकोट नदी ऊपर छै । सु खाई मांहे वारी १ छै । सु खाई सुराग रुखी छै[4] । तठै छांनो[5] आवण-जावणरो राह छै । सु किणहीक परधांनरै वेटे सदभाव माहे वात करतां जणायो । तरै जोगियां पूछियो—"वा वारो कठीनै छै ।" तरै उण वताई । फलोणी ठोड़ छै । पछै दिन ५ तथा ७ नै उठै जाय वैठा । रातरा उए वारीरी खवर ले, वाहिर जाय मांहि आवणरा भूमिया[6] हुवा । पछै उण टांटलारै कठीक व्याह-गाह[7] थो । तठी सारो साथ चढियो[8] । अै भाई बेउ आलोजीया ।[9] वरस १ आपांनूं अठै आयां हुवो । आज सारीखो दाव कदै लाभस्यै नही ।[10] तरै भाई एक रावळ कनै डूंगरपुर गयो नै भाई एक जोगी थको गळियेकोट मांहे रह्यो । रावळनूं सारी जाय कही । कह्यो—"कोट चाहीजै तो इण घड़ी चढो । रात थकी उठै पोहचो । म्हारो भाई वारीरै मुंहडै वैठो छै ।" रावळ तिण वेळा असवार हजार १०००, पाळा[11] ५०० सूं चढ दोडियो । आगै ओ वारी खोल वैठो थो । उण वारीरी तरफ हुय रावळ साथ सूधो कोटमें पैठो[12] । तितरै भाख फाटी[13] । टांटलांरो जामो वरस वारै हुवा तासुं[14] सारा वाटा काटिया[15] । वैरा पकड़ वध कीवी[16] नै गळियोकोट हाथ आयो । गाव ३५०० मांहे रावळरी आंण-दाण फिरी । वडी धरती हाथ आई ।

डूंगरपुरथी कोस १ पछिमनूं रुद्रमाळो देहुरो[17] नवो हुवो छै ।

---

1 सेध । 2 नही आता है । 3 सूई प्रवेश करे उतना भी छिद्र कही नहीं । 4 वह खाई सुरगके रुपमे बनी हुई है । 5 गुप्त । 6 जानकार । 7 फिर उस टाटलाके कही विवाह आदि था । 8 वहा सब लोग चले गये । 9 इन दोनो भाइयोंने विचार किया । 10 आज जैसा अवसर नही मिलेगा । 11 पैदल । 12 प्रवेश किया । 13/14 इतनेमें प्रभात हुआ । 14/15 टाटलाके समयको बारह वर्ष बीत गये थे सो उसके और आगे वढनेके सभी मार्ग मिटा दिये गये । 16 स्त्रियोको पकड कर वद कर दिया । 17 शिवका मदिर ।

गांव १७५० से तो डूंगरपुर कदीम छै वागड़रा[1]। नै गांव १२ पवारांरा सागवाडियां कडांणांरा मारनै लिया छै[2]।

आ वात भूलै रुद्रदास भांणरै, सांइया भूलारै पोतरै कही[3]। संमत १७१६ रा चैत मांहे। जैतारण मांहे।

डूंगरपुररै देसरी सीव[4] इतरी[5] ठाड़ लागै—
गांव १७५०

उदैपुर दिसा गांव ६, सोम नदी सीव।

उत्तरनूं ईडर दिसा गांव पुजूरी। गाव ६।

भीळांरो मेवास पछिमनूं।

वासवाहळा दिसी महो नदी। गांव १३। नदी मही डूंगरपुरसूं कोस १० छै। तिका मांडवरा भाखरांसूं आवै छै। सु सीरोही परगना हुइ नै देवळियाथी कोस ५ आय नै पाछी मुड़ी छै[6]। सु बांसवाहळा डूंगरपुर बीच हुय नै आगै गुजरातरै लूणेंवाड़ा मांहे वहै।

डूंगरपुर सहरती[7] उगवण[8] नै दिखण बेउ[9] तरफ भाखर छै। घोहळ[10] माहे सहर मगरारी गरभ[11] वसियो छै। छोटो सो कोट छै। उठै रावळरा घर छै। गाव माहे देहुरा घणा छै। चोहटा[12] घणा। हाटै उगड़ी पीठ को नहीं।[13]

डूंगरपुरथी उत्तर दिसनूं रावळ पूंजारो करायो गोवरधननाथरो वडो देहरो छै।

गावसूं ईसान[14] कूणमें रावळ गोपारो करायो वडो तळाव छै।

सहररै पाछै[15] भाखर छै। ऊपर सिकाररो आहुगानो[16] तिण उपलीज[17] भाखर छै। घणी दूर आउगानारे वागरो भींत[18] छै।

---

1 वागड़के १७५० गांवोंमें सहित डूंगरपुर पहलेसे है ही। 2 बारह गांव पंवारोंके जिनमें साग, वन, गामी आदिकी वासिन हैं उन्हें भी अधिकारमें कर लिया है। 3 यह बात सांइया झूलाके पोते और भानके पुत्र रुद्रदास झूलाने कही। 4 सीमा। 5 इतनी। 6 पीछी मुड़ गई है। 7 से। 8 पूर्व दिशा। 9 दोनों। 10 पहाड़की नाल। 11 मगराके बीच 12 चौहटे। 13 दुकानों पर बैठा व्यापार नहीं। 14 ईशानकोण। 15 पीछे। 16 [illegible]। 17 उपर। 18 दीवार।

सहरसूं कोस पूणरी[1] तहड़ कूणमें गांगड़ी[2] नदी छै। तिणरै ढाहै[3] रावळ पूंजारो करायो वडो राजवाग छै।

वात वांसवाह्ळारी—

मूळ तो कदीम ठाकुराई वागड़री डूंगरपुर हीज हुती[4]। पछै रावळ जगमाल उदैसिघोत, रावळ प्रथीराज उदैसिघोत कनै आध वंटायनै गाव १७५० लिया। वांसवाह्ळो राजथांन कियो। तठा पछै इतरा पाट हुवा[5]–

(१) रावळ जगमाल उदैसिघरो।
(२) किसनो जगमालरो। पाट वैठो नही।
(३) कल्यांण किसनारो। पाट वैठो नही।
(४) रावळ उग्रसेन कल्यांणमलोत।
(५) रावळ उदैभांण।
(६) रावळ समरसी।
(७) राउळ कुळसिंघ समरसीरो।
(८) रावळ अजवसिंघ।
(९) रावळ भीमसिंघ।

आगै तो वंट डूगरपुर वासवाह्ळे सारीखो हुवो थो पिण आज वांसवाह्ळो क्यूं डूगरपुरथी[6] सरस[7] छै। हासळ वांसवाह्ळै भळेरो छै। मही नदी वांसवाह्ळाथी कोस ३ उगवणनू[8] छै। मही नदी मांडवरा भाखरांथी आवै छै। डूगरपुरथी कोस १० मही नदी वहै छै। डूंगरपुर वासवाह्लै मुदै[9] रजपूत चहुवाण–वागड़िया। चहुवांण डूंगरसी वालाउतरा पोतरा माथै।[10] इणारै बाप-दादा सदा डूंगरपुर वांसवाह्ळांरा धणियानै थापै–उथापै[11] छै। नै वाहरली फोजां रांणारी, पातसाहरी आवै छै, तरै चहुवांण स्यांम नदी रांणारै मुलकरै गड़ा

---

1 पोन। 2 एक नदी। 3 नदीका ऊंचा किनारा। 4 प्रारम्भमें प्राचीन समयसे ही वागडकी ठकुराई डूगरपुरमें ही थी। 5 जिसके वाद इतनी राज गद्दियें हुई। 6 से। 7 अच्छा। 8 की ओर। 9 मुख्य। 10 जो वालावत डूगरसीके पोतोंसे यह (शाखा-वागड़िया चौहानकी) प्रसिद्ध हुई। 11 स्थापन करते और हटाते हैं।

संघ[1] छै, तिण लोपतां[2] चहुवांण सदा मरै छै। स्यांम नदीरै ढाहै चहुवांण कांम आयांरी छतरियां[3] छै। वागड़रै कांठै[4] चहुवांण भड़-किंवाड़[5] रजपूत वेढीला[6] छै। सु धणियांरै नै चहुवाणारै रस[7] थोड़ा दिन हुवै छै। तद मारवाडरा रजपूतानूं वडा–वडा पटा देनै सदा वागड़रै राजथान वास राखै छै। राठोड़े उठै बडा-वडा प्रवाडा[8] किया छै। तिण राठोडांरो उठै वडो नांव[9] छै। वड़ो इतबाद छै।

वांसवाहळारै सीवरी[10] विगत–

सर्व गांव १७५०

डूंगरपुरसूं सीव पछिम दिसा देवळियो लागै। राजपीपळो निजीक छै।

वासवाहळै गांव १७५० तो कदीम छै इणांरै। तठा पछै इतरी धरती वासवाहळारा धणिया वळे[11] नवी खाटी[12] छै।

आ वात चारण-भूलै रुद्रदास भांणरै, सांईया भूलारै पोतरै कहो। समत १७१६ रा चैत मांहे। मुहता नैणसी आगै जैतारणमे[13] भोमियांरा मार लिया, भोग पडिया[14] गांव १४० सीरोहीरा भीलांरा मेवासरा तथा देवडारा, महीरै पैलै-काठै[15] कोम ६ उगवण-दिसा[16]। गांव १२ खुधुरा उगवणरा[17] खळ-महीडांरा[18]। गांव १२ पीढी मगरा-महीडांरा[19]।

गैहलोतां चोवीस साख भिळै—

१ गैहलोत, २ सीसोदिया, ३ आहाडा, ४ पीपाड़ा, ५ हुल, ६ मांगळिया, ७ आसायच, ८ कैलवा, ९ मगरोपा, १० गोधा,

---

1 निकट। 2 जिसको लांघने पर। 3 स्मारक। 4 सीमा पर। 5 रक्षक-शूरवीर, द्वाररक्षक। 6 युद्ध-रसिक। 7 स्वामी और चौहानोंके परस्पर प्रीति थोड़े दिन ही निभती है। 8 युद्ध, युद्ध विजयकी कीर्ति। 9 ख्याति। 10 सीमा की। 11 और पुनः। 12 प्राप्त की है। 13 यह बात भाणके पुत्र और साइया झूलाके पौते झूले चारण रुद्रदासने वि० सं० १७१६ के चैत्रमें मुहता नैणसीको जैतारनमें कही। 14 निम्न प्रकार गांव भोमियोंने थे जिनको ठोक कर अपने अधिकारमें ले लिये और उनको भोगमें (एक प्रकारकी कर-वसूली प्रथा) डाल दिये। 15 मही नदीके उस किनारे पर। 16 पूर्व दिशामें। 17 पूर्व दिशाकी ओर। 18 एक जाति। 19 पीढ़ीके मगरा महीडोंके।

११ डाहळिया, १२ मोटसिरा, १३ गोदारा, १४ भावला, १५ मोर, १६ टीवणा, १७ मोहिल, १८ तिवड़किया, १९ वोसा, २० चंद्रावत, २१ घोरणिया, २२ वूटावाळा, २३ वूटिया, २४ गाहमा,

अथ पंवारांरी पैंतीस[1] साख—

१ पंवार, २ सोढा, ३ सांखला, ४ भाभा, ५ भायल, ६ पेस, ७ पाणीसवळ, ८ वहिया, ९ वाहळ, १० छाहड़, ११ मोटसी, १२ हुवड़, १३ सीलारा, १४ जैपाळ, १५ कगवा, १६ कावा, १७ ऊमट, १८ धांधु, १९ धुरिया, २० भाई, २१ कछोटिया, २२ काळा, २३ काळमुहा, २४ खैरा, २५ खूट, २६ टल, २७ टेखळ, २८ जागा, २९ छोटा, ३० गूगा, ३१ गैहलड़ा, ३२ कलोळिया, ३३ कूंकणा, ३४ पीथळीया, ३५ डोडकाग, ३६ वारड ।

चहुवांणांरी चौवीस[2] साख—

१ चहुवांण, २ सोनगरा, ३ खीची, ४ देवडा, ५ राखसिया (साखसिया), ६ गीला, ७ डेडरिया, ८ बगसरिया, ९ हाडा, १० चीवा, ११ चाहेल, १२ सैलोत, १३ वेहल, १४ वोड़ा, १५ वालोत, १६ गोलासण, १७ नहरवण, १८ वेस, १९ निरवांण, २० सेपटा, २१ ढीमडिया, २२ हुरड़ा, २३ माल्हण, २४ वंकट ।

साख इत्ती पडिहारां भिलै[3], भाट खंगार नीलियारै लिखाई[4]—

१पड़िहार, २ ईदा[5], मळसिया, काळपाघडिया, वूलणा, ३ लूलो, रामियारा पोतरा[6], ४ रामवटा, ५ बोथा, मारवाड़ मांहे छै, पाटोदी धकै[7] छै, ६ वारी, मेवाड माहे रजपूत छै, मारवाड़ मे तुरक छै[8], ७ धांधिया, पाधरा-रजपूत[9] घणा छै, जोधपुररी[10] मे छै, ८ खरवर, मेवाड़ में

1 शीर्पकमें ३५ शाखाए लिखी हैं किंतु ३६ हैं। 2 शाखा, भेद। 3 पडिहारो में इतनी शाखायें शामिल हैं। 4 नीलिया ग्रामके निवासी भाट खगारने लिखवाई। 5 पडिहारो की ईंदा शाखाकी मळसिया, काळ पाघडिया और वूलण। ये तीन अवान्तर शाखायें हैं। 6 रामियाके पोते लूलो शाखाके हैं। 7 बोथा शाखाके राजपूत मारवाडमें हैं। वे पाटोदीके परे रहते हैं। पाटोदी बालोतरासे १२ मील उत्तरमें और जोधपुरसे ६० मील पश्चिममें है। 8 बारी शाखाके राजपूत तो मेवाडमें है और जो मुसलमान हो गये हैं वे मारवाडमें रहते हैं। 9 साधारण राजपूत (विना जागीरीके) अधिक हैं। 10 जोधपुरके प्रदेशमें रहते हैं।

घणां । ९ सीधका, मेवाड़में नै बीकानेररै देस मे छै । १० चोहिल, मेवाड़में घणा । ११ फळू, सीरोही जालोर[1]री मे घणा । १२ चैनिया, फलोधी दिसा[2] छै । १३ बोजरा । १४ झांगरा, मारवाड़में भाट[3] छै । धनेरियै, भूंभळियै नै खीचीवाड़ रजपूत छै । १५ बाफणा, वांणिया[4] । १६ चौपड़ा, वाणिया[5] छै । १७ पेसवाळ, रवारी[6], खोखरियावाळा । १८ गोढला । १९ टाकसिया, मेवाड़में छै । २० चांदोरा, कुंभार[7], नीवाजवाळा । २१ माहप,-रजपूत, मारवाड़में घणा । २२ डूरांणा, रजपूत छै । २३ सवर, मारवाड़में रजपूत छै । २४ खूंमोर । २५ सांमोर । २६ जेठवा, पड़िहारा भिलै ।

साख सोळकियांरी—

१ सोळंकी, २ वाघेला, ३ खालत, ४ रहवर, ५ वीरपुरा, ६ खेराड़ा, ७ वेहळा, ८ पोथापुरा, ९ सोजतिया, १० डहर, सिंध[8] नूं, तुरक हुवा, ११ भूहड़, सिंधमें तुरक हुवा, १२ रूका, तुरक हुवा थटा दिसी[9] ।

वात देवळियारै धणियांरी—

इण परगनारो नाम ग्यासपुर छै, तिणरो[10] देवळियो गांव छै । सु देवळियाथी कोस ५ ईशांन-कूण[11] मांहे छै, उठै गढ़ कोई न छै,

1 सिरोही और जालोर प्रदेशमें अधिक । 2 फलोदीकी ओर है । 3 पड़िहारोंकी झांगरा शाखा वाले राजपूत भाट हो गये जो मारवाड़में रहते हैं । 'भाट' संस्कृतके 'भट्ट' शब्दका अपभ्रंश है । विविध जातियोंकी वंशावलियें लिखना इनका धंधा है । वंशावलियां लिखने और सुनानेकी वृत्ति अंगीकार करनेके बदलेमें भेंट, पूजा-सन्मान, त्याग और दानादि ग्रहण करनेके कारण यह जाति अपनेको ब्राह्मण मानती है और अब 'ब्रह्मभट्ट' नामसे इनकी प्रसिद्धि है । 4 'वाफना' शाखाके पड़िहार अब ओसवाल बनियों की एक शाखा है । 5 'चौपड़ा' शाखाके पड़िहार अब ओसवाल बनियोंकी एक शाखा है । 6 खोखरिया गांवके रहनेवाले 'पेसवाल' शाखाके पड़िहार भेड़ बकरी और ऊंट आदि रखने और चरानेका धंधा करनेके कारण ये 'रेबारी' कहलाने लग गये और भाटोंकी भांति ही अलग जाति में परिवर्तित हो गये । 7 नींबाजमें रहने वाले 'चांदोरा' शाखाके पड़िहार मिट्टीके बरतन बनानेका धंधा करनेके कारण 'कुम्हार' जातिमें परिवर्तित हो कर क्षत्रियोंसे अलग पड़ गये । 8 सोलंकी शाखाके 'डहर' राजपूत सिंधमें जा कर मुसलमान हो गये । 9 सोलंकी शाखाके 'रूका' राजपूत सिंधमें नगर-थट्टाकी ओर जा कर मुसलमान हो गये । 10 ग्यासपुर परगनेका मुख्य गांव देवलिया है । 11 ईशान कोण ।

भोखरारी खांभ[1] मांहै ग्यासपुर छै। घर ५० वसै छै। तठै मेरांरी कदीम ठाकुराई थी। मेर मेवासी थका[2] रहता। नै खीवो रांणा मोकलरो बेटो हुवो तिकै जाय सादड़ी तेजमालरी उदैपुरसूं कोस २५, चीतोड़सूं कोस २० दिखणनूं[3] तठै जाय रह्यो। रांणो कूंभो पाट छै[4]। मांहो मांहि भायां ग्रास-वेध लागो[5]। खीवै मांडव जाय पातसाहरी फोज आंण[6] मेवाड़नूं वडो धको दियो। वडो ग्रासियो हुवो[7]। कूंभो नै खीवो लड़ता रह्या, पिण खींवानूं काढ़ सकिया नहीं। राणो कूंभो नै खीवो खसता-खसता[8] मूवा। चीतोड़ रांणो रायमल पाट बैठो। खीवारै टीके रावत सूरजमल बैठो। सु राणो रायमल नै सूरजमल घणी हो खसाखूंद[9]। सूरजमल घणी धरती गिरवा सूंधी लिया रहै[10]। सादड़ी थकां भोगवै[11]। तद गांव १७ सांसण[12] दिया सूरजमल। सु वे सांसण अजेस[13] छै। रावत वाघ करमेती हाडीरै मांमलै कांम आयो[14]। तद करमेती कना सही घताइ दी तकां गांवांरी विगत[15]—

१ भीमेल, १ धारता, १ गोठियो, १ बीभणो, १ बांसोलो, १ भुरखिया, १ वालिया, थाहरनू, १ चारणखेड़ी, १ खरदेवळो, भाटरो, १ सुआळी। इतरा गांव सासण दिया। यूं करतां पछै रायमलरै कवर पृथ्वीराज-उडणो[16] लांघां-वलाय[17] मोटो हुवो सु सूरजमलसूं पृथीराज जोर लागो[18]। घणी वेढ[19] कीवी। आखर[20] सादड़ी वडी वेढ़ हुई।

---

1 दो पहाडियोके बीचका ढालू और नीचा स्थान। 2 मेरे लटेरे थके वहा रहते थे। 3 को। 4 राणा कुभा चित्तौड सिंहासन पर है। 5 भाइयोमें परस्पर भूमि-कर विभागके लिये विरोध उत्पन्न हो गया। 6 ला कर। 7 बड़ा उपद्रवी हो गया। 8 लड़ते-लड़ने। 9 द्वेष। 10 सूरजमल गिरवा तक बहुतसी भूमि दबाये बैठा है। 11 सादडीका भी उपभोग करता है। 12 उस समय सूरजमलने १७ गाव दानमें दिये थे। 13 अभी तक। 14 करमेती हाडीके सम्बन्धमें जो युद्ध हुआ उसमें रावत वाघ काम आया। 15 उस समय गावोके दानपत्रमें करमेतीके हस्ताक्षर करवा दिये गये जिनकी सूची इस प्रकार है। 16/17 'उडणो' और 'लाघा-वलाय' रायमलके पुत्र पृथ्वीराजके ये विशेषण है। उडणो = बहुत तेज गतिसे जाकर कार्य सम्पादन करने वाला। लाघा-वलाय = इस पारसे उस पार जा कर शत्रुओंमें भय उत्पन्न करने वाला, लाधने वालोमें बला रूप। पृथ्वीराजने एक ही दिनमें टोडा और जालोर विजय किये थे। इतनी लम्बी दूरीको लाघ कर उसी दिन दोनों स्थानो पर विजय प्राप्त करनेके असाधारण कार्यके उपलक्ष्यमें पृथ्वीराजने अपने नामके साथ ये विशेषण प्राप्त किये। 18 वेगपूर्ण पीछा किया। 19 लडाई। 20 अन्तमें।

सूरजमल पूरे[1] घावे पड़ियो । तिण वेढथी[2] गिरवो छूटो । नै सूरजमलरा दिया दहबारीरै बारै गांव वीभणो नै वांसोलो बीजा ही सांसण गाँव घणाई दिया सु अजेतांई[3] छै । इण वेढ़ ही सादडी छूटी नहीं । पीढ़ी ४ ईणांरै रही ।

१ रावत खीवो मोकलरो ।

२ रावत सूरजमल ।

३ रावत वाघ सूरजमलोत । चीतोड़ बहादररै मांमलै काम आयो ।

४ रावत वीको ।

एक दिन सीसोदिया रावत सूरजमल खीमावत ऊपर अजांणजकरो[4] कवर प्रथीराज रायमलोत आयो, सु पैहलै दिन राणो रायमल नै सूरजमल मांमलो हुवो थो, तठै रांणारी क्यूं कम हुई थी[5] नै सूरजमलरी वधती हुई थी[6] । सु सूरजमलरै क्युंहेक घाव लागा था नै दूजै दिन प्रथीराज टूट पडियो तद सूरजमलरै घाव निपट घणा लागा । सु रजपूत सूरजमलरी डोळी[7] ले भाखरनूं नीसरिया, तरै वांसै[8] साथ प्रथीराज भाखर चाढ़ै छै । सु प्रथीराजरो वनो देवड़ो नै सूरजमलरो चाकर महियो अै दोनूं बाझिया[9] । वनै महियानूं मार लियो । अै दोनूं ठोडै दूणेटो पावता[10] । नै महियो सीसोदियो छै ।

देवळिये रजपूत सीसोदिया सहसावत नै सोनगरा छै । सीसोदियो जोगीदास जोधरो । जोध गोपाळरो । सहसो, खीमो मोकलरो । सु आज जोगीदास भलो रजपूत छै ।

रावत वीको–वीका-रो बेटो भानो टीके[11] हुवो । नै चीतोड़ धणी राणो अमरसिंघ हुवो । नै सैदनूं जीहरण मीमच छै[12] । दीवांणरै नउवो वाघरडै हद छै[13] । तठै रावत गोवद खंगाररो चूंडावत थाणै[14]

---

1 घावोसे पूर्ण हो कर गिर पडा । 2 से 3 अभी तक 4 अचानक 5 (पराजित होने के कारण) न्यूनता रही । बाजी ढीली रही । 6 और सूरजमलकी बाजी बढतीमें रही थी । 7 सोये हुए आहत और मूर्च्छित व्यक्तिको कंधो पर उठा कर लेजानेकी एक टिकटी । 8 पीछे । 9 लडे । 10 दोनो स्थानोमें ये दूसरोसे दुगुना मुआवजा पाते थ । 11 गद्दी बैठा 12 जीहरण और मीमच पर सैयदका अधिकार है । 13 अमरसिंहके राज्यकी सीमा नेडवा और वाघरडा गावो तक है । 14 थाने पर स्थित है ।

छै। तिण ऊपर[1] सैद आयो। तद रावत गोबंद कांम आयो। तठा पछै रांणारा हुकमसू सीसोदिये जोध सकतावत मोरवण, करायो, कुंडळरी सादड़ी जीहरणरा गांव कितराएक मुकातै लिया[2]। जोध, वाघ वेऊ[3] भाई वसिया। जोध एक ठोड़, वाघ एक ठोड़ धरती वीच घाती[4]। उणरी[5] धरती वसण दै नही। आपरी वासै[6]। मीमचरै गांव चौथ[7] मांगै छै। नै रावत वीको अठाथी राणै उदैसिघ ठेल काढियो छै,[8] तो पिण[9] इणारो[10] सादड़ी माहे दखल छै। वीके जाय देवळिये गुढो कियो[11]। तद उठै वडेरी मेरारै आसारण दादी छै[12]। उणरो कारण घणो छै[13]। वे कयो म्हे थांनू रहण नही दाँ अठै[14]। तरै इण घणा सूस-सपत[15] किया। पछै होळीरै दिन चूक करनै मेर सोह मारिया[16]। वीके देवळियो लियो। उण आसारणांरा वेटा-पोतरानूं गांव १ अजेस छै[17]। तिणरो वडो इतवार छै[18]। गांव ७०० देवळियानू लागै नै देवळियारै पूठीवासै[19] गांव १०० माहे मेर रहे छै। केई रैत[20] छै, केई मेवासी[21] छै। वडी धरती छै[22]। गोहूं, उड़द, चावळ, वाड़[23] घणो हुवै। आवा महुडा घणा[24]। गाव ३०० भाखर मांहे, गाव ४०० भाखरारै वारै छै।

इतरी धरती देवळियेरा नवी खाटी[25]––

गाव ८४, मुहागपुरो सोनगरांरो उतन[26]। रावतसिंघ आ ठोड़ लीवी। वे सोनगरा चाकर थका अजेस धरती माहे रहे छै[27]। रामचंद[28]

1 जिम पर चढाई कर। 2 इजारे पर लिये। 3 दोनो। 4 जोधने एक स्थान पर और वाघेने एक दूसरे स्थान पर भूमि पर अधिकार किया। 5 उसकी (सैयद की) भूमि आबाद नही होने देते। 6 अपनी भूमिको बसाते है 7 आयका चतुर्थांश 8 और रावत वीकाको राणा उदयसिहने यहासे निकाल दिया है। 9 ताभी। 10 इनका। 11 रक्षास्थान बनाया। 12 वहा (देवळिये) मे उस समय मेरोकी एक आसारण पितामही रहती थी। 13 उसकी बहुत प्रतिष्ठा है। 14 उसने कहा हम तुमको यहा नही रहने देगे। 15 तब इसने बहुत प्रकार सौगंध खा कर वचन दिया। 16 किन्तु होलीके दिन छल करके उसने सब मेरोको मार दिया। 17 अभीतक एक गाव उन असारणोके बेटे पोतोंके अधिकारमे है। 18 उनका बडा सम्मान और भरोसा है। 19 पीछेकी ओर 20/21 कई नियमपूर्वक प्रजाके रूपमे और कई लुटेरोंके रूपमे 22 भूमि अच्छी उपजाऊ है। 23 गन्ना। 24 आम और महुआ अधिक। 25 इतना-भूप्रदेश देवलिया वालोंने और नया प्राप्त किया। 26 जन्मभूमि। 27 वे सोनगरे नौकर की स्थितिमे अभी तक उस धरती मे रहते है। 28 वह न्यायी और धर्मात्मा होनेके कारण भगवान् रामके आचरणोंका अनुवर्ती कहा जाता था।

कहावतो, राव पदवी। वडो ठाकुर हुवो। देवळियाथी कोस चवदै दिखणनूं माळवा माहे वडी धरती। गोहूं, वाड़, मसूर, चिणा, ज्वार घणी नीपजै।

गाव १४० परगनो वसाडरो। देवळियाथी कोस ४ उगवण[1] मांहे, वडी धरती। गोहू, वण[2], वाड, ज्वार, चावळ नीपजै।

गाव ६४ परगनो नैणेररो। देवळियाथी कोस १० दिखणनूं सुहागपुरै लगती। दिखण दिसनू अरणोदगौतमजी[3] वडो तीरथ छै। गोहूं, वाड, वण, ज्वार, चावळ नीपजै।

गाव १२ सेवना[4] मंदसोर रावत हरीसिंघ दबाया छै। क्युंही मुकातो दै छै। देवळियाथी कोस १० घणा दिन मुकातो-कर[5] लियो।

इतरा गावा परगनांसू देवळियारो काकड[6] लागै। १ दसोर, १ रतलाव[7], १ बलोररो परगनो राणारो। सोनगरा बालावतांरो उतन। झाड़ी घणी। १ जीहरण-रांणारी, १ धीरावद-रांणारी, १ वांसवाहळो।

इतरा परगनासू काकड लागै—

नदी २ जाखम नै जाजाळी। देवळियारा भाखरांमें नीसरै छै[8]। तिणरो पाणी निपट बुरो छै। देवळियेथी कोस ५ पछिमनू छै। उदैपुरसू देवळिये जाईजै तद आड़ी आवै छै[9]। पांणी पीवै तिणनै तो खेद[10] करैहीज पिण पग माहे बोडै[11] तिणनू ही दखळ[12] करै छै।

वात—

सीसोदियो जोध, वाघ मुकातो जीहरणरो ले रह्या छै। धरती भोग घाती[13] छै। सैदसू पिण जोरावरी[14] करै छै। रावत भानारै गांवासू लागै छै, नै अै चढनै देवळियेरै मेरारा गाव मारै छै[15]। रावत भानैनै इणारै जोर विरस[16] छै। तद भानै सैदनू कह्यो—'अै

---

1 पूर्व दिशा। 2 ? 3 एक तीर्थ-स्थान। 4 गावका नाम। 5 इजाराकी स्थितिमे मिलने वाला कर 6 सीमा। 7 रतलाम नामक शहर। 8 निकलती है। 9 उदयपुरसे देवलिये जाना होता है तब बीचमे आडी आती है। 10 रोग, कष्ट। 11-12 किन्तु पांव डुबानेमे भी गडबड कर देता है। 13 भूमि पर अधिकार कर लिया है। 14 जबरदस्ती। 15 लूटते हैं। 16 अनबन।

वळायां[1] अठै क्यू राखै छै। सवारै थ्रै थांनू[2] हीज मारसी।' तरै सैद मांखण ही वात मांनी। एक वार दीवांण अमरसिंघ कनै पुकार की 'जोध मांहरा[3] गांव मारै छै'। 'माहरै माथै चढसी' आ वात जोध सांभळी[4]। तरै मांहोमांह दरबार माहै जोर चढिया[5]। वात कराड़ां वारै हुई[6]। भानो पाछो देवळियै गयो। जोध पाछो गांव गयो। सैद माखण मंदसोररो फोजदार नै रावत भानो मांणस असवार १५०० जोध ऊपर आया। जोध असवार १००, पाळा दोयसैसूं चढ़ सामो आयो। तठै चीताखेड़ैरै पैलै-कानै[7] वड़ थो तठै वेढ़ हुई। जोध सैद मांखण नै रावत भानैनू मारनै जोध काम आयो। तठापछै उणे[8] गांवे जोधरा बेटा नाहरखान भाखरसी रह्या। सैद पिण धको खाधो[9]। देवळियैरै धणिये पिण धको खाधो। देवळियै टीकै सिंघो तेजावत भानारो भाई वैठो। पछै मीमच राव दुरगो। रांमपुरारा धणीनूं तरै राव दुरगे कह्यो–'म्हे दीवांणरा चाकर छा। जाणै ज्यू[10] मीमच-जीहरणरी धरतीरा गाव ले, दीवाण जाणै ज्यू म्हांनै[11] दे। तरै जाणिया[12] सु गॉव लिया पछै देवळियैरै धणियांनै पिण दीवांण टीको मेल्यो। दिलासा करी[13]। कह्यो–'रावत भांनो पिण म्हांरो भाई मूवो' जोध पिण म्हारो भाई मूवो। हमै जोधरा बेटा उठै छै। थे नांव मत ल्यो।' रावत सिंघ हुकम माथै चढायो[14]। तरै धरती वसी। पछै राणा अमरसिंघरै विखो वरस सात हुवो। धरती रांणा सगरनू हुई। पछै राणा अमरसिंघसू वात हुई। तरै मीमच-जीहरण राणाजीनू पातसाह दीवी। देवळियैनै राणा रै मुलक काकड़ इण गांवां[15]– जीहरण-मीमचरा गाव––

१ चीताखेडो–राणारो।

१. जथलो–रावतरो। सीसोदिया जोधवाळो।

१. उगरावण–राणारो।

---

1 ये वलाए यहा क्यो रखता है। 2 कल तुमको ही मारेंगे। 3 हमारे। 4 सुनी 5 उग्र वादविवाद हुआ। 6 वात मर्यादाके वाहिर होगई। 7 उस ओर। 8 उन गांवोंमें 9 सैयदको भी हानि उठानी पडी। 10 जिस प्रकार ठीक समझे। 11 मुझे। 12 मनवांछित 13 ढाहस बंधाया। 14 गवर्नमिट्ने आज्ञा शिरोधार्य्य की 15 देवलियावालो और राना के देशकी सीमा इन गांवोंमे मिलती है।

१. अंबलीरो टूक–रावतरो ।

१. वळोर–रांणारी ।

१. वांभोतर, धमोतर रावतरी ।

१. हरवार, वघरेडो, वडगांव रावतरी । नै

१. भैंरवी रांणारी । घाटो[1] छै ।

देवळियैरा गांव–चीताखेड़ो, उगरावण, धमोतर चाकर रावतरा ।

रावतसिंघ तेजारो मूवो[2] । पाट रावत जसवंत देवळिये हुवो । तद वसाड़रो गांव मोडी रावत जसवंत नाहररो सकतावत रांणा जगतसिंघरो मेलियो[3] थांणै रहै घणा साथसूं । रावत जसवंत सिंघावत मंदसोररो फोजदार जांनिसारखाँ थो तिणनूं भखाइ[4] दीवांणरा थांणा ऊपर आणियो[5] । रावत आप साथे न छै । देवळियारो साथ घणो भेळो छै[6] । रावत जसवंत नरहरोत इतरा साथसूं काम आयो—

१. रावत जसवंत नरहरोत ।

१. सीसोदियो जगमाल वाघावत ।

१. सीसोदियो पीथो वाघावत ।

२. सीसोदियो कान, सादूळ नरहरोत ।

१. सबळसिंघ चतुरभुजोत पूरबियो ।

इतरो साथ काम आयो । तिको गुसो मनमें राखनै रांणो जगतसिंघ उदैपुर रावत जसवंत सिंघावतनूं रामसिंघ करमसेनोत कना[7] रावत जसवंत नै बेटो महासिंघ मराया । नै तद पैहली[8] साह अनैराजनूं देवळियारी गडामघ धीरावदरो दीवाणरै परगनो छै, तठै चूक[9] माथै घणा माथसूं राखियो थो । साहनूं लिख मेलियो थो जु थे जाय देवळियो लेजो-मारजो । पिण साह गयो नहीं । उठै सीसोदियो जोध गोपाळोत रावत हरीसिंघनूं टीकै वैसाणियो[10] । पछै सीसोदियो

---

1 दो पहाडोंके बीचका बड़ा मार्ग । 2 तेजाका पुत्र रावतसिंह मरगया । 3 भेजा हुआ । 4 बहकाकर । 5 रानाके थाने पर चढाकर ले आया । 6 शामिल है । 7 से, द्वारा । 8 उससे पहले । 9 छल द्वारा मारलेनेके निमित्त । 10 गद्दी पर बिठा दिया ।

जोध गोपाळोत रावत हरीसिंघनूं दरगाह ले गयो। पछै देवळियो रांणाथी अलहादो कियो[1]। पछै उजैण अहमंदावाद चाकरी कीवी[2]।

अथ बूंदीरा धणियांरी ख्यात लिख्यते।

वार्ता--

चौवीस साख चहुआंणारी, तिण माहै साख १ राव लाखणरा पोतरा हाडा बूंदीरा धणी।

बूदीमें मीणा कदीम रहता। नै हाडो देवो बांगारो भैंसरोडथी बिखायत थको[3] जाय बूदी रह्यो हुतो। सु एक वात यूं सुणी[4]--बूदी माहे बाभण[5] रहता, तिणांरी बेटी मैंणा कहे म्हानूं परणावो[6]। तद बाभणा उजर घणो ही कियो[7]। पिण मैंणा मानै नही, तरै हाडा बांभणांरा जजमान था, सु बाभण देवा कनै भैंसरोड जाय पुकारिया। तरै हाडां कह्यो--"थे बेटी द्यो[8]। व्याह थापो[9]। नै उणनूं कह राखजो। म्हे हीडा[10] माहै क्यूं समझा न छा। माहरां हाडा जजमान छै। भैंसरोड रहै छै, सु म्हे तेड़स्यां[11]।" तद मैंणां कह्यो--"भली वात छै।" पछै व्याह थाप नै हाडानूं तेडिया। तद मैंणानूं बाभणां कह्यो--"म्हे म्हांरी रीत व्याह करस्या[12]" तद मैंणा मदध[13] हुता किण ही खोट-चूक[14] री वात समझ्या नही। पछै साहा[15] पैहली सडा[16] सवळा बंधाया। माहै हाडे सोर पथरायो[17]। ऊपर घास पाथरियो[18]। पछै मैंणानूं बुलाय जानीवासै[19] उतारनै दारू पायो। तरै छकिया वेसुध हुवा[20]। तरै केई घावे मारिया[21], के सडामे फूक दिया[22]। हाडै मैंणा सोह[23] मारनै वळै[24] गाव ऊपर जायनै वांसै[25] को रह्यो थो सो कूट-मारनै[26] बूदी लीवी। बीजा[27] हुता सु नास गया, तिके बूदेला वाजै छै।

---

1 देवलियाको रानाके अधिकारमें छीन लिया। 2 देवलियाके स्वामीने उज्जैन और अहमदाबादकी सेवा स्वीकार की। 3 विपदावस्थामें। 4 इस सबंधमें एक वात यों सुननेमें आई। 5 ब्राह्मण। 6 विवाह करदो। 7 तब ब्राह्मणोंने बहुतेरी आपत्ति की। 8 तुम बेटी देना स्वीकार करलो। 9 विवाहकी तिथि निश्चित करलो। 10 प्रथानुसार परिचर्या करनेमें हम कुछ नही समझते। 11 बुलायेंगे। 12 हम अपनी रीतिसे विवाह करेंगे। 13 मदान्ध। 14 छल-कपट। 15 विवाहसे प्रथम। 16 बडे झोंपडे। 17 हाडोंने उनके अन्दर बारूद बिछवा दिया। 18 बिछा दिया। 19 जनिवासा। 20 नशेमें छककर अचेत होगये। 21 तब कइयोंको तलवारके घाट उतार दिया और कइयोंको मढे जलाकर फूंक दिया। 23। समस्त। 24 पुन। 25 पीछे। 26 ठोक-पीट कर। 27 और थे सो भागगये।

एक वात यू सुणी—

हाडो देवो बांगारो, बूदी वेखरच थको आय भैसरोडथी रह्यो हुतो[1]। कनै आपरी वसी[2] हुतो। नै देवै रांणा अरसी लखमसिओतनू बेटी दीवी थी। सु रांणो अरसी अठै जांन कर[3] वडी फोज ले परणीजण आयो। सु परणियां पछै राणै अरसी देवानू पूछियो—'थारी कासू हकीकत ?[4]' पूछी तरै देवै कही। तरै रांणै कह्यो—'थे अठै काहिणनू रहो[5] ?' उरा आवो[6]। तरै देवै कह्यो—'मांहरी एक अरज छै, एकंत मालम करसू।' तद रांणै एकंत पूछियो। तरै देवै कह्यो—'आ भली धरती मेणां हेठै[7] छै नै मैणा निवळा सा छै। जिकै छै सु आठ पोहर छकिया दारू मतवाळा थका रहै छै, सु दीवांण[8] साथरी[9] मदत करो तो मैणा मारनै आ धरती लू नै दीवांणरी चाकरी करू। तरै देवै मागियो सु देवानू रांणै डेरो उठै (सू) हीज दियो[10]। देवो फोज ले, बूदी मैणां ऊपर रात थकी आयो[11]। नीसरणरा घाट[12], नास-भाजरा हुता सु भूमिया था सु सोह रोकनै मैणा सारा कूट-मारिया। बीजा जठै हुता सु सोह नाम गया। देवै आपरी आंण फेरी[13]। मैणा मारनै राणारी हजूर आयो[14]। रांणो बोहत राजी हुवो। देवानू कह्यो—'वळै कहो सु करा[15]। तरै देवै कही—दीवाणरा ऊपरथी सारी बात भली हुई[16]। मास ४ असवार सौपाच मदत पाऊं। तरै रांणै असवार ५०० मदत देनै आप चीतोड चढियो। पछै देवै भोमिया[17] था सु सारा कूट मारिया। बीजा धरती माहे था सु सारा नास गया। पछै देवै आपरा भाईवध तेड नै[18] ठोड-ठोड वसी[19] राखी। आपरी जमीयत[20] राखी।

---

1 देवाके पास पैसा नही था अत बूदीमे भैसरोड आकर रहगया था। 2 कामदार आदि वे कर-मुक्त नौकर चाकर जिन्हे उस जागीरदारका 'चोटी-वढिया' और 'वसीरा लोक' भी कहते हैं। 3 वरात बनाकर। 4 तुम्हारी क्या स्थिति है? 5 तुम यहा काहे को रहते हो? 6 (हमारे यहा) आजावो। 7 अधीन। 8 राना। 9 सेना। 10 जितने मनुष्योंकी सहायता देवाने मागी उतने मनुष्य रानाने अपने ऽनिवासमे ही उसे दे दिये। 11 रात रहते मैनो पर चढकर बूदी आगया। 12 द्वार मार्ग। 13 देवेने अपने शासनकी आज्ञा प्रवर्त्त कर दी। 14 मैनोको मारकर रानाके दरबारमे आया। 15 और कोई काम हो तो कहो सो वह भी कर दिया जाय। 16 रानाकी सहायतासे सब बात ठीक हुई। 17 छोटे जागीरदार। 18 बुलाकर। 19 स्थान-स्थान पर कर-मुक्त सभी नौकर-चाकर आदि नियुक्त कर दिये। 20 उमराव और सरदाराही।

धरती रस पड़ी[1]। दीवांणरा सायनूं सीख दीवी। तठा पछै आपही वडी जमीयत करनै दसरावानं[2] राणारै मुजरै गयो नै मेवाड़री चाकरी करण लागो।

एक वात यूं[3] सुणी--हरराज डोड[4] बूंदीरो, मैणांरो एकल असवार घणो धरतीरो विगाड़ करै। तद मैंणा घणा ही खसथाका[5]। हरराजनूं पोहच[6] सकै नही। कितराएक रिपिया[7] मैणा कना वरसरा वरस नाळवंधीरा[8] लै नै धरती पिण मारे। तिण समै हाडा देवा वागावतरै घोडो १ थो सु माडवरै पातसाह मंगायो। इण दियो नही। तरै देवो भैसरोड़ परी छोड़नै बूंदी मैणांरो मेवास जांण अठै वू दी आयो। तरै बूंदीरै मैणे दूड़ी-नाचणरो[9] घर थो, तठै घर-ठोड़नूं[10] जायगा दिखाई। सु दूडीनूं वयु अगमरी[11] खवर पड़ती। सु दूडीनै देवै भेळै रहतां मुख[12] हुवो। सु दूड़ी एकंत देवानूं कहै छै–'इण धरतीरा धणी थे हुस्यो[13]।' पछै मैणे एक दिन हथाई[14] वैठां कह्यो–'इण हरराज डोड म्हा माहै वडी लीक[15] लगाई छै। मांहरै माथै डड कियो छै सु पिण लै नै धरती पिण मारै छै[16]।' तरै देवे कह्यो–'इणनूं कोई पालै[17] तो तिणनूं थे कासूं[18] दो।' तरै मैंणै वडेरै[19] कह्यो–माहरै धरतीरो हासल छै, तिण माहैसूं आध म्हे थांनूं देवां। तरै इणा वोल-कोल सूं स-सपत करी[20]। नै दीवाळीरो दीवाळी हरराज डोड वूंदी आवतो, घावदेतो[21]। सु देवो तो उण अैराकी-घोड़ै चढनै पाखर घातनै जीनसाल पहर तयार हुवो[22]। नै पैली-कांनै

---

1 भूमि पर पूर्ण अधिकार होगया। 2 दशहरा। 3 इसप्रकार। 4 डोड जातिका क्षत्री हरराज इकला घुडसवारी करके मैणो और उनकी भूमि का विगाड करता है। 5 मैणे प्रयत्न कर थक गये। 6 हरराजको नही पहुंच सकते। 7/8 प्रतिवर्ष नालवधी-कर के रूपमे कितने ही रुपये भी लेलेता है और लूटपाट कर भूमिमे विगाड भी करे। 9 दूडी नामक नर्त्तकी। 10 तब रहनेके लिये स्थान दिखाया। 11 भविष्य। 12 प्रीति। 13 इस भूमिके स्वामी तुम होवोगे। 14 वातचीत या पचायतकी चौकी। 15 धाक जमा रखी है। 16 हमारे पर दड भी लगा दिया है सो भी लेता है और लूटपाट भी करता है। 17 रोकदे। 18 क्या। 19 तब बड़े और वृद्ध मैणोने कहा। 20 तब इन्होने वोल-वचन और सौगद शपथ की। 21 प्रहार करना। 22 देवा तो उस अरबी घोड़े पर पाखर डाल, कवच पहिन चढ़कर तैयार हुआ।

हरराज गावरा मैणां आवतो दीठो[1]। तद मैणातो सरब नासगया न घरा माहै पैठा[2]। नै देवो ओळरै वारै आयो नै देवै हरराजनै आवतो दीठो। हरराज देवैनै दीठो। देवै घोड़ैनू चढ कोरड़ो[3] वाह्यो[4]। तद हरराज पाछा फेरिया[5]। देवै वासै घातिया[6]। बीच [7]वाहळो १ ऊंडो हुतो सु हरराजरो घोडो डाक[8] पैलै तीर जाय ऊभो। बेऊ[9] घोड़ा आमां-सामा कर ऊभा रह्या। वात हरराज देवैनू पूछी–"थे कुण[10]? कठासूं आया[11]?" तरै देवै आपरी हकीकत कही–"चहुवाण बूंदीरो देवो म्हारो नाव छै[12]।" तरै कह्यो–"थे अठै कद आया[13]।" तरै कह्यो–"मास च्यार हुवा।" कह्यो–"हमै कासूं विचार[14]?" तद देवै कह्यो–'म्हे था ऊपर बीड़ो लियो छै[15]। अठै वळै आवस्यो तो थानूं मारस्या[16]। पछै हरराज कह्यो–"हमै पछै हूं नही आवू" तरै मांहो-माहे सुख हुवो। नै पागड़ा छाड़िया[17], उतर मिळिया। तठा पछै कितरैएक दिनै देवै हरराजनूं आपरी बेटी दी। सु वा देवारी बेटी निपट फूटरी छै[18]। तद मैणो वडेरो छै तिको देवानूं कहै–"म्हानूं परणावै[19]" इण घणा ही उजर किया[20]। मैणा मानै नही। तद बेटी देणी करी। पछै हरराज डोड कोसीथुर सोळंकी सगा रहता तिके तेड़ मीणांनू सड़ां माहै घात कूट-मारिया। देवै बूंदी इण तरै लीवी।

अथ हाडारै पीढियारी विगत—

१ राव लाखण[21]–नाडूल धणी। २. बली।[22]

---

1 उस ओरमे मैणो ने हरराजको आते हुए देखा। 2 घरोमे घुसगये। 3 चाबुक। 4 मारा। 5 पीछा लौटाया। 6 देवा उसके पीछे हुआ। 7 बीचमे एक गहरी छोटी नदी थी। 8 कूदकर, लाघकर। 9 दोनो। 10 तुम कौन?। 11 कहासे आये? 12 बूंदीका रहने वाला चौहान देवा मेरा नाम है। 13 तुम यहा कब आये? 14 अब क्या विचार है? 15 हमने तुमारे विरुद्ध बीड़ा उठाया है अर्थात् तुम्हे मारनेका निश्चय किया है। 16 यहा फिर कभी आवोगे तो तुम्हें मारदगे। 17 घोडोसे उतरे और परस्पर अक भरकर मिले। 18 अत्यन्त रूपवती है। 19 मुझको ब्याह दे। 20 उसने बहुत ही एतराज किया। 21 राव लाखण बड़ा वीर और नीतिज्ञ था। इसने नाडोलको अपने अधिकार मे कर लिया था। यह सांभर नरेश वाक्पतिराजका छोटा पुत्र था। 22 कई प्रतियोंमे लाखणके बाद 'सोहित' वा 'सोही' नाम लिखा है और 'माहिलके' बाद 'बली' वा 'बलराज' मिलता है। यही शुद्ध है।

३. सोहित ।	४. महदराव ।
५. अणहल ।	६. जिंदराव ।
७. आसराव ।	८. माणकराव ।
९. मंभरांण ।	१०. जैंतराव ।
११. अनंगराव ।	१२. कुंतसीह ।
१३. विजैपाल ।	१४. हाडो[1] ।
१५. वांगो ।	१६. देवो वांगारो, जिण बूंदी मैणां कना लीवी।

हाडो देवो वागारो परवार--

२. समरसी ।

२. जीतमल-तिणरी बेटी जसमादे[2] हाडी रावजोधारै पटरांणी राव सूजारी मा। २ भागचंद । २ रायचंद । २ राव रामचंद ।

समरसी देवारो आक २--

३ नापो । ३ हरराज । ३ हाथी ।

नापो समरसीरो आक ३--

४ हामो टीकायत[3] । ५ लालो, तिणरी ओलादरा नव-ब्रह्म[4] लखानखेड़ैवाळा हाडा छै । ५ वरसिंघ । ६ वैरो । ६ लोहट - लोहटवाळीरा[5] हाडा छै । ६ जव । जवदूरा वांसला मियांरै-गुढै रहै छै[6]।

जवदू हामारो आक ६ ।

७ वछो । ८ साहरण । ९ मीया । ९ सांवळदास ।

साहरणरो आक ८ ।

९ मावत । १० वळकरण । ११ जोध । १२ दुरगो । १० तेजो । ११ मान । ११ नारण । १० दोलतखान । ११ रूपसिंघ । १० खीवो । १० ऊदो । ११ रायसिंघ । ११ तुलछीदास । १० कलो ।

---

1 कोटा बूंदी आदिके चौहानोंकी 'हाडा' संज्ञा इन्हीके नामसे हुई। 2 जीतमलकी पुत्री जसमादे हाडी जोधपुर बसानेवाले राव जोधाकी पटरानी और रावसूजाकी माता थी। 3 राज्यगद्दीका अधिकारी। 4 लखानखेडा वाले लालाके वंशज नव-ब्रह्म-हाडा कहलाते हैं। 5 लोहटके नामसे प्रसिद्ध 'लोहटवाळी' प्रदेशके हाडा इसी नामसे प्रसिद्ध हैं। 6 जवदू के पीछेके (वंशज) 'मिया-रो-गुढो' नामक गावमे रहते हैं।

वैरो वरसिंघरो आक ६—

७ भाडो। ८ नारणदास भांडारो। वूंदी धणी। रावसूजारी वेटी खेतूवाई परणियो हुतो[1]। अमल[2] निपट घणो खावतो। सु नारणदास पैसाब करण वैठो हुतो सु यूंहीज ऊंघियो[3]। सु खेतूवाई राव ऊपर साड़ीरो छेह नाखनै ऊभी रही[4]। यूं करतां सवार हुवो, रावरी आख खुली[5]। देखे तो खेतू ऊभी छै। तरै राव राजी हुवो। कह्यो—"मांहरा घर-सारू[6] थे जांणोसु[7] मांगो। तरै वाई कह्यो—"मांहरै तो थांरी सलांमतीसूं[8] सोह थोक[9] छै, पिण रावळो[10] अमलरो पोतो[11] मो कनै[12] रहै।" तरै पोतो खेतूनूं सांपियो। खेतू अमल दिन २ घटायो। तठा पछै वाईरै[13] सूरजमल वेटो हुवो। पछै नारणदास एक वार राणा सागारी वार पातसाह मांडवरो झानियो छै[14]। ६ सूरजमल वडो आखाडसिध[15] रजपूत हुवो। रांणा रतनसी सांगावतनूं मरतो ले मूवो[16]।

हाडो मीयो[17] वछारो, आंक ८।

६ सावळदास। १० चद्रभाण। ११ नरहरदास। भावसिंघ रै परधान। मीयारै ग्वैडै सादियाहेडै रहै छै[18]।

वात हाडै सूरजमल नारणदासोतरी नै रांणा रतनसी सांगावत मांमलो हुवो तिण समैरी[19]।

राणो सागो रायमलोत चीतोड़ राज करै छै। टीकायत वेटो रतनसी राठोड धनाईरै[20] पेटरो छै। राणो सागो पछै हाडी करमेती, हाडा नरवदरी वेटी परणियो थो। सु राणो करमेतीसूं घणी मया

1 जोधपुरके राव सूजाकी पुत्री खेतूवाईको व्याहा था। 2 अफीम। 3 पेशाव करते हुएको ही नीद आगई। 4 खेतूवाई पेशाव करते हुए निद्रित नारायणदासके ऊपर अपनी साडीका छोर डालकर खडी रही। 5 इसी प्रकार प्रात काल होगया तव राव नारायणदास की नीद उडी। 6 हमारे घरकी सामर्थ्यानुसार। 7 चाहे जो। 8/9 मेरे तो आपकी कुशलपूर्वक विद्यमानतामे सभी वस्तुए है। 10 आपका। 11 अफीमका वटुआ। 12 मेरे पास। 13 जिसके वाद खेतूवाईके सूरजमल नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। 14 पकडा है। आश्रय लिया है। 15 महावली। 16 सूरजमल मरता हुआ रतनसीको भी ले मरा। 17 वछाका पुत्र हाडा मीया। 18 मीयाका गाँव सादियाहेडे रहता है। 19 नारायणदासका पुत्र हाडा सूरजमल और सागाका पुत्र रतनसीके परस्पर युद्ध हुआ उस समयका वर्णन। 20 राव सूजाका पुत्र वाघाकी कन्या राठोड धनाईकी कोखमे रतनसीका जन्म हुआ।

करै छै[1]। पछै करमेतीरै वेटा २ हुवा–विक्रमादित, उदैसिंघ। तिणांसूं रांणो घणी मया करै छै। सु एक दिन दीवांणसूं करमेती अरज कीवी–"दीवांण घणा दिन सलांमत रहै, पिण विक्रमादित उदैसिंघ नान्हा[2] छै। रावळै टीकाइत साहबीरो धणी रतनसी छै। राज बैठा कांइक इणारो सू'ल[3] करो तो भलो छै।" तरै रांणै पूछियो–"थे किण भात अरज करो छो।" तरै करमेती हाडी कह्यो–"इणानूं रिणथंभोर सारीखी ठोड़ रतनसी नै पूछनै दीजै नै हाडा सूरजमल सारीखा रजपूतनूं बांह झलाईजै[4]। आ वात दीवांण ही कबूल करी। सवारै दीवाण जुड़ियो[5], तरै कवर रतनसीनूं राणै सांगै कह्यो–"विक्रमादित उदैसिंघ थारा न्होहड़ा[6] भाद छै। तिणानूं एक पग-ठोड़[7] दीनी चाहीजै।" सु राणो वडो दूठ[8] ठाकुर छो, सु रतनसी क्यु[9] फेर कहो सक्यो नही। कह्यो–"रावळै विचार आवै सु ठोड़ दोजै।" तरै राणै रतनसीनूं कह्यो–"रिणथभोर इणांनूं[10] दो।" तरै रतनसी कह्यो–"भला।" तरै राणै विक्रमादित उदैसिंघनूं कह्यो–"म्हे थानूं रिणथभोर दियो। थे ऊठ तसलीम करो[11]।" तरै इणे तसलीम करी। तरै हाडो सूरजमल दरवार वैठो थो। तरै राणै सागै सूरजमलनूं कह्यो–"म्हे विक्रमादित उदैसिंघनूं रिणथभोर दा छां[12] सु थे इणारी वाह झालो। औ म्हे थाहरै खोळै घाता छां[13]।" तरै सूरजमल कह्यो–"म्हारै इण वातमू काम कोई नही। हू चीतोड टीकै वैसै जिणरो चाकर छू। म्हारै इणमू कोई तलो[14] नही।" तरै राणै सागै वळै घणो हठ कर कह्यो–"औ डावडा[15] नान्हा छै। थाहरा भाणेज छै। बूदीसू रिणथभोर निजीक छै। तू भलो रजपूत छै। तद इणारी वाह तोनू झलावा छा।" सूरजमल अरज कीवी–"दीवाण फुरमावो सो तो सिर-माथा ऊपर[16]। म्हे हुकमरा चाकर छा[17]। पिण दीवाणनू सौ वरस पोहचै[18] तरै म्हानू रतनसी मारणनू तयार हुवै,

---

1 राना करमेतीके ऊपर बडी कृपा रखता है। 2 छोटे है। 3 आपके बैठे इनका भी कुछ प्रबंध करदें तो भली बात है। 4 सुपुर्द करदें। 5 सवेरे दरबार जुडा। 6 छोटे। 7 रहनेका स्थान। 8 जबरदस्त। 9 कुछ भी। 10 इनको। 11 प्रणाम करो। 12 देते हैं। 13 तुमारी गोदीमे रखते हैं। 14 मतलब। 15 बच्चे। 16 शिरोधार्य। 17 हमतो आज्ञाका पालन करनेवाले सेवक हैं। 18 सौ बरस पोहँचे मरजाना।

तिणवास्तै म्हासू आ वात दीवाणरै कहै ह्वै नही। नै रतनसीजी फुरमावै तो वात अलादी[1] छै।" तरै राणै रतनसी सांमो जोयो। रतनसी कह्यो सूरजमलनू–"थे दीवांण हुकम करै सु करो। औ म्हारा भाई छै। थे म्हांरा सगा छो। रजपूत छो। म्हे थासू[2] बुरो मांना नही।" तरै सूरजमल दीवाण कह्यो त्यू कियो। राणै सांगै रिणथंभोर विक्रमादित उदैसिंघनू दियो। इणे जाय अमल[3] कियो।

हाडो नाराइणदास मूवो तरै राणै सागै सूरजमलनू टीको मेलियो। लाल-लसकर-घोड़ो औराकी कीमत रु० २००००), हाथी मेघनाद कीमत रु० ६००००) री, रो दियो। रांणो सागो हाडा सूरजमलथी[4] बेटांथी[5] इधको प्यार करै छै। आ वात अठै ही रही।

तठा पछै किलराएक दिने राणै सागै काळ-कियो[6]। टीकै रतनसी वैठो। हाडी करमेती आपरा बेटानू ले रिणथंभोर गई। रतनसीरी छाती माहै रिणथभोर भावै नही[7]। पूरबिया पूरणमलनू रिणथंभोर मेलियो। कह्यो–"थू विक्रमादित उदैसिंघनू तेड़ लाव[8]।" तरै ओ रिणथभोर गयो। तरै हाडी करमेती कह्यो–"औ तो डावड़ा नान्हा छै। इणारो जबाब सूरजमलजी करसी। तरै ओ बूदी सूरजमलजी कनै गयो। जायनै कह्यो–"राणै रतनसी विक्रमादित उदैसिंघनू तेडाया[9] छै। सु वे कहै छै–"माहरो जबाब सूरजमलजी करसी।" तरै सूरजमल कह्यो–म्हे ही आवा छां, तरै दीवाणसू हकीकत[10] मालम करस्या।"

तरै पूरणमल चीतोड आयो। राणै हकीकत पूछी तरै इण कह्यो–"वे तो घणू ही आवै पिण सूरजमल आवण दै नही[11]।" तरै रतनसीरै डील आग लागी[12]। आगै पिण टीकारो सूरजमल हाथी १ घोडो १ ले आयो थो, सु रतनसी राखिया नही। कह्यो–"राणै सागै तोनू

1 और रतनसी कहदें तो वात दूसरी है। 2 आपसे। 3 अधिकार। 4 के साथ। 5 से। 6 मर गया। 7 विक्रमादित्य और उदयसिंहके अधिकारमे रणथभोरका रहना रतनसीको सहन नही होरहा है। 8 बुलाकर ले आ। 9 बुलाया है। 10 तब रानाको वृत्तान्त निवेदन करूगा। 11 करमेती तो भेजनेके लिये तैयार है परन्तु सूरजमल आने नही देता। 12 तब रतनसीके शरीरमे क्रोधाग्नि उठ गई।

लाल-लसकर-घोड़ो, मेघनाद हाथी टोके दिया सु मोनूं दै[1] ।" इण कह्यो—"हूं क्यू जाट पटेल थो नही, सु चारण दिया था, सु हमैं पाछा मांगिया दू[2] ?" वात कराड़ां[3] वारै हुई ।

रांणो रतनसी सूरजमलनूं मारणरा दाव-घाव[4] करै छै । तिण समै चारण भांणो, मीसण जातरो, मोड़ारो वारहठ, चीतोड़रै गांव राठ-कोदमिये रहै छै । सु नावजादी[5] चारण छै । वडो ग्राखरांरो कहणहार छै[6] । सु भांणारा जजमांन[7] गोड़ छै । वूंदीरा चाकर छै । तिणां कनै जाय छै । मास १ दुग मास उठै रहै । तरै भांणो हाडा सूरजमलरै पिण उठै जावै, तरै मुजरो करै । गुणे गीतां गावै[8] । तद मूरजमल धणी मया करै छै । एक दिन सूरजमलजी कह्यो—"भांणाजी ! हालो[9] ! मूरांरी सिकार जावां !" भांणो नै सूरजमल सिकार सूरांरी गया । बीजो साथ हाके मेलियो[10] । भांणो नै सूरजमल दोय जणा हीज हुता । सूर तो हाथ नाया[11] नै दोय रीछ ग्राजाजीत[12] ग्रागै पाछै ग्राया । इसडा कदै ग्रांखियां ही दीठा नहीं[13] । जिणां दीठां मरीजै । सु सूरजमल उणसूं वाथां हुवो[14] । एक कटारीसूं मार पाडियो । तितरै दूजो ग्रायो । उणनू ही उणहीज भांत मारियो । भांणनू वडो इचरज ग्रायो[15] । सु भांणै कह्यो—"थे कांमू कियो[16] ?"

तरै कह्यो—"कासू करां[17] मांडां गळै पडिया[18] ।" पछै पाछा ग्राया । भांणै गीते-गुणे सूरजमलनूं रीझावियो[19] । तरै सूरजमल जांणियो—लाल लसकर-घोडो नै मेघनाद हाथी लारै रांणो पड़ियो छै । सु माहरा परधांन रजपूत मोनू दवायने रांणानू दिरावसी, तो

---

1 मुझको दे। 2 मै कोई जाट पटेल तो था नही जिसको चरानेके लिये दिये हो सो ग्रव मागने पर मैं वापस करदू। 3 वात सीमा बाहर हो गई। 4 मारनेका ग्रवसर ग्रौर उपाय। 5 विख्यात। 6 बडी चमत्कारी कविता करने वाला है। 7 यजमान। 8 गुणोकी कविता बना कर सुनाता है। 9 चलें। 10 साथके दूसरे मनुष्योको शिकार खोज कर घेर लानेके लिये भेज दिया। 11 मूग्रर तो हाथ नही ग्राये। 12 जो किसीसे भी जीते नही जा सकें। 13 ऐसे कभी ग्रांखोसे देखे नहीं। 14 सूरजमल उमसे बाहु-युद्ध करने लगा। 15 ग्राश्चर्य हुग्रा। 16 ग्रापने यह क्या ही ग्राश्चर्यजनक काम किया ? 17 क्या करें। 18 बलात ग्राकर ऊपर पड गये। 19 भाणाने सूरजमलके गुणोके गीत गाकर प्रसन्न किया।

हूं भांणा सरीखा पात्रनैं[1] दे नै अमर करूं। घोडो हाथी दोनूं भांणानूं दिया। भांणानूं वड़ी मोज दे[2], लाख[3] दे विदा कियो। सु रांणारो डेरो चीतोड़थी कोस १० सिकार रमणरे मिस कियो छै। मन मांहे सूरजमल मारणरो मनो छै। रांणी पंवार रावत करमचंदरी बेटी साथै छै। सु भांणो उठै आयो दीवांणरै मुजरै[4]। तरै दीवांण पूछी—"कठै हुता[5] ?" भाणै अरज कीवी—"बूंदी हुतो।" तरै रतनसी कह्यो—"सूरजमलरी वात कहो।" तरै घणा सूरजमलरा वखांण[6] किया। तरै रांणानूं मुहांणी नही। भांणो समझ्यो नहीं। जु रांणो इणासूं इतरी कुमया[7] करै छै। तरै रांणै पुछियो—"इतरा सूरजमलरा वखांण करो छो सु इतरो सूरजमलमे कासूं दीठो[8] ?" तरै भाणै रीछारी वात मांड कही नै कह्यो[9]—"दिवांण ! सूरज-मल इसड़ो रजपूत छै सु जिको उणनूं मारै सु कुसळै न जाय।" तरै राणै इण वात ऊपर बोहत भांणासूं बुरो मांनियो। तितरै किणी एक भांणनूं पूछियो—"थे इतरो सूरजमलरो जस करो सु हमार थांनू कासूं दियो ?" तरै कह्यो—"मोनूं लाल लसकर-घोड़ो, मेघनाद हाथी नैं लखपसाव दियो।" तरै रांणारे वळै जोर आग लागी[10]। भाणनूं कह्यो—"थे मांहरो हदमे मत रहो, थे बूंदी जावो।" तरै भांणो पूछ-झाटक[11] ऊठियो। पाछो बूदीनै हालियो[12] तठा पैहलो आ खबर सूरजमलनूं पोहती[13]। सूरजमल सांमा आदमी भांणरै मेलिया। घणो आदर कर तेड हिरणामो गांव सांसण कियो[14]। घोडा, हाथी, लाखपसाव घणोई द्रव्य दियो। कह्यो—"म्हारो भाग ! दीवाण मोसौ वडी मया करी। भाण सरीखो पात[15] दियो।" सु राणो सिकार खेलतो-खेलतो बूदी दिसा आवै छै। सूरजमल कनै

---

1 भाणाके समान सुपात्र चारणको दानमे दे अपना नाम अमर करदू। 2 सुख पहुंचाया। 3 लाख-पसाव नामक दान देकर विदा किया। 4 भाणा वहा पर राणाकी सेवामे प्रणाम करनेको आया। 5 कहा थे ? 6 प्रशसा। 7 अच्छा नही लगा। 8 अवकृपा रखता है। 9 क्या देखा ? 10 तब भाणने रीछोको मारनेकी बात विस्तारपूर्वक कही और फिर कहा। 11 रानाके और अधिक क्रोधाग्नि भभक उठी। 12 एकदम। 13 चल दिया। 14 पहुँची। 15 हिरणामो गाव शासन दानमे दिया।

ग्रादमियां ऊपर ग्रादमी ग्रावै छै–"सताव[1] ग्रावो ।" सूरजमल जांणै छै–"जाऊं क न जाऊं ?" तरै एक दिन माजी खेतू राठोड़नै पूछियो–"मोनू राणारा ग्रादमियां ऊपर ग्रादमी तेड़ा[2] ग्रावै छै । मोसूं रांणो बुरो छै । मोनू मारसी । कहो तो विखो कर रांणानू हाथ दिखाऊं।" तरै मा कह्यो–"इसड़ी वात क्यू कीजै ? ग्रांपै इणांरा सदा चाकर छां । इसड़ी[3] तो ग्राज पैहली ग्रांपांसू बुरी कोई हुई नही । जो रांणो तोनूं मारसी तोही सताब रांणा कनै जावो । घणी चाकरी करो ।" तरै सूरजमल रांणा कनै गयो । गोकन्नरै[4] तीरथ बाळो वाजणो गांव बूदी चीतोडरी गडासंध[5] छै, तठै ग्राय मिळियो । रांणो मनमे घणी खोट[6] राखै छै । नै सूरजमलरो ग्रादर घणो कियो । 'सूरजमल भाई !' कह वतळायो । पछै एकण दिन कह्यो–"म्हे एक हाथी लियो छै, तिण म्हे भेळी[7] ग्रसवारी करां ।" पछै उण हाथी रांणो चढियो । सूरजमल ही घोडै चढ ग्रायो । एकण ठोड सांकडी दिसी[8] सूरजमल ऊपर हाथी वहतो थो । रतनसी ग्राप चढियो थो । सूरजमल ऊपर हाथी झोकियो[9], सु सूरजमल घोडो लात मार काढ दियो[10] । दाव टाळियो । सूरजमल रीस करी । रांणै कह्यो–"हाथी माडां[11] ग्रायो । घणी हळभळ की[12] ।" दिन एक ग्राडो घालनै कह्यो–"ग्रांपै सिकार सुग्ररांरी मूळांरी[13] खेलस्यां ।" तरै सूरजमल कह्यो–"भली वात ।"

एक दिनरी वात छै । राणो पंवार रांणी ग्रागै कहै छै[14]–"एक म्हे सासतो सूग्रर–एकल मारस्यां[15] । थांनू तमासो दिखावस्यां ।"

तीरथ गोकन्नरै पंवार रांणी सिनांन करण गई थी । तथा पैहली सूरजमल सिनांन करण गयो थो । मु पवार ग्राई तरै सूरजमल

---

1 शीघ्र । 2 बुलावे पर बुलावे ग्राते हैं । 3 ऐसी । 4 'गोकर्ण' नामक तीर्थ-स्थान जो टोडारायसिंहके पास है । 5 निकट । 6 दगा । 7 साथमे सवारी करें । 8 सँकडे मार्गकी ग्रोर । 9 डाल दिया । 10 किन्तु सूरजमलने घोडेको लात मार कर ग्रागे निकाल दिया । 11 हाथी बलात् ग्रा गया । 12 प्रसन्न करनेके लिये खुशामदकी बातें की । 13 किसी बडे वृक्ष ग्रादिकी खोहमे दबकर शिकारकी टोहमे बैठे रहनेका स्थान । 14 राना ग्रपनी पवार जातिकी रानीसे कह रहे हैं । 15 ग्राज हम एक बहुत बलवान् सूग्ररको मारेंगे ।

धोतियो हीज पैहर कनै हुय नीसरियो तरै पंवार सूरजमलनू दीठो। किणहीनू पूछियो–'श्रो कुण ?" तरै कह्यो–"श्रो सूरजमल हाडो बूदीरो धणी, जिणसू दीवांण कुमया करै छै ।" तरै पंवार समधी[1]–"रांणो सूग्रर-सूग्रर करै छै मु इणनू मारण मतै छै।" रातै पवार गई तरै रांणै वळै वात सूग्ररी चलाई। तरै पवार कह्यो–"श्रो सूग्रर म्हे दीठो[2]। उणरी नाव थे मत ल्यो।" तरै रांणो कह्यो–"थे कासू[3] दीठो ?" तरै इण सूरजमलरी वात कही। तरै रांणै कह्यो–"तू कासू जाणै ?" तरै पंवार कह्यो–"उणनू छेड़सी सु कुसळै न आवै।" तद राणै बुरो मानियो। पछै सवारै रांणो सूरजमलनै ले सिकार गयो। मूळै[4] बैठा। दूजो साथ आपरो, पारको दूरो कियो[5]। रांणो नै पूरणमल पूरबियो छै। सूरजमल नै सूरजमलरो एक खवास छै। तिण समै राणै पूरणमलनू कह्यो–"तू सूरजमलनै लोह कर[6]।" सु इणसू लोह कियो न गयो। तरै राणै घोड़ै चढ सूरजमलनूं झटको वायो[7]। सु माथारी खोपरी ले गयो। सूरजमल ऊभो[8] छै। तितरै[9] पूरणमल तीछेर[10] वाह्यो सु सूरजमलरी साथळ[11] लागो। सूरजमल दोड़ नै पूरणमलनू पाडियो[12]। उण कूकवा किया[13]। तरै रांणो उणरा ऊपरनूं वळै आयो। सूरजमलनू लोह वाह्यो। सूरजमल वागरी[14] जेह[15] झालनै[16] कटारी गळा नीचासू वाही मु राणारी सूटी[17] आवतां रही। रांणो घोडासू हेठो पडियो[18]। पडतेहीज पांणी मांगियो। तरै सूरजमल कह्यो–"काळरा-खाधा[19] हमे पाणी पी सकै नही।" पछै सूरजमल राणो येहूं मुवा। पवार सती हुई। रांणारो दाग पाटण हुवो। रतनसीरै बेटो कोई न हुतो[20]। तरै रजपूते सारै मिळनै करमेती हाडो नै विक्रमादित उदैसिंघनू रिणथभोरसू तेड़ लिया[21]। श्रै आया।

1 समझ गई। 2 इस सूअरको हमने देखा। 3 तुमने कैसे देखा ? 4 आश्रय-स्थलमें दबकर बैठ गये। 5 अपने और पराये मनुष्योंको दूर भेज दिया। 6 उस समय राणाने पूरणमलको कहा कि—तू सूरजमल पर तलवारसे प्रहार कर। 7 तलवारसे प्रहार किया। 8 खड़ा है। 9 इतनेमें। 10 एक प्रकारका छोटा भाला। 11 जांघ। 12 गिरा दिया। 13 चिल्लाया। 14 घोड़ेकी बाग। 15 गिरा। 16 पकड़कर। 17 नाभिसे पार हो गई। 18 नीचे गिर गया। 19 काल-कवलित। 20 न था। 21 बुला लिये।

विक्रमादितनूं टीको हुवो। विक्रमादित उदैसिंघ सूरजमलरा बेटा। सुरतांणनूं बूंदीरो टीको दियो।

भांडो वैरारो आंक ७।

८. नरवद भांडारो।

९. उरजण नरवदरो। रांणा उदैसिंघरो मांनो। उरजण चीतोड़ कांम आयो। भुरजनूं सावात[1] लागी तरै सुणीजै छै–तीन जणा उडिया। तिणां उड़तां तरवार काढी मु तिकांमें एक उरजण।

९. भीमरा वसरा लाठी कर ले[2]। गांव बूंदीसूं कोस ६ तठै छै।

९. पंचाइण।

१०. पूरो।

११. मान पूरारो।

१२. केसोदास मानरो।

१३. प्रताप हीडोळै[3] वसै।

९. हरराज नरवदरो।

९. मोकल।

९. अखैराज।

हाडी करमेती रांणा उदैसिंघरी मा, नरवदरी बेटी।

वात

हाडो सूरजमल, राणो रतनसी वेहूं[4] कांम आया। रतनसीरै बेटो हुवो नही। तठा पछै टीकै विक्रमादित बैठो सु थोडाही दिन जीवियो। नै विक्रमादितरै फेर चीतोड पातसाह बहादर तोडियो[5]।

---

1 सुरंग। 2 भीमके वंशज लाठीमें कर लेते हैं। 3 प्रताप हीडोले नामक गांवमें बसता है। 4 दोनों। 5 विक्रमादित्यके समयमें गुजरातके बादशाह बहादुरने चित्तौड़को तोड़ा।

उरजण कांम आयो। तठा पछै चीतोड़ उदैसिंघ टीकै वैठो, तरै सूरजमलरा वेटा सुरतांणनू तेड बूंदीरो टीको दियो। सु सुरताण कुलखणो[1] ठाकुर हुवो। हाडो सहसमल, सातळ बूंदी वडा उमराव हुता। तिणांरी सुरतांण रीसाय नै आंख काढ़ी[2]। और ही उपाध करै[3]। तरै बूंदीरा उमराव सारा रांणा उदैसिंघ कनै आया। कह्यो–"ओ धरती लायक नही[4]।" तरै उरजन आगै थोड़ो सो पटो पावतो। चीतोड़ कांम आयो हुतो। नै सुरजण रांणारो चाकर हुतो, गांव १२ पटो पावतो। पछै वार एक जगनेर काम दीवांणरै पड़ियो थो तठै सुरजन घावै पड़ियो हुतो[5], तरै दीवांण फूलियारो परगनो दियो हुतो। पछै फूलियो तागीर कर बधनोर दी हुती। तिण समै सुरतांणरी आ खबर बुरी आई तरै रांणै उदैसिंघ सुरजननूं बूंदी दीवी। टीको काढियो। रजपूत सारा आय मिळिया। सुरजन दिन-दिन वधतो गयो। रांणै वडो इतबार कर इतरा गढ पटै देनै रिणथंभोररी कूंची सूंपी।

१ बूंदी गांव ३६०।

१ पाटण।

१ कोटो।

१ कटखडो।

१ लाखेरो गांव।

१ नैणवाय।

१ आरतदो।

१ गैरावद–गाव ८४। बूंदीसू कोस ३५।

राव उरजण नरवदरो आंक ६—

१० राव सुरजण।

१० राम।

---

1 कुलक्षणों वाला। 2 सुरतानने क्रोध करके जिनकी आंखें निकलवा दीं। 3 और भी कई उपद्रव करता रहता है। 4 पृथ्वी पर राज्य करने योग्य नहीं। 5 वहां सुरजन घावोंसे जर्जरित होकर गिर गया था।

११ दूदो–लकड़खांनरो । जैसा भैरवदासरी बेटी जसोदारो ।

११ जीतमल ।

११ नरहरदास ।

१२ सांईदास । बूंदीरै वणखेड़ै ।

१३ रूपसी ।

१३ प्रतापसी ।

१३ सकतसिंघ ।

११ रायमल ।

१२ रांमचंद । तिणरै वंसवाळा पीपळू छै ।

११ राव भोज सुरजणरो । आहाड़ा हिंगोलारी बेटी कनकावतीरा पेटरो[1] । कोई कहै जगमाल लाखावत आहाड़ारी बेटीरो[2] ।

हाडा सुरजनरो वटो इतबार रांणै ऊदै कनै[3] परगना ७ पटै दीना । गढ रिणथंभोररी कूंची देनै थांणादार कर राखियो । रांणै उदैसिंघ सादू रांमारै मांमलै सीसोदियो सांणो गोती[4] हाथसूं मारियो । तरै आप द्वारकाजी जात पधारिया तरै सुरजन साथै हुतो । तद रिणछोडजी द्वारै दमडो न हुतो[5] । पछै सुरजन दीवांण कना हुकम मागियो, कह्यो–"कहो तो हूं रिणछोडजीरो देहुरो फेर कराऊं ?" दीवाण कह्यो–"भली वात ।" तरै सुरजन रिणछोड़जीरो देहुरो हमार विराजै छै सु करायो[6] । पछै संमत १६२४ अकबर पातसाह चितोड़ तोड़ियो । रा० जैमल, ईसर सीसोदियो, पतो जगावत काम आया । पाछा वळता रिणथंभोर वेरियो । वरस १४ सुरजननू

1 कनकावतीकी कोखसे उत्पन्न । 2 कोई कहते हैं कि लाखाके पुत्र जगमालकी पुत्रीसे उत्पन्न । 3 हाडा सुरजनका राना उदयसिंहके निकट बड़ा भरोसा । 4 सादू रामा-चरणके लिये अपने गोत्री सांणाको रानाने अपने हाथसे मार दिया था । 5 तब श्री द्वारकाके रणछोडजीका मंदिर ऐसा नहीं था । 6 तब सुरजनने श्री रणछोडजी का मंदिर जैसाकि अबतक बना हुआ है—नया बनवाया ।

गढमें रहतां हुवा था । पछै सुरजनरो वळ छूटो । तरै कछवाहै भगवंतदाससूं वात करायनै संमत १६२५, चैत सुद ६ पातसाहसूं मिळियो । इतरी वातरो कौल कियो–"हूं रांणारी दुहाई खाईस[1] । रांणा ऊपर विदा नही हुवां[2] ।" गढ़ पातसाहनूं दियो । सुरजन पातसाहसूं आय मिळियो । परगना ४ चरणां ७ वांणारसी दिसला[3] दिया । पातसाह आगरै जायनै सीसोदियो पतो जगावत, रावत जैमल वीरमदेओत आगरारी पोळ हाथियां चढाय मांडिया[4] । सुरजननूं कूकररी भांत मंडायो[5] । तरै सुरजन गाढ़ो लाजियो[6] । पछै वांणारसी गयो । उठै सुरजनरा कराया मोहळ[7] छै । सु सुरजनरो छोटो वेटो थो, पातसाहरै पावै रह्यो । नै वडो वेटो दूदो रिणथंभोर थो हीज । रांणा उदैसिंघ कनै गयो । रांणै क्युं रोजीनो कर दीनो[8] । पछै सुरजन वेगो हीज मूंवो । तरै पातसाह टीको दे नै वूंदी भोजनू दीवी । दूदै वूंदी थी ग्रासवेध मांडियो[9] । सासतो धूंकळ करै[10] । धरती वसण दै नहीं । वेळा १० आगरै ग्रंवखास मांहै आय भोजसूं मांमलो कियो[11] । तद रतन दूदा कनै रहतो : पछै दूदानूं विस हुवो[12] । पछै भोज वूंदी आयो । सराव हुई धरती भोज वसाई । धरती दिन-दिन रस पड़ती गई[13] ।

**

---

1 मैं शपथ राणाकी उठाऊंगा। 2 राणाके ऊपर चढ़ाई करके नहीं जाऊंगा। 3 परगने। 4 पत्ता और जैमल बड़े वीर थे। चित्तोडमें बड़ी वीरतासे लड़कर काम आये इसलिये बादशाह अकबरने प्रसन्न होकर आगरेके किलेके द्वार पर इन दोनोंके चित्र हाथी पर बैठाकर चित्रित करवाये। तभीसे यह रिवाज राजमहलों और मन्दिरों आदिके द्वारों पर इनके चित्र मंडवानेका चालू हुआ। 5 अपने हाथसे रणथंभोरका किला सुपुर्द कर देनेके कारण सुरजनका चित्र कुत्तेकी भांति बनवाया। 6 खूब लज्जित हुआ। 7 महल। 8 राणाने दैनिक वेतन नियत कर दिया। 9 दूदेने बूंदीके साथ (कर-वसूलीके सम्बन्ध में) लूट-खसोट करना शुरू कर दिया। 10 निरन्तर उत्पात मचाता रहता है। 11 इस बार आगरेके पास और खास दरबारमें आकर भोजसे झगड़ा किया। 12 दूदा विष देकर मार दिया गया। 13 दिन प्रतिदिन भूमि बसने लगी।

बूंदीरा देसरी हकीकत

संमत १७२१ रा जेठ मांहै रा० रांमचंद जगनाथोत[1] मंडाई। वूदी सहर भाखर लगती[2] वसै छै। रावळा-घर[3] भाखरके आधोफरै[4] छै। पिण मांहै पांणी मांमूर[5] नही। सहर आयो पीजै[6]। भाखर वाळारो सहर लगतो[7]। झाड़[8] घणा। वळारै भाखरमे पांणी घणो। सहर मांहै पाखती[9] पांणी घणो। वडो तळाव सूरसागर, तिणरी मोरी[10] छूटै छै. तिणसू वाघ-वाडी घणा पीवै[11]। वागे[12] आंवा फूलाद[13] चंपा घणा। सहर वस्ती उनमांन[14] घर ५०० वांणियांरा, घर १०० वांभ्रण-विणजांरारा[15], घर सो पांच भईया-हीड़ागरांरा[16]।

राव भावसिंघनू हमार[17] जागीरमे इतरा[18] परगना छै। तिणांरा गांव–

३१६ प्र० वूदी।

३६० खटखड वूदीसू कोस ६।

८४ पाटण वूदीसू कोस १२।

४२ लाखेरी गोडा वाळी, वूदीसू कोस ६।

वूदीरी पाखती हाडोतीग परगना–

१ परगनो मऊ खीचियारो। उतन मऊरा परगना मां है। सिंध भन्नी नदी सदा वहती रहै छै। मऊसू कोस ७ गांव धूळकोट छै तठै नीसरै छै[19]। पांणी मूळ घुडवांणरा आवै छै[20]। आहीज[21] नदी गढ गागुरणरै हेठै[22] नीसरै छै। तिको मऊरो परगनो राव रतन

---

1 जगन्नाथके पुत्र राव रामचदने सवत् १७२१ के ज्येष्ठ मासमे लिखवाई। 2 पास। 3 जागीरदारके घर। 4 मध्यमे। 5 सवथा। 6 शहरमे आने पर पानी पीनेको मिलता है। 7 अरावली पहाड शहरके निकट। 8 वृक्ष। 9 पास। 10 मोरी वहती है। 11 जिससे बाग और बाडियोको बहुत पानी सीचा जाता है। 12 बागोमे। 13 पुष्पो वाले वृक्ष और पौधे। 14 अनुमान। 15 ब्राह्मण-बनजारे, बैलो पर माल इधरसे उधर ला-लेजा कर क्रय-विक्रय करने वाली एक प्रसिद्ध व्यापार करने वाली जाति। 16 पाच सौ घर छुट भाई नौकरोके। 17 अभी। 18 इतने। 19 मऊमे। 20 कोस पर धूलकोट गावके पासमे होकर निकलती है। 21 गुडगावके ओलका पानी ही मुख्यकर इसमे आता है। 22 यही।

मार लियौ[1]। बूंदीथी कोस ३० गांव १४४० लागै । मऊ छोटो सो सहर पिण छै । पीपाड़ सारीखो रड़ी[2] ऊपर वसै छै । भाखर छै । अगवारै[3] गांव ७०० चौडै छै । पछवारै[4] गांव ७४० भाखर झाड़ छै । मऊरा कोटरा पठा[5] हेठै नदी उतार सदा वहतो रहै । सेझो[6] को नही । सेवज गोहूं चिणा घणा[7] । धरती काळी, वाड[8] चावळ घणा । रैत लोधा, किराड, मीणा वसै[9] । हाडा भगवंतसिंघरी जागीरीमे पाई छै[10] । सु भगवंतसिंघ वडा-वडा मोहळ[11], तळाव नवा संवराया छै । घर हजार दोय २००० वसै छै ।

१ कोटो, बूंदीथी कोस १२, गांव ३६० लागै । निपट वडी ठोड़ । जोधपुररा धणीरै सोझत ग्रासवंधरी[12] ठोड़ त्यू बूंदी दूजी ठोड कोटो । नदी चंबल ऊपर हाड़ै मुकन्दसिंघरा कराया वड़ा मोहळ छै ।

१ खैरावद, बूंदीथी कोस ४०, मऊथी कोस १४ । दूजो नांन[13] मिलकी-अभिरांमपुर । गांव ८४ लागै ।

- १ पैंळाइतो, बूंदीथी कोस १४, कोटाथी कोस ८ गांव ८४ ।
- १ सांगोद, बूंदीथी कोस २५, गांव ८४ ।
- १ घाटी, खीचियांरो उतन । बूंदीथी कोस २५ । कोटासू कोस ७, गाव ५१ ।
- १ घाटोली, खीचियारो उतन । बूंदीसू कोस २५, कोटासू कोस ६, गाव ३१ ।

---

1 खोस कर उस पर अधिकार कर लिया। 2 छोटी पहाड़ी परवा (या ऊंचा उठा हुआ) समतल मैदान। 3 आगेकी ओरके ७०० गाव तो चोड़े-मैदानमे हैं। 4 और पीछेकी ओरके ७४० गाव पहाडो पर वृक्षोसे घिरे हुए है। 5 पानीको रोकनेके लिए बांधके रूपमे बनाई हुई एक दृढ दीवार अथवा दीवारकी नीवमे पानीकी टक्करको रोकनेके लिये बनाई हुई पुश्टि। 6 नदी-नालो आदिका पानी सोखनेसे कूओ आदिमे पानीका बढाव। 7 (अत ऊपरकी भूमिमे नमी बनी रहनेके कारण) सेवज (बिना सिंचाईके उत्पन्न होने वाले) गेहूं चने अधिक। 8 ईख। 9 लोधा, किराड और मीणे—यह प्रजा बसती है। 10 प्राप्त हुई है। 11 महल। 12 (१) अधिकार कर प्राप्त होने वाली उपजाऊ भूमि, (२) सबटके समय रक्षाका स्थान। 13 नाम।

१ गागुरण, बूंदीथी कोस ३०, मऊसूं कोस ४, कोटासूं कोस १० खीची अचलदास वाळी । भाखर ऊपर वडो गढ़ छै । निपट चोड़ौ, जिण मांहै मांणस[1] हजार १०००० रहै । गढ़ वासै[2] नदी सिंध वहती सदा रहै छै । तिणरो पांणी गढ़ मांहै वाळियो छै[3] । आगै तो गढ सूनो-ठमठेर सो थो[4] । हमार हाडै मुकंदसिंघरी जागीरमे मुकदसिंघगढ़ जोर संवरायो[5] । वडा मोहल कराया । गांगुरण सहर घर ७०० तथा ८०० वसै छै । नदी सिंध-आ मऊरा परगना मांहै वहै छै । मूल आ गुडवांणथी आवै छै ।

मऊथी निजीक[6] सहर इतराएक कोस छै--

एवारो परगनो गांव १२ । सदा हाडांरो उतन[7] थो । हमें पातसाहजी और जागीरदारनूं दियो छै । मऊ कोटा वीच छै ।

गूगोर, खीचियांरो उतन । मऊसूं ऊगवण[8] कोस २५, गांव ३६० लागै छै । छोटोसो गढ़ छै । सहरमे घर १००० वसै छै ।

खातखेडी मऊथी कोस २०, भील चक्रसेणीरी ठोड़[9] । हाडा भगवंतसिंघनूं छै[10] । मारली[11] गाव ७०० ।

चाचरणी, खीची वाघरी[12] । खीचियांरो उतन । मऊथी कोस १५ । खाताखेडीथी कोस ५ । गांव ८४ ।

वेहु[13] सिंधलवाली, गोपलदे भगवंतसिंघनूं जागीरमे ।

चाचरडो, खीची सावलदासरो । गांव ४२ । खाताखेड़ीसूं कोस ७ । मऊरै परगनै वडेररा[14] गाव नावजादीक छै[15] ।

१ देवीखेडो ।

---

1 मनुष्य । 2 पीछे । 3 जिसका पानी गढमे घेरकर लाया गया है । 4 पहले यह गढ सूना और खाली था । 5 अभी मुकुन्दसिंहने अपनी जागीरीमे गढको खूब सुधरवाया । 6 पास । 7 जन्मस्थान 8 पूर्व दिशामें । 9 भील चक्रसेनकी जागीरी । 10 जो अभी हाडा भगवतसिंहके अधिकारमे है । 11 जिसको भील चक्रसेन पर आक्रमण करके अपने अधिकारमें कर लिया । 12 चाचरणी गाव खीची बाधकी जागीरका । 13 दोनो । 14 पुरखाओंके । 15 ख्याति प्राप्त ।

१ हरीगढ़ ।

१ जोलपो ।

१ मोही ।

१ मोटपुर ।

१ कूड़ी ।

१ वंभोरीरो परगनो । गांव ८४ ।

१ जरगो ।

१ अटरोह । गांव ८४ ।

१ घूळोप ।

१ जीलवाड़ो । गांव ८४ ।

धरती रैतरो हैसो[1]—

वाड़[2] वीघे १ रु. ५)

आवळ[3] वीघे १ रु. ५)

वण[4] वीघे १ रु. १।।)

ऊनाली पीयल नहीं[5] । सौवज[6] घणा । साळ[7], गोहूं, वाड़, चिणा घणा । रैत देस मांहै[8]—

वांभण[9]—गूजरगोड । पारीख ।

मीणा ।

धाकड़ । किराड़ ।

अहीर ।

नदी ४ हाडोती माहै—

१ चावळ[10] ।

१ सिंध ।

---

1 प्रजामे भूमिका कररूपमे प्राप्त किया जाने वाला भाग इस प्रकार है। 2 ईख प्रति बीघे रु ५)। 3 आंवल प्रति बीघे रु. ५)। 4 रूई प्रति बीघे रु. १।।)। 5 सिंचाई द्वारा की जाने वाली ग्रीष्मकालीन-कृषि यहां नहीं होती। 6 परिमाणमे अधिक वर्षा होनेके कारण भूमिमे आर्द्रता बनी रहनेसे बिना सिंचाईके होने वाली शरत्कालीन कृषि। 7 शालि—साठी चावल। 8 देशमे इस भांति प्रजा बसती है। 9 ब्राह्मण। 10 चम्बल।

१ पार ।
१ पुडण ।

वात

वूंदीरा देसरा रजपूतांरी विगत—
मुदै[1] हाडा सांवंतरा असवार ५०० जोड़[2] ।
हाडो लिखमीदास मांनसिंघरो, गांव नांदणै ।
हाडो प्रथीराज केसोदासरो, भोजनेर ।
हाडो रायभांण रायसिंघरो, तलावस मीयांरै गुढ़ै ।
हींडोळारा हाडा, परतापरा पोतरा[3] ।
हाडा खजूरीरा, तिलोकरांमरो लखमण ।
दहियो हमीर, जैमालरो पोतरो ।
दहियो सांवळदास, गोवरधन सुदरदासोतरांरै पटो रु. २००००) ।
दहिया आसांमी ३० चाकर छै । आदमी ३०० ।
सोळंकी आदमी ४०० सौ ।
हरीसिंघ राघवदासरो ।
सूर नाहरखांनरो ।
रावत जगतसिंघ मानसिंघरो ।

गोड़ सांगावत—
रावत आसकरण ।
गोड सुदरदास ।
गोड़ गैंपावत ।
वालणोत सोळंकी, आसांमी दस तथा पनरै, आदमी १०० ।
नवब्रह्मरा हाडा, आसांमी दस तथा १५, आदमी १०० ।
राठोड़ ऊदावत, कछवाहा, आसांमी १०, आदमी १०० ।
वीकावत-सादूळरा वेटा-पोतरा[4]. आदमी १०० ।

---

1 मुख्य । 2 पांचसो जोड अर्थात् एक हजार । 3 पोता । 4 बेटे-पोते ।

राजावत आदमी १०० ।

हाडा रांमरा रांमोत कहावै छै । आज वडै वाधै छै[1] मुदै आदमी २०० ।

इतिश्री वूंदीरा धणियां हाडांरी ख्यात वार्ता सम्पूर्ण ।

लिखतं वीडू पना, वांचै जिकण सिरदारसू मुजरो मालम हुसी ।

••

1 आज ये बड़ी उन्नति पर हैं ।

वागड़िया चहुवांणारी पीढ़ी

ग्रै मुंधपाळरा पोतरा कहावै छै[1] । पीढियांरी विगत—

१ ब्रह्मा ।
२ वैवस्वत ।
३ रावण ।
४ धुंध ।
५ तपेसरी ।
६ तप ।
७ चाय ।
८ चहुवांण ।
९ तपेसरी ।
१० चंपराय ।
११ सोम । सैंभर वसाई ।
१२ साहिल ।
१३ ग्रंबराय ।
१४ सिंघराय
१५ राव लाखण ।
१६ वळ ।
१७ सोही ।
१८ जिंदराव ।
१९ ग्रासराव ।
२० सोहड ।
२१ मुध ।
२२ हापो ।
२३ महिपो ।
२४ पतो ।
२५ देदो ।
२६ सेहराव ।
२७ मुंधपाळ ।
२८ वीसळदे ।
२९ वरसिंघदे ।
३० भोजो ।
३१ वालो ।
३२ डूंगरसी ।
३३ लालसिंह ।
३४ वीरभांण ।
३५ सूजो ।
३६ फरसो ।
३७ केसरीसिंघ ।
३८ माहिसिंघ ।
३९ लालसिंह ।

वार्ता

चहुवांण डूगरसी वालावत वडो रजपूत हुवो । वागड पिण को[2] दिन रह्यो छै । रांणा सागारै पिण वास थो[3] । वडो कायदो[4] वडो पटो[5] पायो । वधनोर राणै सागै पटै दी थी । घणा दिन वधनोर रही । वधनोर डूगरसीरा कराया वडा-वडा तळाव छै, वावडियां मोहळ छै । राणो सागो नै ग्रहमदनगर मुदाफर पातसाहसू वेढ[6] हुई, तठै डूगरसी ग्राप धावै पड़ियो[7] । वेटा, भाई, भतीजा इण वेढ सारा

---

1 ये मुन्धपालके पोते कहलाते हैं, नं० २७ पर मुधपाल है । इसके पूर्वकी वंशावली ग्रशुद्ध है । मुधपालके वादमें जो हैं वे ही वागडिया चौहान मुधपालके पोते कहलाते हैं । वागड प्रान्त (डूगरपुर-वासवाडा) मे रहनेके कारण वागडिया-चौहान कहलाये । 2 कुछ । 3 राना सागाके पास भी रहा था । 4 प्रतिष्ठा । 5 जागीरी । 6 लडाई । 7 जहा डूगरसी स्वय ग्राहत होकर गिर पडा ।

कांम आया । कान्है डूंगरसीरै वडो पराक्रम कियो । किवाड़ लोहरा अहमदनगररी पोळरा तापिया[1] था । तठै हाथी लाग न सकै, तरै कान्ह महावतनूं[2] कह्यो–"हूं बीच आऊं छूं, मोनूं बीच देनै हाथी कनां किवाड़ भंजाय नांम[3] ।" तरै कान्ह किवाड़ां आडो आयो[4] । हाथी कान्हरै मोरै दांत टेकनै किवाड तोड नांखिया[5] ।

२ कान्ह डूंगरसीरो ।
२ सूरो डूंगरसीरो ।
३ भांण ।
३ करमसी ।
४ जसवंत ।
५ केसोदास ।
६ सांवळ ।
७ गोपीनाथ ।
८ सूरतसिंघ । मही ऊपर कांम आयो[6] ।
९ सिरदारसिंघ । रांणै जैसिंघरै वारै[7] ।
३३ असैराज डूंगरसीरो ।
३३ लाल डूंगरसीरो । चीतोड़ कांम आयो ।
३४ सावळदास ।
३४ वीरभांण । रावळ करमसी उग्रसेन लड़िया तद कांम आयो ।
३५ मान । संमत १६५१ मांन नै रावळ उग्रसेन विरस[8] हुवो, तद मान पातसाहरै वसियो[9] । पछै संमत १६५८ ब्रहानपुरमें रा० सूरजमल मांननूं मारियो । रावळ उग्रसेन येना[10] रा० सूरजमल बाभणानूं कर लागतो सु छुड़ायो ।
३६ गजमाल ।

1 अहमदनगरकी पोलके किवाड़ अग्निसे तपाये हुए थे । 2 को । 3 मैं बीचमें आता हूं, मुझको बीचमें देकर हाथीके द्वारा किवाड़ोंको तुड़वा डाल । 4 तब कान्ह किवाड़ोंके आगे आकर खड़ा रहा । 5 हाथीने कान्हकी पीठमें अपने दोनों दांतोंको टिका कर, टक्कर मार कर किवाड़ोंको तोड़ डाला । 6 मही नदी परकी लड़ाईमें काम आया । 7 समयमें । 8 वैर, शत्रुता । 9 तब मान बादशाहके पास जाकर रहा । 10 दास ।

३५ सूजो—रांणा जगतसिंघरी फोज साथै अखैराज डूंगरपुर मारियो[1] तद कांम आयो ।

३६ फरसो ।

३३ लाखो डूंगरसीरो ।

३४ नाथो ।

३५ वेळावळ ।

३५ संकरदास ।

३६ रिणमल ।

३५ हाथी वाळारो ।

१ किसन हाथीरो

२ कपूर किसनरो ।

३ ईसर कपूररो ।

४ भीम ईसररो ।

५ जसकरण भीमरो ।

६ प्रतापसिंघ जसकरणरो ।

७ सिरदारसिंघ प्रतापसिंघरो ।

८ गुलालसिंघ सिरदारसिंघरो । वांसवाहळै रहै छै ।

इति वागडिया-चहुवाणांरी ख्यात संपूर्ण ।

लिखतं वीठू पना ।

---

1 विजय किया ।

अत वात दहियांरी

(परबतसर मांहै लिखी । संमत् १७२२ आसोज मांहै)

दहियांरो उतन मूळ सुणियो छै। दिखणनूं नासक त्रंबक गोदावरी कनै, गढ थाळनेर थो[1] । इतरी ठोड़ दहियांरै अजमेर माहै हुती[2]—

१ देरावर—परवतसर गांव ५२ ।

१ सावर—घाटियाळी ।

१ हरसोर । विल्हणरो बेटो हरधवळ धणी ।

१ माहरोटरो विल्हणवटी नांव[3] ।

१ परवतसर साह परबत मांडवरै पातसाहरो करोडी आयो तिण आपरै नांवै वसायो । पंवार करमचंदरी वार मांहै संमत १५७६ सांह परवत जुहर[4] ।

दहियांरै पीढचांरी विगत—

१ आदनारायण ।
२ कमल ।
३ ब्रह्मा ।
४ पित्रावरण ।
५ अगस्त ।
६ पोलस्त ।
७ पारारिख ।
८ दुरवासा ।
९ जैरिख ।
१० निकुभ ।
११ राजरिख ।

---

1 सुननेमे आया है कि दहियोंकी आदि जन्म-भूमि दक्षिणमे गोदावरीके पास नासिक-त्र्यम्बकके थालनेर गढ थी । 2 इतने स्थान दहियोंके अजमेर प्रान्तमे थे। 3 मारवाड़के मारोठ गावके प्रान्तका नाम विल्हणवाटी । 4 माडूके बादशाहकी ओरसे नियत किया हुआ 'परवत' नामक जुहर जातिके माहेश्वरीने स० १५७६मे पँवार कर्मचदके समयमे अपने नामसे 'परवतसर' नामक गाव वसाया ।

१२ दधीच[1] ।

१३ विमलराजा ।

१४ सिवर ।

१५ कुलखत ।

१६ अतर ।

१७ अजैवाह ।

१८ विजैवाह ।

१९ सुगल ।

२० सालवाहन । हंसावली रानी ।

२१ नरवाहण ।

२२ देहड, मंडळीक देरावर[2] ।

२३ बूहड़, मंडळीक ।

२४ गुणरंग, मंडळीक ।

२५ दोराव रांणो ।

२६ भरह रांणो । भदियावद वासो

२७ रोह रांणो । रोहड़ो वसियो ।

२८ कडवराव रांणो ।

२९ कीरतसी रांणो ।

३० वैरसी रांणो ।

३१ चाच रांणो । देवी केवायरो देहुरो करायो । भाखरी ऊपर गांव सिण हड़ियै[3] ।

३२ अनवी[4] उधरण । पर्व्वतसार माहरोट धणी । वडो रजपूत हुवो । तिणरै बेटारा पिंड[5] २ ।

---

1 दधीचि ऋषिके वंशज दहिया क्षत्री हैं। मारवाड़में किणसरिया गांवके केवायदेवीके मंदिरके सं० १०५६ के शिलालेखमें दहियोंका दधीचि ऋषिके वंशज होनेका उल्लेख है। दाहिमा ब्राह्मण भी दधीचिके वंशज कहे जाते हैं। 2 देरावरका मांडलिक राजा देहड़। 3 चाच राजाने सिणहड़िया (अब इसका नाम किणसरिया) गांवके पास पहाड़ी पर केवाय देवीका मंदिर बनवाया। 4 किसीके सम्मुख नहीं झुकने और अपने नामसे प्रख्यात होने वाला तेजस्वी और महावली। 5 जिसके दो पुत्र।

३३ जगधर रावत उधरणरो। परबतसर धणी तिकै मांडल, परवतसरथी कोस १ छै तठै ठाकुराई। उठै देहुरा, वावड़ी, कूआ अजैस छै[1]।

३४ दूदो रावत जगधररो।

३५ रावत मालौ दूदारो।

३६ रावत कुतल मालारो।

३७ रावत मोडो कुतलरो।

३८ रावत सूजो नै जोगो मोडारा।

३९ पेरजखांन जोगारो।

४० हरीदास।

४१ रामदास, सिणहडियै छै।

३३ विल्हण अनवी उधरणरो। तिणरै सारी माहरोठ हुती। गाव देपारो, माहरोटथी कोस २ भाखरमे छै तठै वसता। तठै कोट छै, तळाव छै। तठै ठाकुराई हुई। वे देपारा दहिया कहावै।

३४ बीबो, तिणरो करायो परबतसर बीबासर तळाव छै। इणरी बैर कंवळावती रांणा ईहड़री बेटी। तिणरो करायो राणोळाव तळाव छै। जेळूरी बैहन[2]।

३५ पोहपसेन बीबारो। राजा कुतरी बेटी रतनावती परणियो हुतो। कुतल गांव १२ सू पीपळू दीवी थी। छतीसपवन दीवी थी। खेजडली दीवी थी[3]।

३६ कवळसी।

३७ जैसिघ।

३८ कील।

---

1 अभी तक है। 2 बीबा—जिसने परबतसर गाँवमे बीबासर नामक तलाव बनवाया था। इसकी स्त्री राना ईहडकी पुत्री और जेलूकी बहिन कमलावती थी जिसने राणोलाव तलाव बनवाया था। 3 बीबाका पुत्र पुहपसेन, जो राजा कुन्तकी कन्या रत्नावतीसे व्याहा था। कुतलने रत्नावतीको बारह गाँवोके साथ पीपळू गाँव दहेजमे दिया था और उसके साथ छत्तीसपवन और खेजडली भी। (छत्तीसपवनसे तात्पर्य ३६ जातियोका दहेजमे देनाभी हो सकता है)।

३९ नरवद । कहै छै–नागोर मारी हुती[1] ।
४० लखो ।
४१ आसो ।
४२ सूरज ।
४३ प्रथीराज, चीतोड कांम आयो । हाडांरो चाकर ।
४४ जैमल ।
४५ हमीर, निपट वडो रजपूत हुवो ।
४६ विहारी, ४६ रांमदास, ४६ मुकंददास, ४६ नरहरदास
४५ विजैराम जैमलरो ।
४६ मोहणदास ।
४७ मुंदरदास ।
४८ सांवळदास ।
४८ स्यांम ।
४८ गोवरधन ।
४७ महासिघ ।

गीत[2] दहिया हमीररो

महाकाळ जमजाळ जोधार जैमल्लरो,
कळहरो कथन ससार कहियो ।

---

1 कहा जाता है कि नरवदने नागोरको विजय किया था। 2 दहिया हमीरके सम्बन्धके गीतका अर्थ—

जयमलका पुत्र वीर हमीर महाकाल और यमपाशके समान हो गया है । ससारमे युद्ध करने वालोमे वह कथनरूप (प्रशसा करने योग्य) कहा गया है। दुरात्मा बादशाहके लिये हाडा दूदा शल्यरूप हुआ किन्तु दहिया हमीर उसी दूदाके हृदयमे शल्यरूप हुआ ॥ १ ॥

नृपति नरवदका वशज दहिया हमीर अत्यन्त निर्भय वीर हुआ । अपने स्वामीका काम सिद्ध करने वालोमे वह बडा वीर और धीर पुरुप हुआ। हाडा दूदा तो बादशाहके हृदयका शल्य हुआ परन्तु उस हाडाके हृदयका शल्य तो हमीर ही हुआ ॥ २ ॥

अत्याचारोसे मुक्ति दिलाने वाले रण-कुशल हमीरने, सदा सजग हुआ रहकर अपने स्वामीके कामोको सिद्ध अर्थात् विजय करके उनपर उसकी ओरसे अधिकार किया । जिस प्रकार पराक्रमी दूदाने बादशाहको चैन नही लेने दिया उसी प्रकार दुरात्मा दूदाके हृदयमें भी हमीर शल्यकी भाति खटकता रहा ॥ ३ ॥

दुरत पतसाहरै सालव्हो दूदडो,
दूदड़ा तणै उर साल दहियो ॥१॥

निवड़ भड़ निडर नरनाह नरवद्दरो,
सकज भड़ स्यांमरो कांम सधीर ।
हियै पतसाहरै साल हाडो हुवो,
हियै हाडा तणै साल हमीर ॥२॥

आवरत-कहर असवार आखाड़ सिध,
काम पह चाड इधकार कियो ।
दूदड़ै दूह पतसाह ओसुख दियौ,
दुरत दूदा उर साल दइयो ॥३॥

इति दहियां परबतसररांरी ख्यात वार्ता संपूर्ण ।
लिखतं बीठू पना । वाचै जिण सिरदारसूं मुजरो[1] मालम हुसी ।

**

1 प्रणाम ।

अथ बूंदेलांरी[1] वात लिख्यंते

राजा वरसिंघ बूंदेलारै इतरा[2] गढ हुंता[3] । बूदेला सुभकरणरै चाकर चक्रसेन मंडाया[4] संमत १७१०–

१ जगहरो परगनो. तिणरो गांव उड़छो तिणनूं गांव १७०० लागै । रु० ७००००)

१ भाडेररो परगनो, गांव ३६० । उड़छाथो कोस १२, रु० ५०००००)

१ एलछरो परगनो, गांव ३६० । उड़छाथी कोस १२. रु० ७०००००)

१ परगनो राड, गांव ७०० । उड़छासूं कोस ३०, रु० ६०००००)

१ परगनो खोटोलो, गांव १७०० । उड़छाथी कोस २०, रु० ३०००००)

१ परगनो पवई, गांव १४०० । उड़छाथी कोस ४०, रु० १५००००)

प्र० पांडवारी,गांव १४०० । उडछाथो कोस २०,रु० ७०००००)

१ प्र० धमाणी, गाव ६०० । उडछासू कोस ४०, रु० ७०००००)

१ प्र० दमोई. गाव ३५०, उडछासू कोस ५०, रु० १०००००)

१ प्र० सीलवनी । धामणी, चवरागढ वीच ।

१ गढ पाहरांद गीराजरी ठोड ।

१ चोकीगढ, गूडांरो ।

१ गुनोर, गूडांरो ।

१ उदैपुर सिरवाजरै मैडै[5] ।

१ कछउवा उडछाथी कोस १२ ।

---

1 राष्ट्रकूटो (राठोडों) की गहरवार शाखाके जिन क्षत्रियोंका बूंदेलखडसे सम्बन्ध रहा वे बूंदेला कहाये। 2 इतने। 3 थे। ४ लिखवाये। 5 आगे की ओर। उस ओर पासमे।

१ करहर, उड़छाथी कोस २० ।

१ दिहायलो नरवररै मैड़ै ।

१ खुटहररै मैड़ै अरणोद ।

१ बुडूण ।

१ पवउवा, उड़छासू कोस २० ग्वालेररै मैड़ै ।

१ बेड़छो ग्वालेर निजीक ।

१ दभोड़ वेड़छै कनै[1] ।

१ कुच आलमपुररै मैड़ै ।

१ मोहनी, गांव ८४, इंद्ररुखी[2] ।

१ गोअोद भदावररै मैड़ै ।

१ अवाइनो ।

१ साहरो लांगरपुर घाघेडो गांव १५००

१ चवरागढ गूडरो जुगराज लियोथो, तिणनू गढ बावन लागता ।

बूंदेलांरी वात

कविप्रिया ग्रंथ केसोदासरो कियो[4]-तिण मांहै बूदेलां रै वंसरी इण भांत वात कही छै—

अै सूर्यवसी । सूर्यवंसरै विषै श्रीरांमचन्द्ररो अवतार । तिणथी[5] कितरैहेक पीढियां इणांरो गहरवार गोत्र कहांणो ।

१ राजा वीरू गहरवाररो ।

२ राजा करन महाराजा हुवो तिण वाणारसी[6] वास कियो ।

३ राजा अर्जुनपाळ तिण मोहनी गांव वसायो ।

४ राजा सहजपाळ ।

५ राजा सहजइंद्र ।

---

1 पास । 2 इन्द्रदिशाकी ओर। 3 गूडा जिनेका चवरागढ वरसिहके पुत्र जुगराजने जीत लिया था जिसमे ५२ किले थे । 4 कवि केशवदास रचित 'कविप्रिया' नामक ग्रन्थ । 5 जिनसे कितनीहीक पीढियोके पीछे इनका गहरवार गोत्र कहलाया । 6 काशी ।

६ राजा नागदे ।
७ राजा प्रथीराज ।
८ राजा रांमचंद्र ।
९ राजा राजचंद्र ।
१० राजा मेदनीमल ।
११ राजा अर्जुनदे । तिण पोडस महादांन कीना[1] ।
१२ राजा प्रतापरुद्र ।
१३ राजा भारथचंद्र हुवो, तिणरै वेटो न हुवो तरै भाई मधुकर-साहनू राज आयो ।
१४ राजा मधुकरसाह प्रतापरुद्ररो । तिण उड़छो[2] वसायो । तिण मधुकरसाहरै इग्यारै ११ वेटा हुवा ।
१३ दुलहरांम टीकै मधुकरसाहरै हुवो ।
१३ संग्रामसाह ।
१२ होरलराउ ।
१२ नरसिंघ ।
१२ रतनसेन ।
१२ इंद्रजीत ।
१२ रनजीत ।
१२ सत्रजीत ।
१२ वलवीर ।
१२ हरसिंघदे ।
१२ रनधीर । संग्रामसाह, दुलहरांम आंक १३ ।
१४ भारथसाह ।
१५ देवीसाह ।
१६ किसोरसाह ।
१४ किसनसाह ।

1 जिसने सोलह महादान किये । 2 ओडछा – जो बूंदेलोंकी राजधानी है ।

१५ जगतमिण । श्रीजोरै[1] काबलमें चाकर रह्यो हुतो । एकण ठोड़ पीढियां यूं पिण मांडी छै[2]–

१ राजा वीरू ।

२ गहनपाळ ।

३ राजा सहजग ।

४ राजारांम ।

५ राजा नानगदे

६ राजा प्रथीराज ।

७ राजा रांमसिंघ

८ राजा चंद्र ।

९ राजा मेदनीमल

१० राजा अर्जुनदे ।

११ राजा मलूखां ।

१२ राजा प्रतापरुद्र ।

१३ राजा मधुकरसाह ।

१४ राजा वरसिंघदे ।

राजा वरसिंघदे मधुकर साहरो । वडो भाग्यवांन हुवो । पातसाह जहांगीररा हुकमसू खोजो अवलफजल मारियो । पातसाह घणो निवाजियो[3] ।

१३ राजा जुगराज ।

१४ राजा विक्रमाजीत ।

१३ राजा पाहड़सिंघ ।

१४ सुजांणसिंघ राजा । तीन हजारी असवार ।

१३ चंद्रमिण ।

१३ भगवांनदास ।

---

1 जगतमणि – जोधपुरके महाराजा जसवंतसिंह जब काबुल गये थे तो उनके पास नौकर रहा था। 2 एक स्थान पर वंशावली इस प्रकार भी लिखी है। 3 प्रसन्न हुवा, पुरस्कार दिया।

१४ सुभकरन । श्रीजीरै वास रु० ३५०००) पटो ।

१४ सकतसिंघ ।

१३ प्रेमसाह ।

१४ भगवंतराय ।

१५ चंपतराय । वडो रजपूत हुवो । जुगराज मारियां पछै धरती मांहे वडो विखो कियो[1] ।

१६ सालवाहन ।

१५ सुजांणराय ।

१५ भीवराय ।

१६ राजा वरसिंघ दे । धरमातमा हुवो । मुथराजीमें श्री केसोरांयजीरो देहरो करायो । पातसाहरी चाकरी अखंड कीवी नै मुवां पछै टीकै जुगराज वैठो । सु वैठा पछै केई दिन तो घणो ही तपियो[2] पछै श्रीठाकुरजी वीच देनै चवरांगढ गूंडांरो लियो[3] । पछै संमत १६६६ रा काती मांहै पातसाहसूं विरस[4] हुवो तरै पात्तसाह फोज की[5] । खांनदोरा अबदूलाखांन ओर हिंदू मुसलमान विदा किया । पातसाह चढ ग्वालेर आयो । फोजां देस मांहै दखल कियो[6] । इणसू घणी लडाई-वेढ कोई हुई नहीं[7] । पारपखै[8] पातसाहरै माल आयो । जुगराज देस छोड़ नाठो[9] । आगै जातां आप वैठां विक्रमाजीत माराणो[10] । पछै पातसाहजी उडछै पधारिया । वीरसमद वडो तळाव छै, तठै पातसाहजी को[11] दिन रह्या । पछै पातसाहजी सिरिवाज मांहै हुय व्रहानपुर पधारिया । पछै दोलतावाद पधारिया ।

इति वूदेलांरी ख्यात वार्ता संपूर्ण ।

---

1 चंपराय–वडा वीर राजपूत हुआ । जुगराजको मारनेके पीछे इसने पृथ्वी पर वडा भय उत्पन्न कर दिया । 2 गद्दी वैठनेके वाद कई दिन तक तो धर्मपूर्वक निष्कटक राज्य किया। 3 फिर श्री ठाकुरजीकी शपथ खाकर धोखेसे गू डा जिलेके चंवरागढ पर अधिकार कर लिया। 4 शत्रुता । 5 सेना भेजनेकी तैयारीकी । 6 देशमे सेनाने अधिकार कर लिया । 7 इससे युद्ध नही हो सका । 8 अपार धन । 9 भाग गया । 10आगे जाकर उसके जीते जी उसका पुत्र विक्रमाजीत मारा गया । 11 कई।

वारता गढ़बंधवरा धणियांरी

बांधवरो मुलक आद करणा—डहरियारो। नवलाख-डहर कहावै[1]।

करणो-डहरियो मारै पेट थो[2]। दिन पूरा हुआ तरै करणारी मा कस्टी[3]। तरै जोतखियै कह्यो[4]—"हमार वेळा बुरी वहै छै[5]। अै दोय घड़ी टळै, पछै छोरू हुवै तो महाराजा-प्रथीपत हुवै[6]।" आ वात करणारी मा सुणी, तरै उण आपरा पग ऊंचा बंधाया[7]। सु वा तो मर गई[8], नै करणो घड़ी दोय पछै जीवतो जायो[9]। मोटो हुवो[10]। करणो वडो महाराजा हुवो। गंगा-जमुना वीच घणी धरती करणारै हुई। करणै आपरी[11] मांरी वात सुणी—"म्हारै वास्तै म्हारी मा इतरो कस्ट सह्यो। इण भांत देह त्यागी।" तरै करणै चोरासी तळाव नवा खिणायनै[12] एक दिन आपरी मारी वांसै तर्पण[13] किया। और ही घणा धरम किया[14]। करणारो राजथांन गढ कालंजर, प्रयागजीसूं कोस ४० छै तठै हुतो।

वाघेल-धरती वसी-लेनै[15] बंधवगढ राजथांन कियो। वरसिंघदे वाघेलो गुजरातसूं गंगाजीरी जात आयो हुतो। तद अठै बंधवरी ठोड निवळासा[16] लोधा[17] रजपूत रहता। ठोड़[18] साली दीठी। तरै गगाजीरा पुलण[19] मनोहर देखनै अठै रहणरी कीवी। लोधांनूं मारनै

---

1 आदिमें बाघवदेशका अधिपति करना डहरिया था। डहरियोंकी सख्या वहा पर नौ लाख होनेके कारण वह प्रदेश 'नौ लाख डहर' कहलाता है। 2 करना डहरिया जब गर्भस्थ था। 3 गर्भके दिन पूरे हुए तब करनाकी माताको प्रसव पीड़ा हुई। 4 तब ज्योतिषियोंने कहा। 5 इस समय लग्न-ग्रहादि अशुभ चल रहे हैं। 6 ये दो घड़ी निकल जाय और बादमे पुत्र उत्पन्न हो तो वह महाराजा और पृथ्वीपति होवे। 7 इस बातको करनाकी माताने सुना तब उसने उस लग्नमे प्रसव नहीं होने देनेके लिए अपने पांवोंको ऊपर बधवा लिये। 8 सो वह तो इस कष्टसे मर गई। 9 किन्तु करना दो घड़ी पश्चात जीवित उत्पन्न हुआ। 10 वयस्क हुआ। 11 अपनी। 12 खुदवाकर। 13 पितरोंकी सतुष्टिके लिये अजलिमे पानीके साथ यव तिल आदि भर कर जलदान देनेकी एक मृतक-क्रिया। पितृ-यज्ञ। 14 और भी बहुतसा पुण्य-दान किया। 15 वाघेल वरसिहदेने किसी भी प्रकार का कर नही लिये जानेकी छूट दी गई हो ऐसी बसी (प्रजा) को बसा कर बांधवगढ़ स्थानमें अपनी राजधानी बनाई। 16 निर्बल जैसे। 17 लोधा राजपूतोंका एक वश। 18 स्थान। 19 सुन्दर तट-प्रदेश देख कर।

वरसिंघदे आ धरती लीवी । बंधवगढ़ वसियो ।

१ राजा वरसिंघदे ।

२ राजा वीरभांण । २ जांमणीभांण ।

३ राजा रामचंद–वीरभांणरो वडो दातार हुवो, दांन च्यार कोड़[1] दिया ।

१ कोड़ नरहर महापात्रनूं ।

१ कोड़ चत्रभुज दसौधीनूं[2]

१ कोड़ भइया मधुसूदननूं ।

१ कोड़ तानसेन कलावंतनूं ।

४ वीरभद्र रामचंद्ररो ।

५ दुरजोधन ।

६ प्रतापादीत ।

५ राजा विक्रमाजीत मुकंदपुर रहतो । राजा मानसिंघरो जमाई ।

६ बाबू इंद्रसिंघ मानसिंघरो दोहितो ।

६ सरूपसिंघ ।

६ राजा अमरसिंघ, जिणनूं संमत १६९० मे राजा श्रीगजसिंघजी बेटी चांदजी[3] परणाई । बंधव उरै[4] कोस २० गांव रैयां वसतो । संमत १७०७ अमरसिंघ काळ कियो[5] ।

७ राजा अनोपसिंघ ।

७ फतैसिंघ ।

७ मुगदराय ।

इति बंधवरा धणियांरी ख्यात वार्ता संपूर्ण ।

**

---

1 राजा रामचन्द्रने एक-एक करोडके चार कोडपसाव दान किये। 2 भाटको।
3 महाराजा गजसिंहजीकी कन्या चादजी राजा अमरसिंहजीको ब्याही थी। 4 यह गढ-वधवसे उरली तरफ गाव रीवामें रहता था। रीवा आज पूर्वमें बाघेलोंकी राजधानी है।
5 मर गया।

वात सीरोहीरा धणियांरी

आद चहुवांण अनळकुंडरी[1] उतपत । वसिस्ठ-रिखीस्वर आबू ऊपर राकस निकंदणनू[2] खत्री ४ उपाया—

१ पँवार ।　　२ चहुवांण ।
३ सोळंकी ।　　४ डाभी ।

चहुवांण घणकरा[3] सारा राव लाखण नाडूळ धणी । तिणरी पीढी आसराव हुवो । तिणरै घरै वाचाछळ[4] देवीजी आया छै । तिणरै पेटरा वेटा ३ हुवा । देवड़ा कहांणा छै । आबू पंवारांरी ठाकुराई हुती । तद आबूथी कोस ५ ऊमरणी छै तठै सहर वसतो । पछै बीजड़रा वेटा ५ महणसी, आल्हणसी, · · · · · † ऐ लोग गूढो कर रह्या था[5] । पछै पंवारासूं सगाई देणी कीवी[6] । २५ साँवठी दी[7] । एक भाई ओळ रह्यो[8] । पछै वै जान कर आया[9] । सगळानू डेरा देराया[10] । परणीजणनू जुदा बुलाया । भला रजपूतानूं वैरांरा वेस पहराया[11] । पछै परणाय सुवण मेलिया[12] । तठै के चँवरियां मांही पचीस सिरदार मारिया[13] । नै जांनीवासै साथ उतरियो उणनू अमल-पांणियां[14] माहै काई वळाई[15] दी सु वे छकिया तरै कूट-मारिया[16] । ओळ दियो थो उण उठै वांसै[17] सिरदार थो तिणनू मारियो । आबू ऊपर चढ दौडियो । आबू हाथ आयो । सं१२१६ रा माह वद १ पवारांसू गयो ।

---

1 चौहानोंकी उत्पत्ति अग्नि-कुण्डसे । 2 वशिष्ठ ऋषिश्वरने आबू पर राक्षसोका नाश करनेके लिये चार क्षत्रियोंको उत्पन्न किया । 3 बहुतसे । 4 वाचा-वचन, छल-अभिलाषा इच्छा-पूर्तिका वचन देने वाली देवी । 5 ये लोग छिपकर रह-रहे थे । 6 पीछे पवारोको अपनी पुत्रियाँ देनेका वचन दिया । 7 एक साथ २५ दी । 8 धनकी एवजमे एक भाईको उनकी चाकरीमे रखा । 9 पीछे वे बरात लेकर आये । 10 समस्तको रहनेके लिये जनिवासे दिलवाये । 11 चुनिंदा राजपूतोको स्त्रियोका वेश पहिनाया । 12 फिर उनका पाणिग्रहण कर सौभाग्य-रात्रि मनानेको भेजा । 13 वहा कई विवाह-मडपोमे २५ सरदारोको मार डाला । 14 अफीम शराब आदिमे । 15 बला । 16 ठोक-पीट कर मार दिया । 17 पीछे ।

† श्री रामनारायण दूगड इसी ख्यातके अपने हिंदी अनुवादमे पृ. १२१ मे बीजडके छः पुत्रोके नाम जसवत, समरा, लूणा, लूभा, तप्पा और तेजस्वी लिखते हैं सो ठीक प्रतीत होते है । महणसी, आल्हणसी बीजडके पुत्र नही हैं ।

पीढ़ी सीरोहीरा धणियांरी, संमत १७२१ रा माह मांहै आढ़ै महेसदास लिख मेली ।

संमत १४५२ वैसाख वद २, गुरुवार राव सहसमल सोभारै सरणुवारै भाखररी खंभ[1] नवो सहर आबूथी कोस १० वसायो । आबूनै सरणुवारो भाखर एक लगती डाक[2] छै । सरणुवारो भाखर एढो[3] क्युं न छै ।

पीढियांरी विगत–

१ सालवाहन	२ जैवराव
३ अंबराव नै गोगो भाई	४ दळराव
५ सिंघराव	६ राव लाखण[4]
७ वळ	८ सोही
९ महोराव	१० अणहल
११ जिंदराव	१२ आसराव
१३ आल्हण	१४ कीतू[5]
१५ महणसी	१६ पतो
१७ विजड़ । अठै तो महणसीरो मडियोड़ो छै नै केई विजड़ कीतूरो कहै छै ।	१७ लुभो
१८ सळखो	१९ रिणमल
२० सोभो	२१ राव सहसमल[6]
२२ राव लाखो	२३ राव जगमाल
२४ राव अखैराज जगमालरो	२५ राव रायसिंघ अखैराजरो
२५ राव दूदो अखैराजरो	२६ राव उदैसिंघ रायसिंघरो
२६ राव मांनसिंघ दूदारो	२६ राव सुरतांण

1 सोभा और सरणुवा दोनों पहाडोंके बीचमे । 2 आबू और सरणुवाके दोनो पहाड एकल मिले हुए हैं । 3 दुर्गम । 4 लाखणके समयका एक शिलालेख स० १०३९ का नाडोलसे प्राप्त है । 5 कीतूने जालोर पर अधिकार कर लिया था । स. १२१८ का इसका एक ताम्रपत्र नाडोलसे प्राप्त हुआ है । 6 सहसमलने चन्द्रावतीकी राजधानीको छोडकर अपने पिताके स्मारक-स्वरूप सिरोही नगर वसाया था ।

२७ राव राजसिंघ सुरतांणरो　　२८ राव अखैराज राजसिंघरो

देवड़ो रिणमल सलखारो आंक १९—

२० सोभो　　२१ सहसमल, जिण सीरोही वास कियो।

२२ राव लाखो, जिण लाखेळाव तळाव करायो।

२० गजो रिणमलरो, जिणरो परवार—

२१ डूंगर, तिणरा सीरोही देस डूंगरोत-देवड़ा।

राव लाखारा बेटा आंक २२—

२३ राव जगमाल　　२३ हमीर

२३ संकर　　२३ ऊदो

राव जगमाल कना[1] भाई हमीर धरती आध बंटाय लियो थो। पछै माहोमाहि लड़िया। जगमाल हमीरनू मारियो। राव जगमालरो अखैराज राव सीरोही हुवो, आंक २३,२४। राव अखैराज वडो[2] रजपूत हुवो। तिण एक वार जालोररो खान पकड़ि बंदीखाने दियो[3]।

२५ राव रायसिंघ महाराज हुवो छै। घणा दान-पुन्य किया। मेवाड़रा धणियासू, जोधपुररा धणियांसू वडा उपगार किया। माला आसियानू कोड दी[4], तिण मांहे गांव खांण सांसण कर दीवी छै[5]। सुकाळ-दुकाळ अरहट ३०० हुवै छै। पता कलहटनूं कोड दी[6]। तिण माहे माटासण गुजरालरै पैंडै नजीक छै[7]। वड गांव कनै[8]। तिण अरहट ५० हुवै छै। रायसिंघ भीनमाळ पर आयो थो[9]। विहारियांरा थांणारो साथ कावो गढोकोट मांहे थो[10]। कोट घेरियो हुतो। सु तीर १ माहिले वाह्यो[11]। सु रावरै वगतरी वांह मांहे हुय काखमे लागो। राव काळ कियो[12]। दाग काळंधरी रावरै चाकरे दियो[13]।

---

1 से। 2 बडा वीर। 3 इसने एक बार जालोरके खान मलिक मजाहिदखाको पकड़ कर कैद कर लिया था। 4 आसिया शाखाके चारण मालाको करोड़-पसाव दिया। 5 उसमे खाण नामक गाव शासनमे दे दिया है। 6 कलहट शाखाके चारण पत्ताको करोड़-पसाव दिया। 7 माटासण गाव गुजरातके मार्गके समीप आया हुआ है। 8 वड़गावके पास। 9 रायसिंह भीनमाल पर चढ कर आया था। 10 बिहारी पठानोके आदमी और काबा गढा, ये कोटके अदर थे। 11 अदर वालोने एक बाण चलाया। 12 राव मर गया। 13 रावके चाकरोने कालदी गावमे उसकी दाहक्रिया की।

सती उठै हुई। राव रायसिंघ राव गांगारी बेटी चांपाबाई परणाई हुती।

२५ राव दूदो अखैराजरो। वडो ठाकुर हुवो। रायसिंघ मरते हुकम कियो "माहरो बेटो लोहड़ो[1] छै। पांच रजपूतां टीको भाई दूदानूं देजो। बेटो उदैसिंघ छै, तिणनूं दूदो मोटो करसी[2]।" तरै दूदो पाट तो वैठो छै, पिण साहबीरो धणी[3] उदैसिंघनूं राखतो नै आपरा बेटा मांनसिंघनूं नजीक न आवण देतो। राव दूदै अदो वाघेलां गांवड़ो एक मारियो[4]। तिणरा वडा छंद छै, कळहट पातारा कह्या। पछै राव दूदो मुवो। मरते कह्यौ–"म्हारा वेटानूं टीको मत दो। टीको रायसिंघरा वेटा उदैसिंघनूं देजो।" तरै उदैसिंघनूं तेड़नै कह्यो– "थारी दाय[5] आवे तौ म्हारा बेटा मानसिंघनू लोहियांणौ गांव देजो।" पछै दूदो मुवो।. पांचे रजपूते परधांने उदेसिंघनू पाट थापियो[6]। मानसिंघनू लोहियांणो दियो। वरस एक तो रूड़ो-भलो नीसरियो[7], नै पछै उदैसिंघ दूसण चीतारियो[8]–"मोनू मानसिंघ तुको १ वाह्यो थो[9]।" तरै रजपूते तो वरजियो[10]। इणरै बाप तोसू निपट भली कीवी छै[11]। आपरा बेटानू टीको न दिरायो नै थांनू भातीजनू दिरायो। कह्यो–"मानसिंघ थारो हुकमी-चाकर[12] छै।" पिण उदैसिंघ कहै– "लोहियांणाथी परो काढीस[13]।" पछै फोज मेल परो काढियो[14]। राणांरै मेवाड़ गयो[15]। मांनसिंघनू गांव १८ वरकाणो वीभैवासू पटै दियो[16]। पछै मानसिंघ दोय-च्यार सिकार माहे मुजरो कियो[17], मु रांणो मया करै छै[18]। तितरै वरस१ राव उदैसिंघनू सीयळ नीसरी न थी,

1 मेरा पुत्र छोटा है। 2 उसको दूदा पाल-पोष कर बडा करेगा। 3 राज्यका स्वामी। 4 रान दूदाने अदा वाघेलाको मार दिया और उसका गाव लूट लिया। 5 तेरी इच्छा हो तो। 6 पाच प्रधान राजपूतोने मिल कर उदयसिंघको गद्दी बिठाया। 7 एक वर्ष तो ठीक निकल गया। 8 पीछे उदयसिंहको मानसिंहका एक दूषण याद आया। 9 मानसिंहने मुझे एक उलहना दिया था। 10 मना किया। 11 इसके पिताने तेरा बहुत उपकार किया है। 12 आज्ञाकारी सेवक। 13 निकाल दूगा। 14 निकाल दिया। 15 राना उदयसिहके पास मेवाड चला गया। 16 रानाने मानसिंहको वरकानेका ठिकाना वीभैवाके साथ १८ गावोका पट्टा करके दे दिया। 17 मानसिंहने दो-चार शिकारोमे साथ रह कर अभिवादन किया अर्थात् अपने कौशल और शेवाका परिचय दिया। 18 अत राना बडी कृपा रखता है।

सु सीयळ नीसरी थी[1]। आ खबर मांनसिंघ दूदावतनूं सीरोहीथा को एक[2] आयो हुतो तिण कही हुंती । रांणो सिकार चढ़ियो छै,कुंभळमेर दिसी[3]।नै रांणानू आ खबर न छै, नै मांनसिंघनू को एक सीरोहीसू वळै[4] आयो तिण कह्यो–'उदैसिंघ दबाव मांहे छै[5] ।' पछै राव उदैसिंघ सीयळसूं मुवो[6] । तरै रजपूते दीठो[7], इणरै तो वेटो को न छै । मांनसिंघ दूदावत रांणा कना छै । रांणो आ खबर सुणनै उठै मांनसिंघनूं मारनै कुंभळमेरसू आघो-हीज आवै[8] तो आज देवड़ांरा घरमू आवू जाय । तरै पांच ठाकुरे[9] रावनू मुवो पोहर २ किणहीनू सुणायो नही नै सांहणी जैमल निपट वडा आदमी हुतो । इतवारी लायक[10], तिणनूं मांनसिंघ दिसा[11] कागळ लिख सारी वात कहि–समभायनै चलायो । नै पाछै रावनू दाग दियो[12] । सांहणी जैमल सारी रात खड़ि[13] दिन पोहर एक चढतां पहैली कुभळमेर मांनसिघरै डेरै आयो । चीवो[14] सावतसी थो, तिणनू कांन माहे वात सारी समझायनै कही । तरै कह्यो–"मांनसिघ रांणा कनै छै। दरबार कुभळमेर जुड़ियो छै[15],तठै गयो । मांनसिंघ आवतो दीठो जांणियो[16] । जु जैमळ अठै आयो सु उठै कुसळ नही ।" मानसिंह मिस कर ऊठियो । आपरै साथ मांहे आयो[17] । सांमा जैमलसू मिळियो । जैमल वात थी सु निजरांमाहे[18] समझाई । भेळा हुय डेरै आयनै चीवा सांवतसीनू सारी वात समझाय कह्यो–"म्हे नासां छा[19] । राणारा आदमी आवै तिणानू कहिजो, मांनसिंघ सूअर २ हेरिया[20] छै, तठै गयो छै ।" नै मांनसिंघनू लेनै उडाया असवार ५ सू[21], सु रात पोहर एक जाता सीरोही नजीक

---

1 उदयसिंहको पहले चेचक नही निकलीथी सो अब निकल आई। 2 सिरोहीसे कोई आया था उसने कहा था। 3 की ओर। 4 पुन। 5 उदयसिह बीमारीमे दबता जा रहा है। 6 फिर राव उदयसिंह तो चेचकसे मर गया। 7 तब सरदारोने विचार किया। 8 आगे चलाही आवे। 9 तब पाच प्रधान ठाकुरोने रावके मर जानेकी बात दो पहर तक किसीको नही सुनाई। 10 साहनी जयमल जो बडा चतुर, योग्य और विश्वासपात्र था। 11 को। 12 दाह-सस्कार किया। 13 चलकर। 14 चौहान क्षत्रियोकी एक जाति। 15 जुडा हुआ है। 16 मानसिंहने जयमलको आता देखा जाना। 17 अपने मनुष्योंके पास आया। 18 सकेतमे। 19 हम भागते हैं। 20 तलाश किये हैं। 21 और मानसिंहको ले कर जयमल ५ सवारोसे उडा।

आया। बाग मांहे आय उतरिया। सांहणी जैमल रजपूतांनूं खबर दी। रजपूत सारा राते हीज मांनसिंघ कनै आया, मिळिया। वांसै[1] रांणै डेरै खबर कराई— मांनसिंघ कठै? तरै चीवै सांवतसी कह्यो— "आहेड़िए[2] सूअर दोय हेरिया था तठै गयो, हमार आवै छै।" सु यूं करतां आथण हुवो[3]। तरै रांणै वळै मांनसिंघनूं याद कियो। तरै कोस १०एक ऊपर मांनसिंघ नाठो जातो[4] मिळियो थो सो उणे कह्यो—"मांनसिंघ तो दूपहर दिन चढियो थो तरै म्हानूं सीरोहीनूं नाठो जातो असवार ५ सूं मिळियो हुतो," तरै रांणै कह्यो—"कासूं जाणीजै[5]?" तरै किणहीक कह्यो[6]—"सीरोहीथा आदमी एक म्हारै आयो तिण कह्यो—"राव उदैसिंघनूं सायळ नीसरी छै नै गाढ़ो[7] दुखी छै।" तरै रांणै कह्यो—"जांणीजै छै के उदैसिंघ मुवो[8]।" औरै पिण कह्यो—"आ वात मिळती दीसै छै।" तरै रांणै कह्यो—"मानसिंघरै डेरै रजपूत छै तिणानूं तेड़ आंवो[10]।" तरै देवड़ो जगमाल वडेरो रजपूत हुंतो सु रांणांरी हजूर आयो[11], तरै जगमालनूं रांणै कह्यो—"यूं मानसिंघ कांय नाठो, म्हे कासूं करता था[12]?" तरै जगमाल कह्यो— "सु तो वात मांनसिंघ जांणै।" तरै रांणै जगमालसूं कहाव कियो[13]— "परगना ४ सीरोहीरा म्हानूं लिख दो।" तरां जगमाल दीठो[14]—"हूं उजर करूं, रांणो वांसै साथ चाढै, वे कठै ही उतरिया होय तो कोई कवाइत[15] होय।" तरै जगमाल घणा विनासूं[16] बोलियो—"मांनसिंघ दीवांणरो चाकर छै, म्हांनूं किसो उजर छै। जांणो[17] सु धरती दीवांण ले, जांणो सु मांनसिंघनूं दे।" तरै परगना ४ रो कागळ रांणै लिखायो। तितरै[18] वात करतां रात घणी गई, कह्यो—"सवारे मतो घताय देसा[19]।" दीवांण ही सोय रह्या। मानसिंघरो चाकर

---

1 पीछे। 2 शिकारियोंने। 3 ऐसा करते-करते सूर्यास्त हो गया। 4 भागता जाता। 5 इससे क्या समझना चाहिये? 6 तब किसीने कहा। 7 खूब। 8 ज्ञान होता है कि उदयसिंह मर गया। 9 औरोंने भी कहा। 10 बुला लाओ। 11 दरबारमें आया, सेवामें आया। 12 मानसिंह इस प्रकार क्यों भाग गया, हम उसके विरुद्ध युद्ध करते नहीं रहे थे? 13 तब रानाने जगमालसे कहा। 14 तब जगमालने विचार किया। 15 कोई अनर्थ हो जाय। 16 विनय। 17 चाहे सो। 18 तब, इतनेमें। 19 प्रातःकाल हस्ताक्षर करवा देंगे।

देवड़ो जगमाल सोइ रह्यो । सवारे हथियार बांध तयार हुय सीख मांगण जाता हुता, तितरै रांणारा पिण आदमी सांमां तेड़ा आया[1]। जगमालनूं रांणै कह्यो—"राते परगना ४ देणा किया छै, तिण कागळमें मतो घातदो[2], तरै देवड़े जगमाल कह्यो—"मांहरा दिया परगना न आवै[3]। मांनसिंघ उठै छै, धरतीरा सारा रजपूत उठै छै[4]।" इण जबाब मता दिसा यूं कह्यो[5]—तरै रांणै कह्यो—"रजपूतां भलो आपरो दाव कियो[6]।" तरै रजपूतांसूं रांणै कह्यो—"म्हे चार परगना मांगां छां, तिणनूं थां साथै थांणानूं विदा करां छां[7]। थे थांणो वैसांण नै आघा जाज्यो[8]।" तरै देवड़े जगमाल कह्यो—'सीरोहीरा धणी रावळा[9] चाकर छै, सगा छै[10]। अठाताऊं[11] दीवांण वात कहणनूं[12] करै? अेक म्हां साथै[13] प्रोहित भलो आदमी मेलोजै[14]। राव जवाव करसी सु दीवांणसूं आय मालम[15] करसी। तरै दीवांण ही वात कबूल करी[16]। इणां साथै प्रोहित मेलियो[17]। आगै रजपूते सीरोहीरा मिळनै राव मांनसिंघनूं टीको दियो[18]। नै रावरो रजपूत पिण रांणारा प्रोहितनूं[19] ले सीरोही आयो। प्रोहितरो घणो आदर-भाव कियो। हाथी १, घोडा ४ दीवांणनूं प्रोहित साथै आपरा आदमी दे पेसकस मेलिया[20]। कागद माहे धणी मनुहार लिखी नै कह्यो—'च्यार परगनांरी कासू वात छै[21] ? सीरोही सारो दीवांणरी छै। हूं दीवांणरो रजपूत छूं।" तरै दीवांण पिण राजी हुवा।

२७ राव मांनसिंघ दूदारो। वडो दूठ[22] ठाकुर हुवो। सीरोही

---

1 इतनेमें रानाके मनुष्य भी बुलानेके लिए सामने आ गये। 2 उस पत्रमें हस्ताक्षर कर दो। 3 मेरे देनेसे परगने आपको नहीं मिल सकते। 4 मानसिंह उधर है, देशके सब सरदार वहा हैं। 5 इसने हस्ताक्षर करनेके सम्बन्धमें यह उत्तर दिया। 6 राजपूतोंने अपना अच्छा दाव खेला। 7 जिसके लिए तुम्हारे साथ गारद भेज रहा हूं। 8 तुम वहा पर थाना लगवा कर आगे जाना। 9 आपके। 10 सम्बन्धी हैं। 11 यहा तक। 12 किसलिये 13 मेरे साथ। 14 भेजिये। 15 विदित करा देगा। 16 स्वीकार कर दी। 17 भेज दिया। 18 राजतिलक किया। 19 को। 20 रावने पुरोहितके साथ हाथी १, घोडे ४ और अपने कुछ आदमी पेशकशीमें भेजे। 21 चार परगनोंकी कौनसी बात है ? 22 पराक्रमी, जबरदस्त।

घणो तपियो[1]। पातसाही फोजांसूं घणी वेढ कीवी[2]। सीरोही पाखती निपट वडा मेवास कोळियांरा छै[3]। आज पैहली किणही सिरोहीरै धणी कदै[4] औ[5] मेवास अमल कियो न थो। सु मांनसिंघ एकण दिन फोज वावीसां ठोड़ै ऊपर विदा कीवी[7]। तिण फोजां वावीस ही ठोड़ै गांव भेळ उणांनूं परा काढ़नै उवै ठोडां लीवी[8]। रावरा थांणा मेवासे वैठा। मास ६ रह्या। पछै कोळीसारा रावरै पगे आय लागा। राव हुकम कियो सु हुकम माथै चढ़ाय लियो। पछै राव कोळियांनूं खुसी हुय धरती पाछी दी। आपरा थांणा वुलाइ लिया[9]।

राव रायसिंघरी वैर[10]–राव उदयसिंघरी मा–चांपावाई। राव गांगारी वेटी सु निपट दाढीक-आदमी[11]। सु उदैसिंघरी वैरनूं आधांन[12] छै। सु चांपा वाई केहवै–"सवारै मांहरै पोतरो हुसी[13]। मांनसिंघ कुण आदमी जिको टीको भोगवै छै ?" पछै मांनसिंघ चांपावाईनै उदैसिंघरी वैर गरभवंतीनू ऊजळै लोहड़ै मारी[14]।

मानसिंघ, सुरतांणरी वसीरी-वरकसोरै लिया पंचाइण पंवार परधांन हुतो तिणनू विस दियो[15]। तिणरो भतीज कलो पंवार थो सु रावरै खवास हुतो[16]। सु राव आवू चढिया था उठै कलानूं क्यूं धकोसो दिरायो[17]। पछै आथणरा[18] राव आरोगता था तरै कले पँवार रावनू कटारी वाही[19], नै कुसळै गयो[20]। राव कटारी लागां पछै पोहरेक जीवियो[21]। तरै रजपूते पूछियो–"रावळो तो ओ सूळ छै[22]। रावळै वेटो न छै। टीकारो किणनै हुकम छै ?" तरै राव

---

1 सीरोही पर वहुत समय तक कुशलतासे शासन किया। 2 वादशाही फौजोंसे अनेक लडाइया लडी। 3 सिरोहीके पास कोलियोंके वहुत वडे मेवासे थे (मेवासा = लुटेरोंके रहनेका स्थान)। 4 कभी। 5 इन। 6 वाईस। 7 भेजी। 8 उन फौजोंने वाईस ही स्थानोंके निकटके गावोंसे उनको निकाल उन गावों पर अधिकार कर लिया। 9 अपने थानोंको वापिस वुला लिया। 10 स्त्री, पत्नी। 11 वुद्धिमान और दृढता वाली स्त्री। 12 गर्भ। 13 कल मेरे पौत्र होगा। 14 फिर मानसिंहने चम्पावाई और उदयसिंहकी गर्भवती पत्नीको तेज धार वाले शस्त्रसे मार डाला। 15 भागके पुत्र सुरतानकी कर-मुक्त प्रजासे वलात् कर प्राप्त करनेके कारण पँवार पंचायणको मानसिंहने विष देकर मरवा डाला। 16 प्रीतिपात्र सेवक। 17 वहां कलाको कुछ धक्कासा दिया। 18 संध्याके समय। 19 कटारी मारी। 20 और कुशलपूर्वक चला गया। 21 एक पहर तक जीवित रहा। 22 आपका तो यह हाल है।

मांनसिंघ कह्यो–"टीको सुरतांण भांणरानूं[1] देजो।" पछै सारै रजपूते नै देवड़े विजै हरराजोत मिळनै राव सुरतांणनूं टीको दियो। सुरतांण राव हुवो।

राव सुरतांण भांणरो। तिणरै पीढ़ियांरी वात–

राव लाखो आंक २२।

२३ ऊदो लाखारो। टीकै वैठो नही

२४ रणधीर।

२५ भांण रिणधीररो।

२५ मूजो रिणधीररो। देवड़े विजै मरायो।

२५ प्रताप रिणधीररो।

२६ राव सुरतांण[2]।

२७ नाहरखांन[3]।

२७ चंदो।

२७ जैसिंघदे।

२७ वाघ।

२७ करन।

२६ सांईदास। मोटै राजा मारियो[4]।

२७ रायसिंघ।

२७ राम।

२८ भोपत।

वात राव सुरतांणरी

राव मांनसिंघ मुवो तरै राव सुरतांणनै सारै रजपूते मिळ टीकै वैसांणियो[5]। देवड़ा विजारो घणो कारण छै[6]। विजोराव सुरतांण

---

1 राज्य सिरा भाणके पुत्र सुरतानको करना। 2 राव लाखाका पुत्र। 3 थाना-नाम सिरोही और उत्तर गुजरात आदिमें पाये जाते हैं। 4 जोधपुरके मोटा-राजा उदयसिंहने सांईदासको मारा था। 5 गद्दी पर बैठा दिया, राज्यतिलक कर दिया। (सुरतान १२ वर्षकी अवस्थामें वि॰ स॰ १६२८मे गद्दी बैठा)। 6 देवड़ा विजयका बहुत मान और प्रभाव है।

कनै धणी-धोरी छै[1]। राव मांनसिघ रै वैर बाहड़मेरी थी[2], तिणरै पेट आवांन थो[3]। राव मानो मुवो तद पछै बेटो जायो[4]। नै राव सुरतांण विजो कहै छै त्यूं करै छै। पिण देवड़ो सूजो रिणधीरोत-रावरै काको, तिको भला २ रजपूत, भला २ घोड़ा राखै छै, सु विजानूं सुहावै नही। विजो जांणै छै मांनारो बेटो तेड़ाऊं[5]। सुरतांणनै परो काढूं[6]। तो सूजो मारियो चाहीजै[7]। तरै आपरानूं कह्यो[8]–"सूजो मारो[9]" तरै सिगळै[10] कह्यो–"आ वात मत करो। सीरोहीरो धणी सुरतांण हुय निवडियो[11]। थे रावरो काको मा मारो[12]।" पिण विजो किणरो कह्यो मांनै[13]? देवडा रावत सेखावतनूं कह्यो। रावत वालीसा जगमालरै डेरे सूजानूं मरायो। देवड़ो गोयंददास देवीदासरो डेरा कनारे थो[14]। विजो सूजारै डेरे घोडा असवाव लूटणनू आयो, तरै गोयंददासही वाज मुवो[15]। राव मांनारो वेटो वाहमेर थो, तिणनू देवड़े विजै तेड़ायो थो[16], सु निजीक आयो। विजो सांमी चढियो[17] नै राव सुरतांणनूं सैहर-वंद करी काळंधरी गयो[18] नै आपरा रजपूत कनै राख गयो। कह गयो–"सुरतांणनूं इण ओरा मांहिथी वारै नीसरण मत देजो[19]। पछै राव जाणियो–विजो पाछो आयो हुवो मोनू मारसी[20]। तरै एक देवडो डूगरोत भलो रजपूत थो, एक चीवो हुतो। तरै उण डूंगरोतनूं समझायो। कह्यो–"तू मोनू काढि, तोनूं ढवावणवाळो हूंई छूं[21]।" उण कह्यो–"राव! जाणूं छू, सको सु सहु करो[22]।" कह्यो–

---

1 राव सुरतानके पास विजय कर्त्ता-धर्त्ता है। 2 राव मानकी पत्नी बाहडमेरी थी। (राव मानसिंहकी पत्नी बाडमेरके रावकी कन्याथी)। 3 उसके गर्भ था। 4 राव मानके मरनेके बाद उसके पुत्र हुआ। 5 मानाके पुत्रको बुला लूं। 6 सुरतानको निकाल दूं। 7 किन्तु इसके लिये सूजाको मरवा देना चाहिये। 8 तब अपने वालों को (अपने मनुष्योंको) कहा। 9 सूजाको मार दो। 10 तब सबने कहा। 11 सिरोहीका स्वामी सुरतान हो चुका। 12 आप राव सुरतानके चचा सूजाको मत मारो। 13 परन्तु विजय किसकी सुने? 14 देवीदासका पुत्र गोविंददास उस समय सूजाके डेरेके पास था। 15 तब गोविंददास भी लडकर मर गया। 16 बुलवाया था। 17 स्वागत करनेके लिये सामने गया। 18 और राव सुरतानका सैर (घूमना-फिरना) बंदकर कालंद्री चला गया। 19 और यह कह गया कि सुरतानको इस कोठरीसे बाहर नहीं निकलने देना। 20 रावने यह जान लिया कि विजय लौट कर आते ही मुझे मार देगा। 21 तू मुझको बाहर निकाल, तुझको शरण देकर रखने वाला मैं ही हूं। 22 उसने कहा, राव! यह मैं जानता हूं, आप जो कर सको वह सब करो।

"मेवाड़, जोधपुर हूं वसीस तो पिण रु० २००००) रो पटो मोनूं कोकोई देणोइज करसी[1]। उणसूं सील-कवल किया[2]। वीचमें महादेवजी दिया[3]। तरै सिकाररो मिस कर नीसरिया[4]। चीवासूं भेद भागो नही[5]; तरै कोसे २ गयां चीवो कहै–"हूं इण वातमें जांणू नहीं, जांण न दां[6]।" तरै डूगरोत थो, तिण कह्यो चीवानूं–"तूं उरो आव, हूं तोनूं मारीस[7]।" तरै चीवो झख मार रह्यो। राव सुरतांण नासनै रांमसेण गयो[8]।

वीचली वात छै[9]

देवड़े विजै सूजानै मारनै सूजारी वसी ऊपर साथ मेलियो[10]। उठै मालो सूजावत[11] मरियो। वसी सारी लूंटी। प्रथीराज नै स्यामदासरी मा इणांनू द्रैहड़ १ मांहे ऊपर पला नांखनै रही[12]। वे परा गया तरै द्रैहड़ मांहेथी रातरा नीसरनै आवूरी गोढै वार गया[13]। राव सुरतांण रांमसेण आयो। तरै अेही सूजारा वेटा इणांरा गाडा रांमसेण ले आया[14]। देवड़ो विजो राव मांनारा वेटा साम्हो गयो थो, तरै उणै विजारै खोळै डावडो आंण मेलियो[15]। डावडानूं कांई वलाइ हुई सु जीव नीसर गयो[16]। विजो पाछो आयो, नै देवडा समरानूं कह्यो–"मोनू टीको दो।" घणी ही कही पिण इणै कह्यो–"राव लाखारै पेटरा तो वीस जणा छै[17]। जठा सूधो एक डावडो

---

1 रावने कहा मेवाड़ या जोधपुर जहां भी मैं जाकर रहूंगा, इनमेसे कोई न कोई मुझे रु० २००००)के पट्टेकी जागीरी दे ही देंगे। 2 उससे शपथकी और वचन दिया। 3 कोई प्रतिज्ञा-भंग नहीं करे अतः बीचमें महादेवजीको रख कर प्रतिज्ञाको दृढ़ किया। 4 तब शिकारका बहाना करके वहांसे निकल गये। 5 चीवाको इस भेदका पता नहीं लगा। 6 जाने नहीं दूंगा। 7 मैं तुझको मार दूंगा। 8 राव सुरतान भाग कर रामसीन चला गया। 9 बीचका छूटा हुआ प्रसंग है। 10 सूजाकी प्रजाके ऊपर सेना भेजी। 11 सूजाका पुत्र। 12 पृथ्वीराज और श्यामदासकी माता, इन दोनों बच्चोंको एक गड्ढेमें उन पर कपड़ा डालकर छिपकर रही। 13 आबूकी सीमासे बाहर चले गये। 14 तब यहीं सूजाके इन पुत्रोंके गाड़ोंको रामसीन ले आया। 15 तब उसने अपने बच्चेको लाकर विजयकी गोदमें रख दिया। 16 बच्चे को न जाने क्या बला हुई कि उसके प्राण निकल गये। 17 राव लाखा के वंशमें २० व्यक्ति हैं।

वरस १रो हुवै तठा सूधो थारी कुण मजाल, तूं टीको लै[1] ?" इणे-उणे विरस हुवो[2] । श्रै रीसाय परा गया[3] । विजो मास चार हुवा सीरोही भोगवै छै[4] । श्रा वात राणै सांभळी, तरै राव कलो मेहाजलोतनूं[5]— दीवांणरो भांणेज थो, इणनूं टीको दे, साथै फौज दे सीरोहीनूं विदा कियो । श्रै सीरोही श्राया । विजो नीसर ईडर गयो । कलो सीरोही धणी हुवो । राव कलो सीरोही साहिबीरो धणी । मदार चीवा खीवा भारमलोत ऊपर छै[6] । देवड़ो सूरो, हरराज पिण चाकर छै । पिण दिलगीर तो गाढ़ा छै[7] । नै सुरतांण पिण श्रांण कलानूं जुहार कियो छै[8] । गांव केइक पटै दिया छै. तठै रहै छै । करैक[9] चाकरी पिण करै छै । एकण दिन राव कलो दरवारथी[10] ऊठियो छै । देवड़ो समरो, सूरो हरराज दुलीचे वैठा छै. तरै चीवै पाता फरासनू कह्यो— "दुलीचो उरो ल्याव[11] ।" फरास श्राय देखै तो श्रै ठाकुर वैठा छै । तरै पाछो गयो । चीवे पातै पूछियो—"दुलीचो लायो ?" तरै फरास कह्यो—"सूरोजी,समरोजी, हरराज वैठा छै ।" तरै चीवै कह्यो—"थारा वाप लागै छै[12]? दुलीचो उरो ल्याव ।" तरै फरास वळै[13] श्रायो, तरै इणे दीठो[14] । श्रो फिर-फिर जाय । तरै इणे कह्यो—"दुलीचो चीवो पातो मंगावै छै ?" तरै इण कह्यो—"राज[15] सारीहो वात समझो छो ।" तरै श्रै परा ऊठिया,कह्यो—"परमेस्वर कियो तो कलारी जाजम नही वैसां[16] ।" श्रै रीसायनै घरै गया[17]। सुरतांणसू इणे वात कराई— तू श्राव, म्हा भेळो होय[18] ।" तरै राव नासनै समरा, सूरारा गाडा

---

1 जहा तक इस वशमे एक भी वच्चा एक वर्षकी श्रायुका मौजूद है, तेरी क्या मजाल कि तू राज्यका श्रधिकारी वने? 2 इनके श्रौर उनके परस्पर विरोध हुश्रा । 3 ये रुष्ट हो कर चले गये । 4 विजय चार माससे सिरोहीका राज्य कर रहा है । 5 मेहाजलका पुत्र । 6 सव कामका श्राधार भारमलका पुत्र चीबा खीवाके ऊपर है । 7 परतु मनमे वहुत नाराज हैं । 8 सुरतानने भी श्राकर कलाको (राज्याधिकारी होनेका) प्रणाम किया । 9 कभी-कभी । 10 मे । 11 कालीन उठाकर ले श्राव । 12 क्या ये तेरे वाप लगते हैं ? 13 फिर । 14 तव इन्होंने देखा । 15 श्रीमान् श्राप । 16 परमेश्वरने चाहा तो श्रव हम कलाकी जाजम पर (कलाके दरवारमे) नहीं वैठेंगे । 17 ये रुष्ट होकर घर चले गये । 18 सुरतानसे इन्होंने कहलवाया कि तू श्राकर हमारे शामिल हो ।

था तठै आयो[1]। इणे भेळा हुय टीको राव सुरतांणरै काढियो[2]। देवडो विजो ईडर चाकरी करै थो सु विजानू राव सुरतांण तेड़ायो[3]। विजो रोह, सरोतरे होय आय उतरियो[4]। तरै आ खबर राव कलैनूं नै चीबा पातैनू पोहती[5]। विजो आवै छै। तरै कलै देवड़े रावत हामावतनू असवार ५०० देनै घाटारै मूंडै विजै सांमा मेलियो[6]। रावत हामावत गांव माळ आय ऊतरियो नै विजो गांव ब्रहमांण आय ऊतरियो[7]। ब्रहमांणथी कोस १ माथै वेढ[8] हुई। असवार १५० विजै कनै था। रावत कनै तो साथ घणो थो, पिण विजो जीतो[9]। आदमी ४० कलारा कांम आया। आदमी ६० घावै-पड़िया[10]। रावत हांमावत कलारी फोजमे सिरदार तिको पूरे-घावै पड़ियो[11]। आदमी १३ विजारा काम आया। विजो वेढ़ जीतनै रांमसेण राव सुरतांण भेळो हुवो[12]। विजो आवतां सांमां सुरताणरो घणो वळ वधियो[13]। विजो राह-वेधी[14] रजपूत थो। सु रावजीनू कह्यो–"मिलकखांनजी जाळोररो धणी छै। इणनू आंपणी भीर[15] करो।" तरै मिलकखांन विचै आदमी फेरियो[16]। कह्यो–"म्हे रुपिया लाख १ थांनू दां छां[17]। थे मांहरी मदत आवो।" तरै मिलकखान कह्यो–"लाख रुपियां वासतै भाईबंध मराया न जाय। सीरोहीरा परगना ४ मोनू दो तो थाहरी मदत आऊं। परगनांरी विगत—१ स्यांणो, १ वडगांव, १ लोहियांणो,

---

1 तव राव सुरताण जहाँ समरा और सूराके गाडे इसकी प्रतीक्षामे खडे थे, दौड कर वहा आया। 2 इन्होने सम्मिलित होकर राव सुरतानको राज्य-तिलक कर दिया। (यह राज्यतिलक रामसीनमे हुआ था)। 3 देवडा विजय ईडरमे चाकरी करता था उसे सुरतानने बुला लिया। 4 विजय सिरोत्रा गाव होता हुआ रोहुआ गावमे आ पहुँचा। 5 तव यह समाचार राव कला और चीवा पातेको पहुँचा। 6 तब देवडा कलाने हामाके पुत्र रावतको ५०० सवारोके साथ गिरवरकी घाटीके द्वार पर विजयको रोकनेके लिए भेजा। 7 हामाका पुत्र रावत मारा गावमे ठहरा और विजय वरमाण गावमे आकर ठहरा। 8 लडाई। 9 परन्तु विजयकी जीत हुई। 10 आहत हुए। 11 सम्पूर्ण आहत होकर गिर गया। 12 राव सुरतानके शामिल हुआ। 13 विजयके आ जानेसे सुरतानका बल बहुत बढ गया। 14 दूरदर्शी। 15 इसको अपना सहायक बनाओ। 16 तब इसके लिए मिलकखाके बीच आदमीका आना-जाना किया गया। 17 हम एक लाख रुपये तुमको देते है।

१ डोडियाळ[1] । किणही कह्यो–"श्रै परगना दीजै । किणही कह्यो—श्रै परगना न दीजै ।" तरै विजै कह्यो–"श्रै तो परगना माथै सटै मांगै छै[2], नचीत दो[3] ।" तरै परगना ४ मिलकखांनजीनूं दिया । तरै असवार १५०० खांनजी लेनै राव सुरतांण, विजै भेळो हुवो[4] । राव कलो सीरोहीथा[5] चलायनै आदमी हजार ४००० था[6] सामा काळधरी आय उतरियो । मोरचा मडिया । नाळां मांडी[7] । अठै इण काळधरीरा डेरा निपट गाढा सझाया[8] । नै राव सुरतांण कनै आदमी हजार तीन ३००० भेळा हुवा छै । राव सुरतांणनूं खबर हुई–"काळधरी कले इण भांत सझी छै । काळधरी जाइजै तो धको खाइजै[9] । तरै राव सुरतांणरै समरो, सूरो, विजो देवड़ो वडा राह-वेधी[10] रजपूत था, त्यां कह्यो[11]–"आंपणै काळधरीथा कासू कांम छै[12] ? आंपै तो पाधरा सीरोहीनू चलावस्यां[13] । कलारै लड़ियो जोइजसी तो आय लड़सी[14] । तरै इणां तीन फोज करी नै सीरोहीनू चलाया । काळधरीसू कोस १ नीसरिया[15] तठै राव कलो आडो आय लड़ियो[16] । वेढ हुई[17] । वेढ राव सुरतांण जीती[18] । कलै हारी[19] । इण वेढ़ मांहे विहारियै[20] निपट घणो वळ कियो । राव सुरतांणरी तरफ आदमी वीस कांम आया । त्यां मांहे[21] मुदायत[22] देवडो सूरो नरसिंघोत समरारो भाई कांम आयो । राव कलारो अतरो साथ कांम आयो[23] ।

---

1 विहारी-पठानोका आधिपत्य हट कर जब जालोर जोधपुरके अधिकारमे आ गया, तब सिरोहीके ये चारो परगने भी स्वत मारवाड-राज्यमें मिल गये थे। आज समस्त राजस्थान भारतका एक प्रान्त बन जाने पर मारवाड और जैसलमेर राज्यके साथ सिरोही राज्य भी राजस्थानके जोधपुर-डिवीजनका एक अगमात्र रह गया है। 2 ये परगनेतो वह सिरके बदलेमे मागता है। 3 निश्चिन्त होकर दें। 4 सम्मिलित हुआ। 5 सिरोही मे। 6 चार हजार सहित। 7 मोरचे पर तोपें रखी गई। 8 इधर इसने कालद्रीके मोरचेको अत्यन्त दृढ रखा। 9 कालद्री चले जायें तो हानि उठाना पडे। 10 दुरदर्शी, युद्धानुभवी, अनुभवी। 11 उन्होने कहा। 12 अपनेको कालद्रीसे क्या काम है ? 13 अपन तो सीधे सिरोहीकी ओर चलावेंगे। 12 कलाको लडनेकी आवश्यकता है तो वहा आकर लडेगा। 15 निकल गये। 16 जहा पर राव कला आडा आकर लडा। 17 लडाई हुई। 18 राव सुरतानने लडाई जीतली। 19 कलेकी हार हुई। 20 विहारी पठानोने। 21 उनमे। 22 मुख्य। 23 राव कलाके इतने मनुष्य काम आये।

१ चीवो पतो ।

१ सीसोदियो मुकंददास ।

१ सीसोदियो स्यांमदास ।

१ सीसोदियो दलपत ।

४ कांम आया । राव सुरतांण वेढ़ जीती । कलो नास गयो[1] । सुरतांण खेत सोधियो[2] । पछै राव सुरतांण सीरोही आय बैठो । राव कलारा मांणस[3] सीरोही था । राव सुरतांण सेभवाळ बैसांण, राव कलो थो तठै पोहचता किया[4] । राव सुरतांण सीरोही धणी हुवो । सीरोही मुदो देवड़ा विजै माथै छै[5] । पछै विजो दिन-दिन जोर चढ़तो गयो छै । सुरतांण नै विजै गाढ़ो विरस छै[6], पिण राव पूज सकै नहीं[7] । तिण टांणै राव सुरतांण वाहड़मेरी परणियो, तिका वहू सीरोही आई[8] । वहू वाहड़मेरी ठाकुराईरो नै विजारो धाट[9] देखनै रावनूं कह्यो–"ओ ठाकुराईरो किसो सूल[10] ? धणी थे कना विजो धणी[11]?" तरै राव सुरतांण कह्यो–"धरती मांहे रजपूत नही, विजासों वलाय सांमां मांडै[12] । तरै वाहड़मेरी कह्यो–"पेट भरस्यो तो धरती मांहे रजपूत घणाई छै[13] ।" तरै राव कह्यो–"थे दस मांणस तेडावो[14] ।" तरै वाहड़मेरी आपरा पीहरसूं आदमी २० तेड़ाया[15] सु आदमी २० वीरा निपट प्रबळ आया । आदमी रावरा पासवांन[16] हुवा । रावरी दशा रूडी दीठी[17], तरै केई धरतीरा भला रजपूत पिण

---

1 कला भाग गया। 2 सुरताणने रणक्षेत्रका निरीक्षण किया। 3 अंतःपुर, जनाना। 4 राव सुरताणने उनको पालकीमें बिठाकर जहां राव कला था वहां पहुंचा दिया। 5 विजय सिरोहीका सर्वेसर्वा बना हुआ है। 6 सुरताण और विजयके आपसमें खूब विरोध है। 7 किन्तु रावका वश नहीं चलता। 8 उस समय राव सुरताणने (वाहड़मेरके जागीरदारकी कन्या) वाहड़मेरीसे विवाह किया। वह वधू सिरोही आई। 9 ढंग। 10 जागीरदार होनेका और जागीरीका यह कैसा ढंग ? 11 जागीरीके स्वामी आप हैं अथवा उसका स्वामी विजय है? 12 पृथ्वी पर राजपूत नहीं जो विजय जैसी बलासे सामना करें। 13 उदरपूर्ति कर दोगे तो पृथ्वी पर राजपूत बहुत हैं। 14 तुम दस मनुष्योंको बुला लो। 15 तब वाहड़मेरीने अपने पीहरसे बीस आदमी बुलवाये। 16 वाहड़मेरसे आये हुए आदमी रावके अंगरक्षक बने। 17 रावकी दशा अच्छी देखी।

राव कनै आय रहण लागा । विजे नै राव माथा पड़िया लीजै छै[1] । तिण समै वीजारा भाई २ लूणो, मांनो वडा रजपूत था सु रावथी जुदा विजाथी फाटनै आय मिळिया[2] । रावरो चेळो दिन-दिन भारी हुतो गयो[3] । एक वार सीरोही मांहेसूं देवड़ा विजानूं परो काढ़ियो[4] । तरै विजो आपरी वसीरै गांव गयो छै[5] । तिण टांणै[6] महाराजा रायसिंघजी बीकानेररा सोरठनूं जावता सु सीरोही निजीक आया[7] । तरै राव सुरतांण सांमों जाय मिळियो । रावरो राजा घणो आदर कियो[8] । पछै देवड़ो विजोही घणो साथ लेनै महाराज रायसिंघजीसूं आय मिळियो । घणोही लालच दिखायो, पिण राजा विजानूं कबूल न कियो[9] । राव सुरतांणसूं वात कीवी । आधी धरती पातसाहरै कीधी । आधी धरती रावरी कीधी, नै विजो काढणरी कबूल राखी[10]। पछै महाराज रायसिंघ विजानूं परो काढियो । आधी धरती पातसाहरै कीवी[11] । तिण मांहे राव मदनो पातावत असवार ५०० दे वाव कन्है राखियो नै आप सोरठ गया[12] । तिको आधो वंट पातसाहरै कियो, तरै राजा रायसिंघ दरगाहनूं लिखियो कियो–"जु राव सुरतांण सीरोहीरो धणी, तिणनूं इण भात ग्रासिया[13] विजै दबायो हुतो सु राव

1 'माथापड़िया लीजै छै' मुहावरा है–यहा पूरे वाक्यका अर्थ है—विजय और राव सुरतानके परस्पर शत्रुता यहा तक बढ गई कि एक-दूसरे का सिर काट लेनेकी ताकमें लगे रहते हैं। 2 उस समय विजयके दो भाई लूणा और माना, जो बडे वीर राजपूत थे और पहले रावसे जुदा थे सो विजयके विरुद्ध होकर रावमे आकर मिल गये। 3'चेळो भारी होणो' मुहावरा है। शब्दार्थ है—ताकडीका पलडा भारी होना लाक्षणिक अर्थ है—पक्षका समर्थ होना। वाक्यार्थ रावका पक्ष दिनप्रतिदिन समर्थ बनता गया। 4 निकाल दिया। 5 तब विजय अपनी जागीरीके गावमे चला गया है। 6 उस समय। 7 सौराष्ट्रको जाते हुए सिरोहीके नजदीक आये। 8 'रावरो राजा घणो आदर कियो।' यह वाक्य अशुद्ध लिखा गया प्रतीत होता है। होना चाहिये था—'राजारो राव घणो आदर कियो।' आदर-भाजन अतिथि होता है न कि आतिथ्यकर्त्ता। 9 किन्तु महाराजा रायसिहने विजयको सिरोहीका राव बनाया जाना स्वीकार नही किया। 10 और विजयको देशसे निकाल देनेकी शर्त मान्य रखी। 11 सिरोही राज्यकी आधी भूमि बादशाहके अधीन रखनेका निश्चय किया। 12 उसमे पाताके पुत्र राठोड मदनको ५०० सवार देकर वावके पास रखा और (रायसिह) स्वय सौराष्ट्रको चले गये। वाव, एक गाव है जो मारवाड और सिरोहीकी सीमाओंके निकट उत्तर गुजरातमे है। 13 ग्रास—एक प्रकारकी जागीरी है जो वेंटमें गुजारेके लिये अथवा भोजन आदिके खर्चेके लिये दी जाती है और उसका भोगने वाला ग्रासिया कहलाता है।

सुरतांण मोनूं आय मिळियो। आधी सीरोही देणी कबूल की, तरै म्हे रावरो ऊपर कियो[1]। विजै हरराजोतनू परो काढ़ियो, नै असवार ५०० सूं म्हे, म्हारो लोक आधो मुलक सीरोहीरो पातसाही सालमै कियो छै[2], तरै थांणो राखियो छै। हजरतरै दाय आवै जिण जागीरदारनूं दीजै, भावै करोड़ी भेजीजै[3]। राव हुकमी-चाकर छै[4]।"

तिण समै दीवांण-बगसी सीरोहीरा आधरी तजवीज करै छै[5], सु सीसोदियो जगमाल, उदैसिंघ रांणारो बेटो दरगाह[6] गयो छै। सु ओ राव मांनसिंघरी बेटी परणियो हुतो, सु उठारो भोमियो छै[7]। इण मुनसबमें सीरोहीरो आध मांगियो[8]। दीवांण-बगसीये पातसाह अकबरनूं मालम कीवी[9]। तरै पातसाहजी कह्यो—"रांणारो बेटो छै, लायक छै, दो। तरै तालिको लिख दियो[10]। जगमाल तालीको ले आयो। तरै राव सांम्हो आय मिळियो। विजो देवड़ो पिण दरगाह गयो हुतो सु विजानू किणही सीरोही दी नही, तरै विजो पिण जगमाल साथै आयो। धरती तो राव सुरतांण आधी जगमालनू दी, नै पाटराघरां[11] मांहे राव सुरतांण रहै छै, नै बीजा घरां[12] मांहे सीसोदिया जगमाल आय रह्यो छै। सु राव मानसिंघरी बेटी जगमालरी वैर[13] तिका कहै—"म्हारै बापरा घर, तिकां मांहे म्हां थकां दूजा क्यूं रहै[14] ?" घरां-पाटरी दिसा अणवणत हीज छै[15]। तिण समै राव सुरतांण एकण दिन कठीके[16] गयो हुतो, वांसै[17] जगमाल, विजो दाव[18] करनै घरां ऊपर गया। सोळंकी सांगो, आसियो, दूदो, खंगार,

---

1 तब रावकी सहायता की। 2 और ५०० सवारोंके साथ मैंने और मेरे मनुष्योंने आधे सिरोही देशको बादशाही खालसेमे कर लिया है। 3 हजरतकी इच्छा हो उस जागीरदारको देदें और चाहे अपना करोडी भेजदें (करोडी=कर उगाहनेवाला अध्यक्ष)। 4 राव आपका आज्ञाकारी सेवक है। 5 उस समय दीवान और बक्सी सिरोहीके आधे भागको बांटनेकी तजवीज कर रहे हैं। 6 बादशाही दरबारमे। 7 यह राव मानसिंहकी बेटीको ब्याहा था अतः वह वहांका जानकार है। 8 इसने मनसबके साथ सिरोहीका आधा भाग मागा। 9 दीवान और बक्सी लोगोंने बादशाह अकबरसे निवेदन किया। 10 तब अधिकार-पत्र लिख दिया। 11 राजाके रहनेके महल। 12 दूसरे घरोंमें। 13 पत्नी। 14 मेरे बापके घर, जिनमें हमारे होते हुए दूसरा कोई क्यों रहे ? 15 पट्टघरों (मुख्य प्रासाद) के संबधमे अनबन चल हो रही है। 16 कहीं। 17 पीछेसे। 18 अवसर देख करके, ताक लगा कर।

रावरा चाकर सुरतांणरै घरां मांहे हुता,तिणै घर भालिया[1];वेढ़ की[2]; घर हाथ नाया[3]। पछै जिभांण[4] हुय फेर जगमाल विजो साथै ले दरगाह गयो । उठै जाय पुकार की । पछै पातसाह जगमालरी भीर[5] राव रायसिंघ चंद्रसेनोत, कोलीसिंघ दांतीवाड़ारो धणी, के[6] तुरक मदत दे विदा कियो । जगमाल फोज ले सीरोही आयो । राव सुरतांण सीरोही छोड़ दी । भाखररी गंभ झाली[7] । जगमाल आय सीरोही मोहल[8] वैठो ।

कितराहेक[9] दिन हुवा तरै जगमाल जांणियो—"सैहर[10] तो लियो, हमैं चढ़ने रावनूं आबूरी तळक ही छोड़ावूं[11] । सु जगमाल असवार हुवो । राव पिण आंण मुकांम कोस २ बाकी छोड़ कियो[12] । सु जगमालरै कटकै[13] विचारियो—"जु राव सुरतांणरै वसीरा रजपूतांरा गांव छै तिण ऊपर फोज १ मेलीजै[14], ज्यूं रजपूत जुदा-जुदा बिखर जाय । पछै सुरतांणनूं कूट मारिस्यां[15] ।" तरै देवड़ै विजै हररा़जोतनूं रा॰ खीवो मांडणोत, रा॰ रांम रतनसियोत, कै तुरक भीतरोट ऊपर विदा करणरो विचार कियो[16] । तरै देवड़ै विजै, जगमाल रायसिंघनूं कह्यो—"मोनूं थासूं अळगो करस्यो तो राव थां ऊपर आवसी[17] ।" तरै राठोडै ठाकुरै कह्यो—"जिण गांव कूकड़ो न हुवै तठै पिण रात विहावै छै[18] ।" आ वात कही तरै विजो भीतरोटरी तरफ गयो । वांसै राव सुरतांण देवड़ा समरानूं खबर दीवी—"विजो भीतरोटनू साथ ले गयो ।" तरै राव सुरतांणनूं देवड़ै समरै कह्यो—

1 जिन्होंने घर पकड़ लिये । घरोंसे नहीं निकलनेके निश्चय पर दृढ़ रहे । 2 लड़ाई की । 3 घर हाथ नहीं आये । 4 लज्जित होकर । 5 सहायतार्थ । 6 कई । 7 पहाड़की गालको पकड़ा । पहाड़की गालमें शरण ली । गंभ = दो पहाड़ोंके बीचका संकरा और दुर्गम गुप्त स्थान । 8 महल । 9 कितनेक । 10 शहर । 11 अब चढ़ाई करके रावको आबूकी तलहटी भी छुड़वादूं । 12 रावने भी दो कोस शेष छोड़ कर अपना मुकाम किया । 13 सेनाने । 14 जिसके ऊपर सेनाकी एक टुकड़ी भेजी जाय । 15 पीछे सुरतानको मार देंगे । 16 कई तुर्कोंको भीतरोट पर भेजनेका विचार किया । 17 मुझको तुम्हारेसे अलग कर देंगे तो राव तुम्हारे ऊपर चढ़ आवेगा । 18 जिस गांवमें मुर्गा नहीं होता है वहां भी रात बीत कर दिन निकलता है । अन्योक्ति कहावत है । भावार्थ यह है कि—तुम्हारे बिना भी हम अपनी रक्षा कर सकते हैं ।

"हमैं ढील न कीजै[1] ।" गांव दतांणी सीसोदियो जगमाल, राव रायसिंघरो डेरो छै, तिण ऊपर राव सुरतांण नगारो देनै आयो[2] । इणांरै खवर काई[3] नही । कोस १ तथा २ रो वीच[4] छै । औ जांणै राव विजो भीतरोटनूं गयो छै तठी जाय छै[5] । संमत १६४० रा काती सुद ११ नै राव सुरतांण इणां ऊपर आयो[6] । वेढ़ हुई[7] । इतरो साथ[8]–सीसोदियो जगमाल, राव रायसिंघ, कोळीसिंघ तीनैं सरदार काम आया—

१ राव रायसिंघ चंद्रसेणोत ।
१ सीसोदियो जगमाल उदैसिंघोत ।
१ कोळीसिंघ, दांतीवाड़ारो धणी ।
१ राव गोपाळदास किसनदासोत गांगावत ।
१ राव सादूळ महेसोत कूंपावत ।
१ राव पूरणमल मांडणोत कूंपावत ।
१ राव लूणकरण सुरतांणोत गांगावत ।
१ राव केसोदास ईसरदासोत ।
१ चहुवांण सेखो झांझणोत ।
१ पड़िहार गोरो राघावत ।
१ पड़िहार भांण अभाउत ।
१ देवो ऊदावत ।
१ भा नेतसी ।
१ भा जैमल ।
१ वारहठ ईसर ।
१ मागळियो किसनो ।
१ धाधू खेतसी ।

---

1 अब देर नही कीजियें । 2 राव सुरतान अपनी चढ़ाईका नगारा बजाता हुआ आया । 3 कुछ भी । 4 अतर । 5 ये जानते हैं कि राव विजय भीतरोटको गया है इसलिये यह भी उधर जा रहा है । 6 राव सुरतान इनके ऊपर चढ़ आया । 7 लड़ाई हुई । 8 इतने मनुष्य ।

१ सेलहथ[1] वालो ।
मु॥ राजसी राघावत ।
१ भाटी कांन आंवावत ।
१ मांगळियो गोपाळ भोजउत ।
१ रा॥ खींवो रायसलोत ।
१ ईंदो ।

तठा पछै[2] वळै[3] देवडो विजो हरराजोत दरगाह पुकारू[4] गयो नै मोटे राजानूं जोधपुर हुवो[5] तरै[6] इणांरो पिण दावो हुतो[7] नै पातसाह जांमवेग नै मोटा राजानूं सीरोही ऊपर विदा किया । पछै सीरोही ऊपर आया[8] । धरती विगाडी[9] ।

देवडो पतो सांवतसियोत ।
तोगो सूरावत ।
सूर नरसिंघोत ।
चीवो जेतो खीवावत । चूक कर मारिया[10] ।

राठोड वैरसल प्रथीराजोत पेट मार मुवो[11] । तिण समै देवड़ो विजो नै जामवेग मोटा राजाथी[12] जुदी फोज ले दौड़िया हुता[13] । तठै देवडो विजो राव सुरताण मारियो[14] नै संमत १६६७रा आसोज वद ६ राव सुरतांण काळ प्रापत हुवो[15] ।

राव राजसिंघ सुरताणरो[16] । राव सुरतांण काळ कियो तरै टीके वैठो[17] । भोळो सो ठाकुर हुवो[18] । एक वार राव सुरतांणरो दूजो वेटो सूरसिंघ ग्रास-वेध कियो थो[19] । सूरसिंघरी भीड़[20] देवड़ो भैरवदास,

---

1 शैलधारी । 2 जिमके वाद । 3 फिर । 4 पुकारू वन कर गया । 5 राव मालदेवके पुत्र मोटा-राजा उदयसिंहको जब जोधपुर प्राप्त हुआ । 6 तब । 7 इनकी (विजाकी) भी यह माग थी । 8 सिरोही पर चढ कर आये । 9 सिरोहीकी धरती (देश) का नाश किया । 10 दगा करके मार दिया । 11 पृथ्वीराजका पुत्र राठौर वैरसल पेटमें कटारी मार कर मर गया । 12 से । 13 दौडे थे । 14 जहा पर राव सुरतानने देवडा विजाको मार डाला । 15 राव सुरतान मर गया । 16 सुरतानका पुत्र । 17 राव सुरतान मर गया तब गद्दी पर वैठा । 18 यह ठाकुर भोला सा था । 19 एक वार राव सुरतानके दूसरे पुत्र सूरसिंहने राजद्रोह किया था । 20 सहायता ।

समरावत, डूंगरोत सारो[1] हुवा। रावरी भीड़ देवड़ो प्रथीराज सूजावत हुवो। वेढ़ हुई। राव राजसिंघ वेढ़ जीती। सूरैं वेढ हारी।

तठा पछै कितरेक[2] दिनै राव राजसिंघ नै देवड़ै प्रथीराज सूजावतसूं ग्रणवरणत[3] हुई। प्रथीराज ग्रास-वेध विजै वाळो मांडियो[4]। प्रथीराजरा बेटा-भतीजा ग्राग खाय ऊठिया[5]। इणरै डीलांरी निपट जोड़[6]। रजपूत निपट भला उण कांठारा वास राखिया[7]। एक वार राव राजसिंघ नै देवड़ा प्रथीराजनूं राणै करन समभावणनूं[8] उदैपुर तेडिया[9]। पछै ग्रै उठै गया। राणै कहाव-कथीना[10] किया मु देवड़ो प्रथीराज, रांम, रायसिंघ, नाहरखांन, चांदो—एकण भांतरा ग्रादमी[11]। रांणासूं बुराई करां[12], इसड़ी ग्रांगवण मन मांहे धरै[13]। सु रांणारा ग्रादमी वीच फिरिया[14]। तिणां[15] रांणानूं वात समभाई। कह्यो–"इण परधांनगी मांहे सवाद को नही[16]।" तरै रांणा ही गई कीवी[17]। इणांनूं सीख दीवी[18]। राव नै प्रथीराज पाछा सीरोही ग्राया। माहोमाह यूं हीज वहै छै[19]। देवड़ो प्रथीराज जोरावर थको वहै छै[20]। राव राजसिंघ देवड़ो भैरवदास समरावतनूं डूंगरोतनूं सहल सो पटो दे इणरै हीज ग्रांटै राखियो हुतो[21]। सु राव राजसिंघ महादेव गया हुता। देवड़ो भैरव समरावत वांसै[22] रह्यो हुतो। ग्रै सासता घात देखता हुता[23]। पछै देवड़ै प्रथीराज बेटां भतीजांनूं समभाय राखिया हुता। इणां वांसे रेहनै भैरवनूं मारियो। राव

---

1 मव। 2 कितनेक। 3 ग्रनवन। 4 जिस प्रकारकी बगावत विजयने की थी, उसी प्रकारकी बगावत पृथ्वीराजने करनी प्रारंभ की। 5 पृथ्वीराजके बेटे-भतीजे क्रोध से तिलमिला उठे। 6 इसके कुटुंब वालोंके बड़े ग्रच्छे जोड़े। 7 उन्होंने उस ग्रोरकी बस्तीकी रक्षा की। 8 समझानेके लिये। 9 बुलाये। 10 कहना-सुनना। 11 एक प्रकारकी प्रकृति वाले मनुष्य, खरे मनुष्य। 12 रानासे बिगाड़ करें। 13 ऐसी घाट मनमे रखते हैं। 14 ग्रतः रानाके ग्रादमी बीच-बचाव करते रहे। 15 जिन्होंने रानाको वास्तविकतासे ग्रवगत किया। 16 इस सन्धि-प्रयासकी प्रधानता करनेमे कोई फल नही है। 17 तब रानाने भी बात छोड़ दी। 18 इनको रवाना किया। 19 परस्पर यों ही चलता है। 20 देवड़ा पृथ्वीराज जोरावर (सिरजोर) होकर चल रहा है। 21 थोड़ासा पट्टा देकर इसीलिये इसे रखा था। 22 पीछे। 23 ये निरंतर घात ताक रहे थे।

सांभळ रह्या[1]। गई कीवी[2]। भैरवरा पटारो गांव पाडीव राव रांमा भैरवोतनूं दियो। तठा पछै वरस अेक प्रथीराज, रांम, रायसिंघ, नाहरखांन, चांदो घात देखता हुता। एक दिन रावनूं[3] मारणनूं[4] गया। सीसोदियो परवतसिंघ ऊपर गयो। देवड़ो रांमो ऊपर गयो। राव आदमियां थोड़ांसूं हीज बैठो हुतो। अै मांहे गया। रावनूं मारियो। सीसोदिया परवतसिंघनूं मारणनू घणो ही कियो[5], पिण दिन ऊभा, घात लागी नहीं[6]। सोर हुवो। राव अखैराज वरस २ रो हुतो सु धाय कोटड़ी मांहे ले पैठी[7], ऊपर गूदड़ा दिया[8]। प्रथीराजरै साथ घणोई सोभियो[9]। अखैराज प्रतापबळी सु उणरै हाथ लागो नहीं[10]। तितरै रावरो साथ भेळो हुवो[11]। सीसोदियो परवतसिंघ, देवड़ो रांमो और साथ खंगार भेळो हुवो[12]। इणांनू रावळा-वरां मांहे घेरिया[13]। गोळियां, सरांरी मार पड़ण लागी[14]। इणां अखैराजरी खवर की, कठै छै[15]? तरै राज-लोग खवर पोहचाई[16]—"अजेस कुसळ छै, फलांणी कोटड़ी माहे छै[17]। इणारो साथ मुंहडै बैठो छै[18]। वडा-वडानू पांणी पियांनै पोहर २ हुवा छै[19]। कोटड़ीरी फलांणी बाजू निराळी छै[20]। उठीनू सिलावट तेड़ायनै अखैराजनू काढ लो[21]।" पछै सीसोदियो परवतसिंघ, देवडै रांमै सिलावट तेड़ाय हळवै-हळवै[22] भीत खोलायनै[23] अखैराजनै काढ लियो। इणांरो वळ वधियो[24]। इणां सोर कियो—"धीरा! हरांमखोरां! अखैराज मांहरै हाथ आयो छै[25]।" तरै इणारो वळ घटियो। रात पडी। च्यारूं तरफथी

---

1 राव सुन करके रह गये। 2 हुई, नही हुई करदी। 3 को। 4 के लिये। 5 सिसोदिया पर्वतसिहको मारनेके लिये बहुत प्रयत्न किया। 6 लेकिन दिन था इसलिये कोई घात नही लगी। 7 घुस गई। 8 ऊपर बिस्तरे डाल दिये। 9 तलाश किया। 10 अखैराज भाग्यशाली सो उनके हाथ नही लगा। 11 इतनेमे रावका सैनिक समाज इकट्ठा हुवा। 12 देवडा रामा और दूसरा साथ खगारसे मिले। 13 इनको राज-महलोमे घेर लिया। 14 गोलियें और बाणोकी मार पडने लगी। 15 कहां है? 16 तब रानियोने सदेश भेजा। 17 अभी तक तो कुशल-पूर्वक है, अमुक कोठरीमे है। 18 इनका सैनिक-समाज द्वार पर बैठा हुआ है। 19 बडे-बडोको पानी पिये दो पहर बीत गई है। 20 कोठरीकी अमुक बाजू एकान्तमे है। 21 उस ओर सिलावटको बुलाकर अखैराजको निकाल लो। 22 धीरे-धीरे। 23 दीवारको तुडवा कर। 24 इनका बल बढ गया। 25 अखैराज हमारे हाथ आ गया है।

रावरै चाकरै मार दी[1] । देवड़ै प्रथीराज दीठो[2], रातरा अठै रहां तो मारिया जावां[3] । तद इणांरै भला-भला रजपूत हुता तिकै आगै हुवा[4] । केई पाछै हुवा, के दोनूं बाजुवां हुवा[5] । गरट करनै हुड़ी कीवी[6] । इणांनूं ले नीसरिया[7] । वांसै साथ रावरो लूबियो[8] । तिणसूं पाछा वळ-वळ रजपूते वेढ की[9] । कांम आवता गया । घणों साथ मरतां सिरदार कुसळै आया । डेरै आय घोडै चढ़ नीसरिया । कितराहेक साथसूं पालडी आया । वांसै सीसोदियो परवतसिंघ, देवडो रांमो, चीवो दूदो, करमसी, साह तेजपाळ भेळा हुय राव अखैराजनूं संमत १६७५ टीको दियो । पछै पाखती[10] चीतोड़रै धणिये, ईडर राव कल्यांणमल वडो ठाकुर थो तिणै वात सुणी । सिगळां राव अखैराजरो ऊपर राखियो[11] । प्रथीराजनै गांव गयां पछै परवतसिंघ देवड़ै रांमै, चीवै दूदै, करमसी, साह तेजपाळ घणो वळ वांधियो[12] । प्रथीराजनूं ठेल देस माहेथी काढियो[13] । प्रथीराज देवळांरै परणियो हुतो, सु देवळां धारै, मांनै इणनूं चेखळा-भाखर मांहे वांकी ठोड थी तिका दीनी[14] । प्रथीराज मांणसां सूधो उठै जाय रह्यो[15] । बेटो चांदो आंबाव दिसा जाय रह्यो[16] । धरतीनूं दौड-धाव घणी ही कीवी[17] । कितराहेक गांव विभोगा किया[18] । चांदै दांण सीरोही लीजै तिणसूं आधो लियो[19] । पिण अै हरांमखोर था सु दिन-दिन गळता गया[20] । दौडणरी तकसीर काई न की[21] । पछै रायसिंघ भतीज गांव १ मारण

---

1 रावके अनुचरोंने चारो ओरसे मार मारी । 2 देखा । 3 रातको यहा रहे तो मारे जाय । 4 तब इनके जो अच्छे अच्छे राजपूत पासमे थे वे आगे हुए । 5 कई पीछे हुए और कई दोनो बाजू हुए । 6 अपना-अपना समूह बना करके जल्दी-जल्दी चले । 7 इनको ले निकले । 8 रावका साथ पीछे लगा । 9 राजपूतोंने जिससे पीछे लौट-लौट कर लडाई की । 10 पास । 11 सबने राव अखैराजकी सहायता की । 12 बहुत जोर पकड लिया । 13 पृथ्वीराजको धक्के मारकर देशमे से निकाल दिया । 14 पृथ्वीराज देवलोके यहा व्याहा था सो देवल धारे और मानेने चेखला पहाड़मे जो वाकी जगह थी वह उनको रहनेके लिये दी । 15 पृथ्वीराज अपने मनुष्यो महित वहा जाकर रहा । 16 बेटा चादा आबावकी ओर जाकर रहा । 17 धरतीके लिये दौड-धूप बहुत ही की । 18 कितनेही गावोको कर-प्राप्त नही हो सकें वैसा बना दिया । 19 सिरोहीमे जितना कर लिया जाता था, चादाने उससे आधा लिया । 20 किन्तु ये हरामखोर थे इसलिए दिन-दिन निर्वंश होते गये । 21 दौडनेकी कोई तजवीज नही की ।

गयो हुतो तठै माराणो[1]। पछै देवड़ो राजसी, जीवो–देवराजरा बेटा डूंगरोत अठाथी[2] कपट करनै प्रथीराज कनै गया। प्रथीराज इणांरो वेसास कियो[3]। पछै इणां रातरा प्रथीराजनूं मार सीरोही आया। देवड़ा प्रथीराजनूं डूंगरोते मारियो तठा पछै[4] और बेटा तो सोह[5] मर गया, केई गळ गया[6]। पछै सारो मुद्दो चांदा ऊपर मंडियो[7]। चांदो वडो आखाड़सिध[8] रजपूत हुवो। चांदारै प्रवाड़ै पार को नही[9]। सीरोही मांहे तिको रजपूत को नही जिको चांदा आगै च्यार वार भागो न छै[10]। चांदै दांण लियो[11]। सीरोहीरा गांव १२०रो विभोगो लियो[12]। संमत १७११रै टांणै[13] चांदो सीरोहीरै गांव नीवाज वसियो। राव अखैराजरो साथ सारो[14] संमत १७१३ रै काती वद १४ रै दिन नीवाज ऊपर सीसोदियो परवतसिंघ, देवड़ो रांमो, चीबो करमसी, दवारा केसर सारी सीरोही ले आया। चांदै वेढ कीवी। पोहर २ वेढ हुई। चांदै वेढ जीती। रावरै साथरा पग छूटा[15]। रावरै साथरा आदमी ५० कांम आया। मांणस १०० घायल हुआ। देवड़ो राघोदास जोगावत लाखावत सारी मदाररो धणी[16] हुतो सु कांम आयो। संमत १७२१ मांहे राव अखैराजसूं कंवर उदैसिंघ डूंगरोते[17] मिळ सारै[18] रजपुते[19] मांमलो कियो[20]। पछै देवडै रांमै भैरवोत, सीसोदियो साहिवखांन पंचे मिळ वळै[21] रावनूं कैद मांहेसूं काढियो। पछै राव बेटा उदैभांणनूं बेटा सूधो[22] मारियो। तठा पछै देवड़ा अमरानूं पटो देनै राव मनायो[23]। पटो देनै धरती मांहे आंणियो[24]। गांवां पटारी विगत[25]—

1 पीछे भतीज रायसिंघ एक गांव लूटने गया था वहां मारा गया। 2 यहांसे। 3 पृथ्वीराजने इनका विश्वास किया। 4 जिसके बाद। 5 सब। 6 कई निर्वंश हो गये। 7 पीछे सब भार चांदे ऊपर रहा। 8 रणकुशल। 9 चांदाके युद्ध-पराक्रमोंका कोई अंत नहीं। 10 सिरोहीमें ऐसा राजपूत कोई नहीं जो चांदाके आगे चार वार भागा न हो। 11 चांदेने कर प्राप्त किया। 12 सिरोहीके १२० विभोगे गांवोंका कर लिया। 13 समय। 14 सब। 15 रावके सैनिक मोरचा छोड कर पीछे हटने लगे। 16 दारमदारका धनी। 17 डूंगरोतोंने। 18 सब। 19 राजपूतोंने। 20 गडबड किया। 21 पुन। 22 सहित। 23 जिसके बाद देवडा अमराको पट्टा देकर राव मनवाया। 24 पट्टा देकर देशमें ले आये। 25 पट्टाके गांवोंकी सूची।

१ पालड़ी ।	१ जैतवाड़ो ।	१ देदपुर ।
१ मकरोड़ो ।	१ वापला ।	१ पीथापुर ।
१ टोकला ।	१ मेडो ।	१ गिरवर ।
१ मूडथळ ।	१ काळधरी ।	१ मूसावळ ।
१ धनेरी ।	१ आवळ ।	

१ देलवाड़ो–विभोगो । लेतो सु नही ले । दांण लेतो सु लेसी[1] ।

राव लाखारो पेट[2]—

सोभो । सहसमल । लाखो ।

२ ऊदो लखारो । टीकै[3] न हुवो ।

३ रिणधीर ।

४ भाण ।

५ सुरतांण ।

६ राव राजसिंघ । सीसोदणीरो ।

७ राव अखैराज । वीरपुरीरो ।

८ उदैसिंघ ।

६ उदैभांण ।

६ सूर सुरतांणरो । जोधपुर वसियो[4] । भाद्राजण गांव २५ सू पटै । संमत १६७५ मुवो ।

७ सवळो ।

८ गरीबदास ।

४ सूजो, रिणधीररो । देवड़ विजै रावत सेखावत कनै मरायो[5] ।

५ देवडो प्रथीराज । सीरोहीनूं वडो ग्रासियो[6] हुवो । राव राजसिंघनू समत १६७५ मारियो । संमत १६८१ प्रथीराजनू देवड़ जीवै मारियो ।

५ देवडो नाहरखान ।

---

1 देलवाड़ा भूमि-कर रहित । पहले लिया जाता था किन्तु अब नहीं लिया जाता । चुंगी ली जाती थी वह अबभी ली जायगी । 2 वंश । 3 ऊदा लाखाका पुत्र । गद्दी नही बैठा । 4 जोधपुर आ रहा । 5 सूजा रिणधीरका पुत्र । इसको देवडा विजयने रावत सेखावतसे मरवाया । 6 (उपद्रव करने वाला) जागीरदार ।

६ देवड़ो चांदो ।
७ अमरो ।
७ कमो ।
६ जैसिंघ ।
६ वाघ ।
६ करन ।
५ स्यांमदास सूजारो ।
६ रायसिंघ ।
७ भोपत ।
६ रांम ।
४ प्रताप रिणधीररो ।
५ तेजो प्रतापरो ।
६ मेघराज । तिणनू राव अखैराज चूक कर मारियो[1] ।
७ नाटो ।
७ भाखरसो ।
७ डूंगरसी ।
७ नरहरदास ।
७ कांन ।
५ गोयंददास प्रतापरो । देवडो सूजानूं विजै देवड़ै मारियो तद कांम आयो ।
६ सागो वडवज । नीबाज वसतो[2] । वडो राहवेधी[3] रजपूत थो ।
७ रामसिंघनू राव अखैराज चूक करने मारियो संमत १७०५ ।
८ करमसी ।
८ अमरो ।
५ सलखो प्रतापरो ।
६ भारमल
७ गागो ।
८ भीव ।

---

1 धोखा देकर मारा । 2 रहता था । 3 दूरदर्शी । रणानुभवी ।

५ किसनदास ।

६ खीवो ।

६ सिवो ।

६ जोगो ।

७ कांन ।

७ राघोदास ।

७ मांनसिंघ ।

२ राव जगमाल लाखारो ।

३ मेहाजळ जगमालरो ।

४ राव कलो मेहाजळरो । एक वार सीरोही रांणै उदैसिंघ ऊपर कर वैसांणियो[1] । पछै डूंगरोतांसूं विरस[2] हुवो । पछै राव सुरतांणसूं वेढ हुई । भागो । जोधपुर वसियो । संमत १६४६ मोटो राजा[3] भाद्राजण[4] पटै दी सं० १६६१ काळ कियो ।

५ आसकरण कलारो । जोधपुर वास । नवसरो पटै ।

६ दलपत ।

५ पतो राव कलारो । रांणारै कांम आयो ।

कला-पतारा वेटा—

६ हरीदास । जोधपुर वास । भाद्राजण पटै ।

७ भावसिंघ ।

७ भगवानदास ।

७ ईसरदास ।

६ गोवरधन । सीधलै[5] मारियो ।

७ अमरसिंघ ।

४ द्वारकादास मेहाजळरो । संमत १६८० जोधपुर वास । नवसरा पटै ।

---

1 एक वार राणा उदयसिंहने सहायता करके कलाको सिरोहीकी गद्दी बिठाया । 2 अनवन । 3 उदयसिंह । 4 भाद्राजुन ठिकाना । 5 सीधल-राठोडोंने मारा ।

५ केसोदास ।

४ पंचाइण मेहाजळरो ।

५ लखमण ।

४ जैतो मेहाजळरो ।

५ कांन ।

६ केसरीसिंघ ।

५ करन ।

४ परवतसिंघ मेहाजळरो ।

५ सूजो ।

६ लूणो ।

३ राव अखैराज जगमालरो ।

४ राव दूदो ।

५ राव मांनसिंघ ।

४ राव रायसिंघ अखैराजरो ।

५ राव उदैसिंघ ।

३ रतनसी जगमालरो ।

४ गोपाळदास ।

५ नरहरदास । राव अखैराज चूक कर मारियो ।

५ हरीदास ।

२ हमीर लखारो । राव जगमाल आध वंटायो हुतो[1] । पछै जगमालसू विरस हुवो । पछै राव जगमाल मारियो[2] संमत १६७४ भाद्रवा सुदि ६ ।

कंवर गजसिंघ[3] जाळोर फतै करी । भाटी गोपाळदास आसावत भाटी दयाळदास जाळोर थाणै राखिया, तिणसू[4] राव राजसिंघ वात की "देवडो प्रथीराज काढ दो तो गांव १४ थांनूं दां[5] ।" तरै यां कंवरजीसू मालम कियो[6] । वात कबूल की । भाटी दयाळदास साथ ले

1 जगमालने आधे राज्यका वट करवाया था। 2 राव जगमालने हमीरको मार डाला। 3 जोधपुरके महाराजा सूरसिंहके पुत्र गजसिंहने जालोर मुसलमानोंसे विजय किया था। 4 जिनसे। 5 देवडा पृथ्वीराजको निकाल दो तो १४ गाव तुमको दें। 6 तब इन्होंने कंवरजीसे निवेदन किया।

मदत गयो। प्रथीराजनूं परो काढ़ियो। तरै गांव १४ जाळोर वांसै दिया। वरस १ पेरोजी[1] ६०००, गोहूं मण १३००० एक वरस आया। तठा आगै न दिया[2]।

गांवांरी विगत—

१ कोरटो।	१ पालडी।
१ नांमी।	१ रहवाड़ो।
१ मंचलो।	१ आलोपो।
१ पोसांणो।	१ वासड़ो।
१ वाधार।	१ खेजड़ियो।
१ भव।	१ अणदोर।
१ नारदणो।	१ अरटवाड़ो।

वात

सीरोहीरै देस डूगरोत देवड़ा वडा रजपूत छै। देसरी आगळ, भड-किंवाड[3]। सदा अै सीरोहीरा धणियांनू थापै-उथापै[4]।

डूगररा पोतरा[5]—

डूगर रिणमलरो। रिणमल सलखारो। सलखो लूंभारो। लूंभो विजडरो।

१ डूगर।
२ झांझो।
३ गजो।
४ भीदो।
५ आलण।
६ तेजसी।
७ रूदो।

---

1 पिरोजशाही सिक्का। 2 उसके आगे नहीं दिया। 3 देशकी रक्षाके लिये रणक्षेत्रमे एक स्थान पर दृढतापूर्वक खडा रहकर शत्रुकी सेनाको आगे बढनेसे रोकनेमे दृढ़ किवाड और उसकी आगल रूप। 4 सिरोहीके स्वामियोको सदा ये स्थापित और उत्थापित करते हैं। 5 पौत्र।

७ नरसिंघ ।

७ केल्हण ।

७ रूदो तेजसीरो । ग्रांक ७ ।

८ हरराज ।

९ विजो ।

९ लूणो ।

९ मांनो ।

९ अजैसी ।

९ वणवीर ।

९ धनराज ।

९ जैमल ।

८ सेखो रूदारो ।

९ रावत । ९ करमो । ९ मालो । ९ रूपसी ।

विजो हरराजरो । ग्रांक ९ ।

१० भोजराज ।

११ भगवांनदास ।

१० खीवराज ।

११ केसोदास । राव रार्जासघ भेळो मारांणो[1] ।

१० रांमसिंघ ।

११ देवीदास ।

१० जसवत । जोधपुर वास । कुळथांणे पटै ।

११ तेजमाल । राव रार्जासघ साथै मारांणो ।

११ उगरो ।

१२ कान। जोधपुर वास।

११ दासो ।

१२ भाखरसी ।

११ रायसिंघ ।

1 राव राजसिंहके साथ मारा गया ।

१२ गोयंददास ।

१० अमरो ।

११ किसनदास ।

११ कांन ।

११ उरजन ।

लूणो हरराजरो । वडो रजपूत । राव सुरतांण मारियो । आंक ६ ।

१० महेस ।

११ भोपत ।

मांनो हरराजरो । वडो रजपूत । राव सुरतांण मारियो । आंक ६ ।

१० सादूळ । राजसिंघ साथै मारांणो ।

अजैसी । हरराजरो । आंक ६ ।

१० सुरतांण । जोधपुर वास । समूभो पटै ।

१० वाघ ।

११ पीथो ।

११ उदैसिंघ ।

१२ करन ।

वणवीर हरराजरो । आक ६ ।

१० चादो ।

१० रांमदास ।

धनराज हरराजरो । आंक ६ ।

जैमल हरराजरो । आक ६ ।

सेखो रूदारो । आंक ८ ।

६ रावत सेखारो । वडो रजपूत । देवड़ै विजैरै वास[1] थो । देवडै सूजै[2] रिणधीरोतनू विजैरै कहै मारियो । पछै संमत १६५८ जोधपुर वसियो । सिवांणरो[3] गांव देवळियाळी पटै दी । स० १६६३ काळ कियो ।

---

1 देवड़ा विजयके पास रहता था । 2 इसने देवड़ा विजयके कहनेसे देवड़ा सूजाको मारा था । 3 मारवाड़का सिवाना नगर ।

१० पंचाइण । जोधपुर वास । खाडाळो, नीवली पटै ।

१० अचलदास । जोधपुर वास । रु० १००००) री रेखरो नवसरो पटै । संमत १७०३ काबिल काळ कियो[1] ।

११ जगनाथ ।

११ नरहरदास ।

देवड़ो जगनाथ अचलदासोत । जोधपुर वास । नवसरो पटै । संमत १७२१ चैत सुद ७ काळ कियो देसमें[2] ।

वेटांरा नांव—

१२ डूगरसी । १२ जैतसी । १२ मोहण । १२ वाघ ।

१२ ठाकुरसी ।

९ करमो सेखावत ।

वेटांरा नांव—

१० रायमल । १० सांगो । १० राजसी । १० रतनसी ।

१० भीव । देवडा प्रथीराजरी वेढ कांम आयो ।

१० हमीर ।

११ मनोहरदास ।

१० गोयंददास ।

११ वीठल ।

१० जसवंत ।

१० नाराणदास ।

१० सांवळ ।

९ मालो सेखारो । राव मानसिंघ देवड़ो हांमो रतनावत मरायो तद कांम आयो[3] ।

९ रूपसी सेखारो ।

देवडो नरसिंघ तेजारो । आंक ७ ।

८ समरो ।

८ सूरो ।

---

1 काबुलमें मरा । 2 स्वदेश (मारवाड़में) मरा । 3 राव मानसिंहने रतनाके पुत्र देवड़ा हामाको मरवाया तब माला सेखावत लड कर मरा ।

८ कुंभो ।

८ अरजन ।

समरो नरसिंघरो । रांणा जगमाल, रायसिंघ राव सुरतांण मारियो तद दतांणीरी वेढ संमत १६४० काती सुद ११ कांम आयो[1] । वडो स्यांमधरमी ।

९ भैरव ।

९ नेतसी ।

९ भांण ।

९ नगो ।

देवडो भैरव, सं० १६७२ देवडो प्रथीराज मारियो[2] । आंक ९ ।

१० देवडो रांमो ।

१० करन ।

११ केसरीसिंघ ।

१२ माधो ।

१० अमरो भैरवरो । सूरारै कांम आयो[3] ।

१० सागो भैरवरो । जोधपुर वास । करमावस पटै ।

११ मनोहर ।

११ भीव ।

१० कमो भैरवरो ।

११ दुजणसल ।

११ हरिदास ।

११ रतनसी ।

१० महेस भैरवरो ।

९ नेतसी समरारो । राव जैसिंघ साथै कांम आयो ।

९ भाण समरारो ।

---

1 राव सुरताणने सिसोदिया जगमाल और जोधपुरके राव रायमलको मारा था तब दताणीकी लड़ाईमें सं० १६४० की काती सुद ११ को उनके साथ नरसिंघका पुत्र समरा भी मारा गया । 2 भैरवको देवड़ा पृथ्वीराजने मारा । 3 सूर समराका भाई था इसलिये उसके लिए लड़ कर मरा ।

९० रूपो।

९ नगो सवरारो।

१० ग्रासकरण।

११ गोयंददास।

१२ राघोदास।

१२ भगवांनदास।

११ जैसिंघ। ११ वाघ। ११ किसनो।

१० पांचो नगारो।

सूरो नरसिंघरो। वडो रजपूत। काळधरीरी[1] वेढ राव सुरतांणनै कलै हुई तद राव सुरतांणरै कांम ग्रायो। ग्रांक ८।

९ सांवतसी, किसनबाई राठोड़रो वेटो। संमत १६४६ मोटै राजा चूक कर मारियो।

१० करन। १० दलपत। १० कांन। १० डूंगरसो।

९ कलो।

१० मेरो।

११ ठाकुरसी।

११ मोहणदास।

११ वीरमदे।

११ धनराज।

१० ग्रमरो।

१० सकतो।

१० नारायण।

९ तोगो सूरारो। मोटै राजा संमत १६४६ चूक कर मारियो।

९ पतो सूरारो। मोटै राजा चूक कर मारियो।

कुंभो नरसिंघरो। ग्रांक ८।

---

1 कालद्री मुकाम पर राव सुरतान और कलावे युद्ध हुग्रा तब राव सुरतानके पक्षमें रह कर लड मरा।

९ धरजांग ।
१० केसोदास ।
१० सांवळदास ।
११ वाघ ।
९ जैमल ।
१० करन ।
१० मैंगळ ।
९ सीवो ।
१० मालो । चांदै मारियो ।

अरजन नरसिंघरो । आंक ८ ।
९ जसवंत ।
१० लाधो ।
९ सुरजन ।
१० देवराज ।
११ जीवो ।
११ राजसी ।
१२ ईसर । सलास पटै ।
११ लाधो ।

केलण तेजसीरो । आंक ७ ।
८ देदो । पालडी वसतो । जिणनू देवड़े हांमै रतनावत मारियो ।
९ पतो ।
१० उगरो ।

सीरोहीरै देस डूगरोता उतरता चीवा भला रजपूत छै[1] । इणांरो ही वडो धडो[2] छै । सदा सामधरमी वडा इतवारी छै । अैही देवड़ा-हीज छै । तिणा माहे एक साख चीवारी कहावै छै ।

दूदो मेहरावत वडो, निपट भलो रजपूत, दातार हुवो । वडो आदमी थो । चीवो करमसी वडो रजपूत हुवो ।

---

1 सिरोही देशमे डूगरोतोसे उतरते हुए चीवे अच्छे राजपूत हैं । 2 पक्ष ।

१ कीतू ।
२ समरसी ।
३ महणसी ।
४ मालो ।
५ चीवो ।
६ सांगण ।
७ रिणसी ।
८ दलू ।
९ सोभ्रम ।
१० वेलो ।
११ सोम ।
१२ भारमल ।
१३ खीवो ।
१४ मेहरो ।
१५ दूदो ।
१६ उदैसिंघ।

सीरोहीरी पोळ अवसी भला रजपूत छै[1] । उणांरै गांव आदमी ५००रो धड़ो छै[2] । आगै सुरतांण अवसी राव मांनसिंघरी वार मांहे भलो रजपूत हुवो । अवसी ही कीतूरो बेटो । तिणरै वांसला अवसी कहावै छै[3] । इधकी बात काइ नही[4] ।

↔

1 सिरोहीके द्वार पर (रक्षक रूप) अवसी अच्छे राजपूत हैं । 2 उनके गावमे ५०० मनुष्यों का पक्ष है । 3 जिसके पीछे वाले 'अवसी' कहलाते हैं । 4 विशेषताकी बात कोई नही ।

गीत चीवा जैतारो[1]

आढ़ा दुरसारो कह्यो[2]

श्रीमोटै राजा, सूरै देवड़ारा बेटा—सांवतसी, तोगो, पतो मारिया, तद कांम आयो[3] ।

गीत[4]

सोमाहर-तिलक सीचतो-सावळ,
करतो-खग दांती कहर ।
रिण रोहियो घणो राठोड़ै,
चीवोळ एकलवा वर ॥ १ ॥

भाजै छांळ खरडकै भाला,
पड़ै न पिंड देतो पसर ।
एकल जैंत सलख आहेड़ी,
सकै न पाड़ै भड़ सिहर ॥ २ ॥

---

1 देवडा राजपूतोकी चीवा शाखाके जैंताके सबधका गीत । (गीत डिंगल-काव्यका एक प्रसिद्ध छद है) । 2 आढा जातिके प्रसिद्ध चारण कवि दुरसाका कहा हुआ । 3 जोधपुरके मोटे-राजा उदयसिंहने सूरा देवडाके बेटे—सांवतसी, तोगा और पताको मारा तब चीवा जैंता काम आया । 4 इस गीतमे सोमाके वंशज चीवा जैंताको दान वाले बड़े वाराह और उसके शत्रुओको शिकारियोंके रूपमे वर्णन किया है ।

गीतका भावार्थ—

श्रेष्ठ एकलसिंह-वाराहकी भांति सोमाके वंशमे तिलक रूप जैंता चीवाको कई राठोडोने घेर लिया है । जैंता उनमे दांती रूप अपने खड्गसे शत्रुओमें कहर मचाता हुआ और भालेसे रक्त सीचता हुआ युद्ध कर रहा है ॥ १ ॥

जैंता रूप एकल-सूकरके ऊपर सलखा रूप शिकारीके भाले चल रहे है और उनके बाण टूट रहे हैं । किन्तु जैंता नही गिर कर आगे ही बढ रहा है । बडे-बडे शूरवीर योद्धा उसको गिरा नही सके ॥ २ ॥

रणक्षेत्रमे आधी दूर पहुँच जाने पर ज्योही वह ललकारा गया त्योंही वह अधिक भीषण रूपमे होकार करता हुआ शत्रुओ पर टूट पड़ा और जन-जनको अलग-अलग पहुँच गया ॥ ३ ।

ऊपाड़ियै लूट आधंतर,
जण - जण पूगो जुवो - जुवो ।
खीवर हा कलियो खीमावत,
होकर जाड़ विहाड हुवो ॥ ३ ॥

गीत चीवा खीमां भारमलोतरो[1]

आसिया दलारो कह्यो[2]

खीमो राव कलारो चाकर । सुरतांण कलै वेढ़ हुई, कांम आयो[3] ।

गीत[4]

विडरी आस, विजो थियो वांसै,
वाजै हाक थई विकराळ ।
चालां चालणहार न चूको,
खत्रवट खग-वाहो खेमाळ ॥ १ ॥

एकण खेम ऊपरै आयो,
सोह - आवगो डूगरां साथ ।
मिटै न घणै नरे मंडाणो,
भारमलोत सरस भाराथ ॥ २ ॥

---

1 भारमलके पुत्र खीमा चीवाका गीत । 2 आसिया शाखा के चारण दलाका कहा हुआ । 3 खीमा राव कलाका चाकर । सुरतान और कलाके युद्ध हुआ तब खीमा काम आया । 4 गीतका भावार्थ—

विकराल रूपसे रणवाद्यो का शोर हो रहा है । क्षात्रधर्म पर आरूढ खड्ग चलाने वाला खीमा युद्धमे चालें चलने वालो मे किसीसे नहीं चूका । पीछे पड़े हुए वीरोकी विजयकी आशाए घबराहटमे परिणत हो गई ॥ १ ॥

तब पहाड़ोंमेसे निकल कर समस्त सेना खीमाके ऊपर आगई । भारमलके पुत्र वीर खीमाने उस समय जो युद्ध किया वह कई मनुष्योंके हृदयोंमें अंकित है,मिट नहीं रहा है ॥ २ ॥

वात

थिरादरै[1] परगनै वाव, सुईगाव चहवांण छै । तिकेही राव लाखणरा पोतरा[2] ।

१ राव लाखण ।	१६ पूजो ।
२ बलसोही ।	१७ विजो ।
३ महंदराव ।	१८ सिवो ।
४ अणहल ।	१९ रांम, रूदो भाई
५ महंदराव	२० सीहो रूदारो ।
६ जीदराव ।	२१ मेर ।
७ आसराव ।	२२ वणवीर ।
८ माणकराव ।	२३ सागो, तिण[3] सांगारो परवार ।
९ आल्हण ।	२४ पातो । वावरो धणी[4] ।
१० देदो ।	२५ कलो ।
११ रतनसी ।	२६ रांणो भोजराज ।
१२ धुधल ।	२७ पंचाइण । सुईगांव[5] ।
१३ महियो ।	२८ हींगोल ।
१४ भरमो ।	२९ राजसी ।
१५ पातो ।	

वात

संमत १७१७ रा भाद्रवारै मांस मांहे मु० नैणसी गुजरात श्रीजीरी हजूर गयो[6] । आसोज माहे पाछो आयो, तरै देवड़ा अमरा चंदावतरो प्रधान वाघेलो रामसिंघनू अमरै नैणसी कनै मेलियो हुतो[7] । ओ[8] जाळोर आयो तरै सीरोहीरी हकीकत पूछी । उण कही[9]—

---

1 थराद, वाव और सुईगाव आदि उत्तर गुजरातके गांवोंके नाम हैं। 2 ये ही राव लाखनके पोते हैं। 3 उस। 4 पाता वावका स्वामी। 5 पंचायण सुईगांवमें। 6 मुहणोत नैणसी गुजरातमें महाराजा श्री जसवन्तसिंहके दरबार (सेवा) में गया। 7 वाघेला रामसिंहको अमराने नैणसीके पास भेजा था। 8 यह। 9 उसने कहा।

"सीरोही जाळोर गांव बराबर लागै छै। दांण रावरै घणो आवतो तद रु० ५००००) तथा ६००००) आवतो[1]। इणां दिनां तो घाट आवै छै[2]। सीरोहीरो आध चंदा, अमरारै लीजै छै। बिभोगेंग गांव १०० तथा १२५ छै[3]।"

प्र० सीरोहीरी फिरसत मुं० सुंदरदास जाळोर थकां इण भांत लिख मेली हुती[4]।

गांवांरी विगत[5]—

१९ रोहाई-भीतरोटरा कहावै
२३ भीतरोटरो पथग कहावै।
४० बाहरोटरो पथग :
४८ साठ-मंडाहड़।
७२ मगरारा गांव तथा झोररा गाव।
१२ आबू ऊपर।
९ श्रीमहादेवजी सारणेसरजीरा गांव।
७७ सासण, चारणा-बांभणांरा।
३० तीसरा बागड़ियां देवडांरो उतन।
२४ सोळंकियांरो उतन।

सीरोहीरा गांवांरी तफसील[6]—

१९ गाव रोहाई-भीतरोटरा कहावै छै[7]—

१ बाळधो।	१ वीरवाड़ो।
१ लोदरी।	१ उदरा।
१ मीहणवाडो।	१ सीवेर।
१ तेलपुरो।	१ झाडोली।

---

1 रावके ज्यादा कर आता तो वह ५००००) तथा ६००००) तक आता था। 2 इन दिनोंमे तो कम आता है। 3 विभोगे कर वाले १०० तथा १२५ गाव हैं। 4 सिरोहीके परगनोंकी सूची मुहता सुंदरदासने जब वह जालोरमें था, इस प्रकार लिख भेजी थी। 5 गांवोंकी सूची। 6 सिरोहीके गांवोंकी तफसील (ब्योरा)। 7 सिरोहीके ये १९ गांव रोहाई-भीतरोट (रोही-भीतरोट) पट्टीके कहे जाते हैं।

१ पिंडरवाड़ो, परवतसिघरो ।
१ वीराळियो, सासण भाटांरो, सहसमलरो[1] ।
१ श्राभारी वांभणांरी, सांसण चीवा रामसिंघ[2] ।
१ चाचरडी ।
१ नंदियो ।
१ काछोली ।
१ नीतोड़ो, वीरपुरा, सूजानूं ।
१ लोटांणो ।
१ भाहरू ।
१ धनारी ।
१ खाखरवाड़ो ।

२३ भीतरोटरो पथग कहावै छै[3]—

८ सांगवाड़ो ।
१ रोहीडो, खालसारो ।
१ वासो । खालसै, विभोगै[4] ।
१ वाटेरो । रांमानू ।
१ मुदरड़ो ।
१ भीमांणो । चीवा करमसीनू ।
१ सिणवाडो ।
१ श्रावथळो ।
१ तडूंगी ।
१ भाहरजो ।
१ चूनाणी ।
१ फिरसूळी ।
१ मांनपुरो ।
१ संतपुरो ।
१ गिरवर ।
१ मूडथळो ।
१ उड़ ।
१ कैंर ।
१ मांडवाड़ो ।
१ घांणत ।
१ मोकरड़ो ।
१ चनार ।

४० बाहरोटरो पथग[5]—

१ सीधणोतो ।
१ मुरताणपुर ।
१ मोडो ।
१ मेलागरी ।
१ पांचड़ो ।
१ सिणवाड़ो ।
१ सीरोड़ी ।
१ पमांणा ।

---

1 विरोलिया गांव, भाटोंका शासन, सहसमलका । (शासन = दानमें दी हुई कर-मुक्त भूमि या गांव) 2 श्राभारी गांव चीवा रामसिंहका, ब्राह्मणोंके शासनमें । 3 सिरोहीके ये २३ गांव 'भीतरोट-रो-पथग' कहलाते हैं । 4 वासा गांव कर-मुक्त और खालसेका । 5 'बाहरोटरो पथग' मे ४० गाव हैं ।

१ पोसतरा ।	१ चांपोल ।
१ टाकरो ।	१ ब्रमांण ।
१ उंडवायिड़ो ।	१ मकावल ।
१ हमीरपुर ।	१ नीवोड़ो ।
१ पालड़ी ।	१ करहुटी ।
१ मालागांव ।	१ जोतपुर ।
१ डमांणी ।	१ धीवली ।
१ धांधपुर ।	१ दतांणी ।
१ हणाद्रो ।	१ मारेल ।
१ डाक ।	१ कपासियो ।
१ थळी ।	१ भाटांणी ।
१ नीलेर ।	१ सांडूड़ो ।
१ सोहलवाड़ो ।	१ पेथापुर ।
१ रिवद्र ।	१ सेरुवो ।
१ रांणकवाड़ो ।	१ नीवूड़ो ।
१ लाडेलो ।	१ मकवाल ।

४८ साठरो पथग, मुदो इणां गांवां मांहे[1]—

१ मांडाहड़ो ।	१ हणवंतियो ।
१ वड़ोदो ।	१ वांट ।
१ रोहुवो ।	१ जैतवाड़ो ।
१ जीरावल ।	१ रीवी ।
१ देदापुर ।	१ ग्रालवाड़ो ।
१ गूडसवाडो ।	१ खीमत ।
१ सोळसभा ।	१ वाचडोल ।
१ वाचेल ।	१ वूराल ।
१ वडवज ।	१ भाटरांम ।
१ रायपुरियो ।	१ घनियावाड़ो ।

१ 'साठरो पथग' मे ये मुख्य ४८ गांव हैं ।

१ सूहड़लो ।	१ कूजावाड़ो ।
१ भांडोतर ।	१ जावाळ ।
१ वाघोर ।	१ गीगोल ।
१ भात ।	१ अटाळ, चारणांरी ।
१ मवड़ी, भाटांरी ।	१ धनेरी ।
१ अटाळ, भाटांरी ।	१ चेलावस ।
१ पांसूवाळा ।	१ सोहड़ापुर ।
१ आरखी ।	१ रोजेड़ ।
१ भाडली ।	१ गोयंदपुर ।
१ सांतरवाड़ो।	१ पांथावाड़ो ।
१ भीलडामो ।	१ टमटमो ।
१ सातसेण ।	१ पीथोली ।
१ भीलड़ो न्हानो ।	१ गूडसवाड़ो ।
१ झांवठो ।	१ अकेली ।

७२ मगरारा तथा भोररा'—

१ गुहीली ।	१ वग ।
१ खांभळ ।	१ सिवरटो ।
१ अणधार।	१ महेसरी। चीवा करमसीनूं।
१ डेडुवा ।	१ पाधोर ।
१ मकावली ।	१ वूचाड़ो ।
१ तीतरी ।	१ वाहुल ।
१ कलाधी ।	१ नूहन ।
१ जसोळाव ।	१ मांडल ।
१ पाडीव । रामानूं ।	१ फागूणी ।
१ साणपुर ।	१ नोहर ।
१ सकर ।	१ हाळीवाड़ो ।
१ सीरोडी ।	१ आगूना ।

१ भोरा-मगरा पट्टीचे ७२ गांव ।

१ मांडवाड़ा ।
१ फळवध ।
१ भूतगांव ।
१ जावाळ ।
१ देळोद्र ।
१ वरहाड़ो ।
१ मणोहरी ।
१ मूंडेड़ी ।
१ आंवेलो ।
१ सतापुर ।
१ चीवली ।
१ मांडणी ।
१ ओडू ।
१ जामोतर ।
१ नारदरो ।
१ लोटीवाड़ो ।
१ लास ।
१ मूणावद्र ।
१ भाडोली ।
१ अणदोर ।
१ वामण ।
१ मारोली ।
१ पालडी माहेली ।
१ वाघमणो ।

१ भेवो ।
१ अरटवाड़ो ।
१ पोसाळियो ।
१ आळियो ।
१ मांचाळो ।
१ लिखमीवास ।
१ कोरटो ।
१ नांमी ।
१ उपमणो ।
१ चीवा गांव ।
१ पालड़ी वाहरली ।
१ राड़वरा ।
१ वड़गांव ।
१ वाचड़ा ।
१ डीघाड़ी ।
१ सीरोड़ी द्रगडांरी ।
१ आपुरी ।
१ नागाणी ।
१ डीडलोद्र ।
१ अवेळ ।
१ वाचड़ा वीजो ।
१ माडावाडियो ।
१ वळदुरो ।

१२ आवू ऊपरला गांव[1]—

१ अचलगढ ।
१ उतोमा ।
१ देलवाडो ।

१ हेठामाटी ।
१ मेहुरी ।
१ साळ ।

---

1 आबू पर्वतके ऊपर १२ गाव ।

१ ओरीसो।
१ वासुदेव।
१ नाहरळाव।
१ वासथांन।
१ उमरणी।
१ रिषीकेस।

९ श्रीमहादेवजी सारणेसरजीरा गांव[1]—

१ दंतारणो।
१ इकुदरड़ा।
१ घांणा।
१ भांमरा।
१ वाचाहड़ा।
१ पालसी।
१ मांडावाड़ो।
१ कोटड़ो।
१ सोलोई।

३० गांव तीसरा कहीजै[2]—

१ वागड़ियो। देवडारो उतन[3]। जाळोररा परगना – वडगांव, गूदाउरासू कांकड़[4]। सांचोरसू कोस १०।
सूर। आउवा पांचला मांचोररासू एक सीव[5] छै। देवड़ा आप-मल गोपाळदास नरहरदासरो उतन।
१ थावर।
१ चीहरड़ा।
१ वीचवाड़ो।
१ कवरला।
१ वूसियो।
१ मगराउवो।

गाव एक मागिया[6]—

१ धांनेरा।
१ धारवा।
१ सामळवाड़ा।
१ सातवाड़ो।
१ नांनाउओ।

२४ गाव सीरोहीरा। मोळ'कियांरो उतन। अैही वडगांव, माचोररै कांकड़[7]—

१ मीहो ७००)
१ सिरोहणी
१ राजोड़ो
१ जांणावाड़ो।

---

1 श्री सारणेश्वर महादेवजीके ९ गांव। 2 इन तीस गांवोंका समूह 'तीसरा' कहलाता है। 3 निवासस्थान (जागीरी)। 4 सीमा। 5 सीमा। 6 सरोहीके परगनेके गांव 'इकमागिया' अर्थात् एक भाग (परगना) वाले कहलाते हैं। 7 ये भी वडगांव और सांचोरकी सीमा पर स्थित हैं।

१ जड़ियो ।	१ रिवियो ।
१ भूकांणो ।	१ माटपणां ।
१ ग्रांनापुर ।	१ रोहुरो ।
१ गळथळू ।	१ वेहड़ो ।
१ जाहड़ैदेटो ।	१ पीगियो ।
१ मेंवड़ो ।	१ दुणोद्र ।

७७ गांव सांसण–बांभण, चारणां, भाटांरा[1]–

१ पेसवा । चारणांरो ।	१ धाचरियो ।
१ झांखर । ग्राढांरो ।	१ वराहील ।
१ कोजड़ो ।	१ मांडवा ।
१ लखमेर ।	१ उड़ । महेसदासनूं ।
१ पुनपुरी ।	१ जाल्हकड़ी ।
१ धाधपुर ।	१ कुळदडो ।
१ लाज ।	१ डूगरी ।
१ फूलसरेड ।	१ वाटियो ।
१ रीछड़ी ।	१ साकदडो ।
१ वांभणहेड़ो ।	१ टमटमो ।
१ मोलेसरी ।	१ ग्राझारी ।
१ कूचमो ।	१ वीरोळी । भाटांरी ।
१ सोनाणी ।	१ वीरोळी । वांभणांरी ।
१ सोलावास ।	१ वासणडो ।
१ मोरवडा ।	१ ग्राहिचावो ।
१ माटासण ।	१ देवखेत ।
१ वांभणवाड़ ।	१ हायळ ।
१ वात्रडा ।	१ जसोदर ।
१ वडोद्रो ।	१ पेरवा ।
१ सीझोतरो ।	१ वूटड़ी ।
१ चुड़ियालो ।	१ खोगड़ी ।

[1] ये ७७ गांव ब्राह्मण, चारण और भाटोंके शासनके हैं।

१ मीटांण ।
१ वीजवा ।
१ ग्रासावाड़ो ।
१ ग्रहिवाद्यो खुरदा ।
१ जाखवर ।
१ गोवील ।
१ ग्रैवड़ी । भाटांरी ।
१ सेमू । त्रिवाड़ियारी ।
१ खोड़ादरो ।
१ जायल ।
१ नेनरवाडो ।
१ पातंवर । चारणांरो ।
१ ग्रोडवाड़िया । चारणांरो ।
१ कासवरा । धधवाड़िया ।
सींवराजनू ।
१ मोरथलो ।
१ ग्रासादस ।
१ सांणा ।
१ मालावास ।
१ मांडली ।
१ जुवादरो ।
१ वासडेसो । भाटांरो ।
१ धुवावस ।
१ देलांणो । भाटांरो ।
१ खुराड़ी । भाटांरी ।
१ ताड़तोली । बांभणांरी ।
१ खांडायत । बांभणांरी ।
१ कारोली । भाटांरी ।
१ गणकी । भाटांरी ।
१ पांडरी । भाटांरी ।
१ पालड़ी । रावळांरी ।
१ पीपळी । रावळांरी ।
१ वाढेल । वांभणांरी ।
१ पालडी । रावळांरी ।
१ सड़वळोदो ।
१ तियमी ।

वात सीरोहीरा धणियां-पाटवियांरी, ग्राबू लियांरी[1]

ग्राबू पवारारै छै, सो तो घणा दिनांरो छै । राजा प्रथीराज चहुवाणरै जैत पवार वडो सांवंत हुवो छै[2], जिण वेढ मांहे प्रथीराजनूं साहवी दो[3] । गोरी झालियो[4], तद जोसी जगजोत ग्राय कह्यो—"दिल्ली छत्रभंग होय तिसड़ो जोग छै[5] ।" तरै जैत पंवार कह्यो—"ग्राज वेढरै दिन म्हारै माथै छत्र मांडो[6] । ग्रा ग्रलाइ-वलाइ मोनूं

[1] सिरोहीके स्वामी और उनके पाटवियोंकी (राजकुमारोंकी) ग्राबू पर अधिकार किये जाने सम्बन्धी वात । [2] राजा पृथ्वीराज चौहानके पास जैत पंवार बड़ा वीर सामंत हुआ है । [3] जिसने युद्धमें पृथ्वीराजको राज्य-वैभवसे सम्पन्न किया । [4] शहाबुद्दीन गोरीको पकड़ा । [5] दिल्ली राज्यका छत्रभंग हो ऐसा योग बन रहा है । [6] ग्राजके युद्धके दिन छत्र मेरे पर रख दो ।

प्रथीराजरी लागो[1] ।" पछै जेत पंवार कांम आयो, तिणरा पोतरा[2] आबू छै । रावळ कान्हड़दे तिण दिन जाळोर धणी छै । तिण समै देवड़ा विजड़रा वेटा–जसवंत, समरो, लूणो, लूंभो, लखो, तेजमी सरणुवारा भाखर सीरोहीरीमां[3] छै, तिणांरी गड़ासंध[4] आय रह्या छै । इणांरै पग-ठांम काय न छै[5] । भाई पांचे ही आलोच करै छै[6]– "आंपै तो सपूत छां । ज्यूं त्यूं कर पेट भरां छां. पिण काइक ठोड़ छोरवांनू खाटीजै[7] । मु अै आबू लेणरो विचार करै छै[8] । तितरै[9] चारण १ पंवारांरो इणां तीरै[10] आयो । तिण चारण आगै दिलगीरी करण लागा–"जु एक तो मांहरै धरती नही, नै भूखा[11], नै पांचेई भायांरै पांच-पांच वेटियां, त्यांनू वीद जुड़ै नही[12] ।" तरै चारण कह्यो–"इण वातरो किसो सोच करो । अै आबू वडा पंवार-रजपूत । इणांनू परणावो ।" तरै इणे कह्यो–"म्हे आज भूखा, पंवार आबूरा धणी । मांहरै परणीजै क न परणीजै[13] ।" तरै चारण कह्यो–"हूं खवर करीस[14] ।" उठै आबू पाल्हण पंवार राज करै तठै चारण गयो । कह्यो–"चहुवांणांरै वीदणी[15] २५ छै । पचीस पंवारांनू दै छै ।" तरै पंवारै कह्यो–"रूड़ां ! परणीजस्यां[16] ।" तरै किणहेक टाहे मांणस कह्यो[17]–"जु अै काळपूछिया धरती नाडूळथा लेता आवै छै[18] । इणांरै ना जाइजै[19] ।" तरै पंवारै कह्यो–"म्हे पहलां कह्यो, हमैं ना कहां नही[20] ।" नै उण चारणनै कह्यो–"उणां चहुवांणांरो एक जणो भाई आबू ओळ[21] रहै तो म्हे परणीजण आवां ।" चारण आयनै चहुवांणांनू कह्यो–"ओळ दो तो परणीजै ।" तरै या एकरसू[22] तो कह्यो–"ओळ

---

1 पृथ्वीराजकी यह आधि-व्याधि मुझे प्राप्त हो । 2 पोते । 3 सिरोही प्रदेश । 4 पास । 5 इनके पास रहनेको कोई जगह नही है । 6 पाचों ही भाई विचार करते हैं । 7 किन्तु कोई एक जगह लड़कोंके लिये प्राप्त की जानी चाहिये । 8 अतः ये आबू लेनेका विचार करते हैं । 9 इतनेमे । 10 पास । 11 गरीब । 12 उनको वर नही मिलते । 13 हमारे यहा वे विवाह करें या न करें । 14 मैं इसका पता लगाऊंगा । 15 चौहानोंके २५ दुलहिनें(कन्याएं) हैं । 16 अच्छी बात है, विवाह करेंगे । 17 तब किसी एक समझदार व्यक्तिने कहा । 18 ये दुष्ट नाडोलसे धरती लेते आ रहे हैं । 19 इनके यहा नही जाना चाहिये । 20 हमने पहले स्वीकार कर लिया, अब नाहीं नहीं कर । 21 बधक रूपमे । 22 एक बार ।

१ मीटांण ।
१ वीजवा ।
१ आसावाड़ो ।
१ अहिचावो खुरदा ।
१ जाखवर ।
१ गोवील ।
१ अेवड़ी । भाटारी ।
१ सेमू । त्रिवाड़ियांरी ।
१ खोड़ादरो ।
१ जायल ।
१ नेनरवाडो ।
१ पातंवर । चारणांरो ।
१ ओडवाडिया । चारणांरो ।
१ कासवरा । धधवाडिया ।
सींवराजनू ।
१ मोरथलो ।
१ आमादस ।
१ खांणा ।
१ मालावास ।
१ मांडली ।
१ जुवादरो ।
१ वासडेसो । भाटांरो ।
१ धुवावस ।
१ देलांणो । भाटांरो ।
१ खुराड़ी । भाटांरी ।
१ ताड़तोली । बांभणांरी ।
१ खांडायत । बांभणांरी ।
१ कारोली । भाटांरी ।
१ गणकी । भाटांरी ।
१ पांडरी । भाटांरी ।
१ पालड़ी । रावळांरी ।
१ पीपळी । रावळांरो ।
१ वाढेल । बांभणांरी ।
१ पालडी । रावळांरी ।
१ खड़वळोदो ।
१ तियमी ।

वात सीरोहीरा धणियां-पाटवियांरी, आबू लियांरी[1]

आबू पवारांरै छै, सो तो घणा दिनांरो छै । राजा प्रथीराज चहुवाणरै जैत पवार वडो सांवंत हुवो छै[2], जिण वेढ़ मांहे प्रथीराजनू माहथो दी[3] । गोरी झालियो[4], तद जोसी जगजोत आय कह्यो– "दिल्ली छत्रभंग होय तिसडो जोग छै[5] ।" तरै जैत पंवार कह्यो– "आज वेहरै दिन म्हारै माथै छत्र मांडो[6] । आ अलाइ-वलाइ मोनूं

1 सिरोहीके स्वामी और उनके भाईयों (राजकुमारों) आबू पर अधिकार किये जाने संबंधी बात। 2 राजा पृथ्वीराज चौहानके साथ जैत पंवार बड़ा वीर सामंत हुआ है। 3 जिसने युद्धमें पृथ्वीराजको राज्य-संभालने सम्पन्न किया। 4 शहाबुद्दीन गोरीको पकड़ा। 5 दिल्ली राज्यका छत्रभंग हो ऐसा योग बन रहा है। 6 आजके सुबहके दिन छत्र मेरे पर रख दो।

प्रथीराजरी लागो[1] ।" पछै जेत पंवार कांम आयो, तिणरा पोतरा[2] आबू छै । रावळ कान्हड़दे तिण दिन जाळोर धणी छै । तिण समै देवड़ा विजड़रा बेटा–जसवंत, समरो, लूणो, लूंभो, लखो, तेजसी सरणुवारा भाखर सीरोहीरीमां[3] छै, तिणांरी गड़ासंध[4] आय रह्या छै । इणांरै पग-ठांम काय न छै[5] । भाई पांचे ही आलोच करै छै[6]– "आंपै तो सपूत छां । ज्यूं त्यूं कर पेट भरां छां. पिण काइक ठोड़ छोरवांनू खाटीजै[7] । मु अै आबू लेणरो विचार करै छै[8] । तितरै[9] चारण १ पंवारांरो इणां तीरै[10] आयो । तिण चारण आगै दिलगीरी करण लागा–"जु एक तो मांहरै धरती नही, नै भूखा[11], नै पांचेई भायांरै पांच-पाच बेटियां, त्यांनू वीद जुड़ै नहीं[12] ।" तरै चारण कह्यो–"इण वातरो किसो सोच करो । अै आबू बडा पंवार-रजपूत । इणांनू परणावो ।" तरै इणे कह्यो–"म्हे आज भूखा, पंवार आबूरा धणी । मांहरै परणीजै क न परणीजै[13] ।" तरै चारण कह्यो–"हूं खबर करीस[14] ।" उठै आबू पाल्हण पंवार राज करै तठै चारण गयो । कह्यो–"चहुवांणांरै बीदणी[15] २५ छै । पचीस पंवारांनू दै छै ।" तरै पंवारै कह्यो–"रूडां ! परणीजस्यां[16] ।" तरै किणहेक डाहे मांणस कह्यो[17]–"जु अै काळपूछिया धरती नाडूळथा लेता आवै छै[18] । इणांरै ना जाइजै[19] ।" तरै पंवारै कह्यो–"म्हे पहलां कह्यो, हमैं ना कहां नही[20] ।" नै उण चारणनै कह्यो–"उणां चहुवांणांरो एक जणो भाई आबू ओळ[21] रहै तो म्हे परणीजण आवा ।" चारण आयनै चहुवांणानू कह्यो–"ओळ दो तो परणीजै ।" तरै यां एकरसू[22] तो कह्यो–"ओळ

---

1 पृथ्वीराजकी यह आधि-व्याधि मुझे प्राप्त हो । 2 पोते । 3 सिरोही प्रदेश । 4 पास । 5 इनके पास रहनेको कोई जगह नही है । 6 पाचो ही भाई विचार करते हैं । 7 किन्तु कोई एक जगह लडकोंके लिये प्राप्त की जानी चाहिये । 8 अतः ये आबू लेनेका विचार करते हैं । 9 इतनेमे । 10 पास । 11 गरीब । 12 उनको वर नही मिलते । 13 हमारे यहा वे विवाह करें या न करें । 14 मैं इसका पता लगाऊगा । 15 चौहानोंके २५ दुलहिनें(कन्याएं) हैं । 16 अच्छी बात है, विवाह करेंगे । 17 तब किसी एक समझदार व्यक्तिने कहा । 18 ये दुष्ट नाडोलसे धरती लेने आ रहे हैं । 19 इनके यहा नही जाना चाहिये । 20 हमने पहले स्वीकार कर लिया, अब नाही नही करें । 21 बंधक रूपमें । 22 एक बार ।

किसी मेलो।" पछै भाई एक बोलियो–"जु वीजूं तो काहे कां[1], मूंवां विगर आबू नही आवै। एकै ओळ साटै आवै तो ढील मतां करो[2]।" तरै लूणै कह्यो–"हूं जाइस[3]।" तरै चारणनूं कह्यो–"म्हे भूखिया नै मांहरै बेटी जरूर परणावणी[4]। वे ठाकुर आज म्हांनूं निवळा देखै छै तो म्हे ओळ पिण देस्यां[5]।" यूं थाप करनै[6] लूणानूं ओळ मेलियो। उठै पंवार १ वडो ठाकुर नै ओ लूणो आबू रयो[7]। नै पंवार २५ वीद छेड़ावड़ै साथसू आया[8]। अठै सांमेळो करायनै आंण जांनीवासै उतारिया[9]। घणी महमानी करी। भांग, अमल, दारू गाढा सहोरा किया[10]। साहारी[11] वेळा हुई तरै इणां रजपूतां २५ मोटियारां छोकरांनूं[12] बैरांरा वागा पहराया[13]। वीदणी कर बैसाणिया[14]। पटलीरी पाखती कटारियां छांनी सीक राखी[15]। कह्यो–"म्हे फेरा लेणरी कहां तरै हुसियार हुईजो। कटारियां मार पाड़जो।" यूं केहनै जांनीवासै जाय कह्यो–"साहेरी वेळा हुई छै, वीद हालो[16]।" जांनी दारूथी विकळ हुवा था, थोडासा आदमियांसू परणीजण आया। डोढीरै मुहडै ऊभा रहनै कह्यो[17]–"वीजा ऊभा रहो[18]। मांहे मांणस छै[19]। छां भूखा, पिण मांहरै ठाकुराई छै[20]। यूं कहि सारा वारै राखिया। वीदानूं मांहे लिया[21]। चंवरियां मांहे वैसांणिया। हथळेवा वांभण जोडिया[22]। मोटियारै हाथ पीडा झालिया[23]। तरै वांभण

---

1 दूसरी बात तो क्या कहूं। 2 एक ही मनुष्य-बन्धवके बदलेमें आबू आता है तो देरी नही करो। 3 मै जाऊंगा। 4 हम गरीब है लेकिन क्या करें हमको लडकियोंका विवाह करना है। 5 वे ठाकुर आज हमको निर्बल समझते हैं तो हम 'ओळ' भी देंगे। 6 इस प्रकार निश्चय करके। 7 वहां एक बडा पवार ठाकुर जिसके पास यह लूणा 'ओळ' रूपमे आबू जा कर रहा। 8 और पवारोंके २५ मनुष्य दुल्होंके रूपमे बरातियोंके साथ आये। 9 यहा साम्हेला (अगवानी) करा कर जनिवासेमे ला कर ठहरा दिये। 10 भंग, अफीम, शराब आदिसे बहुत खातिरदारी की। 11 पाणिग्रहण। 12/13 जवान छोकरोंको स्त्रियोंके वस्त्र पहिनाये। 14 दुलहिनें बना करके बिठा दिया। 15 ओढनेकी पटली पायरेंमें खोसनेकी जगहमे गुप्त रूपसे रख दी। 16 दूल्हे चलें। 17 ड्योढीके द्वार पर खडे रह कर कहा। 18 दूसरे यहा ही खडे रहें। 19 अन्दर जनाना है। 20 हम असमर्थ है किन्तु हमारे ठकुराई तो है। 21 दुल्होंको अंदर लिया। 22 ब्राह्मणोंने पाणिग्रहण करवाया। 23 युवकोंने मेहंदी-भिड वाले हाथोंको पकडा।

कह्यो– 'उठो ! फेरा ल्यो ।" तरै लोह कियो[1] । पचीसांनूं ही कूट मारिया । जांनीवासै ऊपर जायनै जांनियांनूं कूट मारिया । जांनी सोह मारिया[2] । आबू भाई लूणो थो तठै खबर मेलणी । तितरै एकण मांहेरै रजपूत कह्यो–"हूं जाईस ।" तरै कह्यो–"तू क्यूंकर जाईस ?" तरै कह्यो–"जाचक हुइ जाईस ।" तरै औ रजपूत जाचक होयनै उठै गयो । औ ठाकुर चहुवांण नै पंवार वातां करता था उठै आय कह्यो— "वधाई, व्याह हुवो ।" तरै लूणो बोलियो–"व्याह हुवो ?" वळै पूछियो[3]--"व्याह हुवो ? जस किणनूं हुवो[4] ?" तरै कह्यो–"जस चहुवांणांनूं हुवो नै पंवारांरी वडी भगत हुई[5] ।" तरै चहुवांण लूंणै कह्यो पंवार दलपतनूं–"जु आवू मांहरो छै[6] । वे मारिया[7] । जिसडो तूं व्है तिसडो हूं ई[8] ।" माहोमांहि दलपत नै लूणो लड़ मूवा । तितरै वे पिण वांनूं मारनै चढिया था सु आय आवू चढिया[9] । दुहाई फेरी[10]। चहुवांणै कहै छै इण तरै आवू खाटियो[11] । संमत १२१६ माह वदि १, चहुवांण तेजसी विजडरो वेटो पाट वैठो[12] ।

तरै पंवार केएक तो कठीही गया[13] । केएक तेजसीरै चाकर रह्या[14] । सु सिरदार पवार हुतो, तिणरो वेटो मेरो हुतो, सु आवूरी धरती माहे हीज तेजसीरो चाकर हुय रह्यो थो । तिण मेरारो वहन लजसो तेजसी परणियो हुतो[15] सु उणनू गांव ४ तथा ५ पटै दिया । सु औ मेरो तेजसीरो साळो । तेजसी कनै आवै तरै तेजसी मेरानू पूछै "मेरा ! आवू म्हारी क थारी ?" तरै मेरो कहै–"आवू राजरी[16]।"

---

1 तव कटारियोसे वार किये। 2 समस्त वरातियोको मार दिया। 3 पुनः पूछा। 4 यश किनको मिला ? (शाकेतिक प्रश्न है। तात्पर्य विजय किसकी हुई ?) 5 तव कहा– यश चौहानोंको मिला और पंवारोंकी वडी खातिरदारी हुई अर्थात्– विजय चौहानोंकी हुई और पंवार सव मारे गये। 6 आवू हमारा है। 7 वे (पंवार) मारे गये। 8 अव जैसा तू मेरेसे व्यवहार करेगा वैसा मैं भी। 9 इतनेमें वे भी उनको (पंवारोंको) मार कर चढे थे सो आवू आ पहुँचे। 10 अपने शासनकी घोषणा की। 11 कहा जाता है कि चौहानोंने इस प्रकार आवू प्राप्त किया। 12 वि. स १२१६ माघ कृ १को चौहान विजडका पुत्र तेजसी सिंहासन पर वैठा। 13 तव पंवार कई तो कहीं चले गये। 14 और कई तेजसीके सेवक वन कर रहे। 15 उस मेराकी वहन लजसी तेजसीको व्याही गई थी। 16 आवू आपकी।

सु तेजसी पांचे-दसे दिन मेरानू आ वात विगर पूछियां नहीं रहे । सु मेरो मुहडै तो क्यू फेर कहै नही[1], पिण मनमांहे आवटै[2] । बळै घणो[3] । ऊणो जाय[4] । डील दूवळो हूतो जाय । तिण समै मेरारै काको एक आंधो सु मिलणनू आयो छै । तिणरै मेरो पगां लागो । तरै उण आंधै काकै मेरारै मुहडै, छाती, हाथां हाथ फेरियो । तरै उण डील दूवळो जाणियो । तरै आंधै काकै मेरानू कह्यो–"मेरा ! न्याय पंवारांसू आबू गयो, वांसै तो सारीखा भीव हुवा[5] ?" तरै मेरे कह्यो–"काका ! रजपूत तो रूड़ो[6] छू, पिण मोनू सासतो दगध घणो छै, तिणसू हूं हेठो-हेठो जाऊं छूं[7] ।" तरै काकै पूछियो–तोनू किसो दगध छै ?" तरै मेरै कह्यो–"हूं जरैही तेजसी रावळ कनै जाऊं तरै मोनू कहै–"मेरा ! आबू थारो किना[8] म्हारो ?" तरै हूं मुंहडै तो कहूं–"आबू राजरो" पिण हूं मन माहे घणो आवटू । तरै काकै कह्यो–"फिट मेरा ! जायै जीवनू मरणो छै[9] । हमरकै भेळा हुय जास्यां[10] । देखां, गोविद कासू करै[11] । पिण एक भलो देवड़ांरो सिरदार कनै मोनू बैसांणै[12] नै तोनू तेजसी कहै–"मेरा ! आवू कुणरो[13] ?" तरै तू कहै[14]–"आवू म्हारो, म्हारा बापरो, म्हारा दादारो । तू ऊपरवाड़ारो सांड पैठो[15] ।"

कवित्त छप्पय सीरोहीरा टीकायतांरा परयावलीरो आसियो मालो कहै[16]

कवित्त

आदि अनादि असंभव आप मुद्रा ऊपाए ।
ओंकार अप्पार पार प्रमही नहिं पाए ॥

---

1 सो मेरा उसके मुह पर तो कुछ कहता नही । 2 किन्तु मनमे घुटता है । 3 बहुत जलता है । 4 कम होना जा रहा है । 5 मेरा ! पंवारोसे आबू गया यह न्यायकी बात है क्योंकि पीछे तो तेरे जैसे भीम (भीम जैसा पराक्रमी) ही तो रहे हैं ? 6 अच्छा । 7 किन्तु मुझको निरन्तर जलन बहुत है जिससे मै दुर्बल होता जा रहा हूं । 8 किम्वा । 9 धिक्कार मेरा ! जन्मे हुए जीवको मरना है । 10 अबकी साथ हो कर जायेंगे । 11 देखें भगवान गोविन्द क्या करते हैं । 12 बिठावें । 13 आबू किसका ? 14 तब । 15 तू उलटे मार्गका साड घुस गया । 16 परयावली गावके चारण आसिया मालाके कहे हुये सिरोहीके टीकायतोंके कवित्त छप्पय ।

कालिका जग कृतो कंधरूढा कौमारी ।
कमळा चपळा कळा पळा प्रमहंस पियारी ॥
देवांण विद्या दत्तावरी देवी धनदाता वरी ।
चहुवांण वंस रूपक[1] चवां[2] सारसत्त भुवनेश्वरी ॥ १

वंस चहुवांण वखांण आंण[3] सुरतांणां ऊपर ।
अनळकुंड[4] उतपत्त मुद्राकी चंद महेसुर ॥
मार मार वित्थार वार ऊठियो विकासै ।
खुरासांणां खळभळै निहंग सावच्चा नासै ॥
सवाळख सिंध सागर सतर जिणे खंड जीतां चड़ी ।
त्यैं वंस समो नह को[5] तियग को संग्रांम न समवड़ी[6]॥ २

जेण[7] वस जिंदराव जेण गोगो जगमग्गो ।
जेण वस जैतराव जेण सोमेसर जग्गो ॥
तेण[8] वंस प्रथिमल्ल साल[9] हूवो सत्रांणां[10] ।
गढ चौरासी ग्रहे साझि वंधै सुरतांणां ॥
कैवास सूर सारखि क्रियंत जास मोहल्ल न पांमता ।
चौतीस लाख चतुरग दळ हुयां आयससह[11] हालता[12]॥ ३

तेण डडे पंडुवां खाण त्रंबमे ऊलाळै ।
माळवो मलवटै पंज[13] दक्षिणहू पाळै ॥
गूजरवै पोह[14] ग्रहे सिध समुहो नोहट्टै ।
देतो परदक्षणा आव दिल्ली अरहट्टै ॥
अन-अन्न देस धर गिर अवर सकोडै संसार सहि ।
चहुवाण पिथमम् चापडै गज्जणवै[15] सुरतांण गहि ॥ ४

गज्जनवै मुग्रहै लीध भडार पहल्ली ।
दूजै गयद तुरग गोरिया[16] नीद-गहल्ली[17] ॥
तीजै साह महंत लेय नव लाख वसावै ।

1 वर्णन, काव्य । 2 कहता हू । 3 दुहाई, घोषणा, शासन । 4 अग्निकुण्ड । 5 समान । 6 समान । 7 जिस । 8 उस । 9 शल्यरूप । 10 शत्रुओंके लिए । 11 आज्ञा । 12 चलते । 13 प्रतिज्ञा । 14 गुजरातके स्वामियोंको । 15 नाश करने वाला । 16 स्त्रिया । 17 निद्रावश, नींदमे मस्त ।

चौथे मारग माल भोग[1] संजुगत भरावै ॥
पंचमै डंड प्रथिमल्लरै एह वात मांनी असुर ।
दस सहस लाद अल्लावदी पूरवै अजमेरपुर ॥ ५
प्रथीमाल परमांण वधै चहुवांण तणै[2] वळ ।
तेण वंस वहन्नाल दांन दीपियो दसावळ[3] ॥
वळ वाहड़ दे जेण जेण पंडवो प्रजाळै ।
चाहड़दे अस चढ़ै वैर गंजै चौवाळै ॥
अजमेर हुवा नर एतला[4] नवलक्खी उग्रह लिया ।
सीलंत[5] पांण सुरतांणसूं कंदळ[6] सुरतांणी किया ॥ ६
रायसिंघ तिण पाट रहै सेवै तुरकांणौ ।
लाखणसी धर छाड़ हुवो नाडूलो रांणौ ॥
सेवा कीध सकत्त वधै वरदांन वड़ाई ।
चीतोड़गढ वधनोर हुवो चहुं मांन सवाई ॥
चहुवांण वस रूपक[7] वडो रावां गंजन वैरड़ै[8] ।
वरदांन आसल लीधौ वडै खुरासांणां ऊपर खड़ै ॥ ७
तेरैह सहस तुरंग सकत[9] वरदांन समप्पै ।
नाडूलो नाडूल थांन आसावर थप्पै ॥
पाटण ऊली प्रोळ[10] दांण चहुवांण उग्राहै ।
पच लक्ख पोकरण वरस वरसै निरवाहै ॥
मेवाड मंडळ लाखो डंडै पसरै पूरव ही परै ।
त्रिहु राय सीस लाखण तपै ज्यौ आरंभै त्यौ करै ॥ ८
अग लाखण संपनो[11] पाट सोही परगट्टै ।
सोहीरै महेद्रराव जेण खत्र दूणो खट्टै ॥
महेद्र वस मछरीक[12] भुवन आलण संपन्नो[13] ।
आलणरै असराव आस जिंदराव उपन्नो[14] ॥

---

1 कर, मालगुजारी । 2 के । 3 दसो दिशाओंमें । 4 इतने । 5 प्राप्त करता है । 6 नाश । 7 यश । 8 वैरके बदलेमें । 9 शक्ति, देवी । 10 पाटनकी मुख्य पोल पर । 11 लाखन जब स्वर्ग चला गया । 12 जोरावर । 13 सम्पन्न हुआ । 14 उत्पन्न हुआ ।

जीदराव तणौ कीतू जिसा[1] जे लीधो जाळोर जुड़ि ।
कर त्यू समो पूजै न को त्यैंस कूंण पूजंत तुड़ि[2] ॥ ९

सिवियांणो[3] गिरसोन[4] जेण एकण दिन जीता ।
वीरनरायण वंस वहै वेसास वदीता ॥
दहियावत[5] ढुंढार मार संग्रांम मनावै ।
कर सह वरस कटक्क पछै नाडूळ पजावै ॥
सुरतांण सरसवळ सांमहा आप प्रांण अवरज्जिया ।
कीतू कंधार मछरीक कुळ गह एवड़ै[6] गरज्जिया ॥ १०

विवनै कीतू वसुह सुतन ऊठिया सवाई ।
सांवतसी महणसी वेध वीजाड़ वडाई ॥
वीजड़ तणौ विस्राव पांच पांचेही पांडव पर[7] ।
एकेके आगाह आभ गह राखै असमर[8] ॥
जसवंत समर लूणो जिसा लोहगढ़ लूभा लखा ।
इक एक विरद-गह[9] ऊठिया मार मार करता मुखा ॥ ११

अरवद्द[10] परमार काह्न[11] ऐका कणियागिर[12] ।
सीह पंच सद्दूणवै सहै कोटां ताकै सिर ॥
वीजड़रा घर वेध[13] वसै विन लोप विचाळै ।
क्रांमत[14] हेकां[15] करै चक्र हेकां हू चाळै ॥
मावै नहीं वीहै न मन पोहव[16] प्रमांण प्रगट्टिया ।
देवडा दूट[17] देसां दहण आग खाय कर ऊठिया ॥ १२
पचवीस पंमार तेड़ जांनां तिड़ तोड़ै ।
थाणै गूजरखड मुगल मुंडाहड़ मोड़ै ॥
लूणो सामो लोह मुवो दळ दळपत मारै ।

---

1 जैसा । 2 उसके समान कौन हो सकता है । 3 मारवाड़का इतिहास-प्रसिद्ध सिवाना नगर । 4 गिरसोन = सोनगिरि = स्वर्णगिरि, जालोरके किलेका नाम । 5 दहिया राजपूतोंका प्रदेश । 6 इस प्रकार । 7 समान । 8 तलवार । 9 कीर्तिमान् । 10 अर्बुद (आबू) । 11 कान्हड़दे । 12 जालोरका किला कनकगिरि । 13 युद्ध । 14 पौरुष । 15 एक बार । 16 पृथ्वी । 17 प्रबल ।

तेजसीह अरबद्द सेस पीतियै वधारै ॥
पग आंण धरा गिर पालटै घणूं विरद आव्रत घणा ।
सुरथांन गयां राखै सको[1] तपै तुग वीजड़ तणा ॥ १३
तेजसीह पंमार ऊभैचूकै[2] आवट्टै ।
दसमो आह लूभेण पुत्रते सलख प्रगट्टै ॥
सलख सूर संग्राम सलख सुरतांणां सहल्लै[3] ।
सलखतणो रिणमाल झूझ भर दूणो झल्लै ॥
सरणियै वसै रिड़मल सुहड़ खंडांडंडां खड़खड़ै ।
चहुवांण जिकण[4] ऊपर वडै घण नरिंद धायै घड़ै ॥ १४
अरबदही रिणमाल अनैवी[5] कळका चोळै ।
सोळंकियां सहाय बोल हुय भारी बोलै ॥
करै कटक अरजक्क[6] निवह देवड़ो निहट्टै ।
वोड़ो विरद पगार आव वीसर आहट्टै ॥
पळ खंड चंड भुवडंड पिड़ खित[7]कारण खळ[8]खुट्टिया[9] ।
चापडै वीस चवदह चडै आरोपण आवट्टिया ॥ १५
दळ वोड़ां देवड़ां सहित विकळत संघारै ।
रहै हेक रजपूत तेण रिणमल्लह मारै ॥
तेण पाट तुड़तांण वधै सोभ्रम्म वडाई ।
सोभ्रम्मरै सहसमल सूररै क्रम्न सवाई ॥
चहुवाण देस च्यारह चरै पग हि न हल्लै पाधरै[10]।
अरबद्द राव वळ आपरै, जां आरंभै तां करै ॥ १६
कुंभकन्न अरबद्द, लियो सरणुओ सहेतो ।
सहसमल्ल सुरताण, जाय श्रगवास[11] पहूंतो[12] ॥
कर ऊपर कुतवदी, इतो क्यूं वेगो आवै ।
गयो राण ओ घाट, घाट परगह पाड़ावै ॥
वीटेव दुरग थांणै वहै, पनरै ती पालट्टिया ।

1 सबको। 2 उसी समय, एकदम। 3 शल्य रूप लगता है। 4 जिसके। 5 अपने मतसे चलने वाला। 6 शत्रु। 7 पृथ्वी। 8 शत्रु। 9 नाश किया। 10 सीधे। 11 स्वर्गवास। 12 पहुँचा।

मछरीक सुकर मेवाड़रा, असंख सेर आहुट्टिया[1]॥ १७
पग आंणै धर प्रांण, मरण साहसमल मग्गै ।
तेण पाट लख धीर, मयंक ऊगै जगमग्गै ॥
जे वालोतो सीह, नला आकासह नांखै ।
ओवासै ऊससै, ढांण कोटांनूं धांखै ॥
सिवपुरी वसै ग्रह सरणुवो, देसां ऊपर देखियो ।
वळ सवळ महाबळ वोलियो,परगह[2]आप न पेखियो[3]॥ १८
सोळंकां संग्रांम, सात फेरा[4] संघारै ।
गोखू वर गाहटै[5], मछर चड डूगर मारै ॥
डोडियाळ काचैल, सहत डंडै वालीसां ।
कोळीया कड़जकाढ़, चांप तीसां चोवीसां ॥
जिण सयल[6] तणा नद नीर जिम,जीता सेन असंख जिण ।
लखधीर तणै सुरताण लग,ताप न खिम्मै[7]रोद्रतिण ॥ १६
धर खाटै[8] लखधीर, दीध जगमाल हमीरां ।
विनै[9] पाट पत वेध, हुवै वेहू[10] वर वीरां ॥
एक राव अरवद्द, वियो[11] सरणुवै वयट्ठो[12] ।
एकाएक अगाह[13], एक एकाह अपुट्ठो[14] ॥
राय भांण अनै सत नथ राय,द्रोखै आरख वेधियो ।
भुय तणो ग्रास विहुं भाइयां, आधोआध निमंधियो[15]॥ २०
दळ मेळै जगमाल, पीड़ हम्मीर पहारै ।
विह[16] लिखियो धरवेध, तांम सहवर संघारै ॥
रसतर सघण लील राज, वक लाल विवन्नो ।
तेण[17] पाट तुडतांण, पछै अखई उतपन्नो ॥
अखैराज अरक ओहासियो,नर नरंद भंजेव निस ।
कळकळै किरण दीपै कमळ,दस ही दिस चत्वार दिस ॥ २१

---

1 भिडे । 2 सेना । 3 देखा । 4 बार, दफा । 5 नाश करता है । 6 पहाड़ । 7 सहन करता है । 8 प्राप्त करता है । 9 दोनों । 10 दोनों । 11 दूसरा । 12 बैठा । 13 एक एकसे आगे । 14 एक एकसे विरुद्ध । 15 बांट लिया । 16 विधाता । 17 जिसके ।

जिकै इंदु फणइंद कंदतां लगै निकासै ।
जुध प्रवीण रढ़रांण[1] पांण त्यां दूरि पियासै ॥
जिकै छत्र गज गत्त जत्र त्यां हुये अलग्गा ।
जिकै काळ लंकाळ[2] लुळै लुळ पाये लग्गा ॥
पूरब पछिम उत्तर दखिण कीती रेणे खळभळै ।
अखैराज अरक ओहासियो हुय नरंद हालोहळै ॥ २२
वंध खांन आप बळ मांण मेजे[3] मिलकांणो ।
धरा राज धर धूण, लियो चापै लोईयाणो ॥
डोडियाळकी वेल, वास गोखंभ वसावै ।
चांपै तोस चौवीस, मार धर सत्र[4] मनावै ॥
पतसाह सूर दसवार पिड़, जे ढंढ़ोळै गो दळां ।
अखैराज साल इळ[5] अंतरै, उरह निमंधै एतळां[6] ॥ २३
कोड प्रवाडा[7] करै, सरग[8] आखई[9] सांप्रंतो[10] ।
रायसिंघ तिण पाट, अरक वेधै ऊगंतो ॥
किरण झाळ झळहळै, अंब अंबर[11] ओहासै ।
सपतदीप सारीख वदन उद्योत विकासै ॥
नव मेक[12] छत्र छाया निजर, वरन अठारह विळकुळै ।
पह[13] सिंघ प्रतप्पै[14] सिवपुरी, जोत विंब[15] जिम जळहळै ॥ २४
काय[16] भोज कीकम्म[17], काय रुद्रनाग अरज्जन ।
काय रांमण[18] बळराज[19], काय जुजठळ[20] अरगंजन ॥
क्रनकाय[21] हरचंद[22] क्रन्न कळजुग्ग[23] कहंता ।
काय समर दाधीच काय जीवाहन जंता ॥
सुजसिंघ सही सुजसिंघ सत एह न आरख[24] आवरां[25] ।
काय वात न मानै पर किणी, ऋग[26] दीध जळतो करां ॥ २५

---

1 प्रतिज्ञा पालनके लिये प्राणोंको न्योछावर करने वाला वीर। 2 जोरावर। 3 मिटा दिये। 4 शत्रु। 5 पृथ्वी। 6 इतने। 7 युद्ध। 8 स्वर्ग। 9 कहता है। 10 प्रत्यक्ष। 11 आकाश। 12 एक। 13 स्वामी। 14 प्रतापवान् हो रहा है। 15 सूर्य। 16 क्या तो। 17 विक्रम। 18 रावण। 19 राजा बलि। 20 युधिष्ठिर। 21 राजा कर्ण। 22 हरिश्चन्द्र। 23 कलियुग। 24 समानता। 25 दूसरोंमें। 26 (१) खड्ग, (२) हाथ।

कवित्त राव रायसिघ सीरोहियारा, ग्रासियो करमसी खींवसरोत कहै—

कवित्त

जे ऊपररो तमर, सुवर वैहवार लहंतो ।
जिण थू ग्रा ऊपरी, फाड फड़वक फाड़ंतो ॥
जिण समपै सोव्रन्न[1], जेण वदरा[2] वंधावै ।
जिण सोभावै हाट, जेण लासां लूसावै ॥
सुनिभरस संभार सदन, [वणां] कृपणां तणो विरांमियो[3]।
कर सुपर कीति[4]कवि करमसी, रायसिघ विसरांमियो[5]॥ १

जहा अंव फळ वछस[6], तहां नीव फळ न पामस[7] ।
जहां चिणी पकवांन, तहां को कसरय मांनस ॥
जहां जायसूं जंपै, तहां ग्रादर न पायस ।
जहां उपायस[8] वोहत, तहां वोहतेरो खायस[9] ॥
ग्रोखद दांन देसी कवण, दन[10]हीणां विदोपियै ।
हय हय सरीर छूटो नही, रायसिघ अवरोखियै ॥ २

राव राय रखपाळ[11], राव रहडण[12]रिम[13]राहां ।
राव रूप रायहरां, राव वैरी पतसाहां ॥
राव रोर विड्डार, राव संसार उधारै ।
राव ग्रम्म ऊधरै राव इक्कोतर तारै ॥
तरा जास पास नय कुळ तणी, सिवै भोर ग्राचार सही ।
ग्रभिनमो ऋन्न दानेसवर, रायसिघ विवनोम कही ॥ ३

केहिज राव राखिया, भोम निगमी[14] ग्रामंता ।
केहिज राव राखिया, भये खुरसांण पुळंता[15] ॥
केहिज लोभ राखिया, तणा पतसाह उदाळै ।
केहिज रजकर[16] राखिया महारोर वै दुकाळै ॥

---

1 सुवर्ण । 2 सम्पत्ति, धन । 3 मृत्युको प्राप्त हुग्रा, मर गया । 4 कीर्ति । 5 मर गया । 6 वृक्ष । 7 प्राप्त होता है । 8 उत्पत्ति, पैदाइश । 9 खाया जाता है, ख्वाहिश । 10 (१) दिन, (२) दान । 11 रक्षा करने वाला । 12 रोकने वाला, मारने वाला । 13 शत्रु । 14 दे दी । 15 भागते हुग्रोंको । 16 दीन, गरीव ।

रिण खेत पिसण[1] केहि राखिया कह्नि काय कवि पात्र कहि ।
अभिनमो कन्न दानेसवर, रायसिंघ विवनोम कहि ॥ ४

कुण चारण कुण चंड, कवण वंभण[2] वंभेसुर ।
कुण जोगी कुण जती, कवण दरवेस दिगंवर ॥
कुण पंडित कुण पात्र, कवण खंत्री[3] परदेसी ।
जाचेवा जेतल नट्टनीय, भटनीय निवेसी ॥
रिण हुवौ सीस दुहिला रहै, रुळियो नह चूकै रिणां ।
हिंदवै[4] राव विवनै हुवै, मोटो छैहो मांगणां ॥ ५

क हिम[5] मेर[6] डोल है, क हिम जळहळ है सायर[7] ।
क हिम चंद लुक्कि है, क हिम छळहळ देवायर[8] ॥
क हिम वीस ब्रहमंड, गाढ[9] छांडै हेकागळ[10] ।
क हिम सपत पाताळ.चळी जय हूंत अणच्चळ[11] ॥
खड़हड़ै इंद्र काळंतरै[12], पड़ै रुद्र ब्रहमा पड़ै ।
रूपक[13] नाम रायसिंघरो, तोही जरा नह आमड़ै[14] ॥ ६

वित्त सु मारग खरचियो, चित्त लीणौ[15] हर पाए[16] ।
जिसो वेद वाचियो, तिसी परसिद्धी पाए ॥
सुरापांन नही कियो, कदै परनार न रत्तो ।
सयल धरम साचवै, परम दएहि संप्रत्तो[17] ॥
आखंत[18] अद्द[19] तुवर अधिक अपछर[20] आरत्ती करै ।
सुर भुवण राव प्रवाड़मल[21], जयजयकार उवच्चरै[22] ॥ ७

॥ इति सीरोहीरा धणियां देवड़ांरी ख्यात संपूर्णम् ॥
लिखत वीठू पनोसीह थळिरो[23] ॥ वाचै जिण सिरदारसू
जैश्रीरुघनाथजीरी वंचावसी[24] ।

---

1 शत्रु । 2 ब्राह्मण । 3 साधु । 4 हिन्दुस्थान । 5 (१) कभी, (२) यदि । 6 सुमेरु पर्वत । 7 सागर । 8 सूर्य, दिवाकर । 9 शक्ति । 10 एक बार । 11 पर्वत । 12 समय पा कर । 13 काव्य-कीर्ति । 14 मिटना, नाश होना । 15 लीन । 16 पांव । 17 प्राप्त हुआ । 18 कहता है । 19 विरुद्ध । 20 अप्सराएं । 21 जोरावर, प्रवाडे करने वाला वीर । 22 उच्चारण करते है । 23 सीहथलके वीठू पन्ना द्वारा लिखित । 24 जो महानुभाव इसको पढें उनको 'जयश्री रघुनाथजीकी' मालूम हो ।

अथ भायलां रजपूतांरी ख्यात लिख्यते

पंवारांरी पैंतीस साख, त्यां मांहे एक साख भायलांरी । भायलांरो माथासरो गांव रोहोसी मगरा नीचैवळी छै तठै नै सिवांणचीनू[1] ।

१ महारिख रिखेस्वर ।
२ साचर महारिखरो ।
३ उत्तमरिख ।
४ पदमसी ।
५ सजन भायल ।

१ सजन भायल पदमसीरो, वडो रजपूत हुवो । सजनरै चांपा सीधलरी वैर देवड़ी चांपानूं छोड़ सजनरै घरै आय पैठी[2] । वांसाथी चांपो आयो[3] । सजन देवड़ी सूतां ऊपर, तरै देवड़ीरी चोटी नै छुरी सजनरी छाती ऊपर मेल गयो[4] । सवारे सजन वांसै चढ़नै आपड़ियो[5] । माहोमाह लड़ मुवा । दोनो ही अमल[6] खायनै, सजन चांपानूं लोह कियो, चांपै सजननूं लोह कियो । वेऊं मुवा[7] । देवडी वेवांहो वांसै वळी[8] । सिवांणै सजनरी गिडी छै[9] । सजन, राव सातळरो दोहीतरो[10] अलावदी पातसाहसू मिळ सिवांणो लेरायो ।

२ रांणो रावळो सजनरो, राव सोमरो दोहीतरो[11] । तिण अलावदीननू मिळनै गढ लियो । पछै पातसाहजी सिवांणो रावळानू हीज दियो । पछै वळे पातसाह रावळानू मारियो[12] ।

---

1 भायलोंका मुख्य गांव रोहीसी पहाडीकी नीचाईमे है वहा और मारवाडकी सिवानेकी पट्टीमे । 2 चांपा सीधलोकी स्त्री चांपाको छोड कर सजनके घरमे आ घुसी । 3 पीछेसे चांपा आया । 4 रख गया । 5 प्रात सजनने उसके पीछे चढ कर उसे पकड लिया । 6 अफीम । 7 दोनो मर गये । 8 देवडी दोनोहीके पीछे जल कर सती हुई । 9 सिवानामे सजनकी गढी है । 10 दोहिता । 11 राणा रावळा सजनका बेटा और राव सोमका दोहिता । 12 जिसने अल्लाउद्दीनसे मिल कर सिवानेका गढ लिया, जिसको बादमे बादशाहने सिवाने रावळेको ही दे दिया किन्तु पीछे बादशाहने रावळेको मरवा डाला ।

नोट—यहा सजन भायल से भायल राजपूतोकी वंशावली दी गई है। नामोके पूर्वकी सख्या, सजनके पीछेकी वंशानुक्रम सख्या है ।

३ सिलार रावळारो[1] ।
४ जैसिंघ सिलाररो ।
५ वीको जयसिंघरो ।
६ वीरम वीकारो ।
७ रतनो वीरमरो ।
८ भुजबळ रतनारो ।
९ सांकर भुजबळरो ।
१० सादूळ सांकररो । गांव मौड़ी पटै[2] ।
११ सांवळो ।
१२ देईदास ।
११ सांव्रतसी, सादूळरो ।
११ रायसिंघ सादूळरा ।
१० दुरगो सांकररो । रेवड़ै कांम आयो[3]।
११ जैतो ।
१२ रांमसिंघ ।
१२ रायसिंघ ।
१० राव वणवीर सांकररो राव चंद्रसेणरै राज सोनिगरा थलूडै भूविया तठै कांम आयो[4] ।
१० वैरसल सांकररो । घुघरोट ऊपर जाळोररो साथ आयो तठै कांम आयो[5] ।
१० डूगरसी सांकररो ।
९ कलो भुजबळरो ।
१० गोयंद ।
११ ठाकुरसी ।

---

1 सिलार रावळेका पुन । 2 सिवानेके पासका मवडी गांव साकरके बेटे सादूलके पट्टेमें । 3 साकरका बेटा दुर्गा रतवडेकी लडाईमे काम आया । 4 साकरका बेटा राव वणवीर, राव चन्द्रसेनके राज्य-कालमे जब सोनिगरा चौहानोने थलूडे गांव पर आक्रमण किया उसमे काम आ गया । 5 साकरका बेटा वैरसल, जालोरकी सेना घूघरोट ऊपर चढ आई तब काम आया ।

११ खीवो ।

११ रामसिंघ ।

९ दलो भुजबळरो । मौड़ी कांम आयो ।

९ सिखरो भुजबळरो । जाळोर कांम आयो ।

११ पतो सिखरारो । आसकरण उग्रसेन मारियो तठै कांम आयो[1] ।

११ मानो ।

९ कांधळ भुजबळरो ।

९ मूजो भुजबळरो ।

४ मालो सिलाररो । मालानू खोहराव (खोह) रै भाई मारियो[2] ।

५ अमरो मालावत । माला साथै मारियो ।

६ साहुर अमरारो ।

७ वरसिंघ । जैतमालोतांसूं वेढ हुई तठै मारांणो[3] ।

८ गोयंद । मादडी सीरोहीरो साथ जैतमालोतां ऊपर आयो तठै कांम आयो[4] ।

९ खीदो गोयंदरो । जाळोररो खांन घूंघरोट ऊपर आयो तठै कांम आयो[5] ।

१० जैसो खीदारो ।

११ कचरो जैसारो । अरजियांणै वसै[6] ।

१२ कांधळ कचरारो । अरजियाणै[7] ।

१२ रामसिंघ कचरारो । मूठली वसै[8] ।

१२ तोगो कचरारो ।

१२ पचाइण कचरारो।

---

1 आसकरणने उग्रसेनको मारा वहा सिखराका बेटा पत्ता भी काम आ गया। 2 माला सिलारका बेटा । मालाको खोहरा(?)के भाईने मारा । 3 वरसिंह, जैतमालोतोंसे लडाई हुई वहा मारा गया। 4 गोयंद, मादडीमे सिरोहीकी सेना जैतमालोतों पर चढ कर आई उसमे काम आया। 5 गोयंदका बेटा खीदा, जालोरका खान घूघरोट पर चढ कर आया उस लडाईमे काम आया। 6 जैसाका बेटा कचरा अरजियाणेमें रहता है। 7 कचराका बेटा कांधल अरजियाणे गावमें रहता है। 8 रामसिंह कचरेका बेटा, मूठली गावमे रहता है।

१२ जसो कचरारो ।
१२ ठाकुर कचरारो ।
१२ मेघो कचरारो ।
११ ऊदो जैसारो ।
१२ केसो ।
११ सूजो जैसारो ।
१२ नारायण ।
१२ दूदो (देदो) ।
११ जीवो जैसारो ।
१२ रायसिह ।
११ ईसर जैसारो ।
१० हेमराज खीदावत । गूढा ऊपर तुरक आया तठै मारांणो[1] ।
९ सकतो गोयंदरो ।
५ वीरम मालारो । घूघरोट माहे भायां मारियो[2] ।
६ रावत सोभो । कुडळरै पंवारै घूघरोट मारियो[3] ।
७ राजधर । रावत सोभा साथ कांम आयो[4] ।
८ वैणो राजधररो ।
९ रतनो वैणारो । घूघरोट पटै थी । मुं० नारायणरा बेटा मारिया था तिण वैर माहे करण पीथावत मारियो । राजा भीव राणावतनू जाळोर, तद रतनो जाळोर दिसी जाइ रह्यो थो तठै करन जाय मारियो[5] ।
१० डूगरसी स० १६८० सेवटै मारियो[6] ।

---

1 खीदेका बेटा हेमराज, गुढे ऊपर तुर्क चढ कर आये तब मारा गया । 2 मालाके पुत्र वीरमको भाइयोने घूघरोट गाँवमे मार दिया । 3 रावत सोभाको कुडल गाँवके पँवारोने घूघरोट गाँवमे मारा । 4 राजधर अपने पिता सोभाके साथ काम आया । 5 वैणाका बेटा रतना, जिसके पट्टेमे घूंघरोट गाँव था । मुहणोत नारायणके बेटोको इसने मारा था, उस वैरके वदलेमे पीथाके पुत्र करणने इसको मार दिया । राजा भीम राणावतका जब जालोर पर अधिकार था, तब रतना जालोरकी ओर जा कर रह गया तो वहा जा कर करणने इसको मारा । 6 सेवटे राजपूतोने डूंगरसीको स० १६८० मे मारा ।

१० जैमल रतनावतनूं मुं० सुंदरदास मारियो[1]।

११ अमरो जैमलरो।

११ दूदो जैमलरो।

१० सिखरो रतनारो। सं० १६८२ ब्रहांनपुर मुवो[2]।

१० अमरो रतनारो। तिमरणीरी मुहिममे चोरी की तद राजा गजसिंघ गरदन मरायो[3]।

४ सूजो सिलाररो। तिणरो वैसणो गांव पीपलोण[4]।

५ कूभो सूजारो।

६ वीरम कूभारो। वीरम चांपा चहुवांणरी वैर सवेरी आंणी तिणमे मारियो[5]।

७ नाथो वीरमरो।

८ राजसी नाथारो। भायां परो काढियो, तरै रांणारै देसमे गयो थो तठै मारियो[6]।

९ रांमदास राजसीरो।

१० मदो रामदासरो। गांव पीपलोण[7]।

११ किसनो

१२ स्यांमसिंघ।

११ पतो मदारो।

१२ जसो।

१२ उरजन।

११ कमो मदारो।

१२ सिवो।

१२ माधो।

---

1 रतनाके पुत्र जयमलको मुहणोत मुन्दरदासने मारा। 2 रतनेका बेटा सिखरा, स० १६८२मे बुरहानपुरमे मरा। 3 रतनेका बेटा अमरा, इसने तिमरणीकी मुहिममे चोरी कर ली तब राजा गजसिंहने इसकी गर्दन कटवा कर मरवा दिया। 4 सिलारका बेटा सूजा, इसका वंठना (जागीर) पीपलूण गांवमे। 5 कुभाका बेटा वीरम। वीरम चापा चौहानकी विवाहित स्त्रीको ले आया जिसमे मारा गया। 6 नाथेका बेटा राजसी, भाइयोने इसको निकाल दिया, तब राणाके देश (मेवाड) में चला गया, वहां मारा गया। 7 रामदासका बेटा मद्दा, गांव पीपलूणमे रहता है।

११ मांनो मदारो । मुं० सुंदरदास मारियो[1] ।
१२ पांचो मांनारो ।
७ वीसो वीरमरो ।
८ केलण वीसारो । राव मालदेरो चाकर थो । भूंडूंथी पाछो छांडे नै जाळोर गयो थो । जाळोर ऊपर रावजीरी फोज आई तठै प्रोळ हाथो दे लड मुवो[2] ।
९ कमो केलणरो । माहोमांहि मारियो[3] ।
८ देवो वीसारो । बेटा ३ कमै मारिया[4] ।
९ सिवो ।
९ रायसल ।
९ वीदो ।
९ रांमदास देवारो । रा० पतो नगावतरै कांम आयो नाडूल[5]।
८ करन वीसावत ।
९ सूजो करणरो । कमै मारियो[6] ।
६ भागस सकतारो ।
७ मेहो भागसरो ।
८ रांमदास मेहारो । राव चंद्रसेणरा विखा मांहे गढ रह्यो । रा० दासाजीरो चाकर थो[7] ।
९ सेखो रामावत ।
१० परबत सेखारो । गैर चाकर थको । अजमेर देईदासजीरो चाकर थको कांम आयो[8] ।

---

1 मद्देका बेटा माना, मुहणोत सुंदरदासने मारा । 2 वीसाका बेटा केलण । यह राव मालदेवका चाकर था । भूंडूको छोड कर यह जालोर चला गया था । जालोर पर रावजीकी फौज चढ कर आई तब वहा पोलमें हाथ मार कर (जूझ कर) लड मरा । 3 केलणका बेटा कम्मा, जो परस्परकी लडाईमें मारा गया । 4 वीसाका बेटा देवा, इसके तीन बेटोको कम्माने मार दिया । 5 देवाका बेटा रामदास, नाडोलमें नागाके बेटे पत्ताके लिये काम आया । 6 करणका बेटा सूजा, जिसको कम्मेने मारा । 7 मेहाका बेटा रामदास, यह राव दासाजीका चाकर था । राव चन्द्रसेनके आपत्कालमें गढमें (रक्षक) रहा था । 8 पर्वत सेखाका बेटा, किसीका चाकर नही होते हुए भी अजमेरमे देवीदासजीका चाकर रह कर काम आया ।

११ वीरम ।
९ सतो रांमावत ।
१० पीथो, मीठोड़ै वसै ।
९ कलो रांमावत ।
१० सूरो कलावत । कल्यांणदास भाखरसीयोतरै[1] ।
९ सादूळ रांमावत । भाकरसी दासावतरै[2] ।
९ ऊदो रांमावत । वाळक थको मुवो[3] ।
३ मारू रांणा रावळरो ।
४ वैरसल मारूरो ।
५ करण वैरसलरो ।
६ त्रिभणो करणरो ।
७ पूनो त्रिभणारो ।
८ वीसो पूनारो । जाळोर कांम आयो[4] ।
९ देवराज वीसारो ।
१० जैमल ।
१० तेजमाल ।
११ पूरो ।
११ मांनो ।
९ पाचो वीसारो । कल्यांणदासजी साथै कांम आयो[5] ।
१० वैणो ।
११ जोगोदास । ११ पीथो । ११ आसो । ११ केसो ।
९ रतनो वीसारो ।
९ धनो वीसारो ।
९ कुभो वीसारो । घाणसेचा जूंझिया तठै काम आयो[6] ।
१० डूगरसी ।

---

1 सूरा कल्लेका बेटा, भाखरसीके बेटे कल्याणदासके पास था। 2 सादूल रामदासका बेटा, दासाके बेटे भाखरसीके पास था। 3 रामदासका बेटा ऊदा, बचपनहीमे मर गया। 4 पूनाका बेटा वीसा, जालोरके युद्धमे काम आया। 5 वीसाका बेटा पाचा, कल्याणदासजीके साथ काम आया। 6 वीसाका बेटा कुंभा, धाणसेचा जूझ कर मरे वहां काम आया।

११ मांनो मदारो । मुं० सुंदरदास मारियो[1] ।

१२ पांचो मांनारो ।

७ वीसो वीरमरो ।

८ केलण वीसारो । राव मालदेरो चाकर थो । भूंडूंथी पाछो छांडै नै जाळोर गयो थो । जाळोर ऊपर रावजीरी फौज आई तठै प्रोळ हाथो दे लड़ मुवो[2] ।

९ कमो केलणरो । माहोमांहि मारियो[3] ।

८ देवो वीसारो । बेटा ३ कमै मारिया[4] ।

९ सिवो ।

९ रायसल ।

९ वीदो ।

९ रांमदास देवारो । रा० पतो नगावतरै कांम आयो नाडूल[5]।

८ करन वीसावत ।

९ सूजो करणरो । कमै मारियो[6] ।

६ भागस सकतारो ।

७ मेहो भागसरो ।

८ रांमदास मेहारो । राव चंद्रसेणरा विखा मांहे गढ रह्यो । रा० दासाजीरो चाकर थो[7] ।

९ सेखो रामावत ।

१० परबत सेखारो । गैर चाकर थको । अजमेर देईदासजीरो चाकर थको कांम आयो[8] ।

---

1 मद्देका बेटा माना,मुहणोत सुदरदासने मारा । 2 वीसाका बेटा केलण । यह राव मालदेवका चाकर था । भूंडूको छोड कर यह जालोर चला गया था । जालोर पर रावजीकी फौज चढ कर आई तब वहा पौलमे हाथ मार कर (जूझ कर) लड मरा । 3 केलणका बेटा कम्मा, जो परस्परकी लडाईमे मारा गया । 4 वीसाका बेटा देवा, इसके तीन बेटोको कम्माने मार दिया । 5 देवाका बेटा रामदास, नाडोलमे नागाके बेटे पत्ताके लिये काम आया । 6 करणका बेटा सूजा, जिसको कम्मेने मारा । 7 मेहाका बेटा रामदास, यह राव दासाजीका चाकर था । राव चन्द्रसेनके आपत्कालमे गढमे (रक्षक) रहा था । 8 पर्वत सेखाका बेटा, किसीका चाकर नही होते हुए भी अजमेरमे देवीदासजीका चाकर रह कर काम आया ।

११ वीरम ।

६ सतो रांमावत ।

१० पीथो, मीठोड़ै वसै ।

६ कलो रांमावत ।

१० सूरो कलावत । कल्यांणदास भाखरसीयोतरै[1] ।

६ सादूळ रांमावत । भाकरसी दासावतरै[2] ।

६ ऊदो रांमावत । वाळक थको मुवो[3] ।

३ मारू रांणा रावळरो ।

४ वैरसल मारूरो ।

५ करण वैरसलरो ।

६ त्रिभणो करणरो ।

७ पूनो त्रिभणारो ।

८ वीसो पूनारो । जाळोर कांम आयो[4] ।

६ देवराज वीसारो ।

१० जैमल ।

१० तेजमाल ।

११ पूरौ ।

११ मांनो ।

६ पांचो वीसारो । कल्यांणदासजी साथै कांम आयो[5] ।

१० वैणो ।

११ जोगोदास । ११ पीथो । ११ आसो । ११ केसो ।

६ रतनो वीसारो ।

६ धनो वीसारो ।

६ कुभो वीसारो । घांणसेचा जूझिया तठै कांम आयो[6] ।

१० टूगरसी ।

---

1 सूरा कल्लेका बेटा, भाखरसीके बेटे कल्याणदासके पास था। 2 सादूल रामदासका बेटा, दासाके बेटे भाखरसीके पास था। 3 रामदासका बेटा ऊदा, बचपनहींमे मर गया। 4 पूनाका बेटा वीसा, जालोरके युद्धमे काम आया। 5 वीसाका बेटा पाचा, कल्याणदासजीके साथ काम आया। 6 वीसाका बेटा कुभा, घाणसेचा जूझ कर मरे वहां काम आया।

८ सिवो पूनावत । कुंडळ भायले चूक कर मारियो[1] ।
८ आसो पूनारो । भायले चूक कर मारियो[2] ।
८ चांपो पूनारो ।
९ सांकर चांपारो ।
१० नरसिंघ ।
११ रामसिंघ ।
७ देवो त्रिभणारो ।
७ जसो त्रिभणारो ।
८ चोहथ, कुंडळ रह्यो[3] ।
४ आपमल सूरारो ।
५ वीसो आपमलरो ।
६ सांवतसी वीसारो ।
७ भदो सांवतसीरो ।
८ वीको भदारो ।
९ भारमल वीकावत । पांचलै ऊपर फौजां आई तठै कांम आयो[4] ।
१० सूजो भारमलोत । भागवै रहै ।
११ तोगो । ११ विजो । ११ कचरो ।
१० सुरतांण भारमलरो ।
११ कानो । ११ मेहरो । ११ झांझो ।
७ सेखो सांवतरो ।
८ ठाकुर सेखारो । तिणनूं उधरण गैहलोत मारियो[5] ।
९ वीसळ ठाकुररो । दहियां मारियो[6] ।
१० मांनो वीसळरो । रावळे चाकर थो । ब्रहांनपुरमें मुवो[7] ।

---

1 पूनाका बेटा सिवा, जिसको कुंडलके भायलोने दगा करके मारा। 2 पूनाका बेटा आसा, जिसको भायलोने दगा करके मारा। 3 चोहथ कुंडलमे जाकर रहा। 4 वीकाका बेटा भारमल, पांचले गांव पर फौजें चढ कर आई वहां मारा गया। 5 सेखाका बेटा ठाकुर, उसको उधरण गहलोतने मारा। 6 ठाकुरका बेटा वीसल, इसे दहिया राजपूतोने मारा। 7 वीसलका बेटा माना, यह रावले चाकर था और बुरहानपुरमे मरा।

११ डूंगर मांनारो । राघोदास महेसोत मारियो भागवै[1] ।
११ दुदो मांनारो ।
११ जसो ।
११ महेस ।
१० सहसमल वीराळरो ।
१० कलो वीराळरो ।
१० वीदो विसळरो ।
१० रूपो ।
८ तेजसी सेखारो ।

॥ इति भायलांरी ख्यात सम्पूर्णम् । लिखतं पना ॥

••

1 मानाका बेटा डूंगर, इसे महेसके बेटे राघोदासने भागवे गांवमें मारा ।

८ सिवो पूनावत । कुंडळ भायले चूक कर मारियो[1] ।
८ आसो पूनारो । भायले चूक कर मारियो[2] ।
८ चांपो पूनारो ।
९ सांकर चांपारो ।
१० नरसिंघ ।
११ रामसिंघ ।
७ देवो त्रिभणारो ।
७ जसो त्रिभणारो ।
८ चोहथ, कुंडळ रह्यो[3] ।
४ आपमल सूरारो ।
५ वीसो आपमलरो ।
६ सांवतसी वीसारो ।
७ भदो सांवतसीरो ।
८ वीको भदारो ।
९ भारमल वीकावत । पांचलै ऊपर फौजां आई तठै कांम आयो[4] ।
१० सूजो भारमलोत । भागवै रहै ।
११ तोगो । ११ विजो । ११ कचरो ।
१० सुरतांण भारमलरो ।
११ कानो । ११ मेहरो । ११ झांझो ।
७ सेखो सांवतरो ।
८ ठाकुर सेखारो । तिणनूं उघरण गैहलोत मारियो[5] ।
९ वीसळ ठाकुररो । दहियां मारियो[6] ।
१० मांनो वीसळरो । रावळै चाकर थो । ब्रहांनपुरमें मुवो[7] ।

---

1 पूनाका बेटा सिवा, जिसको कुंडलके भायलोंने दगा करके मारा। 2 पूनाका बेटा आसा, जिसको भायलोंने दगा करके मारा। 3 चोहथ कुंडलमें आकर रहा। 4 वीकाका बेटा भारमल, पांचले गांव पर फौजें चढ कर आई वहीं मारा गया। 5 सेखाका बेटा ठाकुर, उसको उघरण गहलोतने मारा। 6 ठाकुरका बेटा वीसल, इसे दहिया राजपूतोंने मारा। 7 वीसलका बेटा माना, यह रावले चाकर था और बुरहानपुरमें मरा।

११ डूंगर मांनारो । राघोदास महेसोत मारियो भागवै[1] ।
११ दुदो मांनारो ।
११ जसो ।
११ महेस ।
१० सहसमल वीसळरो ।
१० कलो वीसळरो ।
१० वीदो विसळरो ।
१० रूपो ।
८ तेजसी सेखारो ।

॥ इति भायलांरी ख्यात सम्पूर्णम् । लिखतं पना ॥

**

1 मानावा बेटा डूगर, इसे महेशके बेटे राघोदासने भागवे गाँवमें मारा ।

वात चहुवांणां सोनगरांरी राव लाखणोतरांरी[1]

१ राव लाखणनूं नाडूल देवी आसापुरी तूठी[2]। नाडूलरो राज दियो। तरै देवीसूं अरज की, "म्हारै घोड़ा नहीं।" तरै देवी कह्यो– "फलांणै दिन सोवतरा घोडा छूटनै आपथी आप आवसी[3]।" पछै घोड़ा १३००० ढळनै नाडूळ आया[4]। वांसै घोड़ांरा धणी आया; तरै देवी घोडांरा रंग फेरिया[5]। पछै गो देखनै पाछा फिरिया[6]।

राव लाखणरा बेटा—

२ वीसळ लाखणरो। तिणरा हाडोतीनूं छै[7]।
२ आसल लाखणरो। जिण आसल कोट करायो।
  आसिल समुद्र मारै पुन्य हेत तळाव करायो[8]।
२ जोजल लाखणरो। जिण जोजावर वसाई[9]।
२ जैत लाखणरो। जिण जैतकोट करायो[10]।
१ बलसोही।
३ महिंद्रराव।
४ आलण।
५ जोदराव।
६ आसराव। नाडूल सिकार रमतो हुतो सु वडो दूठ राजवी हुवो[11]। तिणनूं देवी वीहाडण लागी, सु आसराव वीहै नहीं[12] नै वांण हिरणनूं साधियो हुतो सु वाह्यो[13]; तरै देवी खुसी हुई नै आसरावनूं कहण लागी—"तोनूं हूं

1 राव लाखणके वंशज सोनगरा चौहानोंकी बात। 2 नाडोलकी देवी आशापुरी राव लाखण पर प्रसन्न हुई। 3 अमुक दिन जमैयनके घोडे छूट कर अपने आप आ जायंगे। 4 फिर १३००० घोडे छूट कर नाडोल आ गये। 5 घोडोंके मालिक पीछे आये तो देवीने घोडोंके रंग बदल दिये। 6 वे लोग देख कर वापिस लौट गये। 7 वीसलका बेटा लाखण, जिसके वंशज हाडोतीमें है। 8 लाखणका बेटा आसल, जिसने नाडोलमें आसलकोट बनवाया और अपनी माताके पुण्यार्थ आसिलसमुद्र नामका तलाव बनवाया। 9 लाखणका बेटा जोजल, जिसने जोजावर नामका गांव बसाया। 10 लाखणका बेटा जैत, जिसने जैतकोट बनवाया। 11 आसराव बड़ा जबरदस्त राजा हुआ। वह एक दिन नाडोलमें शिकार खेलता था। 12 उसको देवी डराने लगी, परन्तु आसराव डरे नहीं। 13 चलाया।

तूठी; तूं जांणै सु मांग[1]।" तरै आसराव देवीरो रूप देखनै जांणियो[2], "इसडी वैर व्है तो भली[3]।" तरै देवीनू कह्यो–"तूं म्हारै वैर हुय घरे रहि[4]।" तरै वाचा छळ आई[5]। तरै कह्यो–"अतरी वात हूं पहली कहूं छू, कोई मोनूं जांणसी तरै हूं परी जाईस[6]" यूं कहिनै देवो घरे आई। तिणरै पेट, कहै छै च्यार बेटा हुवा[7]—

७ मांणकराव। ७ मोकळ। ७ आल्हण। ७ · · · हुवा।

८ तिणरो बेटो केलण हुवो॥ ८॥

९ तिणरे कीतू वडो रजपूत हुवो। तद जाळोर पंवार कुंतपाळ धणी हुतो। नै सिवाणै पिण पंवार वीरनारायण हुंतो। नै कुतपाळरै प्रधान दहिया हुता। तिणरै भेद कीतू जाळोर लियो। सिवांणो ही लियो[8]।

१० समरसी रावळ हुवो।

११ अरिसीह समरसीरो, जाळोर धणी हुवो।

१२ उदैसीह अरसीरो जाळोर पाट। तिण ऊपर संवत् १२६८ माह सुदि ५ जलालदी सुरतांण जाळोर ऊपर आयो हुतो सु भागो[9], तिण साखरो दूहो फूदै कांचडरो कह्यो[10]—

"सुदर सर असुरह दळै, जळ पीयो वैणेह।
उदै नरयंद काढियो, तस नारी नयणेह॥ १॥"

१३ जसवीर उदयसीरो।

१४ करमसी जसवीररो।

१५ रावळ चाचगदे करमसीरो। चाचगदे सूधारै भाखरे देहुरो

---

1 तेरे पर मैं प्रसन्न हुई, तेरी इच्छा हो सो माग ले। 2 जाना, विचार किया। 3 ऐसी पत्नी हो तो ठीक। 4 तू मेरी पत्नी हो कर मेरे घरमे रह। 5 तब वचनबद्ध हो गई। 6 कोई मुझे पहचान लेगा तो मैं चली जाऊगी। 7 कहा जाता है कि उसके चार बेटे हुए। 8 उसके भेद बता देनेसे कीतूने जालोर और सिवाना दोनो ले लिये। 9 जिस पर स० १२६८के माघ शु० ५को सुलतान जलालुद्दीन जालोर पर चढ कर आ गया पर हार कर भाग गया। 10 फूदे काचडका कहा हुआ उसकी साक्षीका यह दोहा है।

चावंडाजीरो करायो । संमत १३१२[1] ।

१६ सांवतसी रावळ चाचगदेरो ।

१६ चंद्रावळ सांवतसी चाचगदेरो ।

२ राव कानड़दे सांवतसीरो, जाळोर धणी हुवो । दसमों साळगरांम गोकळीनाथ कहांणो । संमत १३६८ जाळोररै गढरोहै अलोप हुवो[2] ।

३ कँवरांगुर वीरमदे, पातसाहसूं रावळ कांनड़दे वांसै दिन ३ वाज मुवो[3] ।

२ मालदे मूंछाळो सांवतसीरो वेटो गढ़रो है । जाळोररै रावळ कांनड़दे बीज राखण वास्तै काढियो[4] । पछै पातसाह रावळ कांनड़दे वीरमदेनै मारनै गढ़ लियो । पछै मालदे घणा विगाड़ किया । फोजां वांसै सिवांणै खांन लागो रह्यो[5] । पछै देवी सैणी चारणी दिल्ली आई तरै मालदे ही देवी साथै दिल्ली आयो । पछै देवी सैणी विमर मांहै पैठी तठै मालदे ही विमर मांहे साथै पैठो[6] । आगै वहुली जोगणी[7] वैठी हुती तिण आपरा गळारो कांठलो १ जड़ावरो मालदेनूं दियो । पतर १ लोहीरो भर दियो[7] सु मालदे पिगो नहीं । जांणियो लोही छै । नै ओ अमृत हुतो सु थोड़ो सो मुहड़ै लगायो थो सु मूंछे लागो, तिणसू मूछ वधी, तिणथी मूछाळो मालदे कहांणो । पछै कांनड़देजी हुकम दियो, तरै

---

1 रावल चाचगदेवने मूंधा पहाड पर सं० १३१२में चामुंडादेवीका मंदिर बनवाया। (मारवाड राज्यके जालोर परगनेमें जसवंतपुराके पहाड़को सूंधा पहाड़ कहा जाता है, जिस पर पहाड काट कर यह मंदिर बनवाया गया है)। 2 राव कान्हडदे स० १३६८में जालोर गढरोहेके समय अलोप हो गया। यह दसवा शालिग्राम-गोकुलनाथ प्रसिद्ध हुआ। (कानडदे बड़ा वीर हुआ। प० पद्मनाभ कविने जालोर और सिवानेके इस युद्धके सबंधमें 'कान्हडदे प्रबंध' नामक एक प्रसिद्ध काव्यकी रचना की है)। 3 रावल कान्हडदेके बाद कुंवरांगुरु वीरमदे बादशाहसे तीन दिन लड़ाई करके मर गया। 4 मालदे मूछाळेको जालोरके गढरोहेके समय कान्हडदेने अपना वंश कायम रखनेके लिये अन्यत्र भेज दिया। 5 फौजोंके पीछे सिवानेका खान लगा रहा। 6 फिर देवी सैणीने गुफामें प्रवेश किया वहा मालदेव भी साथमें घुस गया। 7 रक्तका पात्र १ भर कर दिया। 8 इससे 'मूछाळा मालदे' कहा जाने लगा।

पातसाहजीसूं मिळियो। पातसाह माथै वीज पडी मु मालदे झटकासूं टाळी[1]। पछै पातसाह गढ चीतोड़ मालदेनूं दियो। वरस ७ मालदे भोगवियो। पछै मालदे चीतोड़ काळ प्राप्त हुवो[2]।

मालदेरा बेटा ३—

३ जैसो। ३ कीतपाळ। ३ वणवीर।

४ रिणधीर[3]

५ केलण। ५ राजधर।

६ डूंगो। ६ जैसो।

७ कांन। ७ वीसो। ७ देभो। ७ रायमल।

७ भोज। ७ भारमल। ७ नरो। ७ नगो।

राजधर रिणधीररो आंक ५, संवत १४८२ राव रिणमलसूं लड़ मुवौ[4]।

७ अरडकमल। ७ नाथु। ७ हरदास।

६ खीवो राजधररो।

६ दूदो राजधररो।

६ दलो।

६ भीखो।

६ राघो।

केलण रिणधीररो आंक ५।

६ करमचंद वडो दातार हुवो। सं० १४७९ राव रिणमलसूं लड़ मुवो।

७ सावत करमचंदरो।

७ जैसिंघ करमचदरो।

७ ससारचद।

७ मेथो।

---

1 बादशाहके उपर गिरती हुई बिजलीको मालदेने तलवारके झटकेसे दूर कर दिया। 2 फिर मालदे चित्तौडमे मृत्यु प्राप्त हुआ। 3 रणधीर जैसाका बेटा। 4 रणधीरका बेटा राजधर स० १४८२मे राव रिणमलसे लड कर मर गया।

४ रांणो वणवीररो । वडो रजपूत हुवो । जिणनूं कंवर वीरमदे ओळ पातसाह कनै राखनै आप आयो[1] । पछै वीरमदे दादासिर[2] आयो नही तरै पातसाहरै तोगो दीवांण थो तिणनूं कह्यो–"रांणनूं बेड़ी पहरावो ।" पछै रांणो तोगानूं दरगाहमें कटारीसूं मारनै घोड़े झाझै चढ़ कुसळ आयो[3] ।

५ लोलो रांणारो । जद राव रिणमल धणले रहै तद सोनगरै नाडूल परणियो[4] । पछै सोनगरै चूक कियो । राव रिणमल वैररो वेस कर सोनगरी काढ़ियो । पछै राव रिणमल सोनगरा १४० नाडूल मारनै कूवा मांहै नांखिया[5] । पछै तिण दावै घणा सोनगरा जठै हुता तठै मारिया[6] । एक लोलो भाटियांरै मूमांणै हुतो[7] । गरभसूं उगरियो हुतो[8] । पछै राव रिणमलनै भाटियां वैर भागो, राव जेसळमेर परणीजण गया हुता । पछै उठै रावळ नै राव सिकार रमण गया । तठै लोलो साथै वरस १२ डावड़ो थको हुतो[9] । तठै नाहरसूं धको हुवो । तठै और साथ सारो पाछो हुवो[10] । लोलै छोटीसी वरछी थी सु नाहरनूं इण छळ वाही, दांत ४ चौकैरा पाडनै गुदड़ीमे उकसी[11] । तरै राव रिणमल कह्यो– "ओ सोनगरो होय तिसडो छै[12] ।" तरै रावळ कह्यो–"और तो सोनगरा थे सोह[13] मारिया । ओ एक डावड़ो नांनाणै

1 जिसको कुंवर वीरमदे, बादशाहके पास अपने बदलेमे जामिन रख कर आप चला आया । 2 बील ऊपर । 3 फिर राणा, तोगा दीवानको बादशाहके दरबारमे कटारीसे मार कर और झटपट अपने घोडे पर चढ सकुशल आ गया । 4 जब राव रिणमल धणलेमे रहता था तब नाडोलके सोनगरोंके यहां विवाह किया था । 5 राव रिणमलको, उसकी पत्नी सोनगरीने स्त्रीका वेष पहना कर निकाल दिया । फिर राव रिणमलने नाडोलके १४० सोनगरोंको मार कर कूएमे डाल दिया । 6 फिर इस वैरके बदलेमे बहुतसे सोनगरोंको जहा वे थे वहीं मार दिया । 7 एक लोला भाटियोंके यहा ननसालमे रह गया था । 8 उस समय गर्भमे था इसलिये बच गया । 9 वहा साथमे बारह वर्षका लडका लोला भी था । 10 वहां और साथ वाले सब पीछे हट गये । 11 लोलेके पास एक छोटी वरछी थी जिससे नाहर पर इस प्रकार प्रहार किया कि नाहरके चौकेके चारो दात उखाडती हुई गुद्दीमे पार हो गई । 12 यह सोनगरा हो ऐसा प्रतीत होता है । 13 सब ।

आधांन हुतो सु बचियो छै[1]। पछै राव जेसळमेरथा[2] विदा हुआ, तरै लोलानूं रावळ कनासू मांगनै साथै ले आया। पछै अठै आंणनै राव जोधारी बेटी सुंदर परणायनै सीधळ नीवावतरी पाली उतारनै पटै दी[3]। तदसूं जोधपुररो चाकर हुवो। तठा पछै जोधपुररा धणियांरै वडे वडे कांमे सोनगरा आया[4]।

६ सतो लोलारो।

७ खीवो सतारो।

८ रिणधीर खीवारो।

९ अखैराज रिणधीररो। वडो दातार, वडो जूझार, वडो आखाड़सिध[5]। अखैराज सारीखां रजपूत थोड़ा हुसी। संमत १६०० पोस मांहे राव मालदे सूर पातसाहसूं समेळ वेढ[6] हुई तठै कांम आयो। राव मालदेरो दियो पालीरो पटो। रांणा उदैसिघनूं अखैराज बेटी परणाई हुती[7]। एक वार उदैसिघनूं वणवीर जोर दवायो, तरै रांणै उदैसिघ लिख अखैराजनूं मेलियो, कह्यो—"म्हारी मदत करजो।" तरै अखैराज रा० कूंपो मेहराजोत, भदो, कान्हो पंचाइणोत, रा० जैसो भैरवदासोत और ही घणो साथ ले मारवाडरो, अखैराज उठै गयो। पछै गांव माहोली वेढ की। वेढ अखैराज जीती। पछै उदैसिघनूं कुंभळमेर बैसांणियो[8]।

सोनगरा अखैराज रिणधीरोतरो परवार—

१० मानसिघ अखैराजरो।

१० भाण अखैराजरो।

१० उदैसिघ अखैराजरो।

---

1 यह एक लड़का अपनी ननसालमें गर्भमें था अतः बच गया है। 2 से। 3 फिर यहा ला कर राव जोधाकी बेटी सुंदरको ब्याह करके सिंधल नीवावतसे पाली छीन कर उसके नाम पट्टा कर दिया। 4 जिसके बाद सोनगरे जोधपुरके राजाओंके बड़े काम आये। 5 बहुत बलवान, रणक्षेत्रमें अपने स्थानसे पीछे पांव नही देने वाला, युद्ध विशारद। 6 लड़ाई। 7 ब्याही थी। 8 फिर उदयसिंहको कुंभलमेरमें पाट बिठाया।

१० भोजराज अखैराजरो ।

१० जैमल अखैराजरो ।

१० रतनसी अखैराजरो ।

मांनसिंघ अखैराजरो आंक १० तिणरो परवार जोधपुररै मांहै हुतो[1] । राव चंद्रसेणरै गढ़रोहै घणा हीड़ा किया[2] । संमत १६२१ चैत्र मांहे । पछै रांणैरै जाय वसियो[3] । पछै रांणै प्रतापनै कांम पड़ियो । मांनसिंघ संमत १६३२ हळदीरी घाटी वेढ हुई तठै कांम आयो[4] ।

११ जसवंत मानसिंघरो बडो दातार सिरदार हुवो । मोटा राजा रांणाजी कनासू बुलायनै जसवंतनूं पाली पटै दीवी । संमत १६४४ गांव २७सू पाली दीवी । पछै गांव ३० पटै दिया । सं० १६६५ अहमंदाबाद मांहै । जसवंतजी गांव देवीखेड़ो पालीरा पटारो थो सु मांगियो थो, सु गांव धनराज मांगळियानू थो; तरै कह्यो–"इणरै वदळै देस्यां ।" तरै जसवंतजी छांडनै रांणारै गया, उठै मुवा[5] ।

१२ वीरमदे जसवंतरो ।

१३ हरीसिंघ वीरमदेरो ।

१३ सांवळदास ।

१२ वाघ जसवंतरो ।

१३ भींव वाघरो ।

१२ माधोसिह जसवंतरो ।

१३ तेजसिंह । १३ विहारीदास । १३ कुसळसिंह ।

१२ केसरसिंह जसवंतरो ।

१२ भाखरसी जसवतरो ।

१३ गोकळदास ।

---

1 था । 2 राव चन्द्रसेनके गढरोहेके समय बहुत सेवा की । 3 बसा । 4 मानसिंह सम्वत् १६३२ मे हल्दीघाटीकी लडाई हुई वहा काम आया । 5 तब जसवत छोड़ कर राणाके पास चला गया और वही मरा ।

१४ नाहरखांन गोकळदासरो ।

१५ सवळो । १५ सत्रसाळ ।

१२ रांमचंद जसवंतरो ।

१२ जगनाथ जसवंतोत । संमत १६६७ रांणाजीरैंसूं आयो, तरै सिणगारी गांव १२ सूं वसी नै दी[1] । पछै सं० १६७७ पालीरो पटौ दियौ थो । पछै सं० १६६१ कँवर अमरसिंघजी साथै गयो तरै पाली उतरी[2] ।

१३ दलपत जगनाथोत ।

१४ प्रथीराज ।

१३ भोजराज जगनाथोत ।

१२ स्यांमसिंघ जसवंतरो । सं० १६७६ जोधपुररो गुढो पटै थो । सं० १६६७मे भाद्राजणरो पटो थो । वरस १ रह्यो ।

१३ सुजांणसिंघ । १३ जोध । १३ करन ।

१२ राजसिंघ जसवंतोत । सं० १६६६ रांणाजीरैंसूं आयो तरै कूडणो गांव ५सूं पटै दियो[3] । सं० १६७२ पालीरो पटो सूरजमल छांडियो तरै[4] दियो । पछै सं० १६७७ पालीरो पटो उतारनै जगनाथनूं दियो । पछै छांडिनै रायसिंघ सीसोदियारै रह्यो । पछै सं० १६६२ कछवाहे मारियो ।

१३ महासिंघ राजसिंघोत ।

१३ जगतसिंघ सोनेही पटै । उजेण घावे पड़ियो[5] । धोलपुर काम आयो ।

१३ दूरजणसिंघ ।

१३ सुजाणसिंघ । सोनेही पटै । पूनै मोत मुवो[6] ।

१० भाण अखैराजरो । रांणा उदैसिंघरै वास थो[7]; पछै

---

1 जसवतका बेटा जगन्नाथ स० १६६७ राणाजीके पाससे मारवाड चला आया तब बारह गावोंके साथ सिणगारी गाव वसीमे दिया। (वसी = एक प्रकारकी कर-मुक्त जागीरी)। 2 कुवर अमरसिंहके साथ चले जानेके कारण पाली उतार दी गई। 3 स० १६६६ मे राणाजीके यहासे चला आया तब पांच गांवोंके साथ कूडणा पट्टेमे दिया। 4 तब। 5 उज्जैनमे आहत हुआ। 6 पूनामे अपनी मौत मरा। 7 राणा उदयसिंहके यहा रहता था।

सहवाजखां कंवो कुंभळमेर ऊपर आयो, तद भांण कुंभळमेर कांम आयो। मोटो राजाजी भांणरी बेटी परणियो थो[1]।

११ नाराइणदास भांणोत। पैहली पातसाही चाकर थो। पछै मोटै राजाजी बुलायनैं भाद्राजणरो पटो सं० १६४१ दियो। पछै सं १६४५ सिरोही ऊपर गया तरै नाराइणदास राव सुरतांणनू खबर मेली[2], तिण वास्तै पटो छुड़ायो। पछै रांणारै वसियो। खोड़रो पटो दियो[3]।

१२ सांवतसी नाराइणदासोत।

१३ भीव रांणाजीरै कांम आयो।

१३ उरजण सांवतसीरो।

१३ प्रताप सांवतसीरो।

१३ सुजांणसिंघ सांवतसीरो।

१२ सातल नारायणदासोत। सं० १६८२ भाद्राजण गांव २१थी[4] पटै थो। सं० १६८३ नवसररो पटो गांव १० सू दियो। सं० १६८८ छांडियो।

१३ जैतसी सातलोत। सं० १६८६ जोधपुर आयो। नीवावत साथै साथ देनै देसमें मेलियो तठै कांम आयो[5]।

१३ जैसिंघ सातलोत।

१३ सूरसिंघ सातलोत।

१३ किसनसिंघ सातलोत।

१३ नाथो सातलोत।

१२ चत्रभुज नाराइणदासोत। वडो ठाकुर हुवो। पातसाही चाकर। पूरबमे जागीरी की। पखैरीगढ़ पटै[6]।

१३ गरीबदास चत्रभुजोत।

१२ प्रथीराज नाराइणदासोत। सं० १६७८ एहनळा पटै हुतो[7]।

---

1 मोटा राजा उदयसिहने भाणकी बेटीसे विवाह किया था। 2 खबर भेजी। 3 खोड गावका पट्टा कर दिया। 4 से, के साथ। 5 नीवावतके साथ सेना दे कर देशमे भेजा था, वहा काम आ गया। 6 नारायणदासका बेटा चतुर्भुज बड़ा ठाकुर हुआ। बादशाही चाकर, पूर्व (उत्तर प्रदेश) मे जागीरी भोगी। पखैरीगढ (खैरीगढ ?) पट्टेमे था। 7 सं० १६७८ मे ग्रहनला गाव पट्टेमे था।

पछै सं० १६८८ कुंडणो गांव पटै हुतो ।

१३ रामसिंघ ।

१२ मालदे नाराइणदासोत ।

११ केसोदास भांणोत ।

१२ माधवदास केसवदासोत । वडो रजपूत । सं० १६८४ भवरांणी पटै थी गांव १०[1] । पछै मुं० जैमलसूं पंवार जैसै खांनाजंगी, माधोदासरो चाकर मुं० जैमल मारियो, तरै उठासू छाड़ियो[2] । सं० १७०० वळै श्रीजीरै वसियो[3] । गूदवच पटै, रेख रु० १६०००)री[4] । सं० १७१४ रा वैसाखमे उजेण कांम आयो ।

१३ मुकुंददासनू गलणियो पटै । रेख रु० १६०००)[5] ।

१३ हरिसिंघ ।

११ कल्यांणदास भांणोत ।

१० उदैसिंघ अखैराजोत ।

११ सूरजमल सं० १६५७ पालीरो पटो सकतसिंघ भेळो हुतो[6] । सं० १६६५ सकतसिंघ मुवो तरै देवीदास भेळी दी[7] । पछै सं० १६७१ छांडियो । रांणारै वसियो[8] । सं० १६७३ वळै वसियो[9] । गांव ७ नवसरो पटै[10] । पछै सं० १६७४ देछू गांव ६ सू पटै ।

१२ देवीदासनू आधी पाली हुती ।

१२ वणवीर सं० १६७७ भवरी गांव २ पटै ।

---

1 स० १६८४मे १० गावोंके साथ भवराणी गाव पट्टेमे था । 2 माधोदासका चाकर पँवार जैसा जिसके साथ मुहता जैमलकी आपसी लड़ाई (शत्रुता) थी जिसने जैमलने उसको मार दिया, तव माधोदास जागीर छोड कर चला आया । 3 स० १७००मे पुन· श्री जीके (महाराजा जसवतसिंहके) पास आकर रहा । 4 रु० १६०००) की रेखका गूदोज पट्टेमे दिया । 5 मुकददासको रु० १६०००) की रेखका गलणिया गाव पट्टेमें दिया । 6 सं० १६५७मे सूरजमलको सकतसिंहके शामिल पालीका पट्टा था । 7 सं० १६६५मे सकतसिंह मर गया तव देवीदासके शामिल कर दी । 8 राणाके यहा आ कर रह गया । 9 स० १६७३ में पुन· यहा (मारवाडमे) आ कर रह गया । 10 सात गावोंके साथ नवसरा गाव पट्टेमे दिया ।

११ सकतसिंघ उदैसिंघोत । आघी पाली सूरजमल भेळी पटै हुतो । सं० १६६२ मुवो ।

१२ मुकंददास, धीगांणो सो सं० १६८५ भाद्राजणरो, दांमण जाळोररो पटै[1] ।

१० भोजराज अखैराजोत रा० कूंपा मैहराजोतरै वास हुतो । पछै कूंपाजीरै साथै कांम आयो[2] ।

११ सिंघ ।

१२ जसवंत, रा० दलपत राजसिंघोतरै वास हुतो । पछै भटनेर रासिगो हुतो । पछै भटनेर पातसाही फौजां घेरियो हुतो तठै कांम आयो[3] ।

१० जैमल अखैराजोत । बीकानेर वास । वाप, गांव रिणी निजीक पटै[4] ।

११ अचळदास ।

१२ केसोदास जाटवें मारियो ।

१२ प्रागदास । १२ बळभद्र । १२ अनिरुध ।

१३ जूझारसिंघ ।

११ सारंगदे जैमलरो ।

१२ नरहरदास ।

१० रतनसी अखैराजरो ।

११ कान्ह ।

१२ राम राय, जसवंत मानसिंघोतरै वास ।

१३ भगरो नारायन ।

वात सोनगरांरी

चोवीस साख चहुवाणांरी । तिण मांहे एक साख सोनगरा

1 मुकंददास बड़ा बहादुर, सं० १६८५ [illegible] [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]

जाळोररा धणी । इणँ पंवारांनूं मारनै जाळोर लियो। रावळ कांनड़दे सांवतसीरो जाळोर धणी हुवो। वडो महाराजा हुवो। गोकुळीनाथ श्रीठाकुरजीरो अवतार हुवो[1] । सु अलावदी पातसाह गुजरात ऊपर आयो[2] । गुजरातरो घणो लोग कैद कियो। सोरठ मांहै देवरो पाटण छै[3] । तठै सोमइयो[4] महादेव जोतलिंग[5] थो सु उपाड़नै[6] आलो[7] चांवां[8] मांहै वांधनै गाडै मांही घातियो[9] सु महादेव ठोड़थी[10] खिसै नही, तरै पातसाह आरंभरांम हठी पड़ियो[11] । पांच सौ जोड़ी वळदांरी गाडी वैलै रुखी करनै जोती[12] । महादेवरा लिंग मांहैथी आग भभक-भभक नीसरै छै[13] सु पांचसै सिका पांणीसूं लिंगनूं छांटता जाय छै[14] । वळद जूपै छै तिकै मरता जाय छै[15] । महादेव घणो ही करामात करै छै; पिण देवां ऊपरला दांणव[16], सु इतरै हठसूं कोस १ रोजीना महादेव सोमइयो नीठ खिसै छै[17] । सु यूं पातसाह लियां जाळोररै गांव सकरांणै डेरो हुवो[18] । महादेवरै किस्तरी बात सारी कानड़देजी सुणी छै[19] ।

वात सिंघावलोकिनी[20]

एक वांभण तापस कोई एक गंगाजीसूं कावड़[21] एक गंगोदकरी आंणनै[22] सोमइयै लिंग ऊपर चाढ़ै। यूं करतां उण वांभणनूं कावड़ां

---

1 रावळ कानड़दे श्री ठाकुरजी गोकुलनाथजीका अवतार हुआ। 2 बादशाह अलाउद्दीन गुजरात पर चढ कर आया। 3 सौराष्ट्रमे देवरो पाटण शहर है। ('देवरो पाटण' अर्थात् 'देव पट्टन', सोमनाथ पट्टन, प्रभास पट्टन, शिव पट्टन, आदि नामोंके साथ 'देव पट्टन' नाम भी इस नगरका विख्यात है।) 4 सोमनाथ। 5 ज्योतिलिंग। 6 उठा कर। 7 गीला। 8 चमड़ा। 9 डाला,रखा। 10 स्थानसे। 11 तब अपने निश्चय पर दृढ बादशाहने भी हठ पकड ली। 12 बहलीके रूपमें बना कर पांचसौ बैलोंकी जोडियें गाडीमें जोती। 13 निकलती है। 14 अत पांचसौ सक्के शिवलिंगको पानीसे छिडकते जाते हैं। 15 जो बैल गाडीमें जुतते हैं वे मरते जाते हैं। 16 परतु देवोंके ऊपरके दानव। 17 सो इतने हटसे भी नित्य एक कोस सोमनाथ महादेव बड़ी मुश्किलसे आगे खिसकते हैं। 18 सो इस प्रकार लाते हुए बादशाहका डेरा जालोर परगनेके गाव सकरानेमे हुआ। 19 कानड़देजीने-महादेवजीकी आपत्तिकी सब बात सुनी है। 20 इससे पूर्व, इससे सबधित घटी घटनाकी एक बात, सिंहावलोकन। 21 कांवर। 22 लाकर।

चाढतां वार ६ हुई; जु सोरंभजीरै घाटथी गंगोदक आंणनै देवरै पाटण सोमइयै ऊपर चाढ़ै[1], सु सातमी वार गंगोदक कावड़ भरी नै आंणतो हुतो[2] सु किणहेक सहर वटाउ थको[3] किणहेकरै चौतरै[4] उनरियो हुतो सु उणरी वैर[5] किणीहेक जिदासू हालती हुती[6], सु वा सासती[7] जिदारै जाती; सु उण दिन उणरो मांटी[8] कठैक हाळी[9] हुतो सु घरे आयो, सु तिण दिन जिदारै मोड़ेरो जांणी आयो[10], तरै जिदो उणसू रीसांणो[11], उणनू नैड़ी नावण दै[12], तरै उण कह्यो—"आज म्हारै मांटी घरे आयो, तिणहूं आज मोड़ेरी आई[13]।" तरै जिदे कह्यो—"तोनू मांटीरो इतरो[14] प्यार छै तो तू घरे जाय। थारो प्रेम थारा मांटीसूं कर।" तरै इण कह्यो—"मोनूं थे किणही सूल आवण दो[15]।" तरै जिदै कह्यो—"थारा मांटीरो माथो वाढ़नै मोनू आंण दै तो तोनू आवण दूं[16]।" तरै इण कह्यो—"मोनू क्यूहेक हथियार दो, ज्यूं हूं माथो वाढ़ लाऊं[17]।" तरै जिदारै छुरो १ मोटो छो सु जिदै दियो। इण साचांणी मांटी सूतारो माथो वाढनै जिदानूं आंण दियो[18]। तरै जिदै माथो देखनै कह्यो—"फिट रांड! थारो काळो मुंहड़ो; हूं तो थारो मन जोवतो थो; तूं रांड इसड़ा कांम करै[19]?" तरै रांडनै दुरकारी[20]। तरै पाछी आई; आयनै बांभण बारणै सूतो हुतो तिणरा लूगड़ा[21] मांहे छुरो नांखियो; नै बांभण सूता थकारैई उठारो लोही[22] लगायो। लूगड़ा पड़िया हुता त्यां ऊपर लोहीरा छांटा नांखिया; पछै घर मांहै पैस कूकवो कियो[23], जु म्हारो मांटी चोर मारियो

---

1 सोरों घाटमें गंगोदक ला कर देवपट्टनमें सोमनाथ पर चढ़ावे। 2 लाता था। 3 पथिकके रूपमें। 4 चबूतरे पर। 5 पत्नी। 6 किसी एक व्यभिचारीसे अनुचित संबंध था। 7 निरंतर। 8 पति। 9 खेतीके काममें नौकर, हल चलाने वाला। 10 सो उस दिन जारके पास देरसे जाना हुआ। 11 तब जार उससे नाराज हो गया। 12 उसको पास नहीं आने दे। 13 जिससे आज देरीसे आई। 14 इतना। 15 मुझे तुम किसी प्रकार आने दो। 16 तब जिनादासने कहा—'तेरे पतिका सिर काट कर मुझे ला कर दे तो मैं तुझे आने दूं'। 17 जिससे मैं सिर काट कर लाऊं। 18 इसने सचमुच ही सोते हुए अपने पतिका सिर काट कर जिदेको ला कर दे दिया। 19 रांड! तू ऐसा काम करती है? 20 तब रांडको धिक्कार करके निकाल दिया। 21 कपड़े। 22 रक्त। 23 पीछे घरमें घुस कर जोरसे रोने लगी।

जाय छै। कूकवो हुवो। सको लोक हावो सुणनै आयो[1]। रावळा चोकीदार तलार पिण आया[2]। पग जोया[3]। तरै चोकीदारै जोवतै-जोवतै ओ कावड़ वाळो वांभण लाधो[4]। ओ निचिंत सूतो हुतो। इणै लोहीरा छांटा दीठा[5], तरै उणनू भालियो[6]। पछै गुदड़ी मांहै छुरी नीसरी[7]। त्यां वळै गाढो झालियो[8]। तलार जाय राजानू गुदरायो[9]। इण इसडो कांम कियो, कासू सभारो हुकम हुवै छै[10]? तरै राजा कह्यो—"इणरा हाथ दोनू वाढो।" उण वांभणनू न क्यू उणै पूछियो, न क्यू इण कह्यो। चोकीदारै हाथ वाढ़िया[11]। ओ तो वळै वा कावड़ लेनै हालियो[12]। इणनूं महादेव ऊपर ब्रह्मतेज चढ़ियो[13]। मन मांहै विचारण लागो, "मै इण भांत सेवा की, महादेव ओ फळ दियो। हमरकै[14] देहरा मांहै कावड़रै मिस जाऊं। जायनै ऊपर एक भाटो नांखू[15]। पीडी भांजू[16]।" सु सोमइयारै देहुरै निजीक आयो[17]। त्या महादेव पैली पूजारानूं कह्यो—"फलांणियो वाभण क्रोध भरियो आवै छै[18] थे मांहि मत आवण दो।" तितरै ओ आयो[19]। उणै वरजियो[20], तरै उण वांभण महादेवरा पूजारानूं कह्यो—"मोनू क्यू वरजो छो[21]?" तरै कह्यो—"महादेवजी वरजियो छै।" तरै उण कह्यो—"थे महादेवनू पूछो, इसड़ी सेवा करतां म्हारा हाथ क्यू वढाया[22]?" तरै महादेव कहायो—"पैलै भव तू रजपूत थो[23],

---

1 सभी लोग हल्ला सुन करके आये। 2 राज्यके चौकीदार और कोतवाल भी आये। 3 खोज देखे। 4 तब चौकीदारोंको खोज करते-करते यह कावर वाला ब्राह्मण मिला। 5 इन्होने खूनके छींटे देखे। 6 तब उसको पकड़ा। 7 फिर उसकी गुदड़ीमे छुरी मिल गई। 8 उन्होने फिर उसे मजबूत पकड़ा। 9 कोतवालने जा कर राजासे अर्ज की। 10 इसने ऐसा काम किया है, किस दंडकी आज्ञा होती है? 11 चौकीदारोंने हाथ काट लिये। 12 यह तो फिर उस कावरको ले कर चल दिया। 13 महादेव पर ब्रह्मकोप चढ़ा। 14 इस बार। 15 पत्थर पटक दूं। 16 शिवलिंगको तोड़ दू। 17 सो वह सोमनाथके मंदिरके निकट आया। (पन्द्रहवी शतीके आस पास सोमनाथ महादेवको 'सोमईया महादेव' कहा जाता था।—"ताहरा देस माहि सोमईउ असपति लीधइ जाइ", "गुजराति सोरठ सोमईआ बाहरि विसमू वीनू" दे०—कवि पद्मनाभ कृत 'कान्हडदे प्रबंध' प्रथम खण्ड। 'सोमईया' शब्द 'सोमनाथ' का अपभ्रंश रूप है।) 18 अमुक ब्राह्मण क्रोधमें भरा हुआ आ रहा है। 19 इतनेमें यह आया। 20 उन्होंने उसे मंदिरमें जानेसे रोका। 21 मुझे क्यों रोकते हो? 22 ऐसी सेवा करते रहने पर भी मेरे हाथ क्यों कटवाये? 23 पूर्व जन्ममें तू राजपूत था।

नै जिणरो गळो वाढ़ियो सू ही रजपूत थो; दोनूं थे गोठिया था[1]। किणीहेक दिन थे एक छाळी मारी[2]। तरै उण छाळीरा कांन तै हाथसू साह्या[3] नै गळै छुरी उण दीधी। सु वा छाळी मरनै वा वैर हुई, नै ओ थारो गोठियो उणरो मांटी हुवो, सु उणै वैर मांगियो[4], सु उणरो गळो वाढियो, नै थू उणरा कांन झालिया था सु थारा हाथ वढाया[5]। म्हारो किसो दोस ?" तोही उण बांभणरो महादेव ऊपर कोप मिटियो नही। पछै फिरनै कासी गयो। उठै सिनांन गंगाजीमें करनै कासी करोत लेण लागो। तरै करवतरै देणहारै कह्यो—"कांसू मांगै छै[6] ?" तरै कह्यो—"अठारो मांगियो लाभै छै[7] ?" तरै इण कह्यो—"मांगियो लाभै छै, तो हूं तिको अवतार पाऊ, जिको सोमइया महादेवरा लिंगनै उपाड़नै आला चांवा मांहे बांधू[8]।" तरै पाखती सगळा मांणस ऊभा था, तिकां कह्यो[9]—"फिट ! फिट !! कासी करवत लेनै इसड़ो कांसू मांगै छै[9] ?" तरै कह्यो—"क्यू फेर विचारनै माग[10]।" तरै इण कह्यो—"एक म्हारो आधा धड़रो तिकाहूँ त्या सोमइया महादेवनूं बांध्यानूं छोड़ावै[11]। इण यू कहे करवत लीधी[12]। सु आधा धडरो अलावदी पातसाह हुवो। आधा धड़रो रावळ कानडदे हुवो सोनगरो[13]।

वात

पातसाहरो डेरो सकराणै जाळोररै गांव जाळोरसू कोस ६ हुवो। आ खबर कानडदेनू हुई, "जु महादेव सोमइयानूं बांधनै पातसाह

1 तुम दोनों मित्र थे। 2 किसी दिन तुमने एक बकरीको मारा था। 3 पकडे रहा। 4 सो उसने अपने वैरका बदला मागा। 5 इसलिये उसका गला काटा गया और तैंने उसके कान पकडे थे, इसलिए तेरे हाथ काटे गये। 6 क्या मागता है ? 7 यहाका मागा हुआ (क्या अगले जन्ममे) मिलता है ? 8 तो मैं जो जन्म पाऊ, उसमे सोमनाथ महादेवके लिंगको उठा करके गीले (कच्चे) चमडेमे बाधू। 9 तब पासमे, जो सब मनुष्य खडे थे, उन्होने कहा कि कासीमे करवत ले कर ऐसा क्या मागता है ? 10 कुछ फिर विचार करके माग। 11 तब इसने कहा—"मेरे इस आधे धडके द्वारा एक ऐसा व्यक्ति उत्पन्न हो जो उस प्रकार बधे हुए महादेवको छुडा दे। 12 इसने यों कह करके करवत लेली। 13 सो उसके आधे धडका अलाउद्दीन बादशाह हुआ और आधे धडका रावळ कान्हडदे सोनगरा हुआ।

सकरांणै श्राय उतरियो; तरै पालसाह् कनै कांधळ श्रालेचो रजपूत ४ बीजा भेळा मेलिया[1]। थे पातसाहजीनू जाय कहनै श्रावो–"जु श्रतरा हिंदुस्थांन मार वंदकर महादेव सोमइयो वांधनै म्हारै गढ़ निजीक म्हारै गांव उतरिया सु भली न की[2]। मोनूं रजपूत न जांणियो" तरै श्रै जाळोरथी चालिया, लसकर गया[3]। श्रागै पातसाहरै प्रधांन सीहपातळो भांणेज छै सु ई प्रधांन छै[4]। तिणरै डेरै कनै डेरो कियो[5]। सीहपातळासू श्रै मिळिया। कांनड़दे कहिया तासु समाचार इण सीहपातळानू कह्या[6]। सीहपातळै कह्यो—"पातसाहजी थांहरो विगाड़ियो वयू न छै[7]; श्रै सुरतांण सुभियांण छै[8]। इणांनू को इसडी वात कहाड़ै छै[9]?" तरै इणै कह्यो—"सु तो कांनड़देजी जांणै। थे निचंत कहो। नै कांधळनू, बीजा रजपूतांनू देखनै सीहपातळो घणो खुसी हुवो। पछै पातसाहजी कनै सीहपातळो गयो, कानड़दे कहाड़ियो सु कह्यो। नै सीहपातळै पातसाहजीनू कह्यो—"कांनड़देरो रजपूत कांधळ देखण सरीखो छै।" तरै पातसाहजी कह्यो–"वुलावो।" तरै सीहपातळै कह्यो—"श्रै श्रोनाड़ छै, कोई खून करसी[10]। कांनड़दे छूटी बीजानू जुहार न करै छै[11]। जै पातसाह उणरा खून माफ करै तो हजरतरी हजूर वुलाऊँ।" तरै सीहपातळै पातसाहजीरो कवल[12] लेनै कांधळनू पातसाहजीरी हजूर वुलायो। हजूर श्रायो। एकण तरफ ऊभो राखियो[13]। तरै पातसाह कहण लागो—"कानडदे तो म्हानू सामो डाकर दिखावै छै[14], नै पातसाहनू

---

1 तब बादशाहके पास चार अन्य राजपूतोके साथ काधल श्रालेचाको भेजा। 2 श्राप इतने हिन्दुस्थान (हिन्दुश्रों) को मार कर श्रौर कैद कर, सोमनाथ महादेवको बांध कर के मेरे गढके निकट मेरे ही गावमे श्राकर ठहरे, यह श्रच्छा नही किया। 3 तब ये जालोरसे चल कर बादशाहकी सेनाका जहा पडाव था वहा गये। 4 श्रागे बादशाहका भानजा सीहपातला है, जो उसका प्रधान भी है। 5 उसके डेरेके पास डेरा डाला। 6 कान्हडदेने जो समाचार कहे थे सो उन्होने सीहपातलासे कहे। 7 बादशाहने तुम्हारा बिगाडा तो कुछ नही है। 8 ये सुल्तान शुभाशुभ चाहे जो करने वाले हैं। 9 इनको कोई क्या ऐसी बात कहलाता है? 10 ये बहुत ही जोरावर हैं, कोई खून कर देगे। 11 कान्हडदेके श्रतिरिक्त किसीको जुहार नही करते हैं। 12 कौल, वचन। 13 खडा रखा। 14 कान्हडदे मुझे उलटा डर दिखाता है।

तलाक छै जु वीच गढ मेल[1], विगर लियां यूंही श्राघो[2] न जाय; सु हूं जातो हुतो सु कानड़दे श्रै वात कहाड़ै छै तो हूं विगर जाळोर लियां हमै हूं श्राघो न जाऊं, मोनूं तलाक छै।" तितरै एक सांवळी[3] भंवती-भंवती पातसाह बैठो थो तठै ऊपर श्राई, तिणरै पातसाह श्राप तुकारी[4] दी सु लागो। सांवळी पड़ण लागी, सु पातसाह पाखतीरा[5] तीरंदाजांनूं हुकम कियो, जु पड़ण न पावै[6]। सु तीरंदाजां कवांणां संभाई, तीर चलावणा माडिया[7], सु तीरां करनै सांवळी पड़ण न पावै[8]। तरै कांधळ बोलियो—"जु श्रा तीरंदाजी मोनूं दिखाईजै छै।" सु भैसो १ साहुलो जिणरा सीग पूछ तांई हुवै[9], तिण ऊपर पखाल १ पांणीरी हुती सु नैड़ो श्रायो[10]। तरै कांधळ भैसारै भटकारी दी सु सीग वढ़, पखाल वढनै भैसारा दोय टूक किया[11]। तरवार धरती जाती रही। तितरै[12] श्रा सांवळी पड़ी सु भैसारा लोही मांहे नै पखालरा पांणी मांहै सांवळी वही गई[13]। तरै काधळ सवण विचारियो[14]—पातसाहरो कटक म्हां श्रागै यूं वह जासी[15] तरै तीरंदाजै कवांणांरी मूठ कांधळ सांमी करी। तरै सीहपातळो विचै श्रायो। कह्यो—"*मै तो हजरतसू पैली श्ररज की थी*" तरै वां तीरंदाजांनू मनै किया। पछै कांधळ उठासू वारै श्रायनै जिण गाडा ऊपर महादेवजी था तठै श्रायो नै कह्यो—"पांणी तो विगर पियै सरै नही नै धांन राज छूटां खासा[16]।" उठै श्रा वात कहिनै गढनूं वळिया[17]। पातसाहरी हजूर श्रमराव ममूसाह मीर गाभरूसूं, हरमरी खुटक छै नै गुरगाब्यां पगां उठांणती तीजै भाईनू श्रापड़ियो थो, सु श्रा घणी वात छै[18]।

---

1 छोड कर। 2 श्रागे, दूर। 3 चील पक्षी। 4 तीर। 5 पास वाले। 6 यह गिरने न पाये। 7 तीर चलाने शुरू किये। 8 सो तीरोके सतत चलते रहनेमे चील नीचे नही गिर रही है। 9 एक साहूला भंसा जिसके सीग पूंछ तक होते हैं। 10 वह निकट श्राया। 11 तब कांधलने तलवारसे ऐसा झटका मारा जिसने सीग श्रौर पखाल काट करके भंसेके दो टुकडे कर दिये। 12 इतनेमें। 13 बह गई। 14 तब कांधलने शकुन विचारे। 15 बादशाहकी सेना हमारे श्रागे इस प्रकार बह जायगी। 16 पानी पिये बिना तो चलेगा नही परतु अन्न श्रापके छूट जाने पर ही खाऊगा। 17 गढकी श्रोर लौटे। 18 बादशाहके दरबारमे मम्मूशाह श्रौर मीरगाभरू ये दो उमराव थे, जिनके साथ एक तो हरमकी नाराजगी थी, दूसरा पैरोकी जूतिया उठवाई जाती थी, श्रौर तीसरा उनके भाईको पकड रखा था, यह बडी श्रापत्तिजनक बात उनके लिये थी।

सु ग्रै पचीस हजार घोड़ांरा धणी दिलगीर थका बैठा था, सु आ वात यूं सुणी, तरै वेहू चढ़नै पैडा मांहे कांधळनूं मिळिया[1] । कह्यो—"म्हे थांरा कांमनूं छां, थां भेळा छां[2]।" सील कोल किया[3]। म्हे रातीवाहो देसां[4] । कह्यो—"एक तरफसूं म्हे आवसां, एक तरफसूं थे आजो।" यूं कहिनै सीख कीवी[5] । कांनड़देजी कनै आयनै सोह वात कही[6] । पछै वीजै दिन साथ सारोही भेळो करनै रातीवाहो दियो[7] । एक तरफसूं मंमूसाह नै मीरगाभरू आपरो साथ लेनै आया, नै एक तरफसूं कांनड़देजीरी फौज आई । रातीवाहो दियो । तठै पातसाही लोक घणो कांम आयो । पातसाह नीसरियो[8], फौज भागी । कहै छै–कांनड़देजीरै साथ घणी पातसाही फौजांनूं घेचियां, साथ मारता गया[9] । पातसाहनै भांजनै कांनड़देजी सोमइया कनै आया[10] । महादेवजीरी पींडी हाथ घातनै उपाड़िया सु तुरत उपड़िया सु महादेवजीरो लिंग सकरांणै थापियो[11] । ऊपर देहुरो करायो । कांनड़देजी हिन्दुस्थांनरी वड़ी मरजाद राखी[12] । ममूसाह मीरगभरू रावळ कांनड़देजी कनै रह्या । ठाकुराई सारू घणो रोजगार दियो । पिण पातसाहीरा रैहणहारा सु गायां मारै, सु हिंदवांरै खटावै नहीं[13] । तरै रावळजी कह्यो—"इणांनूं किणहेक वात कर सीख देणी[14]; तरै क्यूंहेक कह्यो—"इणांरै धारू वारू पात्रियां छै सु मांगो, सु ग्रै देसी नही; तरै ग्रै आपै परा जासी[15] । तिण ऊपर रावळजी दोय मांणस मेलिया नै

---

1 तब दोनो भाई सवार हो मार्गमें वाघलसे मिले । 2 हम तुम्हारे काममें मददगार हैं, तुम्हारे शामिल हैं । 3 कौल वचन दिये । 4 हम रात्रि-आक्रमण करेंगे । 5 इस प्रकार कह कर रवाना हुए । 6 कान्हडदेजीके पास आकर सब बात कही । 7 फिर दूसरे दिन सभी सैनिकोंको इकट्ठा करके रात्रि-आक्रमण किया । 8 बादशाह भाग कर निकल गया । 9 कहा जाता है कि कान्हड़देकी सेना भागती हुई बादशाही सेनाका पीछा करती हुई मारती गई । 10 बादशाही सेनाका नाश करके कान्हडदेजी सोमनाथके पास आये । 11 महादेवजीकी पिंडीको हाथ डाल करके उठाया तो वह तुरत उठ गई और उसको सकराणेमें ही स्थापित कर दिया । 12 कान्हडदेजीने हिन्दुस्थानकी मर्यादा (प्रतिष्ठा) रख ली । 13 परतु (गो-भक्षक मुसलमान) बादशाहतमें रहने वाले, अत गोवध करते हैं सो हिन्दुओंको यह सहन नही होना । 14 इनको किसी बातके मिस यहांसे निकाल देना । 15 तब किसी एकने कहा कि इनके पास धारू और वारू नामक दो वेश्याएँ हैं, उन्हे मांगी जाय; ये देंगे नही, तब अपने आप चले जायेंगे ।

पातरियां मंगाई[1] । तरै यां कह्यो—"महादेवजीरो देहुरो रावळीजी मंडायो सु पूरो हुतो तद म्हे रावळजीनूं आपै पेस करता । पिण रावळीजी म्हां कना पात्र्यां मंगाई सु म्हांनू सीख देवणी तेवड़ी[2] ।" अै छाडिया । पछै राजा हमीरदे चहुवांणरै गया । तरै हमीरदे घणो आदरभाव कियो । पछै हमीरदे ऊपर इण वास्तै पातसाह अलावदीन आयो । घणा दिन गढ़रोहै रह्यो । पछै संमत १३५२रा श्रावण वदि ५ हमीरदेजी कांम आया । पछै कितरे'क दिन पातसाहजीरै पंजुपायक थो सु किणी'क सूळ उठासू छांडियो[3] सु पातसाह कनैथी आयो । सु उठै इसड़ो कोई नही, जु पायकपंजुसू जीतै, पातसाहजीरै पायक आगै हुता, सु सोह पजु जीता[4] । तरै पातसाहजी पंजुनू फरमायो—"कोई तोसूं खेलै तिसड़ो पायक कठैही सूझै छै ?" तरै पंजु अरज की—"साहिबरी वडी मांड छै[5] । किणही वातरी परमेसररै घरै कमी न छै । घणा इण प्रथी ऊपर हुसी, सु मैं दीठा नही । नै रावळ कांनडदे चहुवांण जाळोररो धणी, तिणरो बेटो वीरमदे, मो कनाहीज सीखियो छै[6], सु मो सारीखो खेलै छै ।" तरै पातसाहजी रावळ कांनड़दे सांमा लिखिया किया[7] । बोल कौल सूधा भेजिया । "एक वार वीरमदेनू सताव[8] म्हां कनै भेज दीजो ।" आदमी फुरमांन ले जाळोर आया । कानडदेजी आपरा भाई वंध, प्रधांन भेळा कर मिसलत करी[9] । सारै कह्यो—"आपै पातसाहनू रीस चाढिया छै[10] । दिल्लीस्वर ईस्वर छै, अै आरंभरांम[11] छै, करण मतै सु करै । आगलो आपांनू खून वगसै छै[12], मया कर वीरमदेजीनूं पातसाहजी तेड़ै छै तो मेल दीजै[13] ।"

---

1 इस पर रावलजीने दो मनुष्य भेजे और वेश्याओंको मगवाया । 2 तब इन्होंने कहा—महादेवजीका मदिर रावलजीने बनवाना शुरू किया सो वह जब पूरा हो जाता तब हम अपने आप रावलजीको पेश कर देते, परतु रावलजीने हमारे पाससे उन वेश्याओंको मगवा लिया अत हमको यहांसे निकाल देने का इरादा कर लिया है । 3 बादशाहके पास पजू नामका एक मल्ल था जो किसी कारणवश छोड कर बादशाहके पाससे चला आया । 4 सबसे पजू जीत गया । 5 परमात्माकी बडी रचना है । 6 मेरेसे ही सीखा है । 7 तब बादशाहने रावल कान्हडदेसे पत्र-व्यवहार किया । 8 जल्दी । 9 परामर्श किया । 10 हमने बादशाहको क्रोधित किया है । 11 करता-धर्ता, सर्वाधिकारी । 12 वह अपने अपराधोंको क्षमा करता है । 13 बादशाह कृपा करके वीरमदेवजीको बुलाता है तो भेज देना चाहिये ।

तरै वीरमदेजीरो वडो सामांन करनै पातसाहजीरी हजूरनू चलायो। कितरेहेक दिने उठै जाय पोहता[1]। पातसाहजीरो मुजरो कियो। पातसाहजी वीरमदेजीनू देख बोहत राजी हुवा। दिन दस पांच आडा घातनै वीरमदेसू कहाव कियो[2]—"एक वार पंजु नै थे खेलो, म्हे देखां।" तरै वीरमदे अरज कराई, "म्हारो तो यो कांम न छै पिण हजरत फुरमावै छै, तो एकंत[3] हजरत हुकम करसी तठै म्है नै पंजु ख्याल दिखावस्यां[4]।" पछै पातसाहजी आपरी अंगरहण थी तठै ठौड़ संवाराई[5]। मोहलरो लोग पिण चिगांरै ओळै देखण आयो[6]। पछै उठै पातसाहजी बैठनै पंजु वीरमदेनू तेड़िया। अै खेलिया। अै एक दोय वार तो वर वर रह्या। पातसाहजी बोहत रीझिया[7]। पंजु नै वीरमदे सारीखी-सारीखी सारी विद्या जांणता। वीरमदे तो पजु कना-सूंई विद्या सीखियो हुतो; पिण पंजु कांनडदेजी कना[8] छांड पातसाहजी कना[9] आयो, वांसै कांनड़देजी कनै करणाटरा पायक आया हुता[10], तिणां कना विद्या एक पगरै अंगूठै पाछणो[11] वंधायनै उलटी कुळाछ खाइनै पाछणारी चोट निलाड़नू कीजै[12]; तिका विद्या वीरमदे नवी सीखियो। पांजुरै उलटी कुळाछ खेलनै पाछणारी हळवीसी लगाई[13]। वीरमदे इण घात जीतो[14]। पातसाहजी वोहत रीझिया। मोहलांरो लोग रीझियो। पातसाहजीरै बेटी १ वडी कँवारी हुती सु निपट रीझाई[15]। पछै पातसाहजी पाजु वीरमदेनै डेरारी सीख दी[16]। पातसाहरी बेटी हुती खटवाटी ले पडी[17]। धांन खाय न पांणी पीवै। मोहलरै लोग पूछियो[18]—"कुण वास्तै[19] ?" तरै आ साहजादी कहै—

---

1 वहा जा पहुँचे। 2 पाच दस दिनके वाद वीरमदेको कहलवाया। 3 एकान्तमें। 4 खेल दिखायेंगे। 5 फिर वादशाहने जहा अपने एकान्त रहनेका स्थान था उस जगहको सजाया। 6 महलकी अत पुरिकाये भी चिकोकी ओटमे देखने आई। 7 वादशाह वहुत प्रसन्न हुआ। 8 पाससे। 9 के पास। 10 पीछेसे कान्हडदेजीके पास कर्णाटकके मल्ल आये थे। 11 उस्तुरा। 12 ललाटमे मारी जाये। 13 हलकी सी चोट मारी। 14 वीरमदे इस घात (दाव) मे जीत गया। 15 वादशाहके एक वडी वेटी कवारी थी वह वहुत ही प्रसन्न हुई। (चौहान कुलकल्पद्रुममें इस लडकीका नाम 'सीनाई' लिखा है।) 16 अपने-अपने डेरोंको जानेकी आज्ञा दी। 17 प्रतिज्ञा करली। 18 अन्त पुरिकाओने पूछा। 19 किसलिए।

"कै तो कंवर वीरमदे परणूं[1], नहीतर धान-पांणी नवे दांते खाऊं[2]।" तरै दिन एक तो मोहलरै लोग उणरी मा सारी हुरमां समझाई—"ओ हिंदू, तू तुरकांणी, किण भांत परणावां?" पिण उण अत हठ मांडियो[3], मरण लागी। तरै मोहलरै लोग आ वात पातसाहजीसूं मालम कीवी। तरै एक दोय वार पातसाहजी पिण फुरमायो—"आ वात हूणरी नहीं।" साहिजादीनूं दिन ३ हुवा धांन खायां, पांणी पियां। तरै वळै पातसाहजीसूं अरज पोहती[4]–साहिजादी मरै छै। तरै पातसाहजी वीरमदेजी वीच आदमी फेरिया। वीरमदे घणो ही उजर कियो। पण पातसाह अत हठ मांडियो; तरै दीठो[5]—"कै तो[6] मरां कै वात कबूल की चाहीजै।" तरै वीरमदे दाव कियो[7]। कह्यो—"भली वात, साहो जोवाड़ीनै म्हांनूं विदा कीजै[8]। म्है जाळोर जाय सूल सामांन कर जांन ले साहा ऊपर आवां, परणां[9]।" तरै पातसाहजी कह्यो—"तू उठै जाय बैठ रहै। नही आवै तो तिण वातरा ओळ दे जा[10]।" तरै रांण वणवीरोतनूं ओळमे पातसाहजी कनै राखनै वीरमदे घरे जाळोर आयो। वात हुती सु रावळ कांनड़देजीसूं मालुम की। कांनड़देजी दीठो, वात विगड़ी[11]। तरै कांमदारांनूं तेड़नै गढरोहारो सामांन सतावसूं करायो[12]। पातसाहजी रांणानूं पांचे दिने साते दिने तेड़नै फुरमावे—"अजेस वीरमदे नही आयो।" रांणै पातसाहनूं वाते लगाय लियो छै—"सामांन करै छै, सु सताव आवसी।" मास २ तथा ४ यूं आघा नीसरिया[13]। पछै पातसाहजी आपरा हजूरी लोग दिनांरो अवादो[14] वोलनै जाळोर मेलिया[15]। वे अठै आया। रावळ कांनड़दे नै कंवर वीरमदेनूं मिळिया। मुंहडै तो

---

1 या तो कुंवर वीरमदेके साथ विवाह करूं। 2 नही तो अन्नजल नये दांत आने पर (नये जन्ममे) लेऊं। 3 परन्तु उसने बहुत हठ किया। 4 पहुँची। 5 तब देखा। 6 या तो। 7 दाव खेला। 8 लग्न दिखा कर हमको विदा कर दें। 9 हम जालोर जा कर सब सामान और तैयारी करके लग्न ऊपर बरात ले आवें और शादी करलें। 10 यदि वापिस नहीं आवे तो अपने बदलेमें जामिनकी तौर पर आदमी रख कर चला जा। 11 कान्हडदेजीने देखा, बात तो बिगड गई। 12 तब कामदारोंको बुला कर शीघ्र ही किलेबंदी का सामान तैयार करवाया। 13 इस प्रकार महीने २ तथा ४ आगे निकल गये। 14 मयाद। 15 भेजे।

हळभळ करै, आवणरी मांट का नहीं[1]। गढ़री तैयारी हुवै छै। सु पातसाहजी वीरमदेनूं लेई गेलिया था, त्यां पातसाहजीनूं आय कह्यो—“वीरमदे नावै, गढ़ सझै छै[2]।” तरै पातसाजी बुरो मांनियो। तठा कोटवाळनूं कह्यो—“जु रांणानूं बेड़ी पहरावो।” तरै रांणानूं कह्यो—“थे बेड़ी पहरो।” तरै रांणो तणानूं मारनै कुराळ गैगै गयो[3]।

सामरा दूहा

काय[4] आघां पग आड़, काय कर घात[5] कटारियां।
छोगाळा छळ छाड़, रांणा रावत वट[6] तणो[7]॥ १॥
तणो न जांणै तोल[8], गुरज मछरीकां[9] तणो।
कारण किणी'क बोल, मारै काय आपण[10] मरै॥ २॥
गृध[11] पूछै गुरतांण, कोलाहळ कैड़ो[12] कटक।
काय रीगांणो रांण, मैंगळ[13] गंभ मरोड़िया॥ ३॥

वात

रांणो कुराळ-गैगै घरे आयो। घोड़ो गांव भींवड़ै जनै मुवो[14]। पछै पातसाहजी मुदफरखान दाऊदखाननूं पांच लाख घोड़ांसूं विदा किया। सु थे आय गढ़ लागा[15]। रोज-रो-रोज धोवो हुवै, तरै उठारी खबर रोजरै वगरै पातसाहजीनूं आवै[16]; कहै छै—बारै बरस विग्रह हुवो। पछै कहै छै—दहिया रजपूत २ सूनमें[17] आया था, त्यांनूं कांनड़देजी गूळी दिराया था[18], सु वे गूळी ऊपर थका वायरासूं अपूठा हुता सु मांम्हां हुवा[19]। सु रावळ कांनड़देजी देखनै हंगिया।

1 मुंह पर खूब बातें बनाते हैं, परन्तु आनेकी तैयारी कुछ नहीं। 2 वीरमदे नहीं आवेगा, लड़ाईके लिये गढ़में सामान सजाया जा रहा है। 3 तब रांणाको मार करके रांणा कुराळगैगैमें चला गया। 4 अथवा, या तो। 5 प्रहार। 6 सब। 7 का। 8 रहस्य, मर्म। 9 स्वाभिमानियोंका। 10 स्वयं। 11 गिद्ध। 12 कैसा। 13 हाथी। 14 रांणाका घोड़ा भींवड़ा गांवमें जाकर मर गया। 15 सो उन्होंने आकर गढ़ घेर लिया। 16 रोजाना ही धावे होते, तब वहांकी खबर रोज बरस तक बादशाहको पहुँचाई जाती। 17 गुप्त रूपसे भागकर। 18 उनको कानड़देजीने गूळी पहनाया था। 19 सो वे गूळी पर चढ़े हुए ही उड़े थे सो उनके सामने हो गये।

कह्यो—"दहिया भेळा ह्वै ज्यू जांणीजै छै[1] । गढ लिरासी[2] ।" सु वांरो भाईवंध दहियो रावळजीरी पाखती ऊभो हुतो[3], तिण वात आ सुणी । उणनू खटक लागी[4] । उण तुरकांनू भेद दीनो । गढ सुरंग पिण लागी[5] । कोट उडियो । गढ भिळियो[6] । काधळ खांडैरै मुहडै घणो पराक्रम कियो[7] । रावळ कांनडदेजी अलोप हुवा[8] । कुंवरागुर वीरमदेजो अतरा[9] साथसू कांम आयो । पछै तुरकां वीरमदेरो माथो वाढियो[10], नै दिली ले गया । पछै वा पातसाहजीरी बेटी वीरमदेरो माथो थाळी मांहै घातनै[11] परणीजण लागी, सु माथो संवो हुतो सु फिरनै अपूठो हुवो[12] । तरै साहजादी पूरवजनमरी वात कही; तरै माथो अपूठो हुतो सु फिरनै संवळो हुवो[13] । तरै साहजादी फेरा खायनै वांसै कहै छै सती हुई । स० १३६८ वैसाख सुदि ५ बुधवाररो गढ जाळोर तूटो । गढ तूटतां साथ जिसो हुवो तिणरी हकीकत—

अतरो साथ कांनड़देजीरो सवौं हुवो[14] । कांनडदेजी आप अलोप हुवा—

१ कांधळ देवडो ।
१ कांनो ओलेचो ।
१ लिखमण सोमत ।
१ जैतो देवड़ो ।
१ जैतो वाघेलो ।
१ लूणकरण ।
१ मान लणवायो ।
१ उरजन विहळ ।
१ चादो विहळ ।

---

1 ऐसा जाना जाता है कि दहिये सगटित हो रहे है । 2 गढ लें । 3 पासमें खडा था । 4 उसको चुभी । 5 गढमे सुरग लगवाई गई । 6 गढ पर शत्रुओंका अधिकार हो गया । 7 काधलने तलवारके सामने बहुत पराक्रम दिखाया । 8 रावल कान्हडदेजी अलोप हो गये । 9 इतने । 10 काटा । 11 रख कर । 12 माथा सन्मुख था सो उलटा हो गया । 13 सीधा हो गया । 14 वीर गतिको प्राप्त हुआ ।

१ जैतमल ।

१ रा० सातळ ।

१ सोमचंद व्यास ।

१ सलो राठौड़ ।

१ सलो सेपटो ।

१ झांझण भंडारी ।

१ गाडण सहजपाळ ।

४ रांणी जमहर पैठी[1]—

१ ऊमादे । १ कँवळदे । १ जैतळदे । १ भावळदे ।

इतरो[2] साथ कांनड़देजी अलोप हुवां वांसै[3] तीजै दिन वीरमदेजी साथै कांम आयो—

१ कँवर वीरमदेजी ।

१ अडवाळ वीहळ ।

१ आल्हण देवडो ।

१ आल्हण सोहड़ ।

१ धारो सोढ़ो ।

१ भांणो धांधळ ।

१ सीधळ पतो ।

१ झांझण परिहार ।

इतरो साथ निसर गयो[4]—

१ सेलोत लूढो ।

१ मेरो ।

१ अरसी ।

१ विजैसी ।

१ सागो सेलार ।

१ सलूणो ।

---

1 चार रानियोंने चिता-प्रवेश कर जौहर किया । 2 इतना । 3 पीछे । इतना साथ निकल भागा ।

१ जेसो ।

१ लखमण ।

१ लूणो दहियो ।

१ घुघळियो सांहणी ।

१ पतो दहियो ।

१ वीलण सोभत ।

१ मूळू सेपटो ।

१ लालो ।

१ नरसिंघ सींधळ ।

१ जगसी सीधळ ।

१ करमसी ।

१ वीको दहियो वडो स्यांमद्रोही हुवो, जिणरा भेदसूं गढ जाळोररो तूटो[1] ।

इति सोनगरा जाळोररा धणियांरी ख्यात वार्ता सम्पूर्ण ।
लिखतं वीठू पना सीहथळरो वांचै जिण सिरदारसूं
जैश्रीरुघनाथजीरी मालुम होसो ।

1 दहिया वीका बड़ा स्वामीद्रोही हुआ, जिसके भेद देनेसे जालोरका किला टूटा ।

वात साचोररी

सहर तो कदीम छै[1]। घणां दिनांरो वसै छै[2]। पाधर मैदांनमें वसै छै[3]। सहर वीच कोट ईंटांरो थो सु तो विचले वरसे[4] पड़ गयो नै दरवाजौ १ कोटरो सावतो[5] नै क्युहेक[6] भीत रावळा घरां वांसै, क्युहेक दरवाजारै मुंहडै थोडीसी भीत रही थी। पछै संमत १६८१रै टांणै[7] महाराजा श्रीगजसिंघजीनू साचोर जागीर हुती, तद एक वार काछी कटक मांणस ५००० साचोर ऊपर आया हुता[8], तद मुं० जैमल जैसावतनूं परगनो थो। पछै जैमलरै चाकरै वेढ कीवी[9]। कटक काछी भागौ। पछै मु० जैमल कोट फेर संवरायो। सहररो मंडाण निपट सखरो छै[10]। वडो वाजार गुजरातरी तरै कैहलवांरो छायो छै। देहुरा २ जैनरा छै। एक मुं० जैमलरो करायो छै। कोट मांहै कुवो १ छै, पिण पांणी नही। सहर पांणीरी कमी। कुवा रुखी वाय १ चहुवांण तेजसीरी कराई छै, तिणरो खारो पांणी[11]। घणी सहररी मंड उण ऊपर छै[12]। राव वलूनू साचोर हुई तरै कुवो १ दिखण दिसनै राव वलू खिणायो छै[13]। तिण मांहे पांणी मीठो पुरसे २० नीसरियो छै[14]। उण ऊपर क्यू वाग छै[15]। तळाव घणा को नही। नाडा[16] दोय तीन छै। मास २ तथा ३ पांणी रहै। पांणीरो गांवरै खेडै दुख हीज छै[17]। मुदै खारो कुवो सहरमे तेजसीरी वाय ऊपर छै तिण ऊपर तीण ६ वहै छै[18]। राव वलूरो करायो कोहर दिखण

---

1 शहर तो पुराना है। 2 बहुत समयसे बस रहा है। 3 समतल मैदानमें बसा हुआ है। 4 अभी थोडे वर्ष हुए। 5 साबित। 6 कुछ। 7 समय। 8 तब एक बार काछियोंकी सेनाके ५००० मनुष्य साचोर पर चढ आये थे। 9 महता जयमलके चाकरोंने लडाई की। 10 शहरकी रचना बडी सुन्दर है। 11 बावडी एक कुएकी और चौहान तेजसीकी बनवाई हुई है, जिसका पानी खारा है। 12 शहरकी अधिक भीड उसी पर लगती है। 13 राव बलूको जब साचोर मिली तब उसने एक कुआ शहरसे दक्षिणकी ओर खुदवाया। 14 उसमें २० पुरष नीचे मीठा पानी निकला है। (पुरष=गहराईकी एक माप जो मानमें हाथ उठा कर खडे हुए मनुष्यके बराबर होती है। पुरसा।) 15 उसके ऊपर छोटासा बाग भी लगा हुआ है। 16 छोटी तलैया। 17 गावके आसपास पानीका कष्ट ही है। 18 तेजसीकी बावडीके ऊपर, जो खारे पानीका कुआ है और जिस पर छ चरसे चलते हैं, वही शहरके लिए पानीका आधार है।

दिसनूं कोस छै[1], पांणो मीठो छै। साचोरसूं कोस १ गांव लाछड़ी उत्तरनूं छै, तिण[2] गांव कूवो १ छै तिणरो पांणी निपट मीठो पालर[3] सारीखो छै। उठासूं वांहणां पांणी सहर आवै छै[4]। साचोररो निरजळ देस छै। सहररी पाखती जाळ, कैर घणा[5]। परगनो इकसाखियो[6] रैत[7] पटेल, रजपूत। गांव १२६ लागै। तिण मांहै गांव २८ नदी लूणी सूराचंद राडधरारै काठै नीसरै, तरै इतरा गांवां साचोररां मांहै वहै[8]। तिण गांवे गोहूं, चिणा सेवज हुवै[9], रेल आयां[9]। रेल नावै तरै गांवा २८ कोसीटा २०० हुवै[10]। बीजा[11] गांव सारा इकसाखिया। बाजरी, मोठ, मूग, तिल, कपास हुवै। परगना माहै भूमिया देवड़ा, वागडिया तिणांरा गांव छै[12]। नै चोहुवांण पूरेचा गांवां मांहै छै[13]। सहर साचोर मांहै सकना तुरक घर १५० छै[14]। सकना कहावै छै। खेत १०० सहर मांहै पसाइता खावै छै[15]। खूंम ३ उणांरा छै १ वहलीम, १ भेरडियो, १ पायक, गांव दीठ रु० २) पावै छै[16]। गांव १२६ माथै दांम २४८०००० । साचोर सहररी वस्ती उनमांन[17] घर १२४५—

७०० महाजन ओसवाळ श्रीमाळ।   १५ दरजी।
८० बांभण श्रीमाळी[18]।   १२ मोची।
१० रजपूत।   ४० तेली।
१५० सकना।   ३५ सोनार।

---

1 गाव बलूका बनवाया हुआ कुआ दक्षिण दिशाकी ओर आधे कोसकी दूरी पर है। 2 उस। 3 वर्षा जल। 4 वहासे बैलगाडियो पर पानी शहरमे लाया जाता है। 5 शहरके पास जाल (पीलू) और कैरके वृक्ष बहुत हैं। 6 साचोर बरसाती फसलका परगना है। 7 प्रजा। 8 इनमे २८ गाव ऐसे हैं जिनमे लूनी नदी बहती है, जो सूराचद और राडधराके पास सीमा पार करती है। 9 इन गावोके किनारोके खेतोंमें लूनी नदीके पानीकी रेल आनेसे गेहूं और चने सेजेमे होते हैं। 10 और जब रेल नही आती है तब इन २८ गावोमे २०० कोसीटो द्वारा गेहूंकी फसल होती है। 11 दूसरे। 12 परगनेमे भोमियोके रूपमे देवडे और वागडिया चौहानोके गाव भी हैं। 13 और पूरेचा चौहान भी गावोमे रहते हैं। 14 साचोर शहरमे १५० घर सकना मुसलमानोके है। 15 ये शहरमें एक सौ खेत माफीके खा रहे हैं। 16 इनके तीन मगन (अन्त्यज) वहलीम, भेरडिया और पायक हैं जिनको प्रति गाव रु० २) मिलते हैं। 17 अनुमान। 18 श्रीमाली ब्राह्मण।

२५ पीजारा ।	५ माळी ।
१५ सूत्रधार[1] ।	२ लोहार ।
१२ छीपा धोबी ।	५ गंध्रप[3] ।
४ कूंभार ।	३५ ढेढ ।
५ रंगरेज ।	४० भील ।
१५ भोजग[2] ।	

वात चहुवांणां साचोररा धणियांरी

चहुवांण विजैसोह आलणोत[4] सीहवाड़ै रहतो, नै दहियो विजैराज तद साचोर धणी थो । तिणरै भांणेज महिरावण वाघेलो छै[5]; तिण[6] नै[7] विजैराज दहियै माहोमाहि जीव बुरो हुवो[8] । तरै वाघेलो विजयसीहसू मिळियो । कह्यो—"आंपै साचोर लां, आधोआध हैसो[9] ।" तरै विजैसी कह्यो—"भली वात ।" पछै वाघेलै तेडियो[10] तद विजैसी सीहवाड़ारो चढियो गयो । उठै दहिया मारिया । ओ वाघेलो पिण मारियो । साचोर लीधी । आपरी आंण फेरी[11] । संमत ११४१ फागुण वदी ११ गुर थापना साचोर कीधी[12] ।

कवित्त

धरा धूण धकचाळ[13], कीध दहिया दहवट्टै[14] ।
सवदी सवळां साल[15], प्राण मेवास पहट्टै ॥
आल्हण सुत विजयसी, वस आसराव प्रागवड़ ।
खाग त्याग खत्रवाट, सरण विजै पजर सोहड[16] ॥
चहुवाण राव चोरंग अचळ, नरां नाह अणभगनर ।
धूमेर सेस जा लग अटळ, ताम[17] राज साचोर धर ॥ १ ॥

---

1 खाती । 2 शाकद्वीपी ब्राह्मण । 3 गन्धर्व । 4 आलणका बेटा । 5 उसका भानजा महिरावण वाघेला है । 6 उसके । 7 और । 8 आपसमे खट-पट हो गई । 9 अपने साचोर पर हमला कर उस पर अधिकार करलें, दोनोंका आधा-आधा हिस्सा । 10 बुलाया । 11 अपनी दुहाई फेर दी । 12 सम्वत् ११४१ फाल्गुन कृष्ण ११ गुरवारको साचोरमे अपने राज्यकी (यहा स० १२४१ होना चाहिये, क्योंकि विजयसिंहके पिता आल्हणका समय १३वींका पूर्वार्द्ध निश्चित है । तब स० ११४१ मे आल्हणका बेटा विजयसिंह नही हो सकता ।) 13 युद्ध । 14 नाश । 15 शल्य रूप । 16 सुभट । 17 तब तक ।

पीढ़ियारी विगत—

१ राव लाखण ।

२ बलि ।

३ सोही ।

४ महंदराव ।

५ अणहल ।

६ जीदराव ।

७ आसराव ।

८ मांणकराव ।

९ आल्हण ।

१० विजैसी । साचोरली ।

११ पदमसी ।

१२ सोभ्रम ।

१३ साल्हो सोभ्रमरो । निपट वडो रजपूत हुवो । जाळोर गढ पातसाह अलावदी घेरियो, तद कांम आयो । जाळोररी पैहली प्रोळ चढतां साल्हा चौकी कहीजै[1] । आगै आप पुरांणां मांहै सुणियो छो[2]—"संग्रामरै विखै पग सांमां भरै तठै अस्वमेधरो फळ लहै[3] ।" सु वात मनमे आंणनै[4] रावळ कांनडदे जीवतां घोड़ै चढनै साथळां मांहै खीला पाती जड़ाय[5], पातसाही कटक मांहै घोडो उपाड़ नांखियो[6] । कांनडदे उमाहड़ै[7] मोहळ[8] वैठा देखै छै । घणो लडियो, घणो विसेख कियो[9] ।

---

1 जालोरके किले पर चढते हुए पहली पोलके पास बनी हुई साल्हा चौकी कही जाती है । जिस जगह पर अलाउद्दीनसे बडी बहादुरीसे लडता हुआ साल्हा काम आया था । 2 था । 3 संग्राममें अपने पाँव आगे बढाता जाय तो अश्वमेधके फलकी प्राप्ति होती है । 4 मनमें ला करके । 5 जंघाओंमें लोहेकी कीलें और पत्तियें जड़वा करके । 6 बादशाही सेनामें अपने घोडेको डाल दिया । 7 उत्साहसे । 8 महल । 9 अत्यन्त पराक्रम दिखलाया ।

कवित्त

अलावदी आरंभ[1] कीध[2] सोनागर[3] ऊपर।
हुवो समर तलहटी जुड़ै चहुवांण मछर[4] भर ।।
सकतीपुरचो सांम प्रांण सुरतांण संकायो।
गांजै[5] घड़[6] गज रूप चीत[7] आलम चमकायो ।।
रांजियो राव कांनड़ रिणह कोतक खिरथ[8] थंभियो।
वरमाळ कंठ अपछर वरै साल्ह विवांणै[9] माल्हियो[10]।। १ ।।

१३ वीकमसी।
१४ पातो।
१५ राव वरजांग।
१३ हापो, तिणरै वांसला सूराचंद धणी[11]।
१४ घड़सी।
१५ सहसमल।
१६ भोजदे।
१७ उधरण।
१८ वीसो।
१९ डूगर।
२० राणो मांन
२१ रांणो भारवर।
२१ राणो सूजो।
२२ रांणो सादूल सूजारो।
२२ दयाळदास सूजारो।
२३ अखो दयाळदासरो।

राव वरजांग पातारो। पातो, वीकमसी, साल्हो सोभ्रम, पदमसी विजैसी, आक १५ राव वरजाग नै मिलकमीर वेढ़ हुई सं० १४७८[12]

---

1 हमला। 2 किया। 3 जालोरका स्वर्णगिरि नामका किला। 4 क्रोध, गर्व। 5 नाश कर दिया। 6 सेना। 7 चित्त। 8 सूर्य। 9 विमानसे। 10 प्रस्थान किया। 11 हापा, जिसके पीछे वाले (वंशज) सूराचदके स्वामी हुए। 12 राव वरजाग और मीर-मलिकके स० १४७८ मे लडाई हुई।

राव वरजांगनू मारनै साचोर मुगलै लीवी[1] । राव वरजांग वडो ठाकुर हुवो । गढ़ जेसलमेर राव वरजांग परणियो[2], तद इतरो खरच लाग दापो कियो सु अजेस जेसळमेर उण चँवरीको परणीजै न छै[3] । राव वरजांगरी चँवरीरी ठोड़ प्रगट छै[4] ।

राव वरजांगरा बेटा—

१६ जैसिंघदे । साचोर धणी । वरजांगरो[5] ।

१६ तेजसी । साचोर धणी ।

१६ हीमाळो ।

१६ राघवदे ।

१६ रांम ।

१६ आसो ।

१६ देपाळ ।

जैसिंघदे वरजांगरो । साचोर धणी । रांणा उदैसिंघरी मेवाड़ वैहन परणियो हुतो[6] । आंक १६ ।

१७ नीवो ।

१७ धीरो ।

१७ जगमाल साचोर धणी । तिणनू पीथमराव तेजसीयोत मारियो[7] ।

१७ कचरो ।

१७ सूरदास ।

१७ भैरव ।

१७ रतन जैसिंघदेरो । आखड़ी ४६ वहैतो[8] ।

नीवो जैसिघदेरो । आंक १७ ।

---

1 राव वरजागको मार कर मुगलोने साचोर लेली । 2 विवाह किया । 3 तब लाग-दापा आदिमे इतना खर्च किया कि अभी तक जैसलमेरमे उस चौंरी पर (इससे अधिक खर्च करने वाला अभी तक कोई उत्पन्न नही हो सका है) किसीका विवाह नही किया जाता । 4 राव वरजांगकी वह चौंरीकी जगह अब तक प्रसिद्ध है । 5 वरजागका बेटा । 6 जयसिंहदे, वरजागका बेटा, पुन साचोरका स्वामी हुआ । मेवाडके राणा उदयसिहकी बहनसे विवाह किया था । 7 जगमाल साचोरका स्वामी जिसको तेजसीके बेटे पीथमरावने मारा । 8 रतन जयसिंहदेका बेटा ४६ प्रतिज्ञाओ पर आचरण करने वाला ।

१८ रांणो नीबावत । रांणारै पटै राव मालदेरी दीधो समदड़ी सिवांणारी थी[1] ।

१९ महकरण रांणावत। मोटा राजाजीरो सुसरो[2]। दलपतजीरो मांमो तुरकांण मांहै कांम ग्रायो ।

२० सिखरो महकरणरो । राजा श्रीगजसिंघजीरो सुसरो । मोटा राजाजीरो चाकर । खेजड़ली गांव ३ सूं पटै[3] ।

महकरणरो परवार, सिखरारो परवार—

२१ रांमसिंघ सिखरावत ।

२१ हरिदास सिखरावत ।

२१ दयाळदास सिखरावत ।

२२ राघोदास ।

२० ढेईदास महकरणोत । मोटा राजाजीरै समावळीरो चाकर[4]। संमत १६४० गांव चवाड़ी जोधपुररी, सं० १६ ˙˙ तांतूवास ग्रोईसारो, सं० १६ ˙˙ गोयंदरो-वाड़ो दूनाड़ारो, संमत १६ ˙˙ दहीपुड़ो जोधपुररो[5] ।

२१ कचरो देईदासरो । संमत १६६३ तांतूवास पटै । संमत १६७४ हूण गांव सोभतरो पटै । संमत १६७७ तिमरली रांम कह्यो[6] ।

२२ मुकददास ।

२२ हरिदास ।

२१ केसवदास देईदासरो । संमत १६७३ दहीपुड़ो जोधपुररो पटै ।

२० सावतसी महकरणोत । दलपतजीरो मामो नै दलपतजीरो हीज चाकर । ठाकुराईरो धणी[7] ।

---

1 राणा, नीबाका बेटा । राणाको राव मालदेवकी दी हुई सिवाना परगनेकी समदडी पट्टेमे थी । 2 मोटा राजा उदयसिंहजीका सुसरा । 3 तीन गावोंके साथ खेजडली गाव पट्टेमे । 4 मोटा राजाजी उदयसिंहके समावली गांवका चाकर । 5 इसे सम्वत् १६४० मे जोधपुर परगनेका चवाडी, स० १६ मे ग्रोईसारा तातूवास, स० १६ दूनाडेका गोविंदरी-वाडो ग्रौर सम्वत् १६˙˙ जोधपुर परगनेका दहीपुडा—पट्टेमे मिले थे । 6 सं० १६७७ मे तिमरली गांवमे मरा । 7 बडी ठकुराईका मालिक ।

२१ सादूळ सांवतसीयोत । संमत १६८४ गांव ६, रुपिया ४७००) नागोररा, ब्रहांनपुर रावळे पटै दिया[1] । पछै छांड़ मोहबतखांरै वसियो । पछै दखिणमे कांम आयो[2] ।

२१ गोपाळदास सावतसीयोत । दोलतावाद मोहबतखांरै कांम आयो ।

२१ वलू सांवतसीयोत । महेसदास दलपतोतरो चाकर थो । पछै संमत १६८५ महेसदास मोहबतखांरै वसियो[3], तरै जुदो मोहबतखांरै चाकर दिखण माहै लोहड़ै पड़ियो[4] । पछै मोहबतखांन मुवो[5] तद महेसदास वलू वेहू[6] पातस्याही चाकर हुवा । महेसदासनू जाळोर हुवो[7], तरै वलूनूं साचोर दियो थो सं० १६९६ । पछै सं० १७१७ पूरबनू मुवो[8] । राव बलू सात सदी जात, चारसौ असवार मुनसब[9] थो । चौ० वेणीदास वलुओतरो मुनसव चार सदी जात सौ असवार हुवो । दूजो[10] परगनो विहानू हुवो थो । दिन थोडा जोवियो[11] । पछै सकतसिंघ वेणीदासोतनू मुनसब जात अढाई सदी, तीस असवार मुनसब हुवो ।

२२ वेणीदास ।

२२ नरहरदास । सं० १७१४रा जेठमे धोलपुर कांम आयो ।

२३ सकतसिंघ ।

२१ अचलदास सांवतसीयोत । मोहबतखांरै दिखणमें कांम आयो।

२२ गोयददास ।

२१ भीव सावतसीयोत । सं० १६७७ जाळोररो चवरा पटै[12] । जूझारसिंघ दलपतोतरै काम आयो[13] ।

---

1 सम्वत् १६८४मे महाराजा जसवतसिहने बुरहानपुरमे रु० ४७००)की आयके नागोरके ६ गाव पट्टेमे दिये थे । 2 पीछे छोड कर मोहबतखाके जाकर रहा और दक्षिणमे काम आगया । 3 मोहबतखाके जाकर रहा । 4 घायल हुआ । 5 मर गया । 6 दोनो । 7 महेशदासको जालोर मिला । 8 पूर्वमे मरा । 9 राव बलूका मनसब सातसौ जात और चारसौ सवारका था । 10 दूसरा । 11 थोडे दिन ही जीवित रहा । 12 सावतसिहका बेटा भीम, जिसको जालोर परगनेका चवरा गाव पट्टे । 13 दलपतके बेटा जूझारसिहके काम आया ।

२२ विहारी ।

२१ कलो सांवतसीयोत । जूझारसिंघ दलपतोतरै कांम आयो ।

२१ अजो सांवतसीयोत । सं० १६७५ कैरलो पालीरो पटै। पछै कनीरांम दलपतोतरै वसियो सु ब्रहांनपुर कनीरांम साथै कांम आयो ।

२० रायमल महकरणोत ।

२१ भांण दलपतरै कांम आयो ।

२२ अखैराज, कनीरांम दलपतोतरै कांम आयो । दिखण डेरा मांहै फौज नीसरी तठै[1] ।

२१ भांण, किसनसिंघजीरै वास थो उठै कांम आयो[2] ।

२० रतनसी महकरणोत ।

२० रावत महकरणोत । सं० १६४० हीरादेसर पटै । पछै वीसळू दोवी । लूणो रांणावत । रांणारो वडो वेटो वडो रजपूत हुवो[3] । आंक १९ ।

२० महेस जाळोर कांम आयो ।

२१ नारण ।

२० किसनो । उग्रसेण चन्द्रसेणोत साथै कांम आयो[4] ।

२० कान्हो ।

२१ हीगोळ ।

२२ संकर हीगोळरो ।

२० रांमो लूणावत । मीच मुवो[5] ।

२१ मूजो । दलपतजीरै कांम आयो ।

२२ लिखमीदास (भीव करणोतरै[6]) ।

२२ जैतसी (सवळसिंघजीरै[7]) ।

---

1 दलपतके वेटे कनीरामके अखैराज काम आया, दक्षिणमे डेरोमे हो कर फौज निकली थी वहा पर । 2 भाण, किसनसिंहजीके यहा रहता था और वही काम आया । 3 लूणा, राणाका वडा वेटा वहुत वडा राजपूत हुआ । 4 राव चन्द्रसेनके वेटे उग्रसेनके साथ काम आया । 5 मौतसे मरा । 6 लिखमीदास भीम करणोतके यहा रहता है । 7 जैतसी सवळसिंहके यहा रहता है ।

मांडण रांणावत, आंक १९ ।

२० सांवळ मांडणोत । सं० १६५२ वालो भाद्राजणरो धना भेळो[1] । पछै सं० १६६६ सुगाळियो सांवळनूं[2] । पछै राखांणो भाद्राजणरो दियो थो, सु संमत १६७१ रावळै खिराळूरै परगनै कांम आयो[3] ।

२१ कलो । संमत १६७१ राखांणो वरकरार ।

२१ जसो ।

२१ जगनाथ ।

२२ नरसिंघदास ।

२० सूजो मांडणोत । सं० १६ ‥ सूजा सांवळनूं वालो नै नीलकंठ भाद्राजणरा[4] ।

२१ पतो सूजारो । सं० १६८५ सिरांणो जाळोररो ।

२२ खेतसी ।

२२ नाथो ।

२० धनो मांडणोत । सं० १६७० मेहळी सिवांणारी पटै[5] । सं० १६८३ इद्रांणो सिवांणारो[6] । पछै मुवो[7] ।

२१ तेजमाल धनारो । धनारै वदळै चाकरी करतो मु तिमरणी रांम[8] कह्यो ।

२२ सुरताण ।

धीरो जैसिंघदेवोत, आंक १७ ।

१८ वरसिंघ धीरावत । साचोर कांम आयो ।

१९ वीको वरसिंघरो भाचरांणै सीधले मारियो[9] ।

---

1 माडणका बेटा सावल, स० १६५२ भाद्राजुनका वाला गाव धन्नेके शामिल पट्टेमे । 2 बादमे सावल को स० १६६६ मे सुगालिया गाव पट्टेमे । 3 फिर वह सं० १६७१ मे खिरालू परगनेमे काम आया । 4 माडणका बेटा सूजा, स० १६ ˙ में सूजा और सावल दोनो भाइयोको भाद्राजुनके वाला और नीलकठ पट्टेमें थे । 5 माडणका बेटा धन्ना, जिसके स० १६७०में सिवानेका मेहली गाँव पट्टेमे । 6 स० १६८३मे सिवानेका इन्द्राणो गाव पट्टेमे । 7 फिर मर गया । 8 धन्नेका बेटा तेजमल, जो धन्नेके बदलेमे चाकरी करता था वह तिमरणी गावमे मरा । 9 वरसिंहका बेटा वीका, जिसे सिंधल राजपूतोने गाव भाचराणेमें मारा ।

२० हमीर वीकावत । राव चंद्रसेणरो सुसरो । हरदास महेसोत मारियो[1] ।

२१ पंचाइण हमीररो । सं० १६६६ वीजळी भाद्राजणरी थी[2] । उरजन चाकरी करतो[3] ।

२२ रायसिंघ सं० १६ ‥‥ रोहचो जोधपुररो, सं० १६६६ रायमो भाद्राजणरो पटै केसोदास भेळो[4] । सं० १६८५ सीहरांणो भाद्राजणरो ।

हमीर वीकावतरो परवार ग्रांक २० । पंचाइणरो परवार ग्रांक २१ ।

२२ केसोदास पंचाइणरो वालपुर मांहै रांम कह्यो[5] ।

२२ उरजन पंचाइणरो । सं० १६८६ साहरियांणै थो[6] ।

२२ भोजराज पंचाइणरो ।

२२ वीरम हमीररो ।

२२ नारायणनूं भाद्राजणरो रेवड़ा पटै[7] ।

२२ भांण ।

२१ देदो हमीररो ।

२२ मन्होर, भवरांणी रहै[8] ।

२१ भोपत ।

२१ जैतसी हमीररो । जैतसी नगावतनू तुरके पकड़ियो तठै कांम ग्रायो[9] ।

ग्रखैराज धीरावत, ग्रांक १८—

१९ कूपो ग्रखैराजोत ।

२० रांम । भाखरसी दासावतरै कांम ग्रायो ।

२० कान्हसिंघ जैतसीयोतरै कांम ग्रायो ।

---

1 वीकेका वेटा हमीर, जो राव चद्रसेनका सुमरा था जिमे महेशके वेटे हरदासने मारा । 2 हमीरका वेटा पचायण, जिमके पट्टेमे भाद्राजुनका गाव वीजली था। 3 चाकरी पचायणका वेटा ग्रर्जुन करता था। 4 रायसिहको जोधपुरका रोहेचो गाव सं० १६‥‥मे पट्टे ग्रौर स० १६६६मे भाद्राजुनका रायमो गाव उसके भाई केशोदासके शामिल पट्टेमे। 5 पचायणका वेटा केशोदाम वालपुरमे मरा। 6 पचायणका वेटा ग्रर्जुन, जिमको स० १६८६मे साहरियाणो गाव पट्टेमे था। 7 नारायणको भाद्रजुनका रेवडा गाव पट्टेमें। 8 मनोहर,भवराणी गावमे रहता है। 9 हमीरका वेटा जैतसी, नागाके वेटे जैतसीको जब मुसलमानोने पकडा, वहा काम ग्राया।

१९ गोपो अखैराजोत । जैतसी ऊदावत साथै वड़ी वेढ़ कांम आयो[1] ।

२० लोलो गोपावत ।

२१ मानो, सुगाळियै सीधल आया तठै कांम आयो[2] ।

२२ आसो ।

२२ करन ।

२१ जोधो लोलावत ।

२२ भोपत ।

२१ सूरो लोलावत ।

२० लाखो गोपावत । सासरै ईदांरै गयो थो तठै कांम आयो[3] ।

भैरूंदास जैसिंघदेओत, आंक १७—

१८ जांभण भैरूदासोत । राव मालदेरै, मेहगड़ो सिवांणारो[4] ।

१९ पिराग जांभणोत । सं० १६४० मोटै राजाजी गांव गादेरी लवेरारी पटै दी थी, इतवारी धड़ थो[5] ।

२० अमरो पिरागरो सं० १६...गादेरी वरकरार रही ।

२० सकतो सं० १६६८ गोपड़ी सिवांणारी । सं० १६७२ रूंदिया कूवो[6] लवेरारो । पछै छाडियो ।

२० नरहरदास सं० १६७० नरावस जोधपुररो पटै । पछै सं० १६७१ अजमेर गोयंददासजी साथै कांम आयो ।

२१ मनोरदास नरहरदासोत । सं० १६७२ नरावस बरकरार राखियो । सं० १६८१ मेहलांणो दियो । तठा पछै[7] सं० १६८२ कुंवर अमरसिंघजीरै वसियो[8] ।

२० भगवानदास । सं० १६७८ तानूवास पटै ।

---

1 अखैराजका वेटा गोपा, ऊदाके बेटे जैतसीके साथ वडी लडाईमे काम आया। 2 माना, सुगालिये गावमे सीधल चढ कर आये तब काम आया। 3 गोपेका बेटा लाखा, ईदोके यहा अपनी ससुराल गया था वहा काम आया। 4 भैरोदासका बेटा जाभण, राव मालदेवका चाकर, सिवानेका मेहगडा पट्टेमे। 5 प्रयाग जाभणका बेटा, जिसे मोटे राजा उदयसिंहने लवेराका गादेरी गाव पट्टेमे दिया था, विश्वासपात्र मनुष्य था। 6 लवेरे गावका रूदिया नामक कुआ। 7 जिसके बाद। 8 निवास किया।

२० अचळदास प्रागदासोत ।

१९ रांमो जांभणरो । पोकरणरै गांव चंद्रसेणजीरै कांम आयो, देवराजरी वेढ़[1] ।

१९ कांन्हो जांभणोत । मेहगडै मीच मुवो[2] ।

२० मैहरांवण कांन्हावत ।

२१ तिलोकसीनूं वाघलप सिवांणारी ।

१९ सेखो जांभणरो ।

२० लिखमीदास सेखावत । सं० १६४० वासणी हरढांणा तीरै[3] । सं० १६७७ सिरांणो जाळोररो ।

१७ दयाळदास । सं० १६८० जाळोररो गांव पटै[4] ।

१७ उगरो लिखमीदासोत ।

१७ ऊदो, मेड़तारो भानावास पटै ।

१७ विसनदास । सं० १६८२ रूपावास पालीरो ऊदा भेळो[5] । सं० १६८३ भांनावास मेड़तारो पटै ।

१९ किसनो जांभणरो । उग्रसेण चंद्रसेणोत साथै मारांणो[6] ।

१९ गोपाळदास । कल्यांणदास रायमलोतरो चाकर । कल्यांणदासजी साथै सिवांणे कांम आयो[7] ।

१९ गोयददास सं० १६४२ गादेरी, करमसीसर पिराग भेळा । पछै हीरादेसर कूभा भेळो[8] ।

२० कूभो गोयदरो। सं० १६६२ गुजरातमे माडवै काम आयो[9] ।

२१ भीव कूभावत[10] । स० १६७५ कोरणो भाद्राजणरो ।

---

1 जाभणका वेटा रामा देवराजकी लडाईमे पोकरणके एक गावमे राव चद्रसेनजीके काम आया । 2 मेहगडेमे मौतसे मरा । 3 सेखेका वेटा लिखमीदाम जिसे स० १६४०मे हरढाणेके पासका वामणी गाव पट्टेमे था । 4 दयालदासको जालोरका एक गाव सम्वत् १६८०मे पट्टे था । 5 विसनदास, जिसे पाली परगनेका रूपावास सम्वत् १६८२मे ऊदाके शामिल पट्टेमे था । 6 रावचद्रसेनके वेटे उग्रसेनके साथ मारा गया । 7 गोपालदास, रायमलके वेटे कल्याणदासके साथ सिवानेमे काम आया । 8 गोयददासको सम्वत १६४२मे गादेरी और करमीसर दोनो गाव प्रयागके शामिल पट्टेमे । पीछे कूभेके साथ हीरादेसर मिला । 9 कूभा गोयददासका, स० १६६२मे गुजरातके माडवे गावमे काम आया । 10 भीम कूभेका लडका ।

सं० १६७८ सभाड़ो जोधपुररो। सं० १६८६ पोलावास मेड़तारो। सं० १६६१ कुंवर अमरसिंघजी साथै गयो।

२० तेजमाल गोयंदरो। हीरादेसर पटै।

१६ सुरतांण जांभणरो। सं० १६४० हीरादेसर मास १ रह्यो[1]। पछै गादेरीथी[2]। पछै चीनड़ी आसोपरी थी[3]।

१६ सादूल जांभणरो। धवेचासू वेढ हुई तठै कांम आयो[4]।

१६ खंगार जांभणरो। किसनसिंघजीरै वास थो[5]।

२० वीजो।

१८ ऊदो भैरवदासरो।

१६ वीरम ऊदावत। मेड़तै कांम आयो।

२० नेतसी। मेड़तारी वेढ सं० १६१८ देईदासजी साथै कांम आयो।

२१ अचळो नेतसीरो।

२२ तेजसी, सं० १६८२ ऊदारो भाद्राजणरो थो। सं० १६८५ तालियांणो जाळोररो[6]।

नेतसी वीरमोतरो परवार आंक २०। अचळो नेतसीयोतरो परवार आंक २१—

२२ जगमाल।

२२ महेस।

२१ अमो नेतसीरो।

२२ भोजो।

२१ अमो नेतसीरो।

२२ राणो सं० १६७७ खीरोहरी जाळोररी। सं० १६८४ अहुर जाळोररी। स० १६६० डागरां। पछै स० १६७५ जाळोररो सामूजो पटै[7]।

---

1 जाभणके बेटे सुरताणको स० १६४०मे हीरादेसर १ मास रहा। 2 बादमे गादेरी मिली थी। 3 और फिर आसोपका चीनडी गाव पट्टेमे दिया गया। 4 जाभणका बेटा सादूल, धवेचोसे लडाई हुई वहा काम आया। 5 जाभणका बेटा खगार, किशनसिंहजीके यहा रहता था। 6 अचलेका बेटा तेजसी, जिसे भाद्राजुनका ऊदारो गाव स० १६८२मे, और स० १६८५मे जालोरका गाव तालियाणो पट्टेमे दिया गया था। 7 राणा, अखेका बेटा, जिसे स० १६७७मे जालोरका खीरोहरी गाव, स० १६८४मे जालोरका आहोर गाव, स० १६६०मे डागरा और स० १६७५मे जालोरका सामूजो गाव पट्टेमे दिया गया था।

२२ वाघो ।

२२ रायमल ।

१६ खेतसी ऊदारो । ऊदो भैरवदासरो ।

२० जगहथ खेतसीरो ।

२१ सादूळ । संमत १६७२ भूंभादड़ो पालीरो पटै[1] ।

२२ मनोहर । संमत १६८१ भूभादड़ो । संमत १६८८ सापो सोभ्रतरो पटै[2] ।

१८ मेघो भैरवदासरो । प्रथीराजजी साथै मेड़ते कांम आयो ।

१६ भारवर ।

१६ वीदो ।

१८ गांगो भैरवदासरो ।

१६ जीवो गांगावत । मोटा राजाजीरै समावळी चाकर थो । संमत १६४० दांतणियो पटै । पछै माणकळाव पटै[3] ।

२० भोजराजनू माणकळाव वरकरार । पछै देवराजांसू डरतो छांड गयो । पछै दलपतजीरै वसियो । उठै कांम आयो[4] ।

२० वाघो जीवारो ।

२० महेस । समत १६७४ भूतेळ भाटीव जाळोररी पटै थी[5] ।

२० ईसरदास जीवारो ।

१६ नारायणदास भैरवदासरो ।

तेजसी वरजांगोत, आंक १६—

१७ पीथमराव तेजसीरो । सेखा सूजावतरौ नांनो । देईदासजीरो

---

1 सादूलको स० १६७२ मे पाली परगनेका भूभादडा गाव पट्टेमे था। 2 मनोहरको स० १६८१ मे भूभादडा और स० १६८८ मे सोजत परगनेका सापा गाव पट्टेमे दिया गया। 3 गागाका पुत्र जीवा, यह मोटाराजा उदयसिहका समावली गावमे चाकर था। सं० १६४०मे दातणिया और फिर माणकलाव गाव पट्टेमे थे। 4 भोजराज जीवाका बेटा जिसको माणकलाव गाव बरकरार, पीछे देवराजके वशजोके भयसे छोड कर चला गया और दलपतके यहा जा कर बसा और वही काम आया। 5 महेश जीवाका पुत्र, जिसके स० १६७४ में जालोरके भूतेल और भाटीव गाव पट्टेमे थे।

पिण नांनो। राव सूजोजी परणिया था। चोहुवांण जगमाल जैसिघदेग्रोतनू मारनै साचोर लियो। जीवियो तठा सूधी साचोर प्रथीराव भोगवी[1]।

१८ वाघो प्रथीरावरो। जिण कोढणारो वाघावास वसायो। साचाररो टीको हुवो थो। पछै चहुवांण रांगै नीवावत धरती सूनी की, तरै वाघो सूनी धरती छोड़ कोढणे ग्रायो[2]।

१९ सिंघो वाघावत।

२० वणवीर सिघावत। मोटा राजाजीरो सुसरो।

सिंघा वाघावतरो परवार ग्रांक १९। वणवीर सिंघावतरो परवार ग्राक २०—

२१ सूजो वणवीररो।

२२ रांमो, संमत १६६३ खारडी थोभरी पटै थी। भलो रजपूत थो[3]।

२२ रायसिंघ मूजावत।
भोपत।

२२ कांन्हो।

२३ माधो।

२१ नारायण।

२१ देदो वणवीरोत। पटाऊ पटै थी।

२१ रायसिंघ वणवीरोत।

---

1 पृथ्वीराज तेजसीका वेटा। मूजाके वेटे सेखाका यह नाना ग्रोर देईदासका भी नाना। जोधपुरका राव सूजा इसके यहा व्याहा था। इसने चौहान जयसिहदेके वेटे जगमालको मार कर साचोर लिया ग्रोर जहा तक जिदा रहा साचोर इसके ग्रधिकारमे रहा।
2 पृथ्वीरावका वेटा वाघा, जिसने कोडणावाटीका वाघावास वसाया। साचोरका तिलक हुग्रा था। पीछे चौहान राणे नीवावतने (साचोरकी) धरतीको उजाड दिया तब वाघा सूनी धरती छोड कर कोढ़णे चला ग्राया। 3 रामाके समत १६६३ थोभका खारडी गाव पट्टेमे था। ग्रच्छा राजपूत था।

२० पतो सिंघावत । गोपाळदास ऊहड़रो नांनो । बेटो नहीं ।

२० सांडो सिंघावत ।

२१ भीवो सांडावत ।

२१ रांणो भीवावत । पांनीलै राते परणियो नै सवारै वाहड़मेरां आय वित लियो तरै वाहरमें कांम आयो[1] ।

२० संकर सीघावत । गोपाळदास ऊहड़ साथै कांम आयो ।

२१ रतनो संकरोत ।

२२ जैतो रतनोत । मोहवतखांरै कांम आयो ।

२३ चांदो मांडणरै वास ।

२१ गोयंददास । पाटोधी भाटियां मारियो[2] ।

२२ जीवो, मांडण ऊहड़रै[3] ।

२१ आसो संकररो, मांडणरै वास[4] ।

२० जोधो सिंघावत । राव चंद्रसेणरा गढरोहा मांहै कांम आयो[5]।

२१ वीसो जोधावत । गोपाळदास ऊहड़ साथै कांम आयो ।

२२ सहसो, मांडण ऊहड़रै वाहर माहै कांम आयो[6] ।

२३ भगवांनदास ।

२२ वैरसल ।

२२ जैतसी ।

२१ सतो जोधावत, अउत[7] ।

१८ अजो प्रथीरावरो । सेखाजी देईदासजीरो मांमो । सेखोजी कांम आया नै देवीदासजीनू रजपूते काढिया तरै अजो ही साथै नीसरियो । पछै चीतोड़ गढरोहा माहै देईदासजी कांम

---

1 भीवाका बेटा राणाका, रातको पानीले गावमे विवाह हुआ और सवेरे वाहडमेरे आकर जब उसके पशुओको ले गये, तब यह उनके पीछे वाहरमे चढा और वहां काम आ गया। 2 गोयंददासको पाटोदीके भाटियोने मार दिया। 3 जीवा, माडण उहडकी चाकरीमे। 4 शंकरका बेटा आसा माडणके यहा रहा। 5 सिघाका बेटा जोधाराव चन्द्रसेनके गढरोहेमें काम आया। 6 सहसा, माडण ऊहडकी वाहरमें काम आया। 7 जोधाका बेटा सत्ता, अपुत्र रहा।

आया तठै अजो पिण कांम आयो[1] ।

हीमाळो वरजांगोत, आंक १६—

१७ सोभो वडो रजपूत हुवो । आधी साचोर सोभारै हुती । आधी साचोर गुजराततरा पातसाहरी दो मुगल प्रेमनू हुती । पछै मुगले कोट मांहै गाय मारी तिणसूं उपाध हुवो, सोभै प्रेम मुगलनू मारियो[2] ।

१७ ऊदो हिमाळारो ।

१७ देवो हिमाळारो ।

१७ सांगो हिमाळारो ।

चोहुवांण सोभो हीमाळावत । मुगल प्रेम गाय मारी तिण ऊपर मारियो, तिण साखरो गुण[3]—

दूहा

छायल फूल विछाय, वीसम तो वरजांगदे ।
गैमर[4] गोरी राय, तिण[5] आंमास[6] अड़ाविया ॥ १ ॥

इसडै[7] सै अहिनांण[8], चहुवांणो चौथे चलण[9] ।
डखडखती दीवांण, सुजड़ी[10] आयो सोभडो[11] ॥ २ ॥

काला काळ कलास, सरस पलासां सोभडो ।
वीकम सीहा वास, मांहि मसीता[12] मांडजै ॥ ३ ॥

---

1 पृथ्वीराजरा बेटा अजा, यह सेखा और देईदासका मामा जब सेखा मारा गया और देईदासको राजपूतोंने निकाल दिया तब अजा भी उसके साथ निकल गया, फिर चितौड़के गढरोहेमें देईदास काम आया, वहा अजा भी काम आ गया। 2 शोभा बडा वीर राजपूत हुआ, आधी साचोर शोभाको मिली हुई थी और आधी गुजरातके बादशाहकी ओर से मुगल प्रेमको दी हुई थी, पीछे मुगलोने कोटके अंदर गाय मार डाली, जिससे झगडा हो गया, शोभाने प्रेम मुगलको मार दिया। 3 चौहान हीमालेका बेटा शोभा, जिसने प्रेम मुगलको गाय मारने पर मार दिया था, जिसका साक्षी—काव्यमें वर्णन। 4 हाथी। 5 जिसने। 6 घर। 7 ऐसे। 8 चिन्ह, व्यवहार। 9 पांव। 10 कटारी। 11 शोभा चौहान। 12 मस्जिदोंमें।

हीमाळाउत[1] हीज, सुजडी[2] साही[3] सोभड़े[4] ।
ढील पहां रिमहां[5] घड़ी, खखळ-वखळ की खीज[6] ॥ ४ ॥

सोभड़ा सूअर सीत, दूछर ध्यावै ज्यां दिसी ।
भीत हुवा भड़ भड़भड़ै, रोद्रित कर गज रीत ॥ ५ ॥

चोळ[7] वदन चहुवांण, मिलक अढ़ारे मारिया ।
सुजड़ी आयो सोभड़ो, डखडखती दीवांण ॥ ६ ॥

वणवीरोत वखांण[8], हीमाळावत मन हुवा ।
त्रिजड़ी[9] काढेवा तणी[10], चलण दियै चहुवांण ॥ ७ ॥

सोभड़ै कियो सुगाळ, मुंहगौ एकण ताळमें ।
खेतल वाहण खड़खड़ै, चुड़खै चामरियाळ ॥ ८ ॥

लोद्रां चीलू आध, भागी सोह[11] कोई भणै[12] ।
स्रोभ्रमड़ा[13] स्रग सातमैं[14], वावा तोरण वांध ॥ ९ ॥

॥ इति साचोरा चहुवांणांरी ख्यात वारता संपूर्ण ॥

वात

चहुवांणां माहे साख १ वोड़ांरी छै। अंही[15] राव लाखणरा पोतरा[16] सोनगरा जाळोररा धणी। सीरोहीरा धणी, कीतूरा पोतरा वोडो भाखररो वेटो हुवो। तिणरा वांसला वोड़ा कहीजै छै[17]। इणारै उतन परगनो जाळोररै सेणारो छोटो सो परगनो छै[18]। आगै

---

1 हीमालेका पुत्र शोभा। 2 कटारी। 3 धारण की। 4 शोभेने। 5 शत्रुओं। 6 क्रोध। 7 लाल। 8 प्रशंसा। 9 तलवार। 10 की, लिये। 11 सब कोई, सभी। 12 कहते हैं। 13 शोभा। 14 सातवें स्वर्गमें। 15 ये भी। 16 पोते। 17 जिनके पीछे वाले बोडा कहलाते हैं। 18 इनका निवास जालोर परगने के सेणा गांव जिसके पीछे एक छोटा सा परगना है।

ओ सीरोही वासै थो[1] । पछै राव सुरतांण भांणोत, राव कला मेहाजलोतसू वेढ काळाधरी[2]की तद विहारी मिलकखांन हेतावतनू परगना ४ जाळोर वांसै[3] दिया था सु तदरा[4] जाळोर वांसै पड़िया तासु हमै जाळोर वांसै हीज छै। परगनो सेणो जाळोरसू कोस १० सीरोही दिसा ऊगवणनू[5] सीरोहीरा गावांसू कांकड[6] । परगनो दुसाखो[7] छै। सहर छोटी सी भाखरीरी खांभ[8], अगवारै[9] वडो मैदांन। ऊनाळी निपठ घणी[10] । छोटा मोटा ढीबड़ा[11] ३०० हुवै । गांव १२ सेणा वांसै । बोडांरो ठिकांणो घणा दिनारो थो सु सं० १६९९ राव महेसदास दलपतोतनू जाळोर हुई, वरस ४ महेसदास जीवियो, तठाऊं[12] बोडो कल्याणदास नारांणदासोतनूं सेणो, सदा भोमिया रुखो हुतो[13] त्यौ रह्यो[14] । पछै राव महेसदास दलपतोत समत् १७०३[15] ...। पछै पातसाह रतन महेसदासोतनू दीवी । पछै राव रतन बोडा कल्याणदास नाराणदासोतनूं सेणै वाहर रुखो आयो[16]। कहाडियो—"म्हे आघा जावां छां, थे सताब आवो[17] ।" पछै कल्यांणदास थोड़ा हीज साथसू आयो[18], तरै रतन आप हाथसूं बरछीरी दे कल्याणदासनू मारियो नै सेणो लियो[19] । बाकीरा नासनै सीरोहीरा देसमे गया[20] । सेणो निखालस हुवो[21] । नै आगै नवघण, विजो

---

1 पहले यह सिरोही रियासतका गाव था। 2 कालदरी गाव। 3 पीछे। 4 तबसे। 5 पूर्व दिशाकी ओर। 6 सीमा। 7 परगना दुफसली है। 8 शहर छोटी सी पहाडोकी ढलानमे। 9 आगे। 10 रबीकी फसल अधिक। 11 रहँट। 12 तबसे। 13 सदा भोमियाकी भाति था। 14 उसी प्रकार रहा। 15 प्राप्त सभी प्रतियोमे यहा कुछ अश छूटा हुआ है जिससे यहा यह पता नही पडता कि सं० १६९९से स० १७०३ तक चार वर्ष महेशदासके अधिकारमे जालोर रहनेके बाद महेशदासका क्या हुआ ? वैसे इसके आगे महेशदासके बेटे रतनको जालोर देनेका उल्लेख है, इससे यह अनुमान होता है कि त्रुटित अशमे महेशदासके मर जानेका उल्लेख होना चाहिए। 16 पीछे राव रतन नारायणदासके बेटे कल्याणदास बोडेके लिए वाहरके रूपमे आया। 17 उसने कहलाया कि हम आगे जा रहे है, तुम भी जल्दी आओ। 18 लेकिन कल्याणदास थोड़े मनुष्योको ही लेकर आया। 19 और सेणे पर अधिकार कर लिया। 20 शेष भाग कर सिरोही राज्यमे चले गये। 21 सेणा गाव सर्वथा अधिकारमे हो गया।

वडा अखाड़सिंघ रजपूत हुवा छै[1] । नै काल्हरै दिन[2] वोड़ो नाराण-दास वाघावत सं० १६८० श्री महाराज गजसिंघजीरी वार मांहे हुतो[3], वडो रजपूत हुवो । सं० १६७४ कुंवर गजसिंघजी जाळोर लियो तद विहारियांसूं जुदो फूटनै कुंवरजीसूं आय मिळियो[4] । आगै राजा श्री सूरजसिंघजी वोड़ा नाराणदासरी वैहन परणिया हुता । नाराणदास वड़ा उमरावांरै दावै[5] रैहतो । सेणो रुपिया १००००)रो[6] । ठोड़ गांव १२[7]—

१ सेणो । १ चांदण । १ भेटाळो । १ मेडो । १ वाहिरलो वास । १ मांहिलो वास । १ तुंड । १ देवड़ो । १ दही गांव । १ नागण । १ उंडवाड़ो । १ कणावद ।

वोड़ांरी वंसावळी—

१ राव लाखण ।	१३ लखो ।
२ बल ।	१४ महिपाळदे ।
३ सोही ।	१५ हाजो ।
४ महंदराव ।	१६ सांवत ।
५ अलण ।	१७ सिखरो ।
६ जीदराव ।	१८ नवभण ।
७ आसराव ।	२९ करमो* ।
८ आलण ।	२० विजो ।
९ कीतू ।	२१ वाघो ।
१० समरसी ।	२२ नाराणदास ।
११ भाखर ।	२३ कल्याणदास ।
११ वोडो ।	

1 पहिले नवधण और विजा बड़े वाके राजपूत हो गये हैं । 2 कलके दिन । 3 महाराज गजसिंहके समयमें था । 4 तब विहारियोंसे अलग और विरुद्ध होकर कुंवरजीसे मिल गया । 5 तरह । 6 सेणा दस हजारकी आयका । 7 उसके पीछे बारह गांव हैं ।

* करमा वडा कर्मण्य और वीर पुरुष था । अपनी अद्भुत वीरताके कारण यह 'मामाजी' वा 'मामा खेजड़ा'के नामसे पूजा जाता है ।

ग्रौर तो बोड़ा घणा कठै ही[1] मुणिया नही, नै एक बोड़ो मांनो नरबदोत जाळोररै गांव बापड़ोतरै रहतो, बापडोतरो पटै हुतो। गांव ५ तथा ७ पटी दहियावतरी मांहै–सीहरांणो, खारी सांधाणो, देवसीवास, ग्रालवाड़ो ग्रालासण। मांनारा भाईबंध रहता। माणस २००री जोड़ हुंती[2]। ग्रसवार ४० चढता।

मांनो नरबदरो, सीहो, ठाकुरसी, सूरो, मेहैवैरै गांव भाटेवै वळै बोड़ा रहै छै[3]।

वात

चहुवांणांरी साख मांहै एक साख कांपलिया कहावै छै। सु कांपलो साचोररो गांव छै, तिको इणांरो[4] राजथांन, तिण गांव लारै कांपलिया नांव[5] पड़ियो। ग्रागै कुंभो कांपलियो वडो रजपूत हुवो छै तिणरा गांव कुभाछतरा कहीजता[6]; सु धनवो, धोरीनमो कुंभाछतमे मुदै छै[7]। ग्रो खंड साचोर वासै लागै छै[8]। कुंभाछत साचोर नै ईडर लगती[9]।

वात

कुभा कांपलियारै घोड़ी १ निपट ग्रवल छै[10]। तिण दिन रावळ मालै पिछम नै घणी धरती खाटी छै[11], सु सको पिछमरा भोमिया रावळ मालारो ग्रमल मांनै छै[12]। कुंभारी घोड़ी लेणरो विचार करै छै। तिण समै रावळ मालारै परधांन भोग्रो नाई छै; तिणनू रावळ कहै छै—"ग्रा घोड़ी ली चाहीजै।" तरै भोग्रो कहै छै—"कुंभो तो पाधरिया घोडो देणरो न छै[13]" सु कुंभानू तेड़[14] दरबार वैसांणियो

1 कही। 2 बराबरकी जोडीके २०० ग्रादमी इसके पास थे। 3 नरबदका बेटा माना, सीहा, ठाकुरसी ग्रौर सूरा ये मेहवे परगनेके भाटवे गावमे रहते हैं। 4 इनका। 5 पाला, वशका नाम। 6 जिसके गाव 'कुभाछत'के कहे जाते थे। 7 सो धनवा ग्रौर धोरीनमा 'कुभाछत'मे मुख्य हैं। 8 यह खड साचोरके पीछे लगा है ग्रर्थात् साचोर परगनेमे है। 9 कुभाछत खड, साचोर परगने ग्रौर ईडर रियासतमे लगा हुग्रा है। 10 कुभा कापलियेके घोडी १ ग्रत्यत सुन्दर थी। 11 उन दिनोमे रावल मालदेने पश्चिममे बहुत धरती (प्रदेश) प्राप्त की है। 12 सो पश्चिमके सभी भोमिये रावल मालदेका शासन मानते हैं। 13 कुभा सीधे रास्ते घोडी देने वाला नही है। 14 सो कुभाको बुला कर।

छै[1] । आदमी ५०० चीधड़ सिलह पैहर सांमा वैठा छै[2] । आदमी ५०० तोवची जांमकियां लगाय ऊभा रह्या छै[3] । नै मालै इण वेळा मांहै घोड़ीरै वास्तै भोमिआ भोवा नाईनूं परधानगी वीच मेलियो[4]। भोवै कह्यो—"रावळजी थांरी[5] घोड़ी मांगै छै।" भोवै मूंडै कह्यो तठा पैहली[6] कुंभो तरवाररो मूठ हाथ दे वेगो[7] ऊठियो। रावळरो पिण साथ मूंठे हाथ दे उठियो; नै कुंभे भोवानूं कह्यो—"म्हारी घोड़ी रावळनू[8] देनै[9] पछै म्हारो पलांण[10] रावळरी मा ऊपर मांडू, किना[11] थारी मा ऊपर मांडू ?" इण आछटनै[12] तरवार काढ़ी[13]। सोर हुवो। कुंभारै माथैरा केस ऊभा हुवा[14]। मुंहडो रातो–चोळ हुवो[15]। तरै[16] रावळनूं किणहीक जायने कह्यो—"कुंभानू मारो तो छो[17], पिण एक वार रजपूतनूं सूरत चढी छै[18], मुंहडो देखण लायक छै।" तरै रावळ वाहिर आयो, कुभानू दीठो[19], राजी हुवा, उवार लियो[20]। कह्यो—"जैतमाळरी वेटी पतीनू वीद चाहीजतो हुतो सु जुड़ियो[21] ।" पछै पती कुभा कापलियानूं परणाई। तिणरै पेटरा वेटा २ हुवा। खेतो, भोजो। वड़ा रजपूत हुवा। तठा पैहली[22] राव जैतमालनू राव जगमाल मालावत मारियो थो सु जैतमालरो माल वैहचीजतो थो सु हैसा ५ किया[23]। तीन तो तीना वेटांरा किया। एक हैंसो पतीरो कियो; नै हैसो १ मालरो कियो नै उजाळो वछैरो अै जुदा किया था[24], कह्यो—"ओ हैसो नै उजाळो वछेरो जैतमालरो वैर लेसी तिको लेसी[25]।" तरै ओ हैंसो पती लियो। कह्यौ—

1 दरवारमे वैठा दिया है। 2 पाचसौ आदमी सिलहवस्तर पहन कर सामने वैठे हैं। 3 और पाचसौ तोपची जामगिये (पलीते) लगा कर खडे हैं। 4 और मालने इस समय भोमिया भावै नाईको उसकी प्रधानगीकी हैसियतसे घोडी लेनेके लिये भेजा। 5 तुम्हारी। 6 जिसके पहले। 7 झटपट। 8 को। 9 दे कर। 10 जीन। 11 अथवा। 12 झपट कर। 13 निकाली। 14 खडे हो गये। 15 मुंह लाल हो गया। 16 तव। 17 कुभाको मारते तो हो। 18 परतु राजपूतको जो पौरुप चढा है, उसे एक वार। 19 कुभेको देखा। 20 वलैया ली, वलि गया। 21 जैतमालकी वेटीको दूल्हेकी आवश्यकता थी सो मिल गया। 22 इसके पहले। 23 मालका वँटवारा होता था उसके पाच भाग किये। 24 एक भाग मालका और उजाला नामके वछेरेका अलग किया गया था। 25 यह हिस्सा और उजाला वछेरा, जैतमाल मारा गया, उस वैरका जो वदला लेगा उसको मिलेगा।

"वैर म्हारा वेटा खेतो भोजो लेसी[1] ।" पछै खेते भोजे घणा धूंकळ[2] जगमालसूं किया । जगमालरा दो भाई मारिया, खेढो वानर जगमालरै थो तिणरा[3] सात वेटा मारिया ।

इति श्री कांपलिया चहुवांणांरी वात संपूर्ण ।

वात खीचियांरी

ग्रै ही चहुवांण राव लाखणरा पोतरा ।

पीढियांरी विगत—

१. राव लाखण ।	५. ग्रणहल ।
२. वल ।	६. जींदराव ।
३. सोही ।	७. ग्रासराव ।
४. महंदराव ।	८. मांणकराव ।

वात

मांणकरा व ग्रासरावरो वेटो तिणसूं[4] वाप खुसी हुवो, तरै एकण[5] दिन ग्रासराव मांणकरावनूं कह्यो—"तू ऊगां-ग्राथवतां[6] वीच फिर ग्रावै तितरी[7] धरती म्हे तोनूं देवां । तरै मांणकराव दिन ऊगतां समो चढियो सु दिन ग्राथमियो तितरै फिर ग्रायो[8] । इतरी धरती संभररो चढियो, तैरी विगत[9]—नागोररी पटी, ८४ सारी ही, भदांण इण दीठी[10], तरै गढ कोटनूं ठौड ग्रठै विचारी नै ग्राथवणनूं[11] जायल कानी[12] मांणकराव नीसरियो,[13] तरै उठै ग्वार[14] उतरिया था[15] नै ग्रो[16] पिण[17] सारा दिनरो फिरतो भूखो हुवो हुतो उठै कर

1 वैरका वदला मेरे वेटे खेता ग्रौर भोजा लेंगे । 2 उपद्रव । 3 उसके । 4 जिससे । 5 एक । 6 सूर्य उदय हो कर ग्रस्त होवे । 7 उतनी । 8 तव माणकराव दिन उगनेके साथ ही चढा सो दिन ग्रस्त हुग्रा तव तक फिर कर लौट ग्राया । 9 साभरसे चढ कर इतनी धरतीमे फिर कर ग्राया, जिसका विवरण । 10 देखी । 11 पश्चिमकी ग्रोर । 12 तरफ । 13 निकला । 14 ग्वारिये लोग । (एक स्थायी ग्रावास-रहित जाति, जो लकडीके कघे ग्रादि बना कर बचनेका काम करती है ।) 15 डेरे डाले हुए थे । 16 यह । 17 भी ।

नीसरियो;[1] तरै ग्वारै मनवार कीवी,[2] तरै मांणकराव कह्यो—"क्यूं रांधो अन्न हाजर हुवै तो ल्यावो[3]" सु ग्वारांरै चावळ मूगांरी खीचड़ी तयार थी सु वाटका एकण माहै घात ल्याया[4]। मांणकराव चढियै हीज खाधी[5]। आथणरो वाप तीरै आयो[6] तरै वाप मांणकरावनूं कह्यो—"कितरीहेक धरती फिर आयो[7] ?" तरै इण वात मांड कही[8]। तरै वाप पूछियो—"कठैही गढ़नू ठौड विचारी छै[9] ?" तरै इण भदांणरी ठौड़ दाखवी[10]। तरै वाप कह्यो—"तैं सारा दिनमे कठै ही क्यूं खाधो[11] ?" तरै मांणकराव ग्वारांरी खीचड़ी खाधी हुती तिकी वात कही[12]—"जु जायल कनै हूं आय नीसरियो, तठै ग्वार पड़िया था,[13] त्यानू म्हे कह्यो[14]—"क्यू रांधो धांन हुवै तो ल्यावो। तरै ग्वारां चावळ मूगारी खीचडी धोवो भरनै[15] ऊंठ चढियानूं होज दीवी, सु मै खाधी[16]" तरै वाप कह्यो—"यूं तैं खीचडी खाधी तो थांहरी नख खीचीरी दी नै वा धरती दी,[17] नै कह्यो—"वेऊ ठोड़ां भदांणै, जाहल कोट कराय, वेऊ राजथान कर[18]।" तरै मांणकराव वेऊ ठोड़ां कोट कराया नै वेऊ राजथांन किया।

माणकराव, अजैराव, चंद्रराव, लखणराव, गोयंदराव, सांगमराव, प्रथीराजरो सांवत गूदळराव।

राजा प्रथीराज चहुवाणरी वैर[19] सुहवदे जोईयांणी रूसणै[20] वापरै घरै हुती। तिणनू[21] खाटूरी भाखरी[22] उणरै[23] वाप माळियो[24]

---

1 भूखा-थका उधर होकर निकला। 2 तब ग्वारियोने मनुहार की। 3 कोई रधा हुआ अन्न तैयार हो तो ले आओ। 4 सो एक कटोरेमे डाल कर लाये। 5 माणकरावने ऊट पर चढे हुए ही खाई। 6 सध्याको वापके पास आया। 7 कितनी धरतीमे फिर आया। 8 तब इसने सब हकीकत कही। 9 कही गढ वनवानेकी जगहका भी सोचा है ? 10 तब इसने भदाणकी जगह दिखाई (जिक्र किया)। 11 तैंने दिन भरमे कही कुछ खाया ? 12 तब माणकरावने ग्वारियोकी खिचडी खाई थी वह बात कही। 13 वहा ग्वारिये डेरे डाले पडे थे। 14 उनको मैंने कहा। 15 दोनों हाथोके सम्पुटको भर करके। 16 ऊंट पर चढे हुएको ही दी और मैंने खा ली। 17 इस प्रकार तूने खिचडी खायी तो तुम्हारी शाखा 'खीची' प्रदान की गई और वह धरती भी तुम्हे दे दी गई। 18 भदाणे और जायल दोनो स्थानोमे कोट बनवा कर दोनोंको राजधानी बना लो। 19 पत्नी। 20 नाराजीमे। 21 उसको। 22 पहाडी। 23 उसके। 24 महल।

करायो । इसो[1] ऊंचो करायो, जिणरो दीयो अजमेर दीसै[2] । तिणसूं गूदळराव हालतो मांडियो सु इसड़ी सुरंग एक वणाई, जिकाहूं उणरै गांवथी सुहवदेरै माळियै छांनो आवै[3] सु प्रथीराजरी वैर अजैदे दहियांणी अजमेर थकां अटकळी[4]; किणी भांत उण दीवासूं, कोइक मरद आवै छै. सु तिका बात प्रथीराज आगै कही, तरै प्रथीराज चोकीरो घोड़ो थो तिके चढनै उडायो,[5] नै अजांणजकरो[6] सुहवदेरै माळियारी दोढी गयो । घोड़ो परो छोडनै । तरै प्रोळियै दोड़ खबर आगै दीवी । वांसाथी[7] प्रथीराज उत्तर आयो, सु गूदळराव तो सुरंग मांहै हुय गयो । प्रथीराज आय ढोलियै सूतो[8] । परभात हुवो, सु गूदळरावरै पगांरो जोडो उठै रह्यो सु प्रथीराज दीठो[9] नै बीजा पण माळियारा सभाव अटकळिया[10] तरै सुहवदेनूं प्रथीराज कह्यो–"ओ जूतो किणरो छै ? अठै कुण मरद आवै छै ?" तरै सुहवदे वेळा दोय च्यार तो टाळाटोळारी कही; तरै प्रथीराजरी भूठी आख देखी;[11] तरै सूधो कह्यो[12]– 'अठै गूदळराव खीची आवै छै" तरै प्रथीराज आपरै घरै फिर आयो, नै सवारै चामंडराय दाहिमो खीचियां ऊपर जायल फौज दे विदा कियो[13] तरै उठाथी गूदळराव नीसरियो सु माळवै गयो । उठै डोडिया रजपूत रहता, तिणारै गढ १२ हुता[14] तिके गूदळराव इणांरा बेटा पोतरा मारनै लिया । मऊ, मैदानो, गागूरूण, वालाभेट, सारगपुर, गूगोर, वार, वडोद, खाताखेड़ी, रामगढ, चाचरणी ।

जायल राजथान कियो सु गोरारा पोतरा[15] खीचीवाड़ै गया ।

---

1 इतना । 2 जिसका दीपक अजमेरमे दिखाई दे । 3 जिससे गूदलरावका अनुचित सबध हो गया सो एक सुरग ऐसी बनवाई जिससे वह उसके गावसे सुहवदेके महलमे गुप्त रूपसे आवे । 4 अजमेर होते हुए ही अनुमान कर लिया । 5 तब पृथ्वीराजने चौकीके घोडे पर चढ कर उसे उडाया । 6 अचानक । 7 पीछेसे । 8 पृथ्वीराज आकर पलग पर सो गया । 9 गूंदलरावके पांवोके जूते वहां रह गये सो पृथ्वीराजने देखे । 10 और महलके दूसरे लक्षणोंसे भी अनुमान लगाया । 11 जब पृथ्वीराजकी बदली हुई आख देखी । 12 तब उसने सीधासा उत्तर दे दिया । 13 और दूसरे दिन चामुडराय दाहिमाको फौज देकर खीचियोके ऊपर जायलको रवाना किया । 14 जिनके १२ गढ थे । 15 गोराके पोते ।

भदांणों राजथांन राव गालणरो हुवो । जिण[1] नागोर गीदांणी तळाव करायो । तिण साखरो दूहो[2] —

"गीदा हुता भदाणिया, तूंगै जायलवाळ ।"

कवित्त

खंड पूंगळ खळभळै,[3] कोट मरवटां टळक्कै ।
देरावर डिगमगै, लसै वरि हा हा संकै[4] ।।
लुद्रवो थरथरै,[5] छेलपुर नह संगट्टै ।
भुटां अनै भाटियां सास नीवट्ट नीवट्टै ।।
वीकमपुर वसै न वारही, धूजै धर पाटण पड़ै ।
गीदो रोद्र भदांणियो धाए सांमेई घड़ै[6] ।।१।।

वात

कहै छै गीदारै पच्छिमनूं चौरासी गढ हुता; तिणरै वेटो मांहगराव हुवो, तिणरो दूहो—

आंखडियां रतनाळियां, मूंछ अवट्टां फेर ।
जिण भय कांपै गज्जणो, आ गीदांणी केर ।।१।।

तिण गूदलरावरा पोतरा खीचीवाड़ै निपट वडा रजपूत हुवा। तिणां मांहै[7] धारू आनळोत वड़ो दातार, वडो जूझार हुवो । आनानू साखलै सीहड़ वडो रजपूत जांण पागळी[8] वेटी परणाई हुती । पण कहै छै, पछै आंनै तिणनू सुहागण की[9] । तिणरै पेट धारू वडो दातार, वडो जूझार, ससार सिरोमण रजपूत हुवो ।

वात

खीची आंनो दुकाळ मांहै डोडारै परणियो थो[10] । सु सासरै जाणनै डोडवाडै जातो थो[11] सु परगना कोटारै गाव सूरसेन गूढ़ा

1 जिसने । 2 जिसकी साक्षीका दोहा । 3 खलबली मचती है । 4 डरते हैं । 5 कापता है । 6 सेनाके सामने दौड़ता है । 7 उनमे । 8 लूली । 9 पीछे आनाने उसको सौभाग्य दिया (मानित किया) । 10 खीची आना दुकालमे डोडोके यहाँ व्याहा था । 11 ससुराल जानेके लिए डोडवाड जा रहा था ।

सूवा[1] जाय डेरो कियो छै। सु आनारी वहू सांखलीनूं आधांन[2] छै। नु दसमा ऊपर दिन जाय छै[3]। आनो तिण समै निपट वेखरच छै[4]। सूल सामांन मांमूर कू न छै[5]; सु उठै धारूरी मा कस्टी रातरी; तरै डेरो डांडो साथे, मांमूर क्यू न छै[6]। तरै पाखती[7] एक पुरांणो वडो देहुरो[8] छै, तठै सांखलीनू ओळै राखी[9]। उठै धारू जायो[10]। तरै पीटी एकी ऊपर राखियो[11] तठै सापरो विल १ छै, तिण मांहैसू साप १ नीसरनै[12] पीढ़ी दोळी[13] परदिखणा[14] देनै मोहर १, सोनो तोळा पांच भररी मेल गयो,[15] सु धारूरी मा सारो विरतंत[16] देखे छै, नै पछै मोहर उरी ली,[17] नै सवारै आंनै मांहै आयनै वैरनू कह्यो[18]–"कूच करां पिण खांणानू सारा गुढारा लोगरै कनै क्यू न छै।" तरै वैर कह्यो–"आज तो मोसौं चालियो जाय नही; नै मोहर वा आंनानूं सांखली दीवी, कह्यो–'आज तो खरच इणरो करो।" तरै आंनो खुसी हुवो; जांणियो–"सांखली आ मोहर आप कनै[19] किणही मूल[20] वेळा-कु-वेळानूं[21] कठैक छांनो[22] राखी हुती, सु आज गुढारा लोगनूं लांघण[23] पडतो जांणनै मोनूं दी छै।" पछै दूजै[24] दिन पिण साप उणहीज भांत पीढी दोळी परदिखणा देनै मोहर मेल गयो। सांखली आनानू दिन ५ तथा ७ इण भांत साप मोहर मेल जाय; धारूरी मा मोहर उरी लेनै आनानू दै। तरै आंनारै मनमे इचरज[25] आयो–"म्हारी वैर सामती मोनू मोहर कठाथी दे छै[26] ?" तरै आठमै दिन वैरनू आनै मोहररी वात पूछी; तरै वैर वात मांडनै सोह[27] कही; नै कह्यो–"आज थे पिण उण वेळा आयनै तमासो देखो।" तरै आंनो

---

1 निकट। 2 गर्भ। 3 दसवें महीने के ऊपर दिन निकल रहे हैं। 4 इनके पास उस समय खर्च करनेको कुछ भी नहीं है। 5 खाने-पीने आदिका सामान कुछ भी नहीं है। 6 जो यहां धायकी मांको रातमें प्रसव-पीड़ा हुई तो वहां डेरे-डांडे आदिका कुछ भी साधन नहीं है। 7 पासमें। 8 मन्दिर। 9 वहां सांखलीको ओटमें रखा। 10 वहां धायने जन्म लिया। 11 तब नवजात शिशुको एक मचिया पर रखा। 12 निकल कर। 13 चारों ओर। 14 प्रदक्षिणा। 15 रख गया। 16 वृत्तान्त। 17 ले ली। 18 और दूसरे दिन धाय ने सवेरे आ कर अपनी स्त्रीको कहा। 19 पास। 20 किसी प्रकार। 21 समय-कुसमय। 22 गुप्त। 23 लंघन। 24 दूसरे। 25 अचरज। 26 मेरी वैरी निरन्तर मुहर कहांसे ला कर मुझे देती है ? 27 सब।

पिण उण वेळा[1] आयो सु ओ साप आयो सु परदिखणा दे मोहर १ मेलनै जावण लागो, तरै आंनै सापनूं पूछियो–"तू कुण छै[2] ? नै तूं इण डावडारी[3] इतरी-इतरी[4] रिख्या[5] करै छै; सु तोनै इण कुण सनमंध छै[6] ?" तरै साप मांणसरी[7] भाखा[8] बोलियो, कह्यो–'आगै इण देस राजा हूंन वडो महाराज हुवो छै, तिको जीव थारै पेट बेटो हुय आयो छै,[9] नै उण राजा हूंननै मो मित्रताई हुती, सु मोनू तीस चरू[10] मोहरांरा भरिया सूपिया[11] छै सु इण देहुरै मांहै म्हारा बिल कनै इण ठोड़ छै। म्हैं इतरा[12] दिन रखवाळी कीवी। हमै चरू औ थांहरा बेटारा छै[13]। थे इण ठोड खिणनै उरा ल्यो[14] नै थे इण ठोड़था[15] कठै ही[16] आघा-पाछा मत जावो। आ धरती थांहरै बेटां-पोतांरै सारी हाथ आवसी[17]। अठै हीज[18] कोट करावो।" तरै सापरै वचनथी[19] आंनो अठै रह्यो नै डोडांसू आप जाय मिळनै[20] कह्यो–"थे कहो तो म्हे अठै हीज रहां[21]। तरै डोडे कह्यो–"भली वात।" पछै आंनै उठै कोट करायो। धारू मोटो हुवो, तद धरतीरा धणी डोड हुता। तरै धारू मांमा कनै गयो। चाकरी करण लागो। डोडे सपूत देख भांणेज माथै[22] सारी दरबाररी, दीवांणरी मदार[23] राखी। पातसाहरी चाकरी डोडांरै वदळै धारू करण लागौ। डोड दिन-दिन गळता गया[24]। खीची दिन-दिन वधता गया[25]। वडी ठाकुराई हुई। पातसाह अकबररी पातसाही ताउं[26] तो निपट जोर साहिवी[27] थी। अकवर पातसाह खीचीवाडा ऊपर कछवाहा मानसिंह भगवंतदासोतनूं कुवरपदै[28] फौज दे मेलियो हुतो,[29] तद मांनसिंघ खीचो रायसल वेढ़

---

1 उस समय। 2 तू कौन है ? 3 लडकेकी। 4 इतनी-इतनी। 5 रक्षा। 6 सो तुझमे इसका क्या सबध है ? 7 मनुष्य। 8 भाषा। 9 वह जीव तेरे (और तेरी स्त्रीके) पेट पुत्र होकर आया है। 10 चरू, देग। 11 सौंपे हैं। 12 इतने। 13 अब ये चरू तुम्हारे बेटेके हैं। 14 तुम इस जगहको खोद कर ले लो। 15 से। 16 कही भी। 17 यह सब धरती तुम्हारे बेटे-पोतोंके हाथ आयेगी। 18 यहा ही। 19 से। 20 मिल करके। 21 तुम कहो तो हम यहा ही रहें। 22 के ऊपर। 23 आधार। 24 घटते गये, निर्वंश होते गये। 25 बढ़ते गये। 26 तक। 27 हुकूमत। 28 कुवरपदकी अवस्थामे, कुमारावस्थामे। 29 भेजा था।

हुई । मांनसिंघ वेढ जीती । रायसल वेढ हारी । राव प्रथीराज हरराजोत रायसलरो चाकर, राव देवीदास सूजावतरो पोतरो[1] काम आयो । तठा पछै[2] वळै[3] एक वार राव प्रथीराज कल्यांणमलोत वीकानेरियानूं[4] पातसाहजी गढ़ गागुरण दी थी, तद पिण[5] वेढ १ हुई । तिकी[6] राव प्रथीराज जीती । खीची हारिया । पछै पातसाह जहांगीर खीचियांसू जोर लागो[7] । मऊ राव रतननू इनांममे दीवी, कह्यो– "मार ल्यो[8] ।" पछै राव रतन जोर मऊसूं खीचियांसूं राह हुय लागो[9] । थाणा ४ असवार २००० मऊरा देसमे राखिया । गांव रजपूतांनू बाट दिया[10] । राव गोयददास उग्रसेनोत, राव कान रायमलोत राठोड़ां सिरदारानूं राखिया । पछै राव रतनरा साथ रैनै खीचियां मांमला[11] ठौड-ठौड़ घणा हुवा । खीचियांसूं धरती छूटण हाली[12] । राजा सालवाहन पिण राव रतनरै साथ मारियो[13] । दिन-दिन खीची टूटता गया[14] । हाडारो जमाव हूतो गयो । हाड़ै खीची मारनै धरती भोग घाती[15] । मुदौ मऊ ऊपर[16] सु मऊनू गांव १४०० लागै । गाव ७०० अगवारै तिकै चौडै, गांव ७०० पछवाड़ै तिणां झाड़ पाहाड घणा[17] ।

राव गोपाळ मऊ, मैदांनरो धणी,[18] वडो रजपूत हुवो, पातसाही चाकरी करतो । खीचियांसू और ठोड़ तो गई । घणा दिन हुवा चाचरणी तो वारसां कईक पैहली खीची वाघरी मा, वैर सीधळ हुती तिका जीन साज पैहर-पैहरनै पातसाही फौजासू केई लडाई लड़ी[19] ।

---

1 पौत्र । 2 जिसके बाद । 3 फिर । 4 बीकानेर वालेको । 5 तब भी । 6 जिसको । 7 विवश करने लगा, हमला करने लगा । 8 मार करके अधिकार कर लो । 9 पीछे राव रतन मऊके खीचियोंसे राहु होकर पीछे लगा, लडाई करने लगा । 10 बांट दिये । 11 लडाइयां । 12 खीचियोंसे धरती छूटनेको चली । 13 राव रतनके साथने राजा सालिवाहनको भी मार दिया । 14 दिन-दिन खीची कमजोर होते गये । 15 हाडोंने खीचियोंको मार करके धरतीको अपने अधिकारमे कर लिया । 16 मुख्य आधार मऊके ऊपर । 17 गाव ७०० आगेके चौडे-मैदानके और ७०० गाव पीछेके जिनमे वृक्ष और पहाड बहुत । 18 राव गोपाल मऊ और मैदानका स्वामी । 19 कई वर्षोंसे और बहुत समय पहलेसे चाचरणी गाव वाघकी मा, सीधल स्त्री के (सीधलियाणीके) अधिकारमे था, जिसने शस्त्र धारण करके बादशाही सेनासे कई लडाइयां लडी ।

कई फौजां मुगलांरी, हाडांरी मारी[1] । पछै सींधळ गोपाळदे मूई,[2] तठा पछै[3] नवसेरीगांन चाचरणी लीवो ।

॥ इति संपूर्ण ॥

1 मुगलों और हाडोंकी कई फौजोंका नाश किया। 2 पछे सींधल गोपालदेवी मर गई। 3 जिसके बाद।

वात अणहलवाड़ा पाटणरी

वनराज वडो रजपूत हुओ। तिको एक नवो सहर वसावणरी मन धरै छै। इण पाटणरी ठोड़ एक कोई गवाळियो अणहल नामै स्यांणो आदमी हुतो[1]। तिण एक तमासो दीठो हुतो[2]। एकण गाडर वांसै नाहर दोडियो[3]। गाडर आगै नाठी[4]। इण पाटणरी ठोड़ गाडर आई तरै नाहरसू सांमी मांड ऊभी रही[5]। तिका वात अणहल दीठी हुती। तिको वनराज धरती देखतो फिरै छै; तरै अणहल ग्वाळियो आय वनराज चावड़ानू मिळियो। कह्यो–"हूं थांनूं सहर वसावणनू इसड़ी[6] ठोड़ एक वताऊं, जिको वडो अजीत खैडो हुवै;[7] पिण थे बोल दो[8]। क्यू सहर माहै म्हारो नांव आंणो[9]।" तरै वनराज बोल-कौल दिया[10] तरै अणहल गाडरनै नाहर वाळी वात कही। तरै हमैं[11] पाटण वसै छै, आ ठोड़ चावड़ा वनराजनू दिखाई। वनराज ठोड देख बोहत राजी हुवो नै 'अणहलवाडो पाटण' सेहररो नाव दियो[12]। संमत ८०१रा वैसाख सुद ३ रोहिणी नक्षत्र मध्यांग्ह विजय मोहरत पाटणरा कोटरी रांग भरी[13]। आगै कोई गुजराती लोक भील मलेच्छ रैहता, मु सारा दूर किया। आबूरी तळहटीरो लोग नवो आण[14] वसायो। वडो सहर वनराज चावोड़ै वसायो। अणहलवाडा पाटणरी जन्मपत्रिका लिख्यते[15]।

---

1 इस पाटनकी जगह अणहल नामका एक ग्वाला सयाना आदमी रहता था। 2 उसने एक तमाशा (अद्भुत बात) देखा था। 3 एक भेडके पीछे नाहर दौडा। 4 भेड आगे भगी। 5 तब नाहरसे सामना करनेको खडी रही। 6 ऐसी। 7 वह गांव अजीत होगा। 8 परन्तु तुम वचन दो। 9 शहरके नामकरणमे कुछ मेरा नाम भी रखो। 10 तब वनराजने वचन दिया। 11 इस समय। 12 और 'अणहिलवाडा पाटन' शहरका नाम रखा। 13 सम्वत् ८०१के वैशाख शुक्ल ३ रोहिणी नक्षत्र, मध्यान्ह समय विजय मुहूर्तमे पाटनके कोटका खात मुहूर्त किया। 14 लाकर। 15 अणहिलवाडा पाटनकी जन्मपत्रिका (इस प्रकार) लिखी जाती है।

अणहलवाड़ा पाटणनूं गांव ४५९ लागै छै। तिणमे[1] तपो गांव ५२ सीधपुर छै, रु० २५०००) उपजतांरी ठोड़। नै पाटण तो आगै वडी ठोड़ हुती, रुपिया लाख ७०००००) री पैदास हुती। संमत १६८२ तथा १६८३ ताउं उपजतां[2]। संमत १६८७ पछै पाटण तूटी। कोळियां सारा गांव सूना किया[3]। हमै रुपिया २०००००) नीठ उपजै छै[4]। पाटण चाओड़ां भोगवी तिणरी विगत[5]—

वरस।	मास।	आसामी।
६० वरस	६ मास	वनराज चाओड़ै भोगवी।
१० वरस		जोगराज भोगवी।
३ वरस		राजादित भोगवी।
११ वरस		वरसिंघ भोगवी।
३९ वरस		खेमराज भोगवी।
२७ वरस		चूडराव भोगवी।
१९ वरस		गूडराज भोगवी।
२९ वरस		भोवंडराज भोगवी।

कवित्त

साठ वरस वनराज, वरस दस जोगराव भण।
राजादिन त्रिण[6] वरस, वरस इगियारा सिंघ मुण॥
खीमराज चाळीस, वरस इक ऊण[7] मुणीजै[8]।
चुडराव सतवीस, वरस भोगवी भणीजै॥
उगणीस वरस गुडराज कहि, उगणतोस भोवंड भुह।
चामडराज अणहलनयर, कीध वरस सौ छीनवह[9] ॥१॥

---

1 जिनमे। 2 सम्वत् १६८२ तथा १६८३ तक यह उपज होती थी। 3 कोली लोगोने पाटनके सब गावोको सूना कर दिया। 4 अब रुपये दो लाख मुश्किलसे पैदा होते हैं। 5 चावडोने पाटन भोगी उसका विवरण। 6 तीन। 7 एक वर्ष कम। 8 कहा जाता है। 9 एक सौ छियानवे वर्ष राज्य किया।

आठ छत्र[1] चावड़ा कीध पाटण धर रज्जह[2] ।
वरस एक सौ छिनु गया भोगवी सकज्जह ॥
हुए सोळंकिया वरस सौ…………सत्तह ।
हुवा पाच वाघेल वरस भू वीसो सत्तह ॥
पांच सौ वरस चाळीस सु वसुह[3] भार साचो वह्यौ ।
पंचवीस[4] छत्र गूजरधरा अणहलवाड़ो ऊ गह्यौ ॥२॥

सोळंकियां पाटण भोगवी—

पहली चावोड़ांनू हुती, पछै तोडारो तरफसू राज, बीज आया; तिणनू चावड़ै परणाया[5] । पछै चावोड़ांरै भांणेज राजरै वेटै बीजरै भतीज चावोडांनै मारनै पाटण लीवी । इतरां पाटण भोगवी तिण साखरो कवित्त—

मूळू पैंताळीस वरस दस कियो चंदगिर ।
वलभ अढाई वरस साढ-बारह द्रोणागिर ॥
भीम वरस चाळीस वरस चाळीस करन्नह ।
एक-घाट-पंचास[6] राज जैसिंघ वरन्नह ॥
कंवरपाळ तीस-त्रिहुं-आगळि[7] वरस त्रिण[8] मुळराज लह ।
विलसी ज भीम सत रसह[9] रस वरस साठ अगलीक चह[10] ॥१॥

४५ मूळराज ।
१० चदगिर ।
२॥ वलभराज ।
१२॥ द्रोणगिर ।
४० भीमदे नानगसुत ।
४० करन ।
४६ सिधराव जैसिंघदे ।

---

1 राजाओने । 2 राज्य । 3 वसुधा । 4 पच्चीस । 5 चावडोने उनका विवाह कर दिया । 6 एक कम पचास (४६) 7 तीसके ऊपर तीन (३३) वर्ष । 8 तीन । 9 भूमि । 10 साठके आगे चार (६४) वर्ष ।

३३ कंवरपाळ ।

३ बोळो मूळदेव लोहड़ो[1] ।

६४ भीमदे मूळराजरो लोहड़ो भाई[2] ।

सोळंकियांरी पीढी—

१ आद नारायण ।	७ सुकर ।
२ जुगाद ब्रह्मा ।	८ अरजन ।
३ ब्रह्मरिप ।	९ अजैपाळ ।
४ धोमरिप ।	१० देपाळ ।
५ चाच ।	११ राज ।
६ वाळग ।	१२ मूळराज ।

तठा पछै वाघेलै धरती लीवी । सोळंकी वाघेला आगै जातां एक[3] । वाघेला सोळंकियां भिळै[4] । पाटण वाघेलां भोगवी तिण साखरो कवित्त—

गूजर धर भोगवी वरस वीसळ अढ्ढारह ।
अजैदेव इकतीस कोट पाटण उद्धारह ॥
वीरमदे तेतीस वरस वाघेलां मंडण ।
वीस वरस लहु करण विढै वैरियां विहंडण[5] ॥
देवराज प्रतापियो चत्र[6] वरस वदा[7] सास वंसावळी ।
वाघेल राज अणहल नगर वरस सत्त-छव आगळी[8] ॥१॥

वाघेलांरै पाटण इतरा वरस रही—

१८ राव वीसळदे ।

३१ अरजनदे ।

३३ वीरमदे ।

२० करन गैहलो ।

४ देवराज ।

---

1 मूलदेव छोटा जो बहरा था । 2 भीमदेव मूलराजका छोटा भाई । 3 आगे जाते सोलंकी और वाघेले एक हो जाते हैं । 4 वाघेले सोलंकियोंमें मिल जाते हैं । 5 दुश्मनोंका नाश करनेके लिये अपने राज्यकालके बीस वर्ष तक करण लड़ाइया लड़ता रहा । 6 चार । 7 कहता हूं । 8 सौ आगे छः वर्ष, १०६, एक सौ छः वर्ष ।

संमत १३०४ माधव बांभण[1] परधांन हुम्रो। तिण नै वाघेलां विगड़ी[2]; तरै ओ जायनै अलावदी पातसाहनूं ले आयो। मजल-मजलरा लाख-लाख टका दे ल्यायो। पछै धरती तुरकै लीवी। पातसाह अलावदी टाकांनू थांणै राखिया हुता सु अलावदी समंदमे नांख अै टाक पातसाह हुवा[3]।

वरस ४५ सुलतांन कुतबतारखां[4]।
३१ फरेखांन[5]।
३३ गदाकर[6]।
३४ अहमद, जिण अहमदाबाद वसायो। संमत १४३७[7]।
१० दाऊदखांन।
५८ महमंद वेगड़ो।
२५ मुदाफर[8]।
२२ सिकन्दर।
१२ महमूद[9]।
१० बहादुर।
१५ महमंद।
१८ मुदफर[10]।

पछै संमत १६२६ काती सुद १५ अकवर पातसाह गुजरात लीवी। सोळंकियारी साख इतरी[11]—

१ सोळंकी। २ वाघेला। ३ रहवर। ४ वेहला। ५ वीरपुरा। ६ खैराडा। ७ सोभतरा। ८ पीथापुरा। ९ खालत। १० भुधड, सिधनू तुरक[12]। ११ डहर, सिधमे तुरक छै[13]। १२ रूभा सिधनू, थटैनू तुरक छै[14]।

---

1 ब्राह्मण। 2 उसने और वाघेलोंमें बिगड़ गई। 3 बादशाह अलाउद्दीनने टाकोंको थाने पर रखा था सो अलाउद्दीनको समुद्रमें डाल करके ये बादशाह बन बैठे। 4 कुतुबतातारखां। 5 फरेखान। 6 मुदाफर। 7 अहमद, जिसने सम्वत् १४३७में अहमदाबाद बसाया। 8 मुजफ्फर। 9 मुहम्मद। 10 मुदाफर। 11 सोलंकियोंकी इतनी शाखायें हैं। 12 भुधड़ शाखाके सोलंकी मुसलमान हो गये, सिंधमें रहते हैं। 13 डहर शाखाके सोलंकी सिंधमें मुसलमान हैं। 14 रूभा शाखाके सोलंकी सिंध और थट्टेमें मुसलमान हैं।

वात सोलंकियां पाटण आयांरी

राज, बीज सोळंकी वेहू[1] भाई तोडारा धणी, सु यांरो[2] बाप मुंवो,[3] तरै बीजा[4] दुमात भाई था तिकै राजरा धणी हुआ; नै यां वेहू भायांनूं धरती मांहीथी परा काढिया[5]। सु थोड़ासा साथ सामांनसूं तोडाथी नीसरिया,[6] सु कठैक[7] आय रह्या। सु वडो भाई बीज तिको जनम आंधो नै राज देखतो सु बाळक। सु कितरैहेक[8] दिनै कठैक धरती नजीक रह्या। वांसला भायां[9] खबर न ली, तरै यां विचार दीठो;[10] "अठै रह्यां क्यूं नही; द्वारकाजीरी जात जावां"[11] तद द्वारकाजीरी जात चालिया सु कितरैहेक दिनै[12] पाटण आय उतरिया। सु पाटण चावोड़ा राज करै छै। सु रावळी[13] वडी घोड़ी थी तिका चरवादार तळाव संपड़ावण[14] वास्तै ले आयो। यांरो[15] तळावरी पाळ[16] डेरो छै। वैठा छै। नै पांडव[17] घोड़ियां चढियां आवै छै, सु बीज कह्यो-"घोडी नीली भला पग मंडै[18] छै। वाखांण[19] करण लागो। तरै घोडी पाडवं यारै सामो जोयो,[20] आंधो छै नै घोड़ियांरा रंग की[21] जांणै ? तितरै घोड़ी सुसती पड़ी[22]। तरै पांडव ताजणो वाह्यो[23] तरै बीज पाडवनू गाळ दीवी, कह्यो—"फिट रे,दारिया-गोला ! लाखरी वछैरीरी आख फोडी[24] ! तरै पाडव कह्यो—"दारियो आधो कासू कहै[25] ?" पाडव घोडी ठाण ले गयो[26]। नै राते घोड़ी ठांण दियो,[27] वछेरो घोडी कांणो जायो[28]। उणै जायनै आपरा

---

1 दोनो। 2 इनका। 3 मरा। 4 दूसरे। 5 और इन दोनो भाइयोंको अपनी धरतीमेसे निकाल दिया। 6 तोडासे निकले। 7 कहीं। 8 कितनेक। 9 पिछले भाइयोंने। 10 तब इन्होंने विचार करके देखा। 11 चलें। 12 कितनेक दिनो बाद। 13 राजाकी। 14 नहलानेके। 15 इनका। 16 पाल, ऊचा किनारा। 17 सईस। 18 नीली घोडीकी चाल अच्छी है। 19 प्रशसा। 20 तब घोडीके सईसोने इनकी ओर देखा। 21 क्या जाने ? 22 इतनेमे घोडी धीमी हो गई। 23 तब सईसने चाबुक मारा। 24 तब बीजने सईसको गाली दी, कहा—'फिट रे दारीके गोले ! एक लाखकी वछेरीकी आख फोड दी !' (दारी = वेटी)। 25 यह अधा हमे दारिया क्यो कहता है ? 26 सईस घोडीको ठान (तवेले) ले गया। 27 और रातको घोडीने बच्चा दे दिया ('घोडी ठाण देणो' मारवाडीका एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है-घोडी का बच्चा देना)। 28 घोडीने काने वछेरेको जन्म दिया।

ठाकुर चावड़ानूं जणायो[1]। वात कही–"इसड़ा[2] आदमी दो भाई, नै च्यार-पांच आदमी साथै छै। तळाव उतरिया छै[3]। यां घोड़ीरी वात मांड[4] कही। तद[5] पाटणरै धणी चावड़ै खबर कराई। कह्यो–"इसड़ा अकलवंत अठै रहै तो राखीजै[6]। पछै पाटणरो धणी आप चढ़ तळाव उणांरै[7] डेरै आयो, मिळिया, पूछियो–"कहो, थे कुण छो ? कठै रहो[8]?" तरै वीज आपरी वात मांटनै कही[9]–"म्हे सोळंकी तोडारा धणीरा बेटा, म्हांरो दूजो दुमात भाई राज बैठो[10]। म्हांनूं धरती मांहिमूं परा काढिया[11]। सु कितराहेक दिन तो म्हे उठै रह्या[12]। सु हूं तो आंखै जखम छूं,[13] नै म्हारो भाई नान्हो थो, तिको उठैहीज रह्यो[14]। हमैं वीज कह्यो–"राज पिण मोटो हुवो, किणीकरै वास रहस्यां[15]। हमार तो द्वारकाजीरी जात जावां छां[16]।" पछै पाटणरै धणी चावड़ै वीज, राजरो घणो आदर कियो, विनाही जांणनै कह्यो–"राज म्हारै परणीजो;[17]" तरै वीज कह्यो–"हूं तो आंखै जखम परणीजू नही,[18] नै म्हारा भाई राजनूं परणावो।" तरै राज परणियो[19]। इणानूं[20] चावोडै घणो माल, घणा गाव पटै दे राखिया। कितरैहेक दिने चावोड़ीरै पेट मूळराज बेटो हुवो,[21] तरै राजनू वीज कह्यो–"आंपे[22] द्वारकाजीरी जात[23] जावतां वीचमे अठै रह्या, सु हमै चालो, द्वारकाजीरी जात तो कर आवा।" सु पाटणसू राज, वीज वेहूं चालिया। चावोड़ीनै मूळराजनू पाटण राखनै[24] चालिया। सु जाड़ेचै लाखै आ वात घोड़ी नै बछेरावाळी साभळी छै,[25] सु सांमां आदमी मेलनै देखणरै वास्तै

---

1 उन्होने जा करके अपने चावडे ठाकुरको सूचित किया। 2 इस प्रकारके। 3 तालाब पर ठहरे हुए हैं। 4 इन्होने घोडोके सबधकी सविस्तार बात कही। 5 तब। 6 ऐसे बुद्धिमान यहा रहे तो रखना चाहिये। 7 उनके। 8 कहो, तुम कौन हो ? कहा रहते हो ? 9 तब वीजने अपनी बात विस्तारसे कही। 10 हमारा दूसरा दुमात भाई राज्यकी गद्दी पर बैठ गया। 11 हमको देशमेसे निकाल दिया। 12 सो कितनेही दिन हम वही रहे। 13 सो मैं तो आखोसे अधा हूं। 14 और मेरा भाई छोटा था, इसलिये वही रहा। 15 किसीके यहा जाकर रहेगे। 16 अभी तो द्वारकाजीकी यात्राको जा रहे है। 17 बिना जाँच किये ही कहा, आप हमारे यहा विवाह कर ले। 18 मै तो आखोसे अधा, विवाह नही करू। 19 तब राजका विवाह हुआ। 20 इनको। 21 कितनेही दिन बाद चावडीके पेटसे मूलराज उत्पन्न हुआ। 22 अपन। 23 यात्रा। 24 रख कर। 25 सुनी है।

तेड़ाया[1]। नजीक आया, तरै सांम्हो आय घणो आदर कर तेड़ लेजायनै, लाखै आपरी बैहन राजनू परणाई[2]। अठै राखिया। लाखारी पूरी साहिबी, सु लाखो नै राज साळो बहनोई आठ पोहर भेळा रहै,[3] नै बीज बाहिर रहै आपरा रजपूता भेळो। सु राज बीजरी खबर ही ले नही। तरै एक दिन बीज राजनू कहाडियो[4]–"थे साळो बहनोई एक हुय रह्या, म्हारी खबर ही ल्यो नहीं, सु म्हे अठै रहां नही, म्हे पाटण जावस्यां, मूळराजनू खोळै वैसांणस्यां[5]। चावोड़ी थाळी पुरससी सु जीमस्यां नै उठै जाय बैस रेहस्या[6]।" सु राज तो लाखारी वड़ी साहिबी सु छोड़ी नही नै उठैहीज लाखा तीरै रह्यो, नै बीज पाटण आयो, मूळराज कनै रहै छै। राज लाखा भेळो रहै छै, सु लाखै घणोहीज सुख दियो। राजरै जाड़ैचीरै पेट राखायच बेटो हुवो[7]।

साळै बहनैईरै घणो सुख छै, सु एक दिन चोपड़ रमता छा,[8] सु राजरा हाथसू गोट मारतां चिर[9] फाट उछळी सु लाखारै निलाड़[10] लागी, सु थोडो सो लोही[11] आयो लाखाजीरै। तरै मन माहै रीस आई लाखानू, सु कनै भळको[12] पडियो थो तिको झालनै[13] लाखै सोळंकी राजनू चूंक लियो,[14] सु राजरै थणरै लाग गयो[15]। सु वातकरतां[16] राज सोळंकीरो हंसराजा उड गयो[17]। लाखै घणो पछतावो कियो। जाणियो, परमेसर! आ किसी उपाध की[18]। मोनू किसी कुबुध आई[19]। हूंणहारसू जोर को नही[20]। पछै आ वात लाखैरी वैहन जाडैची साभळी,[21] तरै बळणनू तयार हुई[22]। लाखो कहण लागो–"बेहनेई म्हारै हाथ मुवो[23]। आ वेहन वांसै बळै,[24] भांणेज

---

1 बुलाये। 2 लाखेने अपनी बहनका राजके साथ विवाह किया। 3 आठों पहर शामिल रहते है। 4 कहलाया। 5 मूलराजको गोदमे बिठायेंगे। 6 चावडी थाली परोसेगी सो जीमेगे और वही जाकर बैठ रहेगे। 7 राजको जाडेचीके पेटसे राखाइच नामका पुत्र हुआ। 8 थे। 9 खपची, फटनका टुकडा। 10 ललाट। 11 खून। 12 बर्छी। 13 पकड कर। 14 मार दिया, घुसेड दिया। 15 सो राजकी छातीमे लग गया। 16 तुरत। 17 प्राण उड गया। 18 जाना, हे परमेश्वर! यह कौनसी उपाधि मैने कर ली। 19 मुझे कौनसी कुमति आ गई। 20 होनहारमे कोई जोर नही। 21 सुनी। 22 तब सती हो जानेको तैयार हुई। 23 बहनोई मेरे हाथसे मरा। 24 यह बहिन उसके पीछे जले (सती हो जाये।)

नान्हो,[1] इणांरो दुख कर मरै तो इतरी हत्या मोसूं सांसबी न जाय[2]।" तरै लाखो पेट मारणनूं तयार हुवो, वडो अनरथ हूण लागो[3]। तरै लाखारै घर मांहै कारणीक मांणस था,[4] तिकां जाड़ेचीनूं घणो हठ कर वळतीनू राखी[5]। पिण जाड़ेची कहै–" थे म्हारो कुस्वारथ करो छो[6]।" पिण मांडां राखी[7]। तरै लाखानूं जाड़ेची कहाडियो[8]–"तैं म्हारो धणी मारियो नै मोनूं वळण न दे छै, तो तू मोनूं मुंहडो मत दिखावै[9]।" लाखै वात कबूल कीवी। तिण पापरा लाखै घणा दांन-पुन्य किया,[10] घणा सूस-नेम लिया नै लाखो घणो दुख करै छै[11]। उण ओळजरो लियो लाखो भाणेजनूं कदेही छाती ऊपर थी अळगो करै न छै[12]। सारी साहिबीरी मदार राखायच ऊपर छै[13]। कोई राखायचरो हुकम लोपै न छै।

वात पाटण चावोड़ांथी सोलंकियांरै आवै जिणरी[14]

पाटण चावोडो चावंडराज धणी हुतो सु मुवो। तिणरै च्यार वेटा, लायक सारीखै माथै[15]। च्याराई भायां आटी करी, अहड़स हुई[16]। तरै वीच मांणसै फिरनै कह्यो[17]–"सिंघासण, छत्र वीच

---

1 भानजा छोटा है। 2 इनका दुख करके यह मर जाय तो इतनी हत्याए मेरेसे सहन नही हो सकती। 3 तव लाखा पेटमे कटारी मार कर मरनेको तैयार हुआ, बडा अनर्थ होने लगा। 4,5 तब लाखाके घरमे जो विवेकशील मनुष्य थे उन्होने जाडेचीको सती होनेसे हठात् रोका। 6 परतु जाडेची कहती है कि (मुझे सती होनेसे रोक कर) तुम मेरा अनिष्ट कर रहे हो। 7 परतु बलात् रोक दिया। 8 कहलाया। 9 तूने मेरे पतिको मार दिया और अब मुझे उसके पीछे सती भी नही होने देता है, तो तू मुझे अपना मुह मत दिखा। 10 उस पापके प्रायश्चित्त रूपमे लाखेने बहुतसे दान-पुन्य किये। 11 और कई शपथ और नियम पालन करनेका निश्चय किया और लाखा बहुत अनुताप करता है। 12 इस विरह-विरसको ले कर लाखा कभी अपने भानजेको अपनी छातीसे दूर नही करता है। 13 सारी हुकूमतका दारोमदार राखाइच ऊपर है। 14 पाटनका शासन चावडोसे छूट कर सोलंकियोके अधिकारमे आ जाता है, उस घटनाकी बात। 15 उमर-लायक और समान प्रकृतिके। 16 चारो भाइयोने हठ किया और परस्पर टटा हो गया। 17 तब मनुष्योने बीचमे पड कर कहा।

मेलो[1] । च्यारे ही भाई सिंघासणरी पाखती वैसो[2] । कांमदार परधांन कांम चलावसी । हासल आवसी सु च्यारै भाई वांट लेसी [3] । रजपूत च्यारांनूं आय जुहार करसी[4] ।" तरै आ वात च्यारांई कबूल कीवी । कितराइक दिन इण भांत कांम चालै छै । सोळंकी बीज अठै आयो । बीजरो भाई राज चावोडांरै परणियो थो । तिणरै पेट मूळराज वेटो हुवो थो सु चावड़ांरो भांणेज छै[5] । नै राज तो लाखाजी कनै[6] रह्यो नै राजरो वेटो पाटण छै । तठै बीज आंधो आय रह्यो छै । सु चावड़ा च्यारूंई तीजे-पोहररा[7] नदी सासता भूलण[8] जाय तरै[9] कहै–"सिंघासण, गादी, छत्ररी रखवाळीनूं किणनूं राखसां[10] । आपांनूं तो पोहर दो पोहर उठै लागसी[11] ।" तरै च्यारै भायां चावड़ां विचारनै कह्यो–"अठै वांसै भांणेज मूळराजनूं राखो[12] । ओ गादी वैस वांसलो कांम-काज चलावसी[13] ।" सु इण भांत मूळराजनूं वांसै गादी वैसांण जाय । आप आवै तरै गादी उरी लेवै[14] । सु मूळराज वळ-वळ आवटै[15] । तरै बीज एक दिन आंधै-आंधै आपरा भतीजा मूळराजरी छाती हाथ फेरनै कह्यो–"वेटा ! इतरो दूवळो कुण वास्तै[16] ?" तरै मूळराज गादी वैसाण उठावणरी वात सारी काकानूं कही । तरै बीज कह्यो–"आज तोनूं वासै राखै तरै तू मत रहै[17] ।" चावड़ा कहसी, कुण वास्तै ? तरै तू कहै, "म्हारो हाल-हुकम को मांनै नहीं,[18] तो हूं इण गादी वैसनै कासूं करां[19] ?" तरै चावड़ा वेअकल हुता सु कांमदारां-परधांनां सारानूं तेडनै कह्यो[20]–"मूळराज कहे सु किया करजो ।"

---

1 सिंहासन और छत्र बीचमे रख दिये जाय । 2 चारो ही भाई सिंहासनके पास बैठ जाओ । 3 मालगुजारी आयेगी वह चारो भाई बांट लेंगे । 4 राजपूत (ठाकुर लोग) चारोको आकर जुहार करेंगे । 5 जिसकी स्त्रीकी कोखसे मूलराज नामका बेटा हुआ था जो चावडोका भानजा है । 6 पास । 7 तीसरे पहर । 8 निरतर नहानेको जावें । 9 तब । 10 किसको रखेंगे । 11 अपनेको तो पहर दो पहर उधर लग जायगी । 12 यहा पीछे अपने भानजे मूलराजको रख दो । 13 यह गद्दी पर बैठ कर पीछेका काम-काज चलायेगा । 14 ये आवें तब उससे गद्दी ले लेते हैं । 15 इससे मूलराज (अपमानकी ज्वालामे) जल कर दुखी होता है । 16 बेटा ! इतना दुर्बल क्यों ? 17 आज तुझको (गद्दी पर बैठनेके लिए) पीछे रखें तो तू मत रहना । 18 मेरी आज्ञा कोई मानता नही । 19 तो मैं इस गद्दी पर बैठ करके क्या करू ? 20 चावडे मूर्ख थे इसलिये उन्होंने अपने कामदार-प्रधान इत्यादि सबको बुलवा कर कहा ।

तठा पछै मूळराजरो हाल-हुकम हालण लागो[1]। नै चावोड़ांरी जांण-हार,[2] सु दिन घड़ी ४ चढ़तैरा[3] वागां, वावड़ियां, तळाव सैल जाय[4] सु रात घड़ी ४ गयां पाछा घरे आवै। नेजे मीर वाळी वात मांड रही छै[5]। राजरी को खबर लै नहो[6]। कांमदार रजपूत सारा चावड़ांथी आखता[7] हुय रह्या छै। मूळराजरो हाल-हुकम हुवो। सु मूळराज वडो राहवेधी छै[8]। बीज काको आंधो बलाय-रा-बंधणा छै[9] सु चावड़ांरो माल ऊधमनै[10] सारा रजपूत, कांमदार, खवास, पासवांन, महाजन लोग सारा आपरा कर राखिया छै[11]। सारांरो दिल हाथ लियो[12]। हमै धरती लेणरो विचार बीज नै मूळराज करै छै[13]। सु मूळराजरी मा छांनी कठैहेक रहनै वात सुणती हुती,[14] सु किणही सूल उणरा पग वाजिया[15]। तरै काके बीज कह्यो–"मूळराज, देख! ग्रै किणरा पग वाजिया[16]।" तरै मूळराज वांसै दोड़ियो[17]। आगै देखै तो आपरी मां छै, तिका मूळराजनै देखनै कहण लागी–"तू नै थारो काको म्हारा भायांनू मारणरो विचार करो सु कुण वास्तै? इणां थांसू कासूं वुरो कियो[18]?" तरै मूळराज मानूं कह्यो–"थानूं काकोजी तेड़ै छै[19]।" आ नीचे पावड़िया उतरण लागी,[20] तरै इण दिठो[21]–"आलोच वारै फूटसी; धरती हाथ नही आवै[22]। तरै माथै मांहै भटकारी दी,[23] माथो तूट पडियो। काका कनै पाछो आयो। काके बीज पूछियो–

---

1 जिसके बाद मूलराजकी आज्ञा चलने लगी। 2 और चावडोंकी जाने वाली (चावडोंका शासन जानेका सयोग)। 3 चार घडी दिन चढते ही। 4,5 बागो, वावडियो और तालावो पर सैर करनेको चले जायें जो चार घडी रात बीत जाने पर घर पर लौटते हैं और नेजेके समान अपना आचरण बना रखा है। 6 राज्यकी कोई खबर नही लेता। 7 क्रोधित, नाराज। 8 मूलराज बडा दूरदर्शी है। 9 उसका अधा चाचा बीज गजबका चतुर है, खूब चालाक है। 10 खर्च करके। 11 अपने बना लिये है। 12 सबके दिल अपने हाथमे ले लिये। 13 अब बीज और मूलराज पाटनकी धरती अपने अधिकारमे ले लेनेकी सोच रहे हैं। 14 सो मूलराजकी माँ कही छिपी रह कर बात सुनती थी। 15 सो किसी प्रकार उसके पाँवोंकी आहट हो गई। 16 यह किसके पाँवोंकी आहट हुई? 17 तब मूलराज पीछे दौडा। 18 इन्होंने तुम्हारा क्या बुरा किया? 19 तुमको काकाजी बुलाते हैं। 20 वह सीढियोंसे नीचे उतरने लगी। 21 तब इसने देखा। 22 मत्रणा बाहिर फूट जायेगी तो फिर यह धरती हाथ नही आवेगी। 23 तब उसके सिरमे तलवारका झटका मार दिया।

"कुण हुतो[1] ?" तरै मूळराज कह्यो–"म्हारी मा हुती[2] ।" तरै बीज कह्यो–"मारणी हुती[3] । तै जाण दी, बुरी कीवी ।" तरै मूळराज कह्यो–"जांण न दी छै, मारी छै ।" तरै बीज कह्यो–"वडो कांम कियो[4] । हूं थारी अकल-समझसूं बोहत राजी छूं । तूं सही पाटणरो धणी हुईस[5] । थारी वडी साहवी हुसी[6] ।" पछै मूळराजरी मानू खाडावूज करनै[7] बीजै दिन रजपूत आप वळू किया था सु सारा भेळा करनै चावड़ा झूलता था तठै ऊपर गयो[8] । सारा कूट मारिया[9] । पाटण मूळराज ली । बीज सवणी हुतो,[10] कह्यो–"इतरी पीढी आपणां घरसू पाटणरो राज नही जाय[11] ।"

वात एक जाड़ेचा लाखानूं सोलंकी मूळराज मारियांरी[12]

मूळराज पाटण धणी छै । मूळराजरो भाई राखाइच लाखा जाड़ेचारो भांणेज लाखा कनै कैलाहकोट रहै छै[13] । सु लाखो जाड़ेचो मूतो पाछली रातरो जागै,[14] सवळी धाह दे रोवै[15] । लाखारै साहिवीरी मदार सारी भाणेज राखाइच सोळंकी ऊपर छै[16] ।

एक दिन राखाइच लाखा फूलांणी मांमांनू कह्यो–"थे पाछली रातरी धाह दे सासता रोवो छो सु थांनू इतरो कासूं दुख छै[17] ?"

---

1 कौन था । 2 मेरी मा थी । 3 मार देनी थी । 4 बहुत अच्छा काम किया । 5 तू निश्चयपूर्वक पाटनका स्वामी होगा । 6 तेरी वडी हुकूमत होगी । 7,8 फिर मूलराजकी माको खड्डेमें दूर करके, दूसरे दिन जिन राजपूतोंको अपने पक्षमें कर लिया था उन सबको इकट्ठा करके जहां चावडे नहा रहे थे, वहां उन पर चढ कर चला गया । 9 सबको मार दिया । 10 बीज शकुनी था । 11 इतनी पीढियो तक अपने घरसे पाटनका राज्य नही जायेगा । 12 जाडेचा लाखाको सोलंकी मूलराजने मार दिया उस घटनाकी एक बात । 13 मूलराजका भाई राखाइच जाडेचा लाखाका भानजा, लाखाके पास कैलाहकोटमें रहता है (कच्छ-कलाधरमें 'राखाइच'का नाम 'लाखाटन' और 'कैलाहकोट'का नाम 'केरा-कोट' लिखा है । 'कपिलकोट'से बिगड कर केराकोट' हो जाना बताया गया है । 14 लाखा जाडेचा सोता हुआ पिछली रातको जाग जाता है । 15 जोरसे चिल्ला कर रोता है । 16 लाखाकी हुकूमतका सारा दारोमदार अपने भानजे राखाइच सोलंकी पर है । 17 तुम पिछली रातको बड़े जोरसे निरंतर रोते हो सो तुमको इतना क्या दुःख है ?

लाखे पाछो जबाब तो राखाइचनूं क्यूं दियो नहीं नै आपरी[1] नावरा खास मलाह था तिणनूं कह्यो–"सवारे[2] भांणेज राखाइचनूं नाव बैसांणनै फलांणै बिट मेलनै थे नाव तुरत ल्यावजो उरी[3]।" पछै राखाइचनू तेड़नै[4] कह्यो–"थे नाव बैसनै एक वार समंदररो तमासो देख आवो।" तरै नाव बैसनै राखाइच दरियावरो तमासो देखण गयो। मलाहे लाखे ठोड़ बताई तठै उतारनै मलाह राखाइचनू विण पूछियां नाव उरी ले आया[5]। राखाइच उण बिट ऊपर गयो। आगै देखै तो डांडी एक मांणस आवणरी छै,[6] तिण डांडी राखाइच चालियो जाय छै। आगै देखै तो वडी मोहलायत छै,[7] तिण मांहिसू अपछरा पांच-सात सांम्ही भांणेज! भाणेज! करती आवै छै[8]। राखाइच देख हैरांन हुओ। इण पूछियो–"थे कुण छो[9]? अे मोहल किणरा छै[10]?" तरै उणै अपछराअे कह्यो–" अे मोहल लाखाजीरा छै। म्हे लाखा-जीरी बैरां छां[11]।" नै एकण ढोलिया ऊपर मरद पोढियो छै, तिको दिखायो[12]। कह्यो–" आ लाखाजीरी देह छै।" तरै राखाइच अपछ-रावांनू पूछियो–"लाखाजी धाह कुण वास्तै दे छै[13]?" तरै उण कह्यो–"लाखोजी पोढे छे तरै लाखाजीरो जीव अठै आवै छै। इण देहमे प्रवेस करनै म्हांसू हसै-रमै छै। पछै जागै छै तरै जीव उठै आवै छै, तिण वास्तै[14] धाह दे छै।" तरै राखाइच दीठो–"आ वात सत छै।" तरै राखाइच अपछरावांनू पूछियो–"अे तो लाखाजीरो मोहल सु तो वात जांणी, पिण ऊपर अे बीजा मोहल दीसै तिकै किणरा छै[15]?" तरै अपछराअे कह्यो–"हमार तो अे किणहीरा न छै,[16] नै बापरै वैर

---

1 अपनी। 2, 3 कल सवेरे भानजे राखाइचको नावमे बैठा कर अमुक टापू पर छोड करके तुम नावको तुरत वापिस ले आना। 4 बुला कर। 5 राखाइचको विना पूछे नाव ले आये। 6 आगे देखता है तो मनुष्योंके आनेकी एक पगडंडी दिखाई दी। 7 आगे बडा महल दिखाई देता है। 8 जिसमेसे पाच-सात अप्सराएं भानजा! भानजा! बोलती हुई सामने आ रही हैं। 9 तुम कौन हो? 10 ये महल किसके है? 11 हम लाखाजीकी स्त्रिया हैं। 12 और एक पलग पर मनुष्य सोया हुआ है, उसको दिखाया। 13 लाखाजी इतने जोरसे क्यों रोते हैं? 14 इसलिये। 15 किन्तु ऊपर ये दूसरे महल दिखाई देते हैं वे किसके है? 16 अभी तो ये किसीके नही हैं।

सांमरै कांम, धणीरा मुंहडा आगै बाज मरै सु ऐ मोहल पावै[1] ।" पछै रातै राखाइच उठै रह्यो, नीद आई, सवारै लाखा कनै जागियो[2] । तठा पछै राखाइच उण लोक जांणरी मनमें धारी[3]; नै लाखारै पाट-हडो महुवो थो उण चढनै पाटख मूळराज कनै गयो[4] । भाईनू राखाइच लाखारी सारी ठाकुराईरो भेद बतायो । मूळराजनूं कह्यो- "हमार[5] दीवाळी छै । सारा साथनूं लाखेजी सीख दी छै[6] । कदै वैर वाळणरी मनमे छै तो फलांणी तेरीख वेगा आवजो[7] ।" राखाइच कहनै पाछो आयो । वांसै मूळराज सबळो कटक करनै लाखोजीरो आठ कोट हुतो तठै ऊपर आयो[8] । नै लाखो पायगा आयनै उण घोडा ऊपर हाथ फेरियो, रज लागी आई[9] । तरै लाखै कह्यो-" आ तो रज अणहलवाडा-पाटणरी छै । इण घोड़ै कुण चढ़ कठी गयो हुतो[10]? तरै पांडव कह्यो-"राखाइच चढ गयो हुतो ।" तितरै राखाइच पिण मुजरै आयौ[11] । लाखोजी देख मुळकिया[12] । कह्यो-"भांणेज ! भवांवळा हुआ[13]?"राखाइच वात कबूल की । तितरै खबर आई, कह्यो- "कटक आयो ।" तरै राखाइच लाखाजीरै मुहडै आगै सांमरै कांम वापरै वैर बाज मुवो, नै लाखोजी पिण कांम आया नै राखाइच उण लोकनै प्राप्त हुवो ।

••

---

1 और अपने बापके वैरका बदला लेनेके लिये, स्वामीके कामके लिये स्वामीके सन्मुख लड कर मरे वह इन महलोंको पावे । 2 प्रात काल लाखाके पास जागा । 3 जिसके बाद राखाइचने उस लोकमे जानेका मनमे निश्चय किया । 4 और लाखाके पास जो जवान महुवा घोडा था उस पर चढ करके मूलराजके पास गया । 5 अभी । 6 सभी मनुष्योंको लाखाजीने छुट्टी दी है । 7 जो कभी वैर लेनेका बदला लेनेकी मनमे हो तो अमुक तारीख पर जल्दी आ जाना । 8 पीछे मूलराज जबरदस्त कटक तैयार करके लाखाजीका बनवाया हुआ आठ कोट था, उस पर चढ कर आया । (सौराष्ट्रमे जाम लाखाने भादर नदीके किनारेके पहाडी प्रदेशमे सात किले (कोट) बनवाये थे और इस आठवें कोटका नाम उसने 'आठ कोट' रखा था, जो अब 'आठ कोटके' नामसे प्रसिद्ध है । आठ कोट, राज कोटसे ३० मील दूर अग्निकोणमे बसा हुआ है । 9 हाथमे रज लग आई । 10 इस घोडे पर कौन चढ कर कहा गया था ? 11 इतनेमे राखाइच भी मुजरा करनेको आया । 12 लाखाजी देख कर मुस्कराये । 13 भानजे ! धोखा विचार लिया ?

वात रुद्रमालो प्रासाद सिद्धराव करायो तिणरी[1]

राजा सिद्धराव रातै सुवै तरै सुहणा मांहे देखे प्रिथीरो रूप धारनै राजा कनै आवै[2]। कहै–"एक मोनू ग्रहणो सखरो दीजै[3]। राजा सासतो सुपनो देखै; तरै पंडितां सुपन-पाठीकांनूं पूछियो[4]–"प्रिथी वैररो रूप धार ग्रहणो मांगै छै, सु कासू कीजै[5] ?" तरै पंडित कह्यो–"प्रथीरो ग्रहणो प्रासाद छै। राज प्रासाद करावो।" तरै राजारै मनमे आई–"जु एक इसडो[6] देहुरो कराऊं जिसडो[7] म्रत्युलोक मांहे अचंभो हुवै।" सु हुमै देस-देसरा सूत्रधार तेड़ीजै छै। कारीगर देहुरारी जिनस मांड दिखावै छै,[8] पिण राजारै मन काय तरह दाय नावै छै[9]। तिण समै खाफरो चोर नै काळो चोर नांवजादीक छै[10]। तिकै दीवाळीरै दिन जूवै रमिया, तरै खाफरै तो राजा जैसिघदेरो चढणरो पाटहड़ो घोडो कोडीधज आडियो[11] नै काळे काइक बीजी वस्त आडी छै[12]। काळो सीरोही तीरै आगै उभरणी सहर छै. तठै रहै छै,[13] सु काळो जीतो, खाफरो हारियो, तरै कह्यो–"घोडो कोडी-धज आंण दे[14]।" तरै खाफरै कह्यो–"आवती दीवाळी उरी आण देईस[15]।" तरै खाफरो पाटण गयो, मजूररो रूप करनै। घोडा कोडीधजरै ठाण द्रोवरी पोट ले जायनै सैधो हुवो[16]। पछै द्रोवरी पोट फिटी करनै ढांणियो हुय रह्यो[17]। घणी खिजमत करै,[18] इण माहै घणी कळा[19]। राजा सदा कोडीधजरै ठांण आवै, मु इणसूं

---

1 सिद्धरावने रुद्रमहालय प्रासाद करवाया जिसकी बात। 2,3 राजा सिद्धराव रातमे जब सोता है तो स्वप्नमे देखता है कि पृथ्वी स्त्रीका रूप धर कर राजाके पास आती है और कहती है कि एक मुझे अच्छा गहना दिया जाय। 4 तब पडितो और स्वप्न-पाठकोसे पूछा। 5 सो क्या करना चाहिये ? 6 ऐसा। 7 जैसा। 8 शिल्पी लोग देहरेका चित्र (मॉडल) बना कर दिखाते है। 9 परतु राजाको वे किसी प्रकार पसन्द नही आते है। 10 उस समय खाफरा चोर और काला चोर प्रसिद्ध हैं। 11 दाव पर लगाया। 12 और कालेने किसी दूसरी वस्तुको दांव पर लगाया है। 13 वहां रहता है। 14 ला कर दे। 15 आने वाली दिवाली पर ला कर दे दूगा। 16 परिचित हुआ। 17 पीछे दूबकी पोट लाना छोड करके घोडेकी ठान साफ करनेकी नोकरी पर रहा। 18 सेवा करे। 19 इसमे कला बहुत।

खुसी हुयनै घोड़ा कोड़ीधजरो खाफरानूं पांडव कियो[1]। सु खाफरो धणी खीजमत करै। राजा कोड़ीधजरै ठांण सदा घड़ी दोय बैसे[2] सु राजा देहुरारी वात सदा करै। "कोई उसड़ो[3] कारीगर जुड़ै[4] तो देहुरो कराऊं"। पिण कारीगर जुड़ै नहीं। सु आ[5] वात खाफरो सदा सुणै। दीवाळी निजीक आई तरै खाफरो रात घड़ी ४ गई घोड़ानू छोड़ नै कोट कुदाय नै ले नाठो[6]। नै राजानू परभात खबर हुई, पांडव घोड़ो ले नाठो। तरै राजारो साथ कहण लागो "वाहर चढां[7]।" तरै राजा कह्यो "उणनूं कुण आपड़ै[8] ? वांसे को मत चढ़ो[9]।" सु वाहर तो को वांसे चढियो नही[10]। नै खाफरो रात पोहर १ पाछली थकी आवू निजीक उठै उतरियो,[11] । जांणियो "हूं तो कुसळै पड़ियो[12]। अ‍ै घड़ी १ वैसां।" यिऊं ही उतर वैठो। तितरै[13] धरती फाटण लागी। तरै इण जांणियो "ओ कासूं ह्वै छै[14]?" सु धरतो माहिथी देहुरो १ नीसरै छै, सु पैहली तो देहुरारा तीन ईंडा[15] सोनारा नीसरिया;[16] पछै सिखर नीसरियो। पछै मंडप धड़ाबंध[17] नीसरियो। तठै घणा देवी-देवता आइ नाटक मांडियो, सु खाफरो पिण जाइ एकै गोख मांहै जाय बैठो। रात घड़ी २ पाछली हुती; तरै नाटक पूरो हूंण लागो। तरै देवता उपरम करण लागा[18] सु खाफरो माहे बैठो सु देहुरो खिसै नही[19]। तरै देवता कहण लागा—"जोवो[20] को मांणस छै।" तरै जोवै तो खाफरो लाधो। तरै देवताए खाफरानूं पूछियो— "तू कुण छै ?" तरै खाफरै आपरी वात मांडनै कही। देवतांनू देहुरारी वात पूछी—"जु ओ देहुरो वळै अठै कदै नीसरै छै[21]?" तरै देवताए कह्यो—"दीवाळीरी रातरै दिन वरस एक मांहै नीसरै छै। एक आज

---

1 सईस बना दिया। 2 बैठता है। 3 वैसा। 4 प्राप्त हो। 5 यह। 6 भाग गया। 7 पीछा करें। 8 उसको कौन पहुँचे ? 9 पीछे कोई मन चढो। 10 इसलिये पीछे वाहर तो कोई नही चढा। 11 और खाफरा एक पहर पिछली रात रहते आवूके पास जा कर उतरा। 12 विचार किया कि मै तो कुशलपूर्वक निकल आया। 13 इतनेमें। 14 यह क्या हो रहा है ? 15 कलश। 16 निकले। 17 सम्पूर्ण। 18 तब देवता लोग देहरेको पृथ्वीमें प्रवेश कराके अदृश्य करने लगे। 19 देहरा खिसकता नही। 20 देखो। 21 यह देहरा पुनः यहां कब निकला करता है ?

नीसरियो हुतो नै सवारै परसूं वळै नीसरसी[1] ।" तरै खाफरो देहुरारी गोखैथी परो उठियो[2] । देहुरो परो उपरमियो[3] । खाफरै कोड़ीधज चढनै पाटणनू पाछा उड़ाया[4] । मनमे जाणियो–"मैं सिधराव जैसिघदेरो लूण वरस दिन खाधो छै,[5] नै सिधरावरै देहुरारी वोहत चाह छै; ग्रो देहुरो हूं सिधरावनू देखाऊं; ज्यू राजा इसड़ो[6] देहुरो करावै, राजारो प्रथी मांहि ग्रमर नांम रहे।" सु खाफरो दिन घड़ी ४ चढ़तां पाछो पाटण ग्रायो । घोड़ो ठांण बांधनै सिधरावरै मुजरै ग्रायो । राजा वात पूछी–"कुण कांमनू गयो हुतो[7] ? पाछो किण विध ग्रायो ?" तरै पैहली तो कोड़ीधज हरियारी[8] वात मांड राजानूं कही । पछै देहुरारी वात कही—"मै जांणियो रावळै[9] देहुरो करावणरी मनमे चाहि घणी छै । मै रावळो लूण घणो खाधो हुतो[10] । मै ग्राज रातै एक ग्राबूरै कना इसड़ो देहुरो दीठो[11] । ग्राज वळै देहुरो नीसरसी । जांणियो,[12] राजानू देहुरो दिखाऊं । राज उसड़ो[13] देहुरो करावै, रावळो ग्रमर नांम रहै ।" तरै[14] राजा वात मांनी । तिणहीज[15] घड़ी खाफरो नै सिधराव दोनू घोडै चढनै उण ठौड़ ग्राबूरी तळहटी गया । घोड़ो ग्रळगो वांधनै उण ठौड जायनै बैठा । वा वेळा हुई,[16] तरै धरती फाटण लागी, देहुरो नीसरण लागो । तरै खाफरो सिधराव सूतो थो सु जगायो । राजानू देहुरो नीसरतो दिखायो । तितरै[17] देवी-देवता केई ग्राया । ग्राखाड़ो मांडियो । राजानै खाफरो वेऊं[18] भाड़ांसू[19] नजीक घोडो वांध नै देहुरारै गोखै मांहै जाय बैठा । सारो तमासो दीठो । रात घडी ४ पाछली रही, तरै देहुरो देवता उपरमण लागा । राजा नै खाफरो देहुरारा गोखै मांही वैस रह्या । देवताए

---

1 निकलेगा । 2 तब खाफरा देहरेके गवाक्षसे उठ कर चला गया । 3 देहरा लोप हो गया । 4 खाफरा कोडीध्वज घोडे पर चढ कर उसे वापिस पाटणकी ग्रोर उडा दिया । 5 मैंने वर्ष-दिनो तक सिद्धराव जैसिहदेका नमक खाया है । 6 ऐसा । 7 किस कामके लिये गया था । 8 हर कर ले जाने की । 9 ग्रापको । 10 मैंने श्रीमान्का बहुत नमक खाया था । 11 देखा । 12 विचार किया । 13 वैसा । 14 तब । 15 उसी समय । 16 वह समय हुग्रा । 17 इतने मे । 18 दोनो । 19 वृक्षोसे ।

दीठो[1]–"रात तो हमैं काई नही,[2] देहुरो उपरमै नही, सु कुण वास्तै[3]?" तरै सारै मिळनै कह्यो–"च्यारूं तरफ देहुरारी देखो, कोई कठैई मांणस तो छै नही ?" आगै देखै तो गोखडारै मांहै आदमी दोय बैठा; तरै पाछै देवताए जायनै इन्द्रनू कह्यो–"एक आदमी काल वाळो नै एक को वळै[4] आदमी देहुरारा गोखा मांहै बैठा छै। म्हे तो ऊणानू कह्यो,[5] थे परा जावो,[6] वे जाय नही। "तरै इन्द्र आप राजा खाफरा कनै आयो। इणानू पूछियो–"थे कुण छो ?" तरै राजा आपरो नांव कह्यो। तरै इन्द्र देवता कह्यो–"रात गळी, थे परा ऊठो,[7] ज्यू म्हे देहुरो ले जावां[8]।" तरै राजा कह्यो–"म्हारै इसड़ो देहुरो करावणो छै, मोनू इसड़ा देहुरारो करणहार बतावसो तरै अठाथी हूं उठीस[9]।" तरै देवताए सिधरावनूं गोळी ७ दीनी। कह्यो–"ग्रै गोळी ऊपरा-ऊपर चाढसी तिको थांनू इसड़ो देहुरो कर देसी[10]। "तरै राजा नै खाफरो गोळी लेनै देहुराथी परा ऊठिया। देहुरो नै देवता कवळासिया[11]। राजा नै खाफरो पाछा पाटण आया। सिधराव खाफरानू सिरपाव कोड़ीधज देनै विदा कियो। नै सिधराव कारीगरांनूं देस-देस तेड़ा मेलिया[12]। देस-देसरा कारीगर आय भेळा हुवा। राजा वां कारीगरां आगै गोळी मेली,[13] सु किणही कारीगरसू गोळी ऊपर गोळी चढै नही। राजा सासतो मोहरत थापै, आपरै मन कोई कारीगर मांनै नही। तरै मोहरत आघा ठेले सु[14] आ वात सारी प्रिथीमे ही हुई रही छै। सु एक कारीगर हुतो,[15] सु बाप वेटो दोय हुता[16]। सो वे ही चालणरो विचार करण लागा। तरै बाप वेटानू कह्यो–"वाट वाढो[17]!" तरै वेटो हथोटो टांकी

---

1 देवता लोगोंने देखा। 2 रात तो अब शेष है नहीं। 3 सो किस लिये। 4 एक कोई और। 5 हमने तो उनको कहा। 6 तुम चले जाओ। 7 रात बीत गई है, तुम यहासे उठ कर चले जाओ। 8 जिससे हम देहरेको ले जावें। 9 मुझे ऐसे देहरेका करने वाला बताओगे तब मैं यहासे उठूंगा। 10 इन गोलियोंको एक के ऊपर जो चढा देगा वह तुमको ऐसा देहरा बना देगा। 11 देहरा और देवता लोग अन्तर्धान हो गये। 12 और सिद्धरावने शिल्पियोंको बुलानेके लिये देश-देशोंमे बुलावे भेजे। 13 राजाने उन कारीगरोंके आगे उन गोलियोंको रखा। 14 तब मुहूर्तको और आगे खिसकावे। 15 था। 16 थे। 17 मार्ग काटो।

ले पैडो वाढै । सु बाप कह्यो–"बेटो परणियो नही[1] ।" तरै यू करतां बाप-बेटानू तीनै ठोड़ै परणायो[2] सु बेटो उण वातमे क्यूं समझै नही। तरै चोथी वेळा[3] वळै[4] बेटानू परणायो । सु वहू वत्तीस लक्षणी हुती। सु मांटीनू[5] वैर[6] पूछियो–"थांनूं चार वेळा क्यू परणाया ?" तरै मांटी कह्यो–"म्हारै बाप मोनूं कह्यो–बाट वाढो।" तरै वहू कह्यो–"बाटरी थांनू[7] सुसरोजी कहै तरै तू यूं कहै–देहुरो आपै इण भांत करस्यां, इण भांत माडस्या। यू वात करजो।" नै उण वहू कह्यो–"राजा वे गोळी आगै मेलसी,"[8] तरै उण वहू सात वीटी दी, कह्यो–"गोळी ऊपर वीटी मेलनै वीजी गोळी चाढ़जो[9] ।" पछै कारीगर राजा कनै आया । पछै सिधराव उण आगै गोळी ७ वे आण मेली[10] । औ वीच वीटी देतो गयो। साते ही गोळी वीटी वीच दियां ऊपरा-ऊपर चढ़ी। सिधराव कारीगरनू पूछियो–"ऐ वीटी कासू[11]?" तरै कारीगर कह्यो–"ऐ वीच थर हुसी[12] ।" तरै राजारै जमै-खातरी हुई[13] । उणं कारीगरां देहुरो तयार कियो। वरस १६ देहुरो करतां लागा । कई हजारा कारीगर लागना ।

संमत १७१५रा वैसाख माहै महाराजा श्री जसवंतसिघजीनूं गुजरातरो सूबो हुवो। संमत १७१७रा भादवा मांहै मु० नैणसीनू हजूर बुलायो,[14] तरै भादवा वदि ७ मु० नैणसीरो सिधपुर डेरो हुवो। सु सिधपुर भलो सहर छै। सिधराव आपरै नाव नवो वसायो नै पूरवसू बाभण उदीच वेदिया १००० तेड़ायनै[15] गांव ५००सू सिधपुर दियो । गाव ५०० सीहोररा दिया, सेत्रूजा कनै[16] दिया।

रुद्रमाळो वडा प्रासाद करायो हुतो, सु पातसाह अलावदी पाडियो[17] । तोही[18] कितरोएक प्रासाद अजेस छै[19] । गांव आगै

---

1 बेटा विवाह किया हुआ नही। 2 तब इस प्रकार करते हुए बापने बेटेका तीन स्थानोमे विवाह किया। 3 बार, दफा। 4 पुन। 5 पति। 6 पत्नी। 7 तुमको। 8 रखेगा। 9 गोलीके ऊपर छल्ला रख कर दूसरी गोली चढा देना। 10 लाकर रखी। 11 ये छल्ले किस लिये ? 12 ये बीचमे तह होगे। 13 तब राजाको तसल्ली हुई। 14 मुहता नैणसीको महाराजाने बुलवाया। 15 बुला कर। 16 पास। 17 जिसको बादशाह अलाउद्दीनने गिरवाया। 18 तब भी। 19 अब भी स्थित है।

उगवणनूं फळसं सरस्वती नदी छै[1] । तिण ऊपर प्राची माधवरो देहुरो करायो हुतो । घाट बंधायो हुतो । सु देहुरो तो मुगळे पाड़ियो नै घाट बंधायो हुतो सु अजेस छै। तठै सको[2] सिनांन करै छै। घाट ऊपर बंगळो १ किणही तुरक करायो छै। सिधपुर पाटणथा कोस १२ छै। सिधपुर हमै पाटण वांसै छै[3]। सिधपुररै तर्फे गांव ५२ लागै छै[4]। घर २००० वांणियांरा छै। घर १०० ओसवाळांरा छै। वीजा डीसावाळ पोरवाड़ छै[5]। घर ७०० बांभण[6] वसै छै। वीजा मुसलमांन बोहरा १००० वसै छै। रुपिया २५००० उपजतारी ठोड़ छै[7]। सिधपुरथी कोस ११ विंदसरोवर वडो तीरथ छै[8]। सरस्वती नदी छै। पूजा साठियारी धरती छै। तठै भाखरां मांहै कोटेस्वर महादेव छै[9]। तठै एक आंवारो अच्छ छै[10]। तिणरी जड़ां मांहिसू प्रगट हुवा, तठै आंवावरा भाखरांरो पाणी आवै छै[11]।

कवित सिधराव जैसिघदेग देहुरारा, लल्ल भाटरा कह्या[12]—

थर सो चवदह माळ[13] थंभ सत-सहस निरंतर।
सौ-अढार[14] पूतळी जडी हीरां मांणक वर॥
तीस-सहस धजडंड[15] कणै[16] साअन्त[17] निहाळै।
सत्तर-सौ गय[18] तुरी[19] लल्लगुण रुद्र संभाळै॥
एतला[20] पेख[21] अचिरज हुवै, रोमंचै सुर नर सवै[22]।
सु प्रासाद कीध जैसिघ ते, टगमग चाहै चक्कवै[23] ॥१॥
दिस गयद गड़ीयड़ै सीह खिण-खिण गुंजारै।
कणै कळस भळहळै मड ऊडट संभारै॥

---

1 गांवके आगे पूर्व दिशा द्वार पर सरस्वती नदी है। 2 सब कोई। 3 सिद्धपुर अब पाटनके अधिकारमें है। 4 सिद्धपुरके नीचे ५२ गांव लगते हैं। 5 दूसरे डीसावाल पोरवाड़ बनिये है। 6 ब्राह्मण। 7 रुपये २५०००की आमदनीका स्थान है। 8 सिद्धपुरसे ग्यारह कोस पर विन्दु सरोवर बड़ा तीर्थ है। 9 जहां पहाड़ोंमें कोटेश्वर महादेव हैं। 10 वृक्ष। 11 जहां अवाजीके पहाड़ोंका पानी आता है। 12 लल्ल भाट रचित सिद्धराव जयसिंहदेवके रुद्रमाल देहरेके कवित्त। 13 चौदह मंजिल। 14 अठारह सौ। 15 ध्वजा-दंड। 16 सोनेके। 17 सता, पूर्णपत्तामें युक्त। 18 हाथी। 19 घोड़े। 20 इतने। 21 देख कर। 22 सब ही। 23 चक्रवर्ती राजा भी एकटक देखना चाहते हैं।

नाचै रंग पूतळी इक गावै द्रक वावै[1] ।
तिण पर सुर उछ्ळंग संख सवदह उळावै ॥
पेखवै सुरनर सयल पर धमधमंत सुर उच्छलग ।
तिण कारण सिद्ध नरेंद्र सुण व्रसभ तेणथी गो डरग[2] ॥२॥
सरग[3] यंद्र[4] सल[5] हीयै राव पायाळै[6] वासग[7] ।
मात लोक[8]नू राव कहां हव ओपम कासग[9] ॥
हेम सेत मंझार न को हिव[10] अरथ[11] न रावह ।
इत्थ चवत्थो[12] राव हुवत जंपियै सरावह ॥
त्रिण राव त्रिणेही भवणपति, सिद्ध लल्ल इम उच्चरै ।
इत्थ चवत्थो राव हुवै, तो दिव जळतो कर धरै ॥३॥
उंदर दर खण मरै,[13] पैस भोगवै भुयंगह ।
हळ वहि मरै वहिल्ल,[14] हरी जव चरै तुरंगह ॥
सूव[15] धन संचइ मरै, वीर विद्रवै विवह पर ।
पंडित पढ गुण मरै, मूढ भूचै रायां हर ॥
सूजांण राय गूजर धणी, करां वीनती क्रन्न सुअ[16] ।
हम पढां गुणह पावै अवर, कहा परख जैसिंघ तुअ ॥४॥
वीस तीस चाळीस साठि सित्तर सितहत्तर ।
भट्ट आण समप्पिया, सिद्ध केकांण[17] विवह पर ॥
वीस ढाल दस ढोल तीस नेजा इक डंडह ।
छत्र टाळंत गैघटा[18] दिद्ध जैसिंघ नरंदह ॥
मारियो दळद्र[19] दस लक्ख दे, इम उपाय अंकुश कियो ।
हडहडे भट्ट ताहरै[20] हस्यो सिद्धराव एतो दियो ॥५॥

---

1 नेत्र चलाती है। 2 जिससे डर गया। 3 स्वर्ग। 4 इन्द्र। 5 शल्य रूप। 6 पातालमें। 7 वासुकी। 8 मृत्युलोक। 9 किससे। 10 अब। 11 धन। 12 चौथा। 13 चूहा बेचारा बिना मौत घर मरता है। 14 बैल। 15 कृपण। 16 पुत्र। 17 घोड़ा। 18 हाथियोंकी घटा। 19 दारिद्रय। 20 तब।

वि०—इस एकादश रुद्र महालयके संबंधमें कहा जाता है कि इसका मुख्य मंडप इतना विशाल था कि इसमें १६०० स्तम्भ थे और इस पर चौदह करोड़ सुवर्ण मुद्रायें खर्च हुई थीं। इसका अनुपम शिल्प विशालता और स्थापत्य-कौशल अब भी उसके खंडहरोंमें देखा जाता है। इस रुद्र महालयको गुजरातके महाराजा मूलराज सोलंकीने बनवाना प्रारंभ किया था जो उसके प्रसिद्ध पौत्र सिद्धराज सोलंकीके समयमें सम्पूर्ण हुआ था। इस विख्यात महालयके ११ खंडोंमें ११ ज्योतिलिंग स्थापित थे।

वात सोळंकियां खैराड़ांरी

जाजपुर रांम कुंभा खैराड़ारो वैसणो[1]। फूलियाथी[2] कोस १२, मांडलगढथी कोस ११। गांव ६५, दांम ४१०१६५, रुपिया १०४७५४॥)५[3]। १ मांडलगढ नंदराय वालणोत सोळंकियांरो उतन। श्रै महारांणारा चाकर। जिण[4] वरस अकवर पातसाह रिणथंभोर लेनै आघो[5] डेरो चित्तोड़ दिसा[6] कियो, तद सोळंकियै भांनीदास, वलूहुळ वांहिजथा गढ छोड़ छांनै नास गया[7]। गढ पातसाह लियो। मांडलगढ़ वडी ठोड, गढ ऊपर पांणी घणो। आगै सोळकियांरै गढ ऊपर वडी वस्ती हुती। घणा महाजन गढ ऊपर वसता। ज्यांनरा देहरा घणा गढ ऊपर छै[8]। संमत १७११ पातसाह जहांगीर चीतोड़रो गढ़ पड़ायो। परगना ४ रांणारा लिया। तिणांमे[9] श्रो[10] गढ लेनै रावळ रूपसिंघ भारमलोतनू दियो। पछै रूपसिंघ आपरी वस्ती सूधो गढ़ ऊपर जाय वसियो हुतो। संमत १७१४रा जेठमे रूपसिंघ कांम आयो। गढ छूटो।

१ भांनीदास।

२ वलू भांनीदासरो। २ वणवीर।

३ नंदो।

४ साहिवखान।

५ राव मनोहर।

४ सांईदास।

५ मनोहर।

१ साकरगढ माडलगढसू कोस १२।

१ केकडी सोळकिया भूणगोतारो उतन।

१ रामगढ जाजपुरसू कोस १२।

---

1 जहाजपुरमे रामकुभा खैराडेका निवास-स्थान। 2 फूलियामे। 3 ६५ गांव जिनकी रेख दाम ४१०१६५ अर्थात् रु० १०४७५४॥)५ थे। 4 जिस। 5 आगे, दूर। 6 ओर। 7 पीछेकी ओरसे गुप्त रूपसे गढको छोड कर भाग गये। 8 गढ ऊपर जैनोंके बहुत मंदिर हैं। 9 जिनमे। 10 यह।

मांडलगढ़सूं श्रै सहर इतरा कोस छै[1]—

१७ चीतोड़ ।	२८ वधनोर ।
४५ अजमेर ।	१८ वेघम ।
१७ भैंसरोड ।	११ जाजपुर ।
२२ बूंदी ।	

१ तोडो नागरचाळरो । श्रो सोळंकियांरो श्राद उतन छै[2]। सोळंकी जिकै जठै छै तिकै सारा तोडारा ऊठिया गया छै[3]। तोडो निपट वडी ठोड । तोडारा धणी राव कहावता । श्रै सोळंकी वाल्हणोत[4]।

१ तोडडी सोळंकियां महिलगोतांरो उतन[5]। मालपुरो तोडड़ीरा परगनारो गांव माल पंवार वसायो । नवो सहर कदोम सोळंकियारी ठाकुराई । तोडड़ी राव मुलतांण इणां महिलगोतां मांहै[6]।

सोळंकियांरै पीढियांरी विगत—

१ श्राद नारायण	२ कमळ ।
३ ब्रह्मा ।	४ धोमरिख ।
५ चाच ।	६ वाळग ।
७ सुकर ।	८ श्ररजन ।
९ श्रर्जैपाळ ।	१० देपाळ ।
११ राज ।	१२ मूळराज ।
१३ द्रोणगिर ।	१४ वल्लभराज ।
१५ भीम ।	१६ करन ।
१७ सिधराव ।	१८ ईतपाळ ।
१९ कीतपाळ ।	२० वाळप ।
२१ बोहड ।	२२ सांगो ।

---

1 माडलगढसे ये शहर इतने कोस हैं। 2 यह सोलंकियोंका श्रादि निवास-स्थान है। 3 सोलंकी जहा भी है वे सभी तोडासे उठ कर गये हैं। 4 ये वाल्हणोत सोलंकी कहलाते हैं। 5 महिलगोता सोलंकियोंका निवास-स्थान तोडडी गाँव है। 6 तोडडीरा राव मुलताण इन महिलगोतो सोलंकियोंमेसे है।

२३ गोयंदराज ।	२४ कांनड़ ।
२५ महिलूरै उतन तोड़ो[1]	२६ दुरजणसाळ ।
२७ हरराज।	२८ राव सुरतांण ।
२९ ऊदो ।	३० वैरो ।
३१ ईसरदास	३२ राव दळपत ।
३३ राव अणदो ।	३४ राव स्यांमसिंघ तोडड़ी उतन ।
३५ राव महासिंघ ।	

वात

राव सुरतांण हरराजरो, तोडड़ी छोडनै रांणा रायमल कनै चीतोड़ आयो, तरै रांणै वधनोर गढ़ दरोवस्त पटै दियो । पछै रांणा रायमलरो टीकाइत वेटो प्रथीराज उडणो राव सुरतांणरी वेटी तारादे परणियो[2] । प्रथीराज रायमल जीवतां विस हुवो, पछै मुंवो[3] । पछै मुदायत रांणै रायमल जैमलनू कियो,[4] तिको राव सुरतांणनू जोर कुमया करै[5] । इणै तो घणी ही हळभळ की,[6] पिण जैमल मांनै नही, पग पड़ियो आवै[7] । तरै जैमल कटक करनै वधनोर ऊपर आयो । राव सुरतांण आपरा उचाळा भरनै नीसरियो.[8] नै सांखलो रतनो रावरै साळो पिण हुतो, परधान पिण हुतो, इगनू पैहली जैमल कनै मेलियो हुतो, मु इण तो घणी ही मीठी वात कही[9] । जैमल कहै–"थारी वैहननू तो वचियारा घोडांरी पूछ वंधाईस[10] । "तरै इणही कू कह्यो[11] । जैमल जोर माहै मावै नही । वधनोर आयो । गांव तो, आगै आया तिणै कह्यो, मूनो छै[12]। इतरै रात पडी[13] । सारै वडे ठाकुरे कह्यो–

---

1 महिलूका निवासस्थान तोडा । 2 तारादेसे विवाह किया । 3 पृथ्वीराजको रायमलके जीते जी विष दे दिया गया था, जिससे वह मर गया । 4 बाद मे राणा रायमलने अपना उत्तराधिकारी जयमलको बनाया । 5 जो राव सुरतान पर बहुत ही अवकृपा रखता है । 6 इसने बहुत ही खुशामद की । 7 क्रोधमे पाव पछाडता है । 8 राव सुरतानने वहासे उचाला कर दिया (सपरिवार वहांसे निकल गया) । 9 सो इसने तो बहुत ही खुशामद की । 10 तेरी बहिनको तो बछियोके घोडोंकी पूछमे बधवाऊगा । 11 तब इसने भी कुछ कहा । 12 जो लोग आगे आय थे उन्होने कहा कि गाव तो सूना पडा है । 13 इतनेमे रात पड गई ।

"डेरा करो, सवारै गाडांरो घंस लेस्या, वांसै जास्यां[1] ।" जैमल घणो कस मांहै कहै[2]--"मुसालां घणी करो, मुसालां हाथियां ऊपर झालनै चढो, वांसै गाडारै खड़ो[3] ।" पग गाडांरा लेनै मुसालांरै चांनणै आप घुड़बैहल बैसनै वांसै खड़िया,[4] सु गाडांनू गाव अटाळी, वधनोरसू कोस ७, तठै जाय पोहता[5] । फोज नजीक आई । तठै राव सुरताणरी बैर[6] सांखली कह्यो--"रतना भाई ! दीसै छै, बंध पड़ीजसी[7] । राणै कही थी सु हूती दीसै छै[8] ।" तरै रतनै कह्यो--"चीतोड़रो धणी आरंभराम छै[9] । करण मतै सु करै ।" आ वात कहिनै सांखलै रतनै एकल असवार कटक सांमा खड़िया,[10] अमल कियो,[11] घोड़ारो तंग लियो, आधरै-आधरै आइ फोज मेवाड़री भेळो हुवो[12] । रात आधी ऊपर गई छै । जैमल आकड़सादा नै सथांणै वीच आवतो हुतो, घुड़बैहल वैठो । मेवाड़रा वीर सारा ऊंघता जाता छा । सांखलो रतनो मुसालांरै चांनणै घुड़बैहल नजीक आयनै घोड़ो तातो करनै जैमलनू बोलायो, कह्यो--"राज ! सांखलो रतनो मुजरो करै छै ।" घोडो खुरी करनै जैमलरी छाती मांहै वरछीरी दी सु पैलै कांनै नीसरी[13] । वरछी एक दोय वळै वाही[14] । जैमल समार हुवो[15] । कांम सीधो[16] । पछै रांणारै साथ सांखला रतनानू पण मारियो ।

---

1 सभी वडे ठाकुरोने कहा—यहीं डेरे लगा दो, सवेरे गाडियो समूह लेकर पीछे जायेंगे। 2 जयमल अधिक क्रोधमे कहता है। 3 बहुतसी मशालें तैयार करो, मशालें पकड कर हाथियो पर चढो और गाडोके पीछे चलाओ। 4 पीछे चलाये। 5 जहा जाकर उन्हे पहुचे। 6 स्त्री। 7 रतना भाई ! दिखता है कि बधनमे पड जायेंगे। 8 राजाने कहा था सो ही होती दिखती है। 9 चित्तोडका स्वामी जो चाहे सो करनेमे समर्थ है। 10 रतना अकेला ही सवार होकर सेनाके सामने गया। 11 अफीम लिया। 12 सावधानीसे धीरे-धीरे आकर मेवाडकी सेनामे आ मिला। 13 घोडेको पिछले पावो पर खडा करके जयमलकी छातीमे बरछी ऐसी जोरसे मारी कि पीठकी ओर निकल गई। 14 एक दो वार वरछीके और कर दिये। 15 जयमल समाप्त हुआ। 16 काम सिद्ध हुआ।

गीत साखरो[1]—

चढ़ सांखला जुड़ पाड़ जैमल, प्रांण पौरस दाख ।
रावरै दळ तुंहीज रूपक, रूप रतना राख[2] ॥१॥

वात

जैमल रतनो वेऊं[3] कांम ग्राया । फोज उठाथी पाछी वळी[4] । जैमलनूं दाग ग्राकड़सादै सथांणै वीच हुवो[5]। वधनोररै देस मेर गूजर सदा वसता । हमैं जाट ही वधनोररा गांवां मांहै छै, सु कहै छै–"म्हे राव सुरतांणरी वसीरा[6] छां ।"

वात सोलंकी नाथावतरी

मूळ ग्रै तोडारै सोळंकियां मिळै । पछै इणांरै भाई वंटै नैणवाय ग्राई, सु भोजावत नैणवाय मुदायत[7] धणी हुता । तिणांनूं नाथावतां मांहै राघोदास सादूळोत वडो रजपूत राहवेधी[8] हुवो, सु भोजावतांनूं धकाय काढिया[9] । भोमियां वंट ग्राप लियो । तठा पछै राघोदासरै वेटो नाहरखान भलो रजपूत हुवो । तिणनूं राव रतन बूंदीरो रु० ६००००)रो पटो दियो । इणांरी वसी बूंदीरै हूंगोरी सूहतै हुती[10]। नाथावतांरी बूंदीरी ग्रोळ वडी तरवार राव रतन काळ कियो,[11] तरै सो नाहरखांन राघवदासोत पातसाह जिहांगीररै चाकर हुवो । नैणवाय जागीरमे पाई । हमैं नाहरखानरो वेटो सूर छै सु नैणवाय वसै छै[12] । नाहरखांनरा कराया मोहळ,[13] वाग छै। कितरी ही जमी

---

1 साखीका (यशका) छंद। 2 हे सांखला रतना ! तूने जयमल पर चढ़ करके अद्भुत बल-पौरुष दिखाया और उसे मार गिराया। राव सुरतानकी सेनामे तू वडा यशधारी हुआ और वीरगतिको प्राप्त कर कीर्तिमान् हुआ। (इस छंदके प्रथम पादका पाठान्तर एक अन्य प्रतिमे—'समवड सांखला जैमल्ल' है)। 3 दोनो। 4 फौज वहांसे पीछी लौट गई। 5 जयमलका दाहसंस्कार ग्राकडसादा और सथाणा गावोंके बीचमे हुआ। 6 करमुक्त जागीरी। 7 मुख्य। 8 दूरदर्शी। 9 भोजाके वंशजोंको मार भगाया। 10 इनकी वसी (जागीरी) बूंदी राज्यके हूंगोरी-सूहतेमे थी। 11 राव रतन मर गया। 12 अब नाहरखानका बेटा सूरसिंह नैणवायमे रहता है। 13 महल।

पातसाहजीरी दीवी पावै छै । रु० १) टको १ भूमिया वंटरो सारै परगनैमे पावै छै[1] ।

वात सोळंकी रांणारै वास देसूरीरा धणियांरी[2]

सोळंकियांसू पाटण छूटी, तरै भोजो देपावत सीरोहीरै गांव लास मुणावद वसियो[3] । तिण[4] नै[5] सीरोहीरै धणी राव लाखै माहोमांही अदावद[6] हुई । पछै वेढ हुई[7] । भोजो वेळा ५ तथा सात वेढ जीती । राव लाखो हारियो । पछै राव लाखै ईडररो धणी मदत तेडियो[8] । ईडररै धणी हकीकत राव लाखानूं पूछी–"थे भोजा आगै वेढ वेळा ५ तथा ७ हारी सु कासूं विचार छै[9] ?" तरै राव लाखै कह्यो–"वेढ भालारी सूअर करनै इण भांत दौड़े सु मांहरै साथरा पग छूट जाय ।" तरै ईडररै धणी कह्यो–"हिमरकै आंपै ही खेड़ांरी बाघण करस्यां[10] ।" पछै राव सीरोहीरो नै ईडररो भेळा हुय लास ऊपर आया । इण वेढ सोळकी भोजनू मारियो[11] । पछै इणांसू लास छूटी। पछै औ मेवाड़ आया । कुंभळमेर कनै गाडा छोड़नै रांणै रायमलरै मुजरै गया । तिण दिन[12] देसूरी मादड़ेचा चहवांण रहता, सु रांणारा गैरहुकमी हुवा हालता[13] । पछै रांणै रायमल कँवर प्रथीराज इणांनूं आ ठोड दिखाई, पछै इणेसो रायमल सांवतसी एक वार तो उजर कियो,[14] औ मांहरै सगा छै[15] । पछै रांणै कह्यो–"मांहरै दूजी ठोड़ देणनू काई नही[16] ।" पछै इणै वात कबूल को[17] । पछै मादड़ेचा आलणरा आदमी १४० सु कूट-मारनै इणै आ धरती लीवी[18] ।

---

1 सारे परगनेमे एक रुपये पीछे एक टका भूमिया भागका मिलता है। 2 मेवाड़के राणाके यहां सोलंकियोंका देसूरीके जागीरदार बन कर रहनेकी बात। 3 तब देपाका बेटा भोजा सिरोही राज्यके गांव लास-मुणावदमे आकर रहा। 4 उसके। 5 और। 6 शत्रुता। 7 फिर लड़ाई हुई। 8 फिर राव लाखाने ईडरके स्वामीको मददके लिये बुलाया। 9 सो क्या बात है ? 10 इस बार अपन भी इसी प्रकार लड़ाई करेंगे। 11 इस लड़ाईमे सोलंकीने भोजको मार दिया। 12 उन दिनोमे। 13 सो राणाकी अवज्ञा करते रहते थे। 14 आपत्ति की। 15 ये हमारे संबंधी हैं। 16 हमारे पास दूसरी जगह देनेको कोई नही है। 17 पीछे इन्होने उस बातको स्वीकार कर लिया। 18 पीछे मादड़ेचा आलणके आदमी १४० जिनको मार-कूट कर इन्होंने इस धरतीको ले लिया।

१ भोजो देपावत ।
२ अभवणो ।
३ पातो ।
४ रायमल ।
५ सांवतसी ।
६ देवराज ।
७ वीरमदे ।
८ जसवंत ।
९ दलपत ।

गांव १४० देसूरीरो पटो कहीजै, तिणमें अै वडेरी ठोड़[1]---

१२ गांव आगरियारा ।
१२ गांव वांसरोटरा ।
१२ गांव थांमणियारा ।
१२ गांव सेवंत्रीरा ।
१२ गांव देसूरीरा ।
१२ गांव ढोलांणारा ।
८ गांव गोढवाडरा ।
१ आंनो । १ करनवास । १ वांमड़ो । १ माडपुरो ।
१ केमूली । १ गाथी । १ गोढलो । १ चावंडेरो ।

इति सोळंकियारी ख्यातवार्त्ता सपूर्ण ।
लिखत वीठू पनो सीहथळरो ।

---

1 देसूरीके पट्टमे १४० गांव, जिनमे बड़े ठिकाने ये हैं।

अथ कछवाहांरी ख्यात लिख्यते ।

वात राजा प्रथीराजरी

प्रथीराज वडो हर-भगत हुवो । द्वारकाजीरी जात[1] जांण लागो । मजल[2] एक दोय गयो, तरै श्रीठाकुर सांम्हां आया; प्रथीराजनू फुरमायो–"म्हैं जात मांनी, तू पाछो वळ,[3] तू अठै थको घणी वंदगी करै छै, सु हूं जातसू इधकी मांनूं छू[4] ।" तरै राजा कह्यो–"हूं रावळा[5] हुकमसू पाछो वळीस,[6] पण लोक आ वात मानसी नही ।" तरै श्रीठाकुर हुकम कियो–"थारै मन मांनै सो मांग ।" तरै प्रथीराज अरज की–"म्हारा खवां चक्र ह्वै पड़ै,[7] नै अठै महादेवरो देहरो छै तठै गोमती समुद्ररो संगम ह्वै[8] ज्यू सारा जात्री सिनांन करै ।" तरै प्रथीराजरा खवां चक्र पड़िया; महादेवरै देहरै गोमती समुद्ररो संगम हुवो । आ वात सारै हिंदुस्थांन सांभळी । तरै रांणै सांगै सुणी, तरै राणै जांणियो–"इसो[9] हरभगत राजा छै तिणरो किणी सूल दरसण पाऊं, वड़ी वात ह्वै[10] ।" तरै विचार कियो–"जु बेटी परणाऊं तो प्रथीराज अठै आवै[11] ।" तरै रांणै प्रथीराजनूं नाळेर मेलियो[12] । पछै राजा परणीजणनू आयो,[13] सु राजा प्रथीराज ठाकुररी मांनसी सेवा करतो हुतो; नै राणा सांगारो बेटो तेड़णनूं आयो,[14] सु ओ वांसाथी बोलियो,[15] सु राजा सोनैरै कटोरै मन मांहै श्रीठाकुरनू सिखरण आरोगावतो छो,[16] सु कंवर वांसाथी बोलियो; राजा फिर पाछो दीठो,[17] कटोरो सिखरण भरियो राजारा हाथ मांहैसू छिटक पड़ियो । दुनी सोह[18] देख हेरान हुई; राणै आ वात सुणी, राणो आप पगे लागो, सु राजा वडो हरभगत हुवो ।

---

1 यात्रा । 2 मंजिल । 3 तू पीछा लौट जा । 4 तू यहा रहते हुये भी बहुत वंदगी करता है जिसे मैं यात्रासे भी अधिक मानता हू । 5 आपका । 6 लौटूंगा । 7 मेरे कंधो पर चक्रोंके चिन्ह हो जायें । 8 हो जाय । 9 ऐसा । 10 जिसका किसी प्रकार दर्शन पा लू तो बडी बात हो । 11 जो मैं अपनी कन्या व्याह दूं तो पृथ्वीराज यहा आ जावे । 12 भेजा । 13 पीछे राजा विवाह करनेको आया । 14 बुलानेको आया । 15 सो यह पीठकी ओरसे बोला । 16 सो राजा श्री ठाकुरजीको सोनेके कटोरेमे सिखरनका भोग लगवा रहा था । 17 राजाने पीछेकी ओर फिर कर देखा । 18 सब ।

चवदे-चाळ ढूंढाहड़ कहीजै, तिणरो मेळ गांव १४४०[1]

३६० आंबेर ।

३६० अमरसर ।

३६० चाटसू ।

१५० दोसा ।

५० मोजावाद, नीवाई, लवाइण ।

पीढी कछवाहांरी, भाट राजपांण उदैहीरै मंडाई तिणरी नकल छै[2] ।

१ आद श्री नारायण ।	१८ धुंधमार ।
२ कमळ ।	१९ इंद्रसवा ।
३ ब्रह्मा ।	२० हरजस ।
४ मरीच ।	२१ कुंभ ।
५ कस्यप ।	२२ सांसतव ।
६ सूर्य ।	२३ अक्रतासु ।
७ मनु ।	२४ पासेनजित[4] ।
८ इक्ष्वाकु ।	२५ जोबनारथ ।
९ संसाद ।	२६ मांनधाता ।
१० काकुस्त[3] ।	२७ परुपत ।
११ अनेना ।	२८ तूदसत[5] ।
१२ प्रथु ।	२९ सुधानैव ।
१३ वेणराजा ।	३० त्रिधानव ।
१४ चंद ।	३१ त्रियारोन ।
१५ जोवनार्थ ।	३२ त्रिसाख ।
१६ सरामु ।	३३ राजा हरिस्चंद्र ।
१७ ब्रहदथ ।	३४ रोहितास ।

1 चौदह सौ चालीस गावोंका समूह 'चवदै चाळ ढूंढाहड' कहा जाता है, ('चवदै-चाळ' चौदह सौ चालीसका अपभ्रंश प्रतीत होता है) । 2 निम्नोक्त कछवाहोंकी पीढ़िया उदहीके भाट राजपाणने लिखवाई उसकी नक्ल है । 3 काकुत्स्थ । ४ प्रसेनजित । ५ एक प्रतिमें 'वृदमन' लिखा है ।

३५ हरित ।
३६ चाच ।
३७ विजैराय ।
३८ रुणकराय ।
३९ विक्रमाज ।
४० मुवाहु ।
४१ सगर ।
४२ असमंज ।
४३ अंसमांन[1] ।
४४ दलीप ।
४५ भगीरथ ।
४६ नाभंगराय ।
४७ अंवरीप ।
४८ संधदीप ।
४९ आयोतास ।
५० पांणराज ।
५१ सुदर्थराज ।
५२ अगराज ।
५३ आसमकराज ।
५४ पहपलकराज ।
५५ सदरथराज ।
५६ इवार ।
५७ वीवर ।
५८ विस्वसेन ।
५९ पटग[2] ।
६० दीरघवाहु ।
६१ रघु ।
६२ प्रथसवा[3] ।
६३ अज ।
६४ दसरथ ।
६५ श्री रांमचंद्रजी ।
६६ कुस ।
६७ अतिरथ ।
६८ निपगराइ ।
६९ नाल ।
७० नलनाभ ।
७१ पंडरिप्य ।
७२ प्रछेमधन्वा[4] ।
७३ देवानीक ।
७४ अहिनाग ।
७५ सुधन्व ।
७६ सलराज ।
७७ धर्माद ।
७८ आनंभराय ।
७९ परियत्रराइ ।
८० वालरथ ।
८१ वज्रधांम ।
८२ सुनंगराय ।
८३ व्रहीत ।
८४ हरणनाभ[5] ।
८५ ध्रुवसंध ।
८६ सुदर्सन ।
८७ अग्नवरण ।
८८ सिधगराय

---

1 अंशुमान । 2 पट्वाग । 3 पृथुश्रवा । 4 प्रसेनधन्वा । 5 हिरण्यनाभ ।

८६ सुस्तराज[1] ।	११५ समपू ।
६० अमरपण[2] ।	११६ सुधोन ।
६१ सहसमांन ।	११७ लालरंग ।
६२ विश्व ।	११८ प्रासेनजीत ।
६३ व्रयदर्थ[3] ।	११६ क्षुदकराय[4] ।
६४ उरक्रिय ।	१२० सोमेस ।
६५ वछवधराज ।	१२१ नल, नळवरगढ करायो ।
६६ प्रतविब ।	१२२ ढोलो[5] ।
६७ भांन ।	१२३ लखमन ।
६८ सहदेव ।	१२४ वज्रधांम, ग्वाळेरगढ़ करायो ।
६६ व्रहदा ।	१२५ मांगळराय ।
१०० भूभांन ।	१२६ ऋतराय ।
१०१ प्रतीक ।	१२७ मूळदेव ।
१०२ प्रतक प्रवेस ।	१२८ पदमपाळ ।
१०३ मनदेव ।	१२६ सूर्यपाळ ।
१०४ छत्रराज ।	१३० महीपाळ ।
१०५ ......।	१३१ अमीपाळ ।
१०६ अतरिख्य ।	१३२ नीतपाळ ।
१०७ भूपभीच ।	१३३ श्रीपाळ ।
१०८ आमत्र ।	१३४ अनतपाळ ।
१०६ वेहाद्रभाज	१३५ धनकपाळ ।
११० वरदी ।	१३६ क्रमपाळ ।
१११ क्रतागराज ।	१३७ सिसपाळ ।
११२ राणजराय ।	१३८ वन्निपाळ।
११३ सजोसराय ।	१३६ सूरपाळ ।
११४ चतुरग ।	१४० नरपाळ ।

1, 2. एक अन्य प्रतिमे 'सुरतराज' लिखा है। एक और दूसरी प्रतिमे सुस्तराज और अमरपणके बीचमे 'सिधराज' नाम अधिक लिखा हुआ है। 3 वृहद्रथ। 4 क्षुद्रकराय। 5 ढोला-मारवण' नामक प्रसिद्ध प्रेम-कथाका नायक।

१४१ गंधपाळ।	१५५ नरदेव।
१४२ हरपाळ।	१५६ जांनरदेव।
१४३ राजपाळ।	१५७ पंजुन सामंत।
१४४ भीमपाळ।	१५८ मलयसी।
१४५ सूर्यपाळ।	१५९ बीजळ।
१४६ इंद्रपाळ।	१६० राजदेव।
१४७ वस्तपाळ।	१६१ कल्याण।
१४८ मुक्तपाळ।	१६२ राजकुळ।
१४९ रेवकाहीन।	१६३ जवणसी।
१५० ईसरसिंह।	१६४ उदैकरण।
१५१ सोढदेव।	१६५ नरसिंघ।

१५२ दूलहदेव, भाणेज तुंवरनू ग्वाळेर दियो[1]।

१५३ हणुमांन।	१६६ बणवीर।
१५४ काकिलदेव, आंबेर वसायो[2]।	१६७ उधरण।
	१६८ चंद्रसेण।

१६९ प्रथीराज चंद्रसेणोत, बालबाई बीकानेरी घरे हुई तिणरा बेटा[3]—

१७० राजा भारमल।	१७० जगमालरा खंगारोत नारायसोवाळा
१७० राजा पूरणमल।	
१७० बलिभद्र।	१७० सांगो।
१७० गोपाळदासरा नाथावत कहीजै।	१७० चत्रभुज।
	१७० भीखो।
१७० पचाइण।	१७० साईदास।
	१७० सैंहसो।

१७० भीवसी, राजा दो मासरे हुवो तिणरा बेटा[4]—

१७१ राजा रतनसी। १७१ राजा आसकरण।

---

1 दूलहदेवने अपने तुंवरको ग्वालियर दे दिया। 2 काकिलदेवने आमेर बसाया। 3 चंद्रसेनके पुत्र पृथ्वीराजकी पत्नी बालबाई बीकानेरीकी कोखसे उत्पन्न पुत्र। 4 भीवसी, केवल दो मास तक राजा रह सका, उसके पुत्र।

१७० राजा भारमल प्रथीराजरो,[1] तिणरा[2] बेटा—

१७१ राजा भगवंतदास ।	१७१ सुंदर ।
१७१ राजा भगवांनदास ।	१७१ प्रथीदीप ।
१७१ भोपत ।	१७१ रूपचंद ।
१७१ लल्हैदी ।	१७१ परसरांम ।
१७१ सादूळ ।	१७१ राजा जगनाथ ।

१७१ राजा भगवंतदास राजा भारमलरो, तिणरा बेटा—

१७२ राजा मांनसिंघ ।	१७२ चंद्रसेण ।
१७२ माधोसिंघ ।	१७२ हरदास ।
१७२ सूरसिंघ ।	१७२ वनमाळीदास ।
१७२ प्रतापसिंघ ।	१७२ भीव ।
१७२ कांन्ह ।	

१७२ राजा मांनसिंघरा[3] बेटा—

१७३ जगतसिंघ ।	१७३ भावसिंघ ।
१७३ सकतसिंघ ।	१७३ हिमतसिंघ ।
१७३ सबळसिंघ ।	१७३ कल्यांणसिंघ ।
१७३ दुरजणसिंघ ।	१७३ स्यांमसिंघ ।

१७३ कंवर जगतसिंघरा बेटा—

१७४ महासिंघ ।	१७४ जूझारसिंघ ।
१७४ ततारसिंघ ।	

१७४ महासिंघरो[4] बेटो—

१७५ राजा जयसिंघ ।

१७६ रामसिंघ ।	१७६ कीरतसिंघ ।

कछवाहारी पीढी[5]

कछवाहा सूरजवंसी कहीजै, त्यांरी विगत[6]—

१ आदि ।	२ अनाद ।

---

1 पृथ्वीराजका पुत्र। 2 जिसके। 3 के। 4 का। 5 कछवाहोंकी वंशावली (यह दूसरी वंशावली है)। 6 कछवाहे सूर्यवंशी कहे जाते हैं, उनका वंश-विवरण।

३ चांद ।	२८ अज,अजोध्या वसाई[8]।
४ कंवळ[1]	२९ अजैपाळ, चकवै[9] ।
५ ब्रह्मा ।	३० राजा दसरथ ।
६ मरीच ।	३१ श्री रांमचंद्रजी ।
७ कस्यप ।	३२ कुसथी कछवाहा हुवा[10] ।
८ कासिव[2] ।	३३ बुधसेन ।
९ सूरज ।	३४ चंद्रसेन चाटसू वसाई[11] ।
१० रुघसू रुघवंसी कहीजै[3]	३५ श्रीवछ ।
११ रघोस ।	३६ सूर ।
१२ धरमोस ।	३७ वीरचरित ।
१३ त्रसिघ ।	३८ अजैवंध ।
१४ राजा हरिचद ।	३९ उग्रसेन ।
१५ रोहितास ।	४० सूरसेन ।
१६ राजा सिवराज।	४१ हरनाम ।
१७ सतोष ।	४२ हरजस ।
१८ राजा रवदंत ।	४३ द्रढहास ।
१९ राजा कलमष ।	४४ प्रसेनजित ।
२० धुधमार, चकवै[4] ।	४५ सुसिध ।
२१ राजा सगर ।	४६ अमरतेज ।
२२ असमज ।	४७ दीरघबाहु ।
२३ भागीरथ ।	४८ विवसांन[12]।
२४ कउकुस्त[5] ।	४९ विवसत[13]।
२५ दिलीप, दिल्ली वसाई[6]	५० रोरक[14] ।
२६ मिवधान[7] ।	५१ रजमाई ।
२७ केवाध ।	५२ जसमाई ।

1 कमल । 2 काश्यप । 3 रघुसे रघुवंशी कहे जाते हैं । 4 धधुमार चक्रवर्ती राजा । 5 काकुत्स्थ । 6 दिलीपने दिल्ली बसाई । 7 शिवधन । 8 अजने अयोध्या बसाई । 9 अजयपाल चक्रवर्ती राजा । 10 कुशसे कछवाहा हुए । 11 चन्द्रसेनने चाटसू बसाई । 12 विवस्वान । 13 विवस्वत । 14 रुरुक ।

५३ गौतम ।
५४ नळराजा, नळवर वसायो[1] ।
५५ ढोलो नळरो[2] ।
५६ लछमण ।
५७ वजरदीप[3] ।
५८ मांगळ, मांगळोर वसायो[4] ।
५९ सुमित्र ।
६० सुधिब्रह्मा ।
६१ राजा कहनी ।
६२ देवांनी ।
६३ राजा उसै ।
६४ सोढ ।
६५ दुलराज ।
६६ काकिल ।
६७ राजा हणुं, आंबेर[5] ।
६८ जोजड़ ।
६९ राजा पुंजन ।

कछवाहारी विगत—

१४ राजा हरचंद, राजा त्रसिंधरो[6] । हरचंदरै रांणी तारादे हुई, कंवर रोहितास हुवो, जिण रोहितासगढ़ करायो[7] ।

३१ श्री रांमचंद्रजी, राजा दसरथजीरै[8] । रांमचंद्रजीरै लव नै कुस हुआ[9] । तिण लव लाहोर वसायो[10] । कुसरा कछवाहा हुआ[11] ।

५५ राजा ढोलो नळ राजारो, जिण गढ ग्वाळेर वसायो[12] । ग्वाळेर ऊपर गोलीराव तळाव करायो । जिण ढोलारै वैर १ मारवणी हुई, वंभ राजारी बेटी हुई[13] । १ पंवार भोजारी बेटी हुई [14] ।

५९ राजा सुमित्र मागळरो, जिण ग्वाळेर राज कियो । ग्वाळेर गढ करायो । गोलीराव तळाव गढ़ ऊपर करायो[15]

६४ राजा सोढ उसै राजारो । नळवर छोड़ ढूंढाड़ माहै आय वसियो[16] ।

---

1 नल राजाने नलवर बसाया । 2 ढोला नलका पुत्र । 3 वज्रदीप । 4 मांगलने मागलोद बसाया । 5 राजा हणु आमेर आ गया । 6 राजा त्रिसिंघका पुत्र । 7 जिसने रोहिताश्वगढ बनवाया । 8 राजा दशरथके पुत्र । 9 रामचन्द्रजीके पुत्र लव और कुश हुए । 10 उस लवने लाहोर बसाया । 11 कुशके वंशज कछवाहा कहलाये । 12 राजा ढोला नल राजाका पुत्र जिसने ग्वालियर बसाया । (ग्वालियर ढोलाके पहले बसा हुआ था) 13 उस ढोलाकी एक पत्नी वंभ राजाकी (?) पुत्री मारवणी थी । 14 एक दूसरी पत्नी पवार राजा भोजकी पुत्री (मालवणी) थी । 15 गोलीराव नामका तालाव गढ पर करवाया । (पीढी सं० ५५ में ढोलाके द्वारा गोलीराव तालाव बनवानेके उल्लेखसे यह विरुद्ध है) । 16 नलवर छोड कर ढूंढाड़में आकर बस गया ।

६६ राजा काकिल । काकिलरै बेटा ४—

१ हणूत, आंबेर आयो ।

१ अलधरो, तिणरा मेड़-कछवाहा कहीजै[1] ।

१ रालणरा रालणोत कहीजै[2] ।

१ देलण, तिणरा लाहरका कहीजै[3] ।

७० राजा मलैसी, जिण मलैसीरै रांणी मेलणदे खीचण, अनळ खीचीरी बेटी[4] । जिण पीहरसूं खांथडिया-प्रोहित गुर आंणिया[5] । पैहली गांगावत था सो दूर किया[6] । मलैसीरै बेटा ४ हुवा—

१ बीजळदे, आंबेर पाटवी[7] ।

१ बालोजी, जिण खेत्रपाळ जीलो । सात तवा वेधिया[8] ।

१ जैतल, जिण आपरा मांसरी बोटी काट तिणसू आपरै साहिब ऊपर बैठी ग्रीधण उड़ाई[9] ।

१ भीवड़ नै लाखणसी बेऊं[10] पुजनरा, त्यांरा परधांनका-कछवाहा कहीजै[11] ।

७२ राजादे बीजळदेरो तिणरा बेटा ।

१ राजा कल्यांणदे आंबेर ठाकुर ।

१ भोजराज नै दलो, त्यांरा लवांणका-कछवाहा कहीजै[12] ।

१ रांमेस्वर, तिणरा रांणावत-कछवाहा कहीजै[13] ।

१ सीहो, तिणरा सीहांणी कहीजै[14] ।

---

1 अलधराके वंशज मेड-कछवाहा कहे जाते है । 2 रालणके वंशज रालणोत कहे जाते है । 3 देलणके वंशज लाहरका कहे जाते है । 3 राजा मलैसीके मेलणदे खीचण रानी जो अनल खीचीकी बेटी । 5 जो अपने पीहरसे खाथडिया-पुरोहित गुरुओंको साथ ले आई । 6 इसके पहले गागावल गुर थे जिनको दूर कर दिया । 7 बीजलदे आमेरका पाटवी राजकुमार । 8 बालोजी जिसने क्षेत्रपालको जीता और लोहेके सात तवोंको एक तीरसे वेध दिया था । 9 जैतल जिसने अपने घायल स्वामीके ऊपर बैठी हुई गिद्धनीको उडानेके लिये अपने मासके टुकडे डाले और उनको वहासे उडाया । 10 दोनो । 11 जिनके वंशज प्रधानका-कछवाहे कहे जाते हैं । 12 जिनके वंशज लवाणका-कछवाहे कहे जाते हैं । 13 जिसके वंशज राणावत-कछवाहे कहे जाते है । 14 जिनके वंशज सीहाणी कहे जाते हैं ।

७३ कल्यांणदे राजादेरो, तिणरा बेटा—

१ राजा कुंतल आंबेर धणी ।

१ रावत अखैराज, *तिणरा धीरावत-कछवाहा कहीजै*[1] ।

१ रावळ जसराजरा हीज पोतरा कहीजै ।

७४ राजा कुंतलरा बेटा—

१ हमीर, जिणरा हमीर-पोता कहीजै[2] ।

१ भड़सी, *तिणरा भाखरोत-कीतावत*[3] ।

१ आलणसी, तिणरा जोगी-कछवाहा कहीजै[4] ।

७५ राजा जुणसीरा बेटा—

१ राजा उदैकरण, आंबेर ठाकुर ।

१ कूंभो, तिणरा कूंभांणी ।

७६ राजा उदैकरणरा बेटा—

१ राजा नरसिंघ, आंबेर टीको ।

१ वालो, तिणरा सेखावत

१ वरसिंघ, तिणरा नरूका ।

१ सिवब्रह्म, तिणरा नीदड़का कछवाहा[5] ।

७८ राजा *वणवीर* नरसिंघरो,[6] *तिको आंबेर टीको । तिणरा राजा*-वत नै वणवीर-पोता कहीजै ।

कछवाहारी वंसावळीरी विगत—

श्री रामचंद्रजीरै कुस हुवो, तिण कुससूं कछवाहा कहाणा[7] । राजा सोढल नळवर छोड़ ढूंढाड़ आयो, तिणसूं वंसावळी[8] ।

१ राजा सोढल ।

२ दूलहराव सोढलरो ।

---

1 जिसके वंशज धीरावत-कछवाहे कहे जाते हैं। 2 जिसके वंशज हमीर पोता कहलाते हैं। 3 जिसके वंशज भाखरोत कीतावत। 4 जिसके वंशज जोगी-कछवाहा कहलाते हैं। 5 जिसके वंशज नीदड़का-कछवाहा। 6 राजा वणवीर नरसिंहका बेटा। 7 उस कुसके कछवाहा कहे गये। 8 उससे वंशावली लिखी जा रही है।

३ राजा काकिल आंबेर वसायो ।

४ राजा हणू आंबेर हुवो ।

५ जांनडदे हणूरो ।

६ राजा पुंजन चो० प्रथीराजरै सामंत[1] ।

७ राजा मलैसी पुजनरो । आंबेर टीको हुवो[2] । बेटा ३२ मलैसीरै हुवा छै । पुंजनरा भीवड लाखण हुवा, त्यांरा[3] कछवाहा परधांनका कहीजै ।

८ बीजळदे मलैसीरो ।

९ राजादे बीजळदेरो ।

१० राजा कीलणदे राजादेरो । आंबेर टीको हुवो ।

१० हेक[4] भोजराज राजादेरो । तिणरा[5] लवांणा-रा-गढ-रा-कछवाहा कहीजै ।

१० हेक सोमेस्वर, तिणरा रांणावत कहीजै ।

११ राजा कुतल कीलणदेरो । आंबेर ठाकुर हुवो ।

११ हेक रावत अखैराज, तिणरा धीरावत-कछवाहा कहीजै ।

११ हेक जरसी रावळ, तिणरा जसरा-पोता कहीजै ।

१२ राजा जुणसी कुतलरो । आंबेर ठाकुर हुवो ।

१२ हेक हमीरदे, तिणरा हमीर-पोता-कछवाहा ।

१२ हेक भडसी, तिणरा भाखरोत नै कीतावत ।

१२ हेक आलणसी, तिणरा जोगी-कछवाहा कहीजै ।

१३ राजा उदैकरण जुणसीरो । आंबेर टीकायत ।

१३ हेक कुभो, तिणरा कुभांणी ।

१३ हेक वालो, तिणरा सेखावत ।

१३ हेक वरसिंघ, तिणरा नरूका ।

१३ हेक सिवब्रह्मा, तिणरा नीदडका-कछवाहा कहीजै ।

---

1 राजा पुजन चौहान पृथ्वीराजका सामत । 2 आमेरमे तिलक हुआ । 3 जिनके । 4 एक । 5 जिनके ।

१४ राजा उदैकरणरो नरसिंघ आंबेर टीको। तिणरा राजावत कछवाहा।

१५ राजा वणवीर नरसिंघरो। वांसला[1] वणवीर-पोता कहीजै।

१६ राजा उद्धरण।

१७ राजा चंद्रसेण उद्धरणरो। आंबेर टीकाइत।

१८ राजा प्रथीराज चंद्रसेणरो।

१९ राजा भारमल, प्रथीराजरो। आंबेर वडो रजपूत हुवो।

२० राजा भगवांनदास भारमलरो। आंबेर टीकाई[2]। वडो ठाकुर हुवो। अकबर पातसाह घणी मया[3] करी। राव मालदेजी बेटी दुरगावती बाई परणाई थी।

२१ राजा मांनसिंघ महाराजा हुवो। पूरबरो सूबो अकबर पातसाह दियो थो। राव चंद्रसेणरी बेटी आसकंवर बाई परणाई थी। संमत १६०७ पोह वद १३रो जनम। संमत १६७१ दखणमे काळ प्राप्त हुवो।

२२ कंवर जगतसिंघ मांनसिंघरो। अकबर पातसाह नागोर दियो थो। रांणी कनकावती बाई राव रतनसी कनकावतीरो बेटीरो बेटो, कवर थको हीज मुवो[4]।

२३ राजा महासिंघ जगतसिंघरो। घोसा पटै हुतो[5]। मोटा राजाजीरी बेटी रुखमावती बाई परणाई हुती,[6] सु साथै बळी[7]। समन १६७३ दिखण बालापुर थांणै[8]।

२४ राजा जैसिंघजी, भावसिंघ पछै आंबेर पायो। संमत १६७८, सीसोदिया महाराणा उदैसिंघरो दोहितो। संमत १६६९रा असाढ वद १रो जनम। संमत १६७९ राजा श्री सूरसिंघजीरी बेटी म्रघावती बाई परणाई हुती[9]।

---

1 पीछे वाले वशज। 2 टीकायत, गद्दीका अधिकारी। 3 कृपा। 4 कुमारावस्थामे ही मर गया। 5 था। 6 थी। 7 महासिंहके मरने पर साथमे जल कर सती हुई। 8 सम्वत् १६७३में दक्षिणमे बालापुरके थानेमे। 9 सम्वत् १६७९मे राजा सूरसिंहकी बेटी मृगावती बाई ब्याही थी।

२५ कंवर रामसिंघ ।

२५ कीरतसिंघ ।

२३ जूंझारसिंघ जगतसिंघोत[1] ।

२४ सगरांमसिंघ ।

२४ अनूपसिंघ जूझारसिंघरो । बुलाकी साहजादो गैबी ऊठियो थो पूरबमे, उण कनै थो[2] । हमै राजा जैसिंघरै छै[3] ।

२४ प्रथीराज जूझारसिंघरो ।

२४ किसनसिंघ जूझारसिंघरो ।

२२ सकतसिंघ राजा मांनसिंघरो ।

२२ सबळसिंघ राजा मांनसिंघरो । पूरब मांहै भठीरी वेढ कांम आयो[4] । राव चंद्रसेणजीरी बेटी रायकंवर वाई परणाई थी सु साथै बळी[5] ।

२२ दुरजनसिंघ राजा मांनसिंघरो। पूरबमे भठीरी वेढ़ कांम आयो।

२३ परसोतमसिंघ, राजा भावसिंघ भेळो रहतो सु रांम कह्यो[6] ।

२६ जैकिसनसिंघ ।

२४ रामचदर, राजा बाहदर साथै कांम आयो ।

२४ भारथसिंघ ।

२४ सिवसिंघ ।

२२ राजा भावसिंघ राजा मांनसिंघरो । आंबेर टीको । राजा मानसिंघ पछै भावसिंघ टीको पायो[7] । वडो महाराजा हुवो । राणी गोडरो बेटो । जहांगीर पातसाहरी वार मांहै वडो मयावत चाकर हुवो[8] । संमत १६३३रा आसोज वदी ३रो जनम । समत १६७८रा पोह वद ९ ब्रहांनपुर काळ प्राप्त

---

1 जूभारसिंह जगतसिंहका बेटा । 2 पूर्वकी ओर बुलाकी शाहजादा अचानक उठ खड़ा हुआ था अनूपसिंह उसके पास था । 3 अब राजा जैसिंहके पास रहता है । 4 पूर्वमें भट्टीकी लड़ाईमें काम आया । 5 जो साथमें जल कर सती हुई । 6 पुरुषोत्तमसिंह राजा भावसिंहके साथ रहता था, सो वहीं मर गया । 7 राजा मानसिंहके बाद भावसिंहको राज्य मिला । 8 भावसिंह जहांगीर बादशाहके समय बड़ा कृपा-पात्र सेवक हुआ ।

हुवो[1]। राजा सूरजसिंघरी बेटी आसकंवर बाई परणाई सु सार्थ वळी। बेटो नहीं। बेटी १ सूरजदे हुई सु राजा जैसिंघजी संमत १६७६ राजा गजसिंघजीनूं[2] परणाई। पछै संमत १६९४रा जैठमें राजा गजसिंघजी काळ कियो तद साथै वळी[3]।

२२ हिमतसिंघ राजा मांनसिंघरो।

२२ स्यांमसिंघ राजा मांनसिंघरो।

२२ कल्यांणसिंघ राजा मांनसिंघरो।

२३ उग्रसिंघ।

२१ कांन्ह राजा भगवंतदासरो।

२१ माधोसिंह राजा भगवंतदासरो। अकबर पातसाहरो अजमेर मालपुरो पटै थो। आंबेररी मोहलांरी प्रोळ ऊपरला झरोखाथी पड़ियो तरै मुवो[4]।

२२ सुजांणसिंघ।

२३ हिंदुसिंघ।

२२ छत्रसिंघ माधोसिंघरो भांणगढ़ पटै थो। संमत १६८६रै आसाढ मांहै खांनजिहां पठांणरी वेढ़ लोहै पड़ियो,[5] पछै वळै किणही उपाडियो[6]। पछै वळै पातसाहरै चाकर थो। पछै रांम कह्यो[7]।

२३ पेमसिंघ छत्रसिंघरो। खांनजिहांरी वेढ़ कांम आयो।

२४ सूरतसिंघ।

२४ मोहकमसिंघ।

२३ आंणदसिंघ छत्रसिंघ साथै कांम आयो।

२३ उग्रसेन छत्रसिंघरो।

२३ अजबसिंघ छत्रसिंघरो।

२३ तेजसिंघ माधोसिंघरो।

---

1 मर गया। 2 को। 3 राजा गजसिंहजी मरे तब साथमें जल कर सती हुई। 4 आमेरकी महलोंकी पोलके ऊपरके झरोखेसे गिर कर मरा। 5 पठान खानजहांकी लड़ाईमें घायल हुआ। 6 तब किसीने वहांसे उसको उठा लिया। 7 फिर मर गया।

२१ सूरसिंघ राजा भगवंतदासरो। वडो रजपूत हुवो। सीकरीरो कोट अकबर पातसाह करायो तद[1] सूरसिंघरो डेरो कोटरी नींव आई तठै हुतो,[2] सु डेरो सूरसिंघ न उठावै तरै[3] पातसाह कोट वांको कियो, पिण सूरसिंघनू क्यूही न कह्यो[4]। वडो आखाड़सिध[5] रजपूत हुवो। पातसाह अकबररै वडो चाकर हुवो। मोटै राजारी बेटी जसोदाबाई परणाई थी, जैतसिंघरी वैहन[6] सु साथै वळी।

कंवर सूरसिंघ भगवांनदासोत सादमै सुलतांन वेढ स्याळकोट हुई,[7] जका[8] स्याळकोट, नगरकोट नै अटक बीच छै। उण ठोड़सू गुजरात[9] पण नैडी[10] छै। सादमो-सुलतांन पातसाह हमाऊरो पोतो छै[11]; हंदायलरो भतीज छै[12]। लसकरी कै कमरारो बेटो छै,[13] तिणसू वेढ़ हुई[14]। सूरसिंघ सादमतनू मारियो; नै सूरसिंघ कुसळै गयो[15]।

२२ चांदसिंघ सूरसिघरो।

२३ अगरसिंघ।

२३ अचळसिंघ।

२४ मनरूपसिंघ।

२४ गजसिंघ।

२३ ग्यांनसिंघ।

२१ प्रतापसिंघ राजा भगवांनदासरो।

२१ बलिरांम राजा भगवंतदासरो।

२० राजा जगननाथ भारमलरो। वडो महाराजा हुवो। गढ रिणथभोर, तोडो और ही घणा परगना जागीरमे था। तोडै

---

1 उस समय। 2 वहा था। 3 तब। 4 परतु सूरसिहको कुछ भी नही कहा। 5 युद्ध-विशारद। 6 बहिन। 7 शादमा-सुलतानसे स्यालकोटमे लडाई हुई। 8 वह। 9 गुजरात, पजाबका एक प्रान्त। 10 निकट। 11 शादमा-सुलतान बादशाह हुमायूंका पोता है। 12 हिंदालका भतीजा है। 13 लसकरी (अमकरी) कामराका वेटा है। 14 जिससे लडाई हुई। 15 सूरसिंहने शादमाको मार दिया और कुशलपूर्वक निकल गया।

राजथांन[1] । संमत १६०९रा पोस वदी ९रो जनम । संमत १६६५ मांडळ थांणो थो तठै रांम कह्यो[2] । मांडळरा तळाव ऊपर छत्री छै ।

२१ जगरूप कंवर जगनाथरो । कवर थको हीज दिखणमे अकबर पातसाहरै संमत १६५६ कांम आयो[3] । बेटो कोई नहीं । वेटी १ थी सु राजा गजसिघजीनूं संमत १६६२ तोडै परणाई कल्यांणदेजी ।

२१ करमचंद राजा जगननाथरो । टीको हुवो । वडो दातार हुवो । सु राजा जगननाथ पछै वरसां ४ सोह जागीर रही[4] । पछै मिलकापुर थांणै रांम कह्यो[5] ।

२२ अभैकरन ।

२१ जसो राजा जगनाथरो ।

२१ वीजळ राजा जगनाथरो, पातसाही चाकर । वांकी वेग मोहबतखारो रिणथंभोररा सूबा ऊपर थो । पाछो साहिजादो खुरम फिरियो,[6] तरै साहिजादारै हुकमसू गोपाळदास आइ[7] रिणथंभोररी तळैटी तलक[8] दखल कियो । वांकी वेग गढ़ चढ गयो । पाछो साहिजादो नीसरियो[9] नै गोपाळदास गोड़ ही जाण लागो । पाछो वांकी वेग उतरियो,[10] पाछो कियो । पछै रातै गोपाळदास रातीवाहो दियो,[11] तठै वांकी वेग नै वीजळजी कांम आया ।

२१ मनरूप राज जगनाथरो, भीवरो तोडो पटै थो ।

२१ गोपाळसिंघ पातसाही चाकर, तोडो पटै ।

२२ सुजाणसिंघ ।

२३ केसरीसिंघ ।

---

1 राजधानी । 2 वहा मरा । 3 कुंवरपदे ही स० १६५६मे दक्षिणमे अकबर बादशाहके काम आ गया । 4 राजा जगन्नाथके मरनेके बाद चार वर्ष तक सब जागीर उसके पास रही । 5 फिर मलिकापुर थानेमे मर गया । 6 पाछो फिरियो = बागी हुआ । 7 आकर । 8 तक । 9 लौट कर चला गया । 10 फिर बाकी बेग गढसे उतरा । 11 फिर गोपालदासने रात्रि-आक्रमण किया ।

२३ हरिसिंघ ।

२१ वालोजी राजा जगनाथरो ।

२१ बलकरण राजा जगनाथरो । रावळै रह्यो थो । मेड़तारी रेयां पटै ।

२० भोपत राजा भारमलरो । अकबर पातसाह गुजरात गयो नै मुदफर पातसाह वेढ की तठै मुंदड़ा आगै कांम आयो[1] ।

२० सलेहजी राजा भारमलरो । वडो रजपूत हुवो । पैहली रांमदास ऊदावतरै सलेहदीजीरै बालार थो,[2] पाछो पातसाही चाकर हुवो ।

२० सादूळ राजा भारमलरो ।

२० सुदरदास राजा भारमलरो ।

२० भगवांनदास राजा भारमलरो।

२१ मोहणदास भगवांनदासरो ।

२१ अखैराज भगवांनदासरो ।

२२ अभैरांम जागीरी ऊपर मुगल १ मारियो, तिण ऊपर जहांगीर पातसाह अंवखास[3] मांहै रोकियो । कह्यो–"वेडी पहर" तरै लोह कर मुवो[4] ।

२२ स्यांमरांम अखैराजरो । अभैरांम साथै कांम आयो ।

२२ हिरदैरांम अखैराजरो ।

२३ जगरांम, पातसाही चाकर। लवांइण पटै । पैसोररै थांणे[5] ।

२३ रांमसिंघ, उदैहीरै गांव वाघोर रेहतो[6] ।

२२ विजैरांम अखैराजरो ।

१६ भींवराज प्रथीराजरो । रावजी वीकानेरिया लूणकरणजीरो दोहितो[7] ।

---

1 बादशाह अकबर गुजरात गया और मुदफ्फर बादशाहने लड़ाई की उसमें अकबरके सम्मुख काम आ गया। 2 पहले रामदास ऊदावत और सलेहदीके परस्पर संबंध था। 3 दरबार-इ-आमखास। 4 तब तलवार चला कर मर गया। 5 जगराम बादशाही चाकर, लवाणा जागीरमें और पेशावरके थाने पर रहता था। 6 उदैही परगनेके वाघोर गांवमें रहता था। 7 बीकानेरके राव लूणकरणजीका दोहिता।

२० रतनसी भींवराजरो । रतनसीनूं राजा आसकरण मारियो ।

२१ विक्रमादीत

२१ करण ।

२० राजा आसकरण भींवराजरो । ग्वाळेर राजधांनी । नळवर पटै । श्री ठाकुरांरा महाभगत वैष्णव[1] । राव मालदेवजीरी बेटी इंद्रावती बाई परणाई थी । पछै आसकरणजीरी बेटी मोटा राजाजी परणिया, तिणरै पेटरो राजा सूरसिंघजी[2] ।

२१ राजा राजसिंघ आसकरणरो नळवर राजा हुवो । मोटा राजाजीरी बेटी राईकंवरबाई परणाई थी; संमत १६७१ दिखणमें रांम कह्यो[3] ।

२२ राजा रांमदास राजसिंघरो नळवर पटै । राजा श्री सूरसिंघजी अजमेरमें पातसाह जहांगीरनूं हाथी पेश करनै नळवरनै राजाईरो टीको देरायो[4] । संमत १६६१ रांम कह्यो ।

२३ अमरसिंघ रांमदासरो । नळवर राज टीकै बैठो थो । सकतसिंघ मोटा राजाजीरो दोहितरो वाळक थकां मुंवो तरै नळवर उतरियो[5] ।

२४ जगतसिंघ अमरसिंघोत ।

२२ कल्यांणदास राजसिंघरो । दिखण जायनै तुरक हुवो[6] ।

२२ किमनसिंघ राजसिंघरो । राईकवर बाईरा पेटरो[7] ।

२१ जैतसिंघ राजा आसकरणरो ।

२२ मुकददास जैतसिंघरो । रावळै कुड़कीरो पटो[8] ।

२१ गोरधन राजा आसकरणरो । राव चंद्रसेणरी बेटी कंवळावती बाई परणाई थी ।

---

1 श्री ठाकुरजीका (श्रीकृष्णका) परम वैष्णव भक्त । 2 फिर आसकरणकी बेटीको मोटा राजा उदयसिंहजी ब्याहे जिसके उदरसे सूरसिंहजी उत्पन्न हुए । 3 सम्वत् १६७१मे मृत्यु हो गई । 4 राजा सूरसिंहजीने बादशाह जहांगीरको अजमेरमें हाथी नजर करके नरवरके स्वामियोंको राजाकी उपाधि दिलाई । 5 मोटा राजाजीका दोहिता शक्तसिंह बचपनमे ही मर गया तब नरवरका राज उतर गया । 6 दक्षिणमे जाकर मुसलमान हो गया । 7 रायकुंवरीबाईके उदरसे उत्पन्न । 8 मारवाड राज्यका कुड़की गाव पट्टेमे था ।

२२ हिरदैनारायण । रावळा गांव ४, मेड़तारो गांव गांगरड़ो दियो थो[1] ।

२१ सकतसिंघ राजा आसकरणरो ।

२२ गोविंददास ।

२३ भावसिंग ।

१६ सुरतांण राजा प्रथीराजरो ।

२० तिलोकदास । दसमतखांनसूं विढ मुंवो[2] ।

२१ केसोदास मीच मुवो ।

२२ सिंघ ।

२० सुंदरदास सुरतांणरो ।

२१ नरसिंघदास ।

२० बाघ सुरतांणोत ।

२१ उग्रसेण ।

२० मोहणदास सुरतांणोत ।

२० सकतसिंघ सुरतांणोत ।

२१ सहदेव सकतावत ।

२१ देवसिंघ, वीठळदास गोडरै कांम आयो, रजा बाहदर साथै[3] ।

२२ सुजांणसिंघ, राजा वीठळदासरै चाकर ।

१६ जगमाल राजा प्रथीराजरो ।

२० खंगार जगमालोत । जिण खंगाररा खंगारोत-कछवाहा नराइणारा धणी छै[4] ।

२१ नराइणदास खंगारोतनूं अकबर पातसाह नराइणो पटै उतन कर दियो[5]।

२२ दुरजणसाल नराइणदासरो ।

---

1 मारवाड राज्यकी ओरसे मेडताका गागरडा गांव और चार गांव और दिये गये थे। 2 दसमतखांसे लड कर मरा। 3 देवीसिंह रजा बहादुरके साथ विट्ठलदास गौडके काम आया। 4 जगमालका बेटा खगार, जिसके वंशज खगारोत कछवाहे नराणाके स्वामी हैं। 5 खगारके बेटे नारायणदासको बादशाह अकबरने नराणा पट्टे और वतन कर दिया।

२३ चंद्रभांण दुरजणसालरो। कांम आयो[1]।
२४ प्रतापसिंघ ।
२१ सत्रसाळ नराइणदासोत ।
२३ कुसळसिंघ ।
२२ गिरधरदास नराणदासोत ।
२३ करण ।
२३ रतन ।
२३ बिहारीदास ।
२१ मनोहरदास खंगारोत ।
२२ जैतसिंघ ।
२३ कल्यांणसिंघ ।
२२ भोजराज । नराइणरो पटै । वाघ काम आयां पछै वडो समभवार सिरदार हुवो[2] ।
२३ गोपीनाथ ।
२३ सूरसिंघ ।
२३ हरिसिंघ ।
२२ प्रतापसिंघ मनोहरदासोत ।
२३ बिहारीदास ।
२३ सबळसिंघ ।
२३ अजबसिंघ ।
२२ रतन ।
२१ हमीर खंगारोत ।
२२ सूरसिंघ किसनसिंघ साथै कांम आयो ।
२३ तेजसिंघ ।
२२ रतन हमीरोत ।
२३ केसरीसिंघ ।
२२ राजसिंघ हमीरोत ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२२ सकतसिंघ हमीरोत ।
२३ आसकरण ।
२२ किसनसिंघ हमीरोत ।
२१ राघोदास खंगारोत ।
२२ नरसिंघदास ।
२१ वाघ खंगारोत पातसाही चाकर । बेटो नहीं सु भोजराज गोद थो । संमत १६८६ दक्षिण खांनजहांरी वेढ काम आयो । कछवाहा छत्रसिंघ साथै[3] ।
२१ वैरसल खगाररो । महमदमुराद नराइणा ऊपर आयो तरै कांम आयो[4] ।

---

1 युद्धमें काम आया । 2 वाघके मारे जानेके बाद भोजराज बडा समझदार सरदार हुआ । 3 खंगारका बेटा वाघ बादशाही चाकर। इसके कोई बेटा नहीं, इसलिये भोजराजको गोद लिया था । सं० १६८६में दक्षिणमें खानजहांकी लडाईमें कछवाहा छत्रसिंहके साथ काम आया । 4 मुहम्मद मुराद नराणे पर चढ़ कर आया तब काम आया ।

२२ केसरीसिंघ वैरसलोत, नाथावतांरी वेढ कांम आयो[1]।

२१ सुजांणसिंघ।

२२ दलपत।

२२ बिजैरांम, कांम आयो सांभररा किरोड़ीसूं वेढ हुई तठै[2]।

२३ हररांम कांम आयो केसरीसिंघ भेळो[3]।

२१ उदैसिंघ खंगारोतरै छोरू नहीं[4]।

२१ अमरो खंगारोत।

२२ उग्रसेन।

२२ जगनाथ, स्यांमसिंघ करमसेणोतरै कांम आयो[5]।

२१ किसनसिंघ खंगारोत।

२२ सबळसिंघ, राजा रायसिंघजीरै कांम आयो[6]।

२३ स्यांमसिंघ।

२२ हररांम।

२१ राजसिंघ खंगारोत।

२२ बळराम मालपुरै कांम आयो।

२१ भाखरसी खंगारोत, भलो डील हुवो। रावळै मेड़तारी भोवाळ पटै[7]।

२१ जसकरण।

२२ सादूळ।

२३ रुघनाथसिंघ।

२२ बद्रीदास राजा जैसिंघरो चाकर।

२३ माधोसिंघ रावळै रह्यो थो।

२२ द्वारकादास।

२३ अजबसिंघ, रावळै थो[8]।

२३ सूरसिंघ रावळै थो[9]। राव हरिसिंघ साथै कांम आयो।

२१ केसोदास खंगारोत।

२२ कल्यांणसिंघ राजा वीठळदासरै रह्यो थो[10]।

२१ सांवळदास खंगारोत। बेटो नहीं।

२० जैसो जगमालोत।

२१ केसोदास।

२२ मनरूप।

---

1 नाथावतोंकी लडाईमें मारा गया। 4 सांभरके किरोडीसे लड़ाई हुई उसमें मारा गया। 3 केसरीसिंहके साथ हरराम भी काम आया। 4 उदयसिंह खंगारोतके कोई पुत्र नहीं। 5 जगन्नाथ करमसेनके बेटे स्यामसिंहके लिये काम आया। 6 सबलसिंह राजा रायसिंहजीके लिये काम आया। 7 भाखरसी खंगारोत बड़ा जबरदस्त हुआ। जोधपुर महाराजाकी ओरसे मेड़तेका भोवाल गांव पट्टेमें था। 8 अजबसिंह जोधपुर महाराजाके यहां नौकर था। 9 सूरसिंह जोधपुरके महाराजाके यहां नौकर था। 10 कल्याणसिंह राजा विट्ठलदासके यहां रहा था।

२१ वलू ।
१९ वलिभद्र बांकड़ो; राजा प्रथीराजरो[1] ।
२० अचळदास वळभद्रोत ।
२१ मोहणदास ।
२१ गिरधर अचळदासरो ।
२० दुरजणसाळ वळभद्रोत ।
२१ केसरीसिंघ ।
२१ स्यांमदास ।
२० गोयंददास वळभद्रोत ।
२० दयाळदास वळभद्रोत ।
२० स्यांमदास ।
२० वेणीदास ।
१९ सांगो राजा प्रथीराजरो । नदावण माहै चारण कांनै मारियो । अऊत हुवो[2] ।
१९ पंचाइण राजा प्रथीराजरो । थांन हवीबसू थोह लड़ाई हुई तठै कांम आयो[3] ।
२० किसनदास भाखर कांम आयो[4] ।
२१ कल्याणदास ।
२२ कान्ह ।
२२ जैराम ।
२१ भारथी ।
२२ गिरधर ।
२२ रांमसिंघ । रांमसिंघरै छोरू नहीं[5] ३ ।
२० नरहरदास पंचाइणरो ।
२१ छीतरदास ।
२२ ब्रिदावनदास ।
२३ किसोरदास ।
२४ फतैसिंघ ।
२४ आणंदसिंघ ।
२३ फरसरांम ब्रिदावनरो ।
२४ अजबसिंघ ।
२४ अभैरांम ।
२४ जूंझारसिंघ ।
२४ सिवरांम ।
२४ किसनसिंघ ।
२४ सुरतसिंघ, ६ फरसरांम ।
२३ सबळसिंघ ब्रिदावनदासरो ।
२४ मोहकमसिंघ ।
२३ सुदरदास ब्रिदावनदासरो ।
२४ किसनसिंघ ।
२४ रांमचंद ३ ।
२३ मकनसिंघ ब्रिदावनरो ।
२४ अजबसिंघ ५ ब्रिदावनरो ।

---

1 बलभद्र बांकड़ा राजा पृथ्वीराजका बेटा । 2 नदावणमें चारण बालाने इसे मार दिया, अपुत्र रहा । 3 थान हवीबस नाहरमें लड़ाई हुई वहां काम आया । 4 किसनदास नरहरकी लड़ाईमें मारा गया । 5 रामसिंहके कोई पुत्र नहीं ।

२२ नरसिंघदास छीतरदासरो अऊत[1] ।
२२ माधोदास छीतरदासरो ।
२२ हरनाथ ।
२२ गिरधर ।
२१ वळकरण नरहरदास-जीरो ।
२२ मुकंददास ।
२३ चत्रभुज ।
२३ वेणीदास ।
२२ वंसीदास ।
२३ रामसाह ।
२३ रांमचंद ।
२३ अनूपरांम ।
२२ गोविंददास ।
२३ उदैरांम ३ ।
२१ मोहणदास नरहर-दासरो । काम आयो ।
२१ जसकरण नरहरदासरो काम आयो ४ ।
२० वीठळदास पचाइणोत ।
२१ वाघजी, राजा मानसिंघ कवर सबळसिंघनू पकडियो तठै काम आयो[2] ।
२२ हररांम ।
२२ बुधसिंघ काम आयो ।

२० रांमचंद ।
२१ राघोदास वीठळदासरो ।
२० हिरदैरांम ।
२३ स्यामसिंघ राजारो चाकर ।
२३ जैकिसन राजारो चाकर ।
२१ उदैसिंघ वीठळदासरो ।
२० सुजांणसिंघ ।
२३ वलू ।
२३ गजसिंघ ।
२३ सुरतसिंघ ।
२२ फरसरांम उदैसिंघोत रांम कह्यो[3]।
२३ बुधरांम ।
२३ पेमसिंघ ।
२३ अजवसिंघ ।
२० जगनाथ उदैसिंघोत । राजारै चाकर ।
२० सिवराम उदैसिंघोत ।
२० विजैरांम उदैसिंघोत । राजारै चाकर ५ ।
२१ हरिदास वीठळदासरो ।
२० गोयंददास ।
२३ मथुरादास । राजारै चाकर ।

---

1 छीतरदासका पुत्र नरसिंहदास अपुत्र रहा । 2 राजा मानसिंहने कुंवर सबलसिंहको पकडा वहां बाघजी मारा गया । 3 उदयसिंहका बेटा परसराम मर गया ।

२३ गोकळदास । राजारै चाकर ।
२३ कनकसिंघ ।
२२ भोजराज । उदैहीरी नांदोती वसतो[1] ।
२३ भारमल ।
२३ फतैसिंघ ।
२३ केसरीसिंघ ।
२३ देवीसिंघ ।
२३ सबळसिंघ ।
२३ सूरसिंघ ६ ।
२१ स्यांमदास बीठळदासोत । कटहड़ कांम आयो[2] ।
२२ लाडखांन स्यांमदासोत । वसी उदैही । रावळै चाकर[3] ।
२३ कुसळसिंघ ।
२४ हिमतसिंघ ।
२४ हिंदूसिंघ ।
२३ किसनसिंघ।
२३ अजबसिंघ ।
२३ अनोपसिंघ ४।
२१ माहूळ बीठळदासोत । वडो दातार हुवो ।
२२ सुंदरदास ।
२३ जैतसिंघ ।
२३ अनूपसिंघ
२२ दयाळदास ।
२३ जोधसिंघ ।
२३ फतैसिंघ ।
२२ कांनड़दास ।
२३ राजसिंघ।
२३ गुमांनसिंघ ३,६।
२० नाराइणदास पंचाइ-णोत ।
२१ सुंदरदास ।
२२ किसनसिंघ फतैसिंघरो चाकर।
२२ रांमचंद ।
२२ कुसळसिंघ ३ ।
२१ मुरारदास ।
२२ चतुरसिंघ । राजा जैसिंघरो चाकर २ ।
२२ सांवळदास पंचाइणोत ।
२० किसनदास पंचाइण भेळो कांम आयो सोहमे[4] ।
१६ गोपाळदास राजा प्रथीराजरो ।
२२ सुरजन वांकडो कहाणो ।
२१ जमूत, मुवो[5] ।
२२ देवीसिंघ ।

1 उदैही परगनेके नादोती गावमे रहता था। 2 कटहड़की लड़ाईमे मारा गया। 3 उदैहीकी जागीरी और जोधपुर महाराजाके यहा चाकर। 4 किसनदास पचाइणके साथ सोहमे मारा गया। 5 मर गया।

२१ रांमसाह, मोत मुवो[1] ।
२२ किसोरसिंघ ।
२० वैरसल गोपाळरो ।
२२ देवकरण गोपाळरो । दिवांण कहीजतो[2] ।
२१ सांवळदास देवकरणरो ।
२२ हिरदैनारायण ।
२२ केसरीसिंघ ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२१ सिंघ देवकरणरो ।
२० नाथो गोपाळदासरो, जिणरा[3] नाथावत कछवाहा कहीजे ।
२१ विहारीदास नाथावत । वडो डील[4] । राजा भावसिंघरैसू छाडनै मोहवतखानरै वसियो[5]। वडो दोलतवंद थो[6] । पाछो पातसाही चाकर हुवो ।
२२ गजसिंघ । गोडां मारियो[7] ।
२२ अजवसिंघ दिक्षणियां मारियो, मोहवतखान कनै जातानू[8] ।
२१ जसूत नाथावत राजा भावसिंघरै[9] । पछै राजा जैसिंघरो चाकर ।
२२ जुधसिंघ ।
२३ वळभद्र। रावळे चाकर थो[10] ।
२२ छाताळ ।
२३ जगभांण । कावल मुवो[11] ।
२१ रांमसाह नाथावत । राजा जैसिंघरो चाकर ।
२२ कुसळसिंघ ।
२३ दुरजणसिंघ ।
२२ सुजाणसिंघ ।
२१ मनोहरदास नाथावत ।
२२ अभैरांम ।
२३ अनूपसिंघ ।
२२ इंद्रजीत ।
२३ मोहनरांम ।
२२ अखैराज ।
२३ मधुसूदनदास ।
२२ मदनसिंघ राजारै चाकर।
२३ जगतसिंघ ।
२२ मुथरादास । राजरै चाकर, पछै पातसाहरै ।

---

1 रामशाह अपनी मौत मरा । 2 दीवान कहलाता था । 3 जिसके वंशज । 4 बडा जबरदस्त । 5 राजा भावसिंहको छोड़ कर मोहवतखांके यहां रहा । 6 बडा मालदार था । 7 गौड़ोंने मार दिया । 8 मोहवतखांके पास जाते हुएको । 9 नाथाका बेटा जसवंत राजा भावसिंहके यहा नौकर । 10 जोधपुर महाराजाके यहा नौकर था । 11 काबुलमे मरा ।

खंधार रांम कह्यो[1] ।
२३ पहलादसिंघ ६ ।
२१ केसोदास नाथावत ।
२२ सुंदरदास ।
२३ किसनसिंघ ।
२१ द्वारकादास नाथारो ।
२१ सांमदास नाथावत । पूरबमें काम आयो ७ ।
२६ चत्रभुज प्रथीराजोत ।
२० कीरतसिंघ पठांणां मारियो[2] ।
२१ केसोदास कीरतसिंघरो ।
२२ किसनसिंघ राजा जैसिंघरो चाकर । पठांण घोडांरी सोबत[3] ले सांगानेर उतरिया था[4] त्यारा[5] घोडा कीरतसिंघरा वैर माहै खोस लिया । पछै पठांण जाय पुकारिया । तरै पातसाहजीरा हुकमसू राजा जैसिंघजी चढ नै किसनसिंघनू मारियो समत १६७६ ।
२२ गजसिंघ केसोदासोत । संमत १६८६ रावळै वसियो थो[6] । पटो रुपिया १७०००)रो दियो थो । पाछो संमत १६६५ छाड राजारै गयो[7] ।
२२ प्रतापसिंघ राजारै चाकर ।
२३ सूरसिंघ ३ ।
२० जूझारसिंघ चत्रभुजोत ।
२१ हिमतसिंघ । इणनू[8] मोहबतखांन लदांणो दियो थो । पाछो रावळै[9] रह्यो तरै पटो रुपिया १५०००)रो दियो थो । पछै सदोरै थकै बाहिरमी रीतरै छोड़ायो[10] । पछै समत १७०० वळै उदैही राखियो थो[11] ।
२२ फतैसिंघ ।
२२ सकतसिंघ २ ।
१६ कल्यांणदास प्रथीराजरो ।
२० करमसी कल्याणदासरो ।

---

1 खधारमे मरा । 2 कीर्तिसिंहको पठानोने मार दिया । 3 झुड । 4 ठहरे थे । 5 उनके । 6 जोधपुर महाराजाके यहा नौकर रहा था । 7 फिर सम्वत् १६६५मे छोड कर राजाके (जयपुरके) यहा चला गया । 8 इसको । 9 जोधपुर महाराजाके । 10 पीछे जबरदस्ती छोडाया गया । 11 स० १७००मे पुन उदैहीमे रख दिया था ।

२१ खड़गसेन। राजा जैसिंघरो चाकर।

२१ सुंदरदासनू विहारियां मारियो[1]।

२० मोहणदास कल्यांणदासरो।

२० रायसिंघ कल्याणदासरो।

२१ जोध।

२१ जगनाथ।

२० कान्ह कल्यांणदासरो४।

१९ रूपसी वैरागी राजा प्रथीराजरो। अकवर पातसाहरो चाकर। परबतसर जागीरमे पायो थो।

२० जैमल रूपसियोत[2]। अकवर पातसाह फतैपुर दियो। संमत १६४० जैमल असमाधियो[3] थो तरै मुथराजी जाय रांम कह्यो[4]। वडो परम भगत थो। मोटा राजाजीरी वेटी दमेती वाई परणाई थी[5]।

२१ उदैसिंघ जैमलरो। सांखलांरो भांणेज।

२२ राघोदास उदैसिंघरो।

२२ कचरो उदैसिंघरो। राठोड़ बाघ प्रथीराजोत मारियो[6]।

२० रांमचंद रूपसीरो।

२१ हररांम मीच मुंवो[7]।

२१ गोकळदास।

२१ द्वारकादास।

२१ वलू। सेखावते मारियो[8] ४।

२० तिलोकसी रूपसीरो। मोटा राजाजी वेटी किसनावती बाई परणाई थी। तिलोकसी मुवो तरै साथै बळी[9]।

२० वैरसल रूपसीरो। वडगूजरांरो भाणेज[10]।

२० चतुरसिंघ रूपसीरो। मा मैंणी थी[11]।

२० भोजराज रूपसीरो। करमा खवासरो[12] ७।

---

1 सुंदरदासको विहारी पठानोंने मारा। 2 रूपसीका पुत्र। 3 मरणासन्न हुआ। 4 तब मथुराजीमे जाकर मरा। 5 मोटा राजाजीकी (उदयसिंहकी) वेटी दमयन्तीबाई व्याही थी। 6 पृथ्वीराजके वेटे राठौड़ बाघने मारा। 7 हरराम अपनी मौत मरा। 8 शेखावतोंने मार दिया। 9 तिलोकसी मरा तब साथमे जली। 10 बडगूजरो का भानजा। 11 रूपसीके वेटे चतुरसिंहकी मा मीणा जातिकी स्त्री थी। 12 करमा खवासके पेटका।

रूपसी वैरागीरा ।
१९ पूरणमल प्रथीराजरो ।
२० छीतर पूरणमलरो ।
२१ उदैसिंघ ।
२० सूजो पूरणमलरो ।
२१ किसनदास ।
२१ वेणीदास ।
२२ उदैकरण ।
२१ माधोदास २, ३ ।
१८ कूंभो राजा चंदरो । प्रथीराजरो भाई । बैसणो गाव मोहारि[1] ।
१९ उदैसिंघ कूंभारो ।
२० राजमल उदैसिंघरो ।
२१ वेणीदास रायमलरो ।
२१ जसवत ।
२१ डूगरसी ।
२२ गोपाळदास ३ ।
२० राम उदैसिंघरो ।
२१ लूणो रामरो ।
२२ सादूळ ।
१८ नरो राजा चदरो । प्रथीराजरो भाई ।
१९ छीतर नरारो ।
२० थानसिंघ ।

२१ खंगार । राजा चंद उधरणरो । उधरण वणवीररो ।
१७ कछवाहो वणवीर । जिण वणवीररा वणवीरोत-कछवाहा कहीजै[2]। इणांरो परवार घणो छै, पिण मांडियो न छै[3] । वणवीर उधरणरो ।
१८ भैरू । राजा मानसिंघरै हाथियारो फोजदार थो।
१९ केसवदास भैरवरो ।
२० केसरीसिंघ ।
२० जसवंत केसवदासरो ।
२० अचळदास केसवदासरो।
१४ वालो राजा उदैकरणरो, तिणरा[4] सेखावत ।
१४ वरसिंघ उदैकरणरो । जिणरा[5] नरूका-कछवाहा कहीजै ।
१५ मेहराज वरसिंघरो ।
१६ नरू मेहराजरो । जिणसू[6] नरूका कहीजै ।
१७ दासो नरूरो ।

---

1 गाव मोहारीमे निवासस्थान । 2 जिस वनवीरके वंशज वणवीरोत-कछवाहा कहे जाते हैं । 3 इनका परिवार बहुत बडा है, परतु यहा नही लिखा गया है । 4 जिसके । 5 जिसके वंशज । 6 जिसके नामसे ।

१८ चांनणदास दासारो ।
१९ सैहसो चांनणदासरो ।
निवाई ठाकुर हुवो ।
२० कांन्ह सैहसारो ।
२१ केसोदास वडे डील थो[1] । मोहवतखां लाल-सोट पटै दी थी ।
२२ उग्रसेन केसोदासरो । वडो रजपूत थो । मोह-वतखांरै वास थो । पछै रावळै वसियो[2] । रेयांरो पटो दियो थो । राय-पुररो पटो थो । मोह-वतखान लालसोट पटै दी थी । मीच मुवो[3] ।
२३ रुघनाथसिंघ ।
२२ सूरजमल केसोदासरो ।
२२ तेजसी केसोदासरो ।
२१ माधोदास कानरो ।
निवाई पटै ।
२१ सकतसिंघ ।
२२ दीपसिंघ ।
२४ रूपचद ।
२० राम सहसमलरो । वण-हटो रामरो वसायो[4] ।
राजा जगनाथरो चाकर ।
२१ राघोदास रांमरो ।
अटक ऊपर खांनाजगो मोहवतखांनरै चाकरांसू हुई तठै मारियो[5] ।
२२ राजसिंघ राघोदासरो ।
मोहवतखांरै वास थो[6] ।
२२ रूप राघोदासरै टीका-इत[7] । वणहटो मोह-वतखान दियो थो ।
२१ वीठळदास रामरो ।
बेटो नहीं ।
२१ विसनदास रांमरो ।
२२ राजसिंघ ।
२१ प्रतापमल रांमरो ।
२० गोपाळदास सहसमलरो ।
२० वेणीदास सहसमलरो ।
२० देईदास सहसमलरो ।
२० वीरमदे सहसमलरो ।
२० दुरगदास सहसमलरो ।
२० दूदो सहसमलरो ८ ।
सहसमल चानणरो ।
१८ करमचद दासारो ।
मोजाबाद धणी । तिणनू राजा सांगै प्रथीराजरै

---

1 केसोदास जबरदस्त और मोटे शरीरका था । 2 फिर जोधपुर महाराजाके यहा रहा । 3 अपनी मृत्युसे मरा । 4 रामके वणहटो गावको आबाद किया । 5 अटक ऊपर मोहवतखाके नौकरोसे लड़ाई हुई वहा मारा गया । 6 मोहबतखाके यहा रहता था । 7 रूप राघोदासका उत्तराधिकारी ।

मारियो[1] ।
१९ सिंघ करमचंदरो ।
२० जैतसी सिंघरो ।
२१ चंद्रभांण जैतसीरो । पनवाड धणी । रावळै संमत १६६८ वसियो थो[2] । राहिण पटै । पछै पातसाही चाकर हुवो । राजा गजसिंघजी परणिया छा[3] । नरूकी केसरदे साथै वळी[4] ।
२१ इंद्रभांण जैतसीरो । रावर ठाकर ।
२१ हरराज जैतसीरो । राव केसोदास मारियो ।
२१ उदैभाण जैतसीरो ।
२० वेणीदास सिंघरो ।
२० नाथो सिंघरो ३ ।
१९ प्रथीराज करमचंदरो ।
२० भीव प्रथीराजरो । वडो दातार हुवो ।
१८ चानरण दासेरो ।
१९ अलखो जादणरो ।
२० दलपत अलखारो । राजा जैसिंघजीरो चाकर ।
२० कीरतखां अलखारो ।
१८ रतन दासेरो ।
१९ सांगो रतनरो ।
२० कचरो सांगारो । मीच मुंवो[5] ।
२१ मालदे कचरारो ।
२२ सुरजन मालदेरो ।
२३ रायकंवर ।
२३ रांमकंवर ।
२३ चत्रसाळ ।
२३ दूदो ४ । सुरजनरा ।
२२ सादूळ मालदेरो ।
२३ कांन्हो सादूळरो ।
२३ जैतसिंह ।
२३ हरिसिंह ।
२२ प्रतापसिंघ मालदेरो ।
२३ जगरूप ।
२२ रायसिंघ मालदेरो ।
२३ करण ।
२३ अचळदास ।
२२ चत्रभुज मालदेरो ।
२३ गोपीनाथ ।
२२ माधोसिंघ मालदेरो ।
२२ केसोदास मालदेरो । पूरवमे भाटीरी वेढ

1 जिसको पृथ्वीराजके पुत्र राजा भागाने मारा । 2 सं० १६६८मे महाराजा जोधपुरके यहां रहा । 3।4 उसकी बेटी केसरदेवी नरूकीके साथ राजा गजसिंहजीका विवाह हुआ था, जो गजसिंहजीके साथ जल कर सती हुई । 5 मृत्युसे मरा (किसी युद्धमें नहीं मरा) ।

कांम आयो[1] ७ ।
मालदे कचरावतरा ।
२१ फरसरांम कचरावतरै
बेटा १२ ।
२२ राघोदास फरसरांमरो।
२३ पीथो ।
२३ गिरधर ।
२३ स्यामसिघ ।
२३ कांन्ह ।
२२ वाघ फरसरामरो ।
२३ मोहणदास । रावळै
वास थो[2] ।
२४ नरहरदास ।
२३ जगनाथ ।
२३ किसनसिघ वाघवत ।
पंवारे मारियो[3] ३ ।
२२ भगवांनदास फरस-
रांमरो ।
२२ जसवत फरसरामरो ।
२३ हरिजस ।
२३ राजसिघ ।
२३ किसनसिघ ।
२२ बलिरामजी फरस-
रामोत ।
२३ नाथो ।
२३ उदैकरण फरसरामोत ।
२३ गोविंददास ।
२३ गोवरधनदास ।
२३ लूणो ।
२२ हरिदास फरसरांमरो ।
२३ जैतसिघ ।
२३ वीठळदास ।
२२ रांमचद फरसरांमरो ।
पंवारांरी वेढ कांम
आयो[4] ।
२३ गोपीनाथ ।
२३ पूरो ।
२२ उदैभाण फरसरांमरो ।
२२ नरसिंघदास फरस-
रांमरो ।
२३ दूदो १२ ।
२१ रुद्रकंवर । रावत किस-
नसिंघजीरो साळो ।
किसनसिघजी साथै काम
आयो[5] ।
२२ सूरसिंघ रुद्ररो ।
२२ कुंभकरण रुद्ररो ।
२२ मनोहरदास रुद्ररो ।
२३ राजसिघ ।
२३ हरकरण ४ ।
२१ भोपत कचरावत ।
किसनसिंघजीरै वास

---

1 पूर्वमे भट्टीकी लडाईमे काम आया । 2 मोहनदास जोधपुर महाराजाके यहा नौकर था । 3 बाघाका बेटा किशनसिह जिसे पवारोने मारा । 4 पवारोकी लडाईमे मारा गया । 5 रुद्रकुमार रावत किशनसिंहजीका साला जो उन्हीके साथ मारा गया ।

थो सु किसनसिंहजी साथै कांम आयो[1] ।

२२ देईदास भोपतरो । रा।। जगमाल भारमल साथै कांम आयो[2] ।

२३ सूजो देईदासरो ।

२३ उग्रसेण ।

२२ मुकददास भोपतरो ।

२३ राजसिंघ ।

२३ किसनसिंघ २,४ कचरा सांगावतरा ।

१९ सेखो रतनारो ।

२० मदनसिंघ सेखारो ।

२१ लूणकरण मदनसिंघरो।

२२ अचळदास लूणकरणरो।

२३ राजसिंघ । राजा जैसिंघरै वास । कंवर रामसिंघ कनै रह्यो[3] ।

२२ केसरीसिंघ लूणकरणरो। राजा जैसिंघरै वडगूजरांरी वेढ काम आयो[4] २ ।

२१ जसवत मदनसिघरो ।

राजारैसूं छाड रावळै वसियो संमत १६८९[5]।

२२ हररांम जसवंतरो । रावळै चाकर थो[6] ।

२३ हिमतसिंघ ।

२३ कुसळसिंघ ।

२२ रूपसी जसवंतरो २ ।

२० भावसिंघ सेखारो । जगनाथ गोयंददासोत मारियो[7] २ । रतनै दासावतरा ।

१८ जैमल दासेरो । निपट वडो रजपूत हुवो । मरणरै दिन घणो विसेप कियो[8] ।

१९ वलू जैमलरो ।

२० रांमदास ।

२० वीठळदास ।

२१ विसनदास ।

१९ लाडखांन जैमलरो ।

२० गोपाळदास महारोठ काम आयो ।

१९ रायकंवर ।

---

1 कचराका वेटा भोपत किशनसिंहजीके यहा रहता था, अन किशनसिंहजीके साथ मारा गया । 2 भोपतका वेटा देवीदास जगमाल भारमलोंनके साथ मारा गया । 3 राजसिंह राजा जयसिंहके यहा नौकर, कुवर रामसिंहके पास रहा । 4 राजा जयसिंह और वडगूजरोंकी लडाईमे मारा गया । 5 स० १६८९मे राजा जयसिंहके यहासे छोड कर जोधपुर महाराजाके यहा रहा । 6 जोधपुर महाराजाके यहा चाकर था । 7 गोविंददासके वेटे जगन्नाथने मारा । 8 दासाका पुत्र जयमल वहुत वडा राजपूत हुआ । मरनेके दिन बहुत विशेषताएं प्रगट की ।

२० चत्रभुज ।
२१ मनोहरदास ।
१८ पूरणमल दासारो ।
१८ रायमल दासारो ।
१६ रांमचद्र ।
२० वळभद्र ।
२१ गोविंददास वळभद्रोत । ईसरदास कूपावतरो दोहितो । रावळै वास थो । रेवाडीरा गांव पटै[1] ।
२२ जोगीदास ।
१८ कपूरचंद दासारो ।
१६ रूपसी ।
१६ वैरसी ।
१७ लालो नरूरो । लालो राव कहांणो[2] ।
१८ ऊदो लालारो ।
१६ लाडखांन ऊदारो ।
२० फतैसिघ लाडखांनरो । तिणनू राजा जैसिघ बेटो कर गोद लियो थो[3] ।
२१ राव कल्यांणमल फतैसिघरो । राजा जैसिघरै बेटां बरोबर थो । कांमां पहाड़ीरो सूबो थो[4] ।
२२ रिणसिघ ।
२२ आणंदसिघ ।
२२ अजबसिघ ।
१४ बालोजी राजा उदैकरणरो । जिणरी ओलादरा सेखावत-कछवाहा कहीजै । सेखावतांरो उतन अमरसर वैसणो[5]।
१५ मोकल बालैरो, जिणनू पीर ब्रहांन चिसती निवाजस की, जिणरो तकियो मनोहरपुर गांव ताळै छै, डूगरी ऊपर[6]।
१६ सेखो मोकलरो, जिणसू सेखावत कहांणा । अमरसर सेखैजी वसायो। अमरसर अमरै अहीररी ढांणी थी, जात खासोदो । सिखरगढ

1 बलभद्रका बेटा गोविंददास, ईश्वरदास कूपावतका दोहिता जो जोधपुर महाराजाके यहा नौकर था और जिसे रेवाडीके गाव पट्टेमे मिले हुए थे। 2 लाला राव कहलाया। 3 लाडखानके बेटे फतहसिहको बेटा मान कर गोद लिया था। 4 राजा जयसिह इसे अपने बेटोके बराबर मानता था। कामा पहाडीका सूबेदार था। 5 उदयकर्णका पुत्र बालोजी जिसकी औलाद वाले शेखावत-कछवाहा कहे जाते है। शेखावतोका निवासस्थान अमरसर। 6 मोकल बालेका पुत्र जिस पर शेख पीर बुरहान चिश्तीने कृपा की (और पुत्र दिया) जिसका तकिया मनोहरपुरके निकट पहाडी पर बना हुआ है।

राव सेखै वसायो[1] ।
१७ रायमल सेखावत ।
१८ मूजो रायमलरो ।
१९ राव लूणकरण मूजारो । राव मालदेरी बेटी हंसबाई परणाई थी[2] ।
२० राव मनोहर, जिण मनोहरपुर वसायो । हंसा बाईरो बेटो[3] ।
२१ प्रथीचद मनोहररो ।
२२ किसनचंद ।
२३ जैतसिंघ ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२२ प्रेमचद ।
२३ इंद्रचद ।
२३ कुसळचद ।
२१ रायचंद मनोहररो । वठास काम आयो[4] ।
२२ तिलोकचद ।
२१ प्रिथीचद कागुड़े काम आयो । राजा विक्रमायत साथै[5] ।
२१ प्रतापचद ।
२० किसनदास राव लूणकरणरो ।
२० दूलैराव लूणकरणरो ।
२० ईसरदास लूणकरणरो । सबळसिंघजीरो मुसरो । संमत १६७३ राम कह्यो ब्रहांनपुरमें[6] ।
२१ गोकळदास खवासरोथो[7] ।
२० सांवळदास लूणकरणरो ।
२१ रूपसी ।
२० नरसिंघदास लूणकरणरो ।
२१ उग्रसेण नरसिंघदासरो ।
२२ महासिंघ उग्रसेणरो । राजा जैसिंघरै वास ।
२३ मांनसिंघ ।
२३ रतन ।
२३ अणंदसिंघ ।
२३ दीपसिंघ ।
२२ रामसिंघ उग्रसेणरो । राजा जैसिंघरै वास थो । पछै रावळै चाकर थो । रुपिया २५०००)

---

1 मोकलका बेटा शेखा जिससे शेखावत कहलाये । शेखाजी अमरपुरमें आकर रहे । अमरसर इसके पहले सांमोदा जातिके अहीर अमरकी ढाणी थी । राव शेखेने शिखरगढ बसाया । 2 राव मालदेवकी बेटी हंसाबाई ब्याही थी । 3 हंसाबाईका बेटा राव मनोहर जिसने मनोहरपुर बसाया । 4 वठासमें मारा गया । 5 राजा विक्रमादित्यके साथ पृथ्वीचद कागडेमें मारा गया । 6 लूणकरणका बेटा ईश्वरदास, सबलसिंहका ससुरा । सं० १६७३में बुरहानपुरमें मरा । 7 गोकुलदास खवाससे (गोलीसे) उत्पन्न हुआ था ।

पटो. रेवाड़ीरा गांव दिया[1]।

२३ चद्रभाण।

२३ अजबसिघ।

२३ रुघनाथसिंघ उग्रसेणरो।

२२ मेहकरण। रावळै वास थो। एक वार उदैहीरो पीपळाईमू रुपिया १२०००) पटो हुतो[2]।

२३ मोहनरांम।

२३ सबळसिघ।

२३ कुसळसिंघ।

२३ किसनसिंघ।

२२ जैतसिंघ अग्रसेणरो।

२३ हरिसिंघ।

२३ नराइणदास।

२२ विहारीदास उग्रसेणरो।

२३ केसरीसिघ।

२३ सकतसिंह।

२२ गोविंददास उग्रसेणोत।

२३ सूरसिंघ।

२३ मुकददास।

२२ कल्याणदास उग्रसेणोत। निरवाणारी लडाईमे कांम आयो[3]

२३ हरनाथ।

२२ किसनसिंघ, कल्यांणदास साथै कांम आयो।

२२ कांन्हीदास।

२१ बळभद्र नरसिंघदासरो।

२१ हररांम।

२१ द्वारकादास नरसिंघदासरो। ३ नरसिंघदास, कल्यांणदास करणोत।

२० भगवांनदास लूणकरणोत।

२१ अचळदास।

२२ सकतसिंघ।

२३ रूपसिंघ रावळै चाकर।

१६ रायसल सूजारो। वाघा सूजावतरो दोहितो। अकबर पातसाहरै रायसल दरबारी कहीजतो। खंडेला-रैवासो पटै थो। खडेलो निरवांणा कना रायसल लियो[4]। मूळ खडेलो तुंवर खडगलरो वसायो[5]।

---

1 उग्रसेनका बेटा रामसिंह, पहले राजा जयसिंहके यहा था, बादमे जोधपुर महाराजाका चाकर हो गया। रेवाड़ीके रु० २५,०००)के गांव पट्टेमे दिये गये थे। 2 मेहकर्ण जोधपुर महाराजाके यहा नोकर था। इसे एक बार उदैहीरा रु० १२०००)की रेखका पीपळाई गांवका पट्टा दिया गया था। 3 उग्रसेनका बेटा कल्याणदास निरबानाकी लड़ाईमे मारा गया। 4 रायसलने निरबानोके पाससे खडेला लिया। 5 मूलमे खडेला तुंवर खडगलका बसाया हुआ है।

२० लाडखांन रायसलरो ।

२१ माधो लाडखांनरो । तिणनू सल्हेदी राजावत मारियो । माहरोठ माहै[1] ।

२२ हिंदूसिंघ माधारो ।

२२ सूरो माधारो । रा॥ इंद्रभांण मारियो ।

२३ अजबसिंघ ।

२१ कल्यांणदास लाडखांनरो। तिणनू भोजराज रायसलोत मारियो। संमत १६५३ । बेटो नहीं[2] ।

२१ केसो लाडखांनरो । केसानू नाई मारियो । नाईरी बैरसू हालतो[3] ।

२२ भगवानदास ।

२१ आसकरण लाडखांनरो।

२२ कल्यांणसिंघ।

२२ चतुरसिंघ ।

२२ प्रेमसिंघ।

२२ नाथो।

२२ दिलरांम।

२१ सुंदरदास लाडखांनरो।

२२ पैहळाद।

२२ चतुरसिंघ।

२२ रतन।

२१ जोधो लाडखांनरो ।

२१ केसरीसिंघ लाडखांनरो।

२२ जैसिंघ ।

२१ जगो लाडखांनरो ।

२० गिरधरदास रायसलोत खडेलै टीको । राठोड़ वीठळदास जैमलोतरो दोहितो । संमत १६८० व्रहानपुरमे सैदासूं खांनाजंगी हुई तरै सैदां मारियो । पछै सैदांनू ही परवेज साहिजादै मोहवतखारै गरदन मारिया[4] ।

२१ राजा द्वारकादास गिरधरदासरो । खंडेलै टीको । खांनजिहांरी पैहली वेढ लोहडै पड़ियो

---

1 जिसको मलहदी राजावतने मारोठमे मारा । 2 जिसको रायसलके बेटे भोजराजने स० १६५३मे मारा उसके कोई बेटा नहीं । 3 लाडखाका बेटा केसा, इसको एक नाईने मार दिया । नाईकी स्त्रीसे उसकी बदचलनी थी । 4 रायसलका बेटा गिरधरदास। खडेलेका टीका हुआ । यह जयमलके बेटे राठोड विट्ठलदासका दोहिता था । स० १६८०मे सैयदोंसे लडाई हुई तब सैयदोंने इसको मार दिया । बादमें शहजादे पर्वेजने मोहबतखाकी शत्रुतासे सैयदोंको भी मार दिया ।

थो पाछो खानजिहा मारियो तद काम आयो[1]।
२१ हरिसिह गिरधररो।
२२ राजा वरसिंघदे द्वारकादासरो। भारमलोतांरो भांणेज। कंवर श्री प्रथीसिंघजीरो नांनो[2]।
२३ पुरसबहादर।
२३ मोहकमसिंघ।
२३ स्यांमसिंघ।
२३ दौलतसिंघ।
२३ अमरसिंघ। रावळै चाकर रुपिया ३०००)पटो[3]।
२३ जगदेव।
२३ अजसिंघ।
२३ भोपतसिंघ।
२३ अनूपसिंघ सूरसिंघरो।
२१ सल्हेदो गिरधररो। राठोड कांन्ह रायसलोतरो दोहितो[4]।
२२ हरदेव।
२२ सावळदास।
२१ विजैसिंघ गिरधररो।
२२ हरभांण।
२२ उधरसिंघ।
२२ अरजनसिंघ।
२१ किसनसिंघ गिरधररो।
२२ जैसिंघ पातसाही चाकर।
२२ अखैसिंघ पातसाही चाकर।
२२ महासिंघ।
२१ गोपाळदास गिरधररो।
२१ गोरधन गिरधररो।
२१ सूरसिंघ गिरधररो।
२२ अनूपसिंघ।
२० भोजराज रायसलरो।
२१ तोडरमल भोजराजरो। वडो कपाळीक। उदैपुर खंडेला कनै रहै। पातसाही चाकरी छूटी। नाक बैठ गो छो[5]।
२२ हरनाथसिंघ तोटरमलोत।
२२ परसोतमसिंघ। रावळै चाकर। रेवाडीरो गांव

---

1 गिरधरदासका बेटा राजा द्वारकादास। खंडेले टीका हुआ। खानजहांकी पहली लड़ाईमें घायल हुआ था और फिर खानजहां मारा गया जब यह भी काम आ गया। 2 द्वारकादासका बेटा राजा वरसिंहदेव, भारमलोतोंका भानजा और कुंवर पृथ्वीसिंहका नाना था। 3 अमरसिंह जोधपुर महाराजाका चाकर, रु० ३०००)का पट्टा। 4 गिरधरका बेटा सलहदी रायसलके बेटे राठोड़ कान्हका दोहिता था। 5 भोजराजका बेटा तोडरमल बड़ा कापालिक था। खंडेलेके पास उदयपुरमें रहता था। बादशाही चाकरी छूट गई। नाक बैठ गया था।

खोहरी वसी थी[1]।
२२ परसोतमरा बेटा–
२३ हरिसिंघ ।
२३ प्रथीसिंघ ।
२३ स्यांमसिंघ ।
२३ हिमतसिंघ ।
२३ भीवसिंघ ।
२३ जूंझारसिंघ ।
२१ केसरीसिंघ भोजराजरो।
२१ रघनाथ भोजराजरो।
२२ चांदसिंघ । रावळै चाकर ।
२० परसरांम रायसलोत । वडगूजरांरो दोहितो ।
२१ वीठळदास ।
२२ अभैरांम ।
२१ मुरतांणसिंघ ।
२२ विजैराम ।
२१ सैंवळसिंघ फरसरांमरो ।
२२ हरनाथ ।
२२ रघनाथ ।
२३ सुजाणसिंघ ।
२३ गजसिंघ हरनाथोत ।
२३ चंद्रभांण ।
२१ तिलोकसी फरसरांमरो।
२२ जैतसिंघ द्वारकादासरै कांम आयो ।
२२ हरिसिंघ ।
२३ महासिंघ ।
२२ सूरसिंघ ।
२१ वळिरांम फरसरांमरो ।
२१ मदनसिंघ फरसरांमरो ।
२१ चतुरसिंघ ।
२२ सूरसिंघ ६।फरसरामरा।
२० तिरमणराय रायसलरो। राजा सूरसिंघजी संमत १६६८ खंडेलै तिरमणरै परणिया था सु सेखावत साथै वळी[2]।
२१ गोगारांम ।
२२ स्यांमरांम ।
२२ रतन ।
२२ कल्यांणसिंघ ।
२२ तुळछीदास ।
२१ बद्री तिरमणीत ।
२१ उदैकरण खवासरो ४।
२० ताजखान रायसलरो । वडगूजरांरो दोहितो ।
२१ पिरागदास। रावळै चाकर थो। मेडतारो ढाहो थो[3]।

---

1 पुरुषोत्तमसिंह जोधपुर महाराजाका चाकर, रेवाडीका खोह गाव बसीमे था। 2 रायसलका बेटा तिरमणराय। राजा सूरसिंहजी स० १६६८मे खंडेलेमे तिरमणके यहा व्याहे थे। सूरसिंहजीके मरणोपरान्त शेखावत रानी साथमे जल कर सती हुई। 3 प्रयागदास जोधपुर महाराजाके यहा चाकर था, मेडते परगनेका ढाहा गाव पट्टेमे था।

२१ किरतसिंघ ताजखानरो।
२२ किसनसिंघ।
२३ बिजैसिंघ।
२१ मुगटमिण ताजखांनरो। ढवो थो ३।
२० हररांम रायसलरो। निरबाणारो दोहितो।
२१ हिरदैराम।
२२ चद्रभाण।
२२ जैभांण।
२२ हरभाण।
२२ उदैभांण। रावळै रह्यो थो। रेवाडीरा गांव पटै[1]।
२२ इंद्रभाण।
२२ अमरभांण।
२१ चतुरसिंघ हररांमोत।
२१ फतैसिंघ हररांमोत।
२२ दुरजनसिंघ।
२२ अमरसिंघ।
२२ अजसिंघ।
२२ अनोपसिंघ।
२२ भावसिंघ।
२२ अचळसिंघ।
२२ नरसिंघदास।
२२ प्रथीराज।
२१ राजसिंघ हररांमोत।
२२ कल्याणसिंघ।
२२ महासिंघ।
२१ संग्रामसिंघ हररांमोत।
२२ रामसिंघ।
२२ सामसिंघ।
२२ मोहकमसिंघ।
२० बिहारीदास रायसलरो। निरवांणांरो दोहितो। महारोठ काम आयो[2]।
२० बाबूरांम रायसलरो। जाटणीरा पेटरो। महारोठ काम आयो। रायसलजी साहपुरो पटै दियो थो डीडवांणैरी मदद की। बळभद्र नारणदासोत आयो तद मारियो। मां स्वाळखरी जाटणी थी[3]।
२० दयाळदास रायसलरो।
२० वीरभांण रायसलरो। गोडारो दोहितो।
२० कुसळसिंघ रायसलरो। सोनगरांरो भांणेज।
२१ करमसेन।

---

1 उदयभाण जोधपुर महाराजाके यहा नौकर रहा था, रेवाडीके गाव पट्टेमे थे। 2 बिहारीदास रायसलका बेटा, निरवानोंका दोहिता, मारोठमें मारा गया। 3 बाबूराम रायसलका बेटा, जाटनीके पेटका था। मारोठमे काम आया। रायसलने डीडवानेकी मदद की तब शाहपुरा पट्टेमे दिया था। इसकी मा स्वालखकी (नागोर परगनाकी) जाटनी थी।

२१ नरसिंघदास ।
२१ उगरसेन १२ ।
१६ गोपाळ सूजारो ।
२० माधोदास ।
२० ततारखांन ।
२० साईदास ।
२० गोकळदास
२० स्यांमदास ।
२१ सबळसिंघ ।
२० हरदास ।
२१ मोहणदास ५ ।
१६ गोपाळ सूजावत ।
१६ भैरूं सूजारो ।
२० नरहरदास ।
२१ नाहरखांन ।
२१ किसनसिंघ ।
२१ मुकंददास ।
२१ हरिसिंघ ।
२१ जगनाथ ।
२१ जसवंत ।
२१ वळू ।
२१ रुघनाथ २१...६ ।
२० कवरसाळ भैरूंरो ।
२१ चत्रभुज ।
२२ गरीबदास ।
२२ सुदरदास ।
२० सांगो भैरूंरो ।
२१ जैतसिंघ । मोहबत-खांनरी वेढ कांम आयो[1] ।
२१ मल्हैदी सांगारो ।
२० भारमल भैरूंरो ।
२१ खीवकरण मोहबतखांरै वास थो[2] ।
१६ चांदो सूजारो ।
२० ततारखांन गिरधरजी साथै कांम आयो[3] ।
२१ मुकंददास ततारखांनरो।
२१ फतैसिंघ ।
१८ सहसमल रायमलरो ।
१६ करमसी सहसमलरो ।
२० दुरजणसाळ राजा गज-सिंघजीरै नांनो । रांणी सोभागदेजीनूं अकबर पातसाह बेटी कर ब्याह कियो । संमत १६६४[4]।
२० रांमचंद करमसीरो । अकबर पातसाह दिखण मेलियो[5] उठै[6] खान-खानो लड़ाई न करै छै। दिखणियांनूं[7] जाय

1 जैतसिंह मोहबतखाकी लड़ाईमें काम आया । 2 खीवकर्ण मोहबतखाके यहा रहता था । 3 ततारखा गिरधरजीके साथ मारा गया । 4 दुर्जनसाल राजा गजसिंहजीका नाना । स० १६६४में रानी सौभाग्यदेवीका बादशाह अकबरने अपनी बेटी बना कर विवाह किया था । 5 भेजा । 6 वहां । 7 दक्षिणियोंको ।

नवाबनूं कही लड़ाईनूं चढ़ आवै । पछै आयनै नवाबनूं कही लेजायनै दिखणियांनूं मेंज सौ[1] लड़ाई कराई नै आप पैहलां-हीज उपाड़नै फौज मांहे नांखिया[2] सु कांम आयो ।

गीत रांमचंद करमसीरारो[3]

अगमर[4] भुज धूण वधै लग[5] अंबर ।
गत्रिया-गुर[6] जूझार गरै ।
म्हैठै दिखण तणै[7] सिर रांमै ।
हमल हलाया सिखर-हरै[8] ॥१

आठवाट[9] कर थाट[10] एकठा ।
भुज पतसाही भार भले ।
अहमद नगर वीद घर ऊपर ।
कछवाहै चाळवी[11] कलै ॥२

२१ धरमचंद । मीच मुंवो ।
१८ तेजसी रायमलरो ।
१९ सकतसिंघ तेजसीरो ।
१९ मांनसिंघ तेजसीरो ।
२० नारणदास मांनसिंघरो ।
२१ बळभद्र नारणदासोत । दिखण पातसाहजीरै काम आयो । खानजिहारी वेढ छत्रसिंघ भेळो[12] ।
२२ कनीदास ।
२२ गोपीनाथ ।
२२ रतन ।
२२ सूरसिंघ ।
२२ किसोरसिंघ ।
२१ दीपचंद नारणदासरो ।
२१ नरसिंघदास मांनसिंघरो ।
१९ रांमसिंघ तेजसीरो । मोटा राजाजीरो सुसरो जैतसिंघजीरो नांनो ३ ।
१८ जगमाल रायमलरो ।
१९ भीव जगमालरो ।

---

1 मामूली । 2 और उसने पहले अपने घोड़ोको उठा कर सेनामें डाल दिया । 3 करमसीके बेटे रामचंदका गीत । 4 तलवार । 5 तक । 6 क्षत्रिय-श्रेष्ठ । 7 के । 8 शिखरके वंशजने । 9 सहार, नाश । 10 समूह । 11 शस्त्र चलाया । 12 नारायणदासका बेटा बलभद्र, दक्षिणमें खानजहांकी लडाईमें छत्रसिंहके साथ बादशाहके काम आया ।

२० दूदो भींवरो ।
१८ सीहो रायमलरो ।
१८ सुरताण रायमलरो ६ ।
१७ दुरगो सेखारो ।
१८ मानसिंघ दुरगावत ।
१९ सूरसिंघ मांनसिंघोत ।
२० नारणदास ।
२१ अलखां । द्वारकादासरै समै खंडेलै साहबीरी मदार छै[1] ।
२२ जगनाथ रावळै चाकर ।
२२ दूदो ।
२२ दळपत ।
२२ बळभद्र ।
२१ केसोदास नारणदासरो। गिरधरजी साथै कांम आयो ।
२२ भगवांनदास ।
२१ मोहणदास । महारोठ काम आयो ।
२२ दीपचंद ।
१७ रतनसी सेखारो ।
१८ अखैराज रतनसीरो ।
१९ कान्ह अखैराजरो ।
२० दयाळदास ।
२१ स्यामदास ।
१९ कनो अखैराजरो ।

२० दळपत पातसाही चाकर।
२१ रांमसिंघ ।
२१ सांमसिंघ ।
२१ सुदरसण ।
१७ अभो सेखारो ।
१८ सांईदास अभारो ।
१९ लूणो सांईदासरो ।
२० नाथो लूणारो ।
२१ मनोहरदास ।
२१ जसो ।
२१ राघोदास ।
२१ भोपत ।
२१ हररांम ।
२१ दयाळ ।
२१ वीको ।
२१ सीधो।
२१ जसो नाथावत ।
२२ चंद्रभांण ।
२१ सीधो नाथारो।
२२ वीठळदास ।
२३ उदैभांण । पातसाही चाकर ।
२२ कल्यांणदास ।
२३ विहारी ।
२३ जैतसी ।
२३ वेणीदास ।
२२ सुदरदास ।

1 द्वारकादासके समयमें खंडेलेकी साहिबीका मदार अलखां पर है ।

२३ राघोदास ।
२२ स्यांमदास ।
२३ अजबसिंघ ।
२२ सादूळ ।
२३ प्रेमसिंघ ।
२० पैरोज ।
२१ सूरसिंघ ।
२१ दळपत ।
२१ उदैसिंघ ।
२० सिंघ ।
२० ठाकुरसी ।
२१ किसनसिंघ ।
२१ डूगरसी ।
२२ कुभकरण ।
२२ चंद्रभांण ।
२२ विजैरांम ।
२१ केसरीसिंघ ।
२१ गिरधर ।
२२ गरीबदास ।
२२ जूझार ।
२१ दरियाखान ।
२२ बाहदर ।
१७ कूभो सेखारो ।
१८ रामचद ।
१९ राघोदास ।
२० माधोदास राघोदासरो । रावळै जगड़वासरो पटो छो[1] ।
२० भोपत राघोदासोत ।
२१ रांमसिंघ ।
२१ सुजांणसिंघ ।
१८ जैमल कूभारो ।
१९ ईसरदास जैमलोत । पातसाही चाकर ।
२० वीरभांण ।
२१ सबळसिंघ ।
२१ सांमदास ।
२१ गरीबदास ।
२० सुरजन कांम आयो ।
२१ प्रेमसिंघ ।
२० माधोसिंघ । कांम आयो ।
२१ गजसिंघ ।
२१ मांनसिंघ ।
२० प्रथीराज । नाहर मारियो कटारी ३ वाही[2] ।
२१ खीवकरण ।
२१ महासिंघ ।
२० भोपत ।
२१ सांवतसिंघ ।
२४ जैतसी कूभारो ।
१७ भारमल सेखारो ।
१९ वाघ भारमलरो ।

---

1 राघोदासके पुत्र माधोदासको जोधपुर महाराजाकी ओरसे जगडवास गावका पट्टा था। 2 पृथ्वीराजने तीन बार कटारी मार करके नाहरको मारा।

१९ भगवांनदासनूं चाकर मारियो[1] ।
२० माधोसिंघ ।
१९ गिरधरदास । राजा गिरधर साथै कांम आयो ।
१७ अचळो सेखारो ।
१८ रूपसी ।
१९ कलो ।
२० दुरजणसाळ ।
२० बलू ।
२१ रांमसिंघ ।
२२ राजसिंघ ।
२२ जूझारसिंघ ।
१८ करमचंद अचळारो ।
१९ पीथो ।
२० गोविंददास ।
२१ गोपाळ ।
२१ महासिंघ ।
१५ खैंराज खरहथ वालारा, जिणरा पोता करणावत कछवाहा कहीजै । अठै थोडा मांडिया छै । पण करणावत आदमी २०० छै । करणावत मनोहरपुर परधांन हुता[2] ।
१६ भीव ।
१७ गोयंद ।
१८ रांमसिंघ ।
१९ भगवंतदास ।
२० सूजो ।
२१ विजैरांम ।
२१ मांनसिंघ ।
२१ मोहनरांम ।
२० चतुरसिंघ भगवंतरो ।
२१ हिमतसिंघ ।
२० बळभद्र ।
२० हरिदास ।
१४ कछवाहो सिवब्रह्म राजा उदैकरणरो । जिणरा नीदड़का-कछवाहा कहीजै । अठै मांडिया नही । आंवेर चाकर छै[3] ४ ।
१३ राजा उदैकरण जुणसीरो ।
१३ कछवाहो कूभो जुणसीरो । जिणरा कूभांणी-

---

1 भगवानदासको उसके चाकरने मार दिया । 2 खैंराज खरहथ वालाका, जिसके पोते करणावत-कछवाहा कहे जाते हैं, ये मनोहरपुरके प्रधान थे, यहा थोडे ही लिखे हैं, परतु इनके २०० आदमी हैं । 3 राजा उदयकर्णका बेटा कछवाहा शिवब्रह्म, जिसके वशज नीदडका-कछवाहा कहे जाते हैं, ये आमेरमे चाकर हैं, यहा उन्हें नही लिखा है ।

कछवाहा कहीजै[1]।
कूभो उदैकरणरो भाई।
कूभांणियांरी वडी पीठ
छै[2]। ग्रावेर चाकर छै।
··· महेसदास पीथारो।
··· किसनसिंघ। राजा
जैसिंघरै बटा कीरत-
सिंघ कनै रहतो। समत
१७०८ काबिल मीच
मुवो[3]।
१२ जुणसी कुंतळरो।
१२ हमीर कुतळरो। जिणरा
हमीर-पोता-कछवाहा
कहीजै, सु हमीरदेरा
पोतरा घण। डील छै।
आवेर चाकर छै। केई
नरायणै चाकर छै[4]।
··· पतो।
··· स्थामसिंघ पतारो।
राजा जैसिंघरो चाकर।
··· रामसिंघ पतारो।
१२ भडसी राजा कुतळरो
जिणरा भाखरोत-कछ-
वाहा कहीजै। भड़सी-
पोता[5]।
··· वेणीदास।
··· साहिबखांन वेणीदासरो।
भलो रजपूत हुवो।
पैहली आसपखारै थो[6]।
पछै पातसाही चाकर
हुवो।
··· किसनसिंघ साहिब-
खांनरो। राजा अनुरुध
गोडरो चाकर[7]।
१२ कछवाहो भडसी
कुतळरो। तिणरा
कीतावत-कछवाहा
कहीजै[8]।
१२ आलणसी राजा
कुतळरो जिणरा जोगी-
कछवाहा कहीजै[9]।
इणारी[10] ठाकुराई
पैहली जोबनेर हुती।
हमै तो जोबनेर जोगियासू

---

1 जुणसीका पुत्र कछवाहा कूभा जिसके वशज कूभाणी-कछवाहे कहे जाते है। 2 कूभाणियोंकी बडी प्रतिष्ठा है। 3 किशनसिंह राजा जयसिंहके बेटे कीर्तिसिंहके पास रहता था स० १७०८ में काबुलमे अपनी मौत मरा। 4 कुंतलका बेटा हमीर, जिसके वशज हमीर-पोता कछवाहे कहे जाते है, हमीरदेवके पोतो आदिका बडा कुटुम्ब है, कई आमेरमे और कई नराणेमे चाकर हैं। 5 जिसके वशज भाखरोत-कछवाहे या भडसी-पोता कहे जाते हैं। 6 पहले आसफखाके यहा नौकर था। 7 राजा अनिरुद्ध गौडका चाकर। 8 जिसके कीतावत-कछवाहे कहे जाते है। 9 जिसके जोगी-कछवाहे कहे जाते हैं। 10 इनकी।

छूटो[1]। केई आंबेर नरायणै चाकर छै[2]।
··· रांमदास वणवीररो। राजा जैसिंघरै वास[3]।
··· थांनसिंघ खांडेरावरो। राजा जैसिंघरै वास।
११ कुतळ कीलणदेरो।
११ रावत खैंराज कीलणदेरो। तिणरा[4] धीरावत कछवाहा कहीजै।
१२ मालक रावत खैंराजरो।
१३ धीरो मालकरो। जिणरा[5] धीरावत कहावै[6]।
१४ नापो धीरारो।
१५ खांन नापारो।
१६ चांद खानरो।
१७ ऊदो चांदरो।
१८ रांमदास ऊदारो। दरवारी।
१९ दिनमिणदास।
१९ सुदरदास।
१९ दलपत।
१९ नारायण।
१८ रांमदास दरवारी ऊदावत पैंहलो सल्हैदीरो वालार[7] थो। पछै पातसाह अकवररो वोहत निवाजसरो चाकर हुवो[8]। अरजवेगी हुवो[9]। वडो दातार हुवो। पछै अकवर पातसाह फोत हुवां पछै[10] जहांगीर वगसरै थांणै राखियो थो, उठै रांम कह्यो[11]। जहांगीर बोहत कुमया की[12]। अकवर-पातसाह गुजरात ली तद इणगारसूं गुजरात गयो। तद सांगानेर कोटवाळ थो,[13] तठै खिजमत की तद मुजरो हुवो[14]।
११ जरसी राव कीलणदेरो[15]। जिणरा जसरा-कछवाहा कहीजै। पूरव मांहै छै। जसरा

---

1 अब तो जोबनेर जोगी-कछवाहोंसे छूट गया। 2 कई आमेर और नराणेमे चाकर हैं। 3 राजा जयसिंहके यहा रहता है। 4 उसके। 5 जिसके। 6 कहलाते हैं। 7 नौकर। 8 पीछे बादशाह अकबरका बहुत कृपापात्र चाकर हुआ। 9 अर्ज गुजराने वाला (अर्ज वेगी) पदाधिकारी नियत हुआ। 10 फौत होनेके बाद। 11 मर गया। 12 जहांगीरने बहुत अवकृपा की। 13 तब वह सांगानेरका कोटवाल था। 14 वहा पर (गुजरातमे बादशाह अकबरकी) अच्छी सेवा की तब उसका वही मुजरा हुआ था। 15 जरसी राव कील्हणदेवका बेटा।

पोता[1] ३ ।
१० कीलणदे राजदेवोत ।
१० भोजराज राजदेरो ।
जिणरा पोतरा लवांणारा-गढरा-कछवाहा कहीजै[2] ।
... केसोदास राजा जैसिघरै वास[3] ।
८ वालो मलैसीरो । सात तवा अलावदी पातसाह आगै फोडिया । मोहीलारै परणियो तठै खेत्रपाळ कूट काढियो तरै गैल छूटी[4] ।
७ मलैसी पुजनरावरो । मलैसीरै ३२ बेटा हुवा ।
७ भीवडनै लाखण पुजनरो । जिणरा पोतरा कछवाहा-परधानका कहीजै[5] ।
४ राजा हणू काकिलरो ।
४ कछवाहो अळधरो राजा काकिलरो[6] । जिणरा पोता तिके कछवाहा-मेड़का-कुडळका कहीजै[7] । मनोहरपुर चाकर चीधड छै । मेडका-कुंडळका अमरसर गांव १२ हुता । दांम १२०००००। हमै अै गांव वैराट वांसै लगाया ।
४ कछवाहो रालण राजा काकिलरो जिणरा पोता रालणोत कछवाहा कहीजै । मनोहरपुर चाकर चीधड़ छै ।
४ कछवाहो देलण राजा काकिलरो । जिणरा पोता लहर-कछवाहा कहीजै । कैहेक कछवाहा गंगा जमना वीच अतरवेध मांहै छै । सालेर मालेर गांव २० माहै कछवाहा भूमिया असवार ४०० छै । घणा दिनांरा उठै जाय रह्या छै।

इति कछवाहारी ख्यात वार्ता सपूर्णम ।

दसकत वीठू पनैरा छै । शुभं भवतु ।

---

1 जिसके वशज जमरा-कछवाहे अथवा जसरा-पोता कहे जाते है, पूर्वमे हैं। 2 जिसके पोते लवाणागढरा-कछवाहे कहे जाते हैं। 3 केशवदाम राजा जयसिहके यहा रहता था। 4 बाला मलैमीका बेटा, इसने एक साथ लोहेके सात तवे एक ही तीरमे अलाउद्दीनके सामने फोड कर दिखाये थे मोहिलोंके यहा व्याहा था, वहा पर क्षेत्रपालको मार भगाया, तब सबका पीछा छूटा। 5 जिसके पोते प्रधानका-कछवाहे कहे जाते है। 6 कछवाहा अलधरा राजा काकिलका बेटा। 7 जिसके पोते कुडलका-कछवाहे अथवा मेडका-कछवाहे कहे जाते है।

वात एक गोहिलां खेड़रा धणियांरी

खेड[1] गोहिलारी बडी ठाकुराई थी । राजा मोखरो धणी छै । तिणरे बेटी बूंट पदमणी थी[2] । तिणरी वात खुरासांणरै पातसाह सांभळी[3] तरै तिण ऊपर घोड़ा लाख तीन विदा किया । तिकै चढ खेड़ आया । तुरके खेड़ सहर घेरियो[4] । गोहिल पिण[5] तद जोर[6] था । दिन ४ सारीखी वेढ हुई । पछै गोहिलें जमहर[7] करनै मैदांन आय वेढ हुई; तळाव वहवनसररै आगोर[8] तठै घणा गोहिल कांम आया, घणा तुरक कांम आया; नै घोड़ा पाछा गया । फौज आवतां पैहली वहवन कठैही[9] गयो थो सु ऊवरियो,[10] बूट पिण ऊबरी[11] । राजा मोखरो कांम आयो । पछै मोखरारो बेटो बहवन टीकै बैठो । साथ घणो कांम आयो । ठाकुराई निबळी पडी[12] । तरै वाहडमेररै धणियां गोहिल दवाया[13] । गांव नाकोड़ै गढ पंवारै कियो[14] । धरती लेणरो विचार कियो तरै वहवन मंडोवर हंसपाळ पडिहार धणी थो, तिणनू कहाडियो[15]–"म्हां कनां[16] पंवार धरती ले छै । कै तो म्हारी ऊपर करो नही तरैं पछै थांनूही लागसी[17] ।" तरै पड़िहारै कह्यो–"थारै[18] बेटी पदमणी बूट छै, तिका परणावो तो थां मामल हुवां ।" तरै इणां आपरै गम देखनै[19] बूट परणावणी कबूल की । बूट तो वरजियो भाईनू[20] पण इणै वात मांनी नही । तरै पडिहार हंमपाळ चढ खेड आयो । तिण समै पंवारै गायां लीवी ।

---

1 खेड मारवाडके मालानी प्रान्तमे लूनी नदीके किनारे बालोतरामे पाच मील पश्चिममे है । राठौड सीहा और ग्रामथानने सर्वप्रथम यही अपना राज्य कायम किया था । अब खेड खडहरोंके रूपमे रह गया है । 2 राजा मोखरा वहाका स्वामी है उसके बूट नामकी एक बेटी जो पद्मिनी थी । 3 सुनी । 4 तुर्कोंने खेड शहरको घेर लिया । 5 भी । 6 शक्ति-शाली । 7 जौहर । 8 तालाबके पासकी वह भूमि जिसका पानी तालाबमे आता है । 9 कही भी । 10 बच गया । 11 बूट भी बच गई । 12 राज्य निर्बल पड गया । 13 तब बाडमेरके स्वामियोंने गोहिलोंको दबाया । 14 नाकोटामे पँवारोंने गढ बनवाया । 15 उसको कहलवाया । 16 हमारे पाससे । 17 या तो हमारी सहायता करो नही तो ये पीछे तुमको भी सतायेंगे । 18 तुम्हारे । 19 तब इन्होंने अपनी परिस्थितिका विचार करके । 20 बूटने तो भाईको मना किया ।

तरै पड़िहार गोहिल भेळा हुय वाहर चढिया,[1] सु गांव नाकोड़ै आपडिया[2]। गायां तो कोट पोहती । हंसपाळ घोड़ो नांखियो सु प्रोळरा किवाड भागा[3] । तठै[4] पंवार मांणस[5] ४०० कांम आया । मांणस ३०० गोहिल पडिहार कांम आया । हंसपाळरो माथो तूट पड़ियो । हंसपाळ माथो पडियै पछै धड गायां ले वळियो[6] । गायां खेड़ आंणी[7] । पणहारियां कह्यो–"देखो माथा विण धड़ आवै छै[8] ।" तठै हंसपाळ पड़ियो[9] । पछै पड़िहार परणण आया[10]; फेरा २ लिया; तरै बूट बोली–"गोहिल थांसू छूटा[11] ।" पड़िहारै कह्यो–"छूटा।" तरै इण बूट कह्यो–"मै तो थांनू वरजियो थो[12] पण थे मांनियो नही । हमें गोहिलांसू खेड जाज्यो[13] । पड़िहारांसू मंडोवर जाज्यो[14] ।" इणा दोनांहीनू बूट श्राप देनै उड गई । उड़तीनू बूटरै मांटी हाथ घातियो सु एक लूगड़ो बूटरो हाथ आयो नै बूट उड गई[15] ।

वात

गोहिलां कनां[16] खेड राठोडां ली, तरै[17] गोहिल खेड़ छाड़ नै[18] एक वार कोटडारै देस बरियाहेड़ै गया । पछै उठाथी धाधळै मारे नै परा काढिया,[19] तरै कितराहेक[20] दिन सीतड़हाई जेसळमेरथी कोस १२ छै तठै जाय रह्या । पछै उठैही[21] राठोडां आगै रह न सकै । तरै जेसळमेररो धणी गोहिलारै परणियो हुतो सु औ रावळ कनै

---

1 तब पडिहार और गोहिल दोनोने शामिल होकर पीछा किया । 2 सो गाव नाकोडामे उनको पकड लिया । 3 हसपालने अपना घोडा ऐसा डाला सो पोलके किवाड टूट गये । 4 वहा । 5 मनुष्य । 6 हसपालका सिर कट कर पड जानेके बाद उसका धड गायोको लेकर लौटा । 7 गायोको खेडमे ले आया । 8 देखो बिना सिरके धड आ रहा है । 9 (पनिहारिनोके ऐसा कहने ही घोडे परसे) हसपाल (का धड) वहा गिर गया । 10 फिर पडिहार विवाह करनेको आये । 11 तब बूट बोली, गोहिल तुमसे ऋणमुक्त हुए । 12 मैंने तो तुम्हे पहले मना कर दिया था । 13 अब गोहिलोसे खेड छूट जाय । 14 पडिहारोसे मडोर छूट जाय । 15 उडती हुई को बूटके पतिने हाथ डाला सो बूटका एक वस्त्र उसके हाथ आया परन्तु बूट तो उड गई । 16 से, पाससे । 17 तब । 18 छोड कर । 19 पीछे वहासे भी धाधलोने मार कर निकाल दिया । 20 कितनेक । 21 वहा भी ।

गया[1]। तरै रावळ इणांनू केई दिन जेसळमेररा गढ़ ऊपर राखिया। तिको दिखण दिस गढ़में ओ अजेस गोहिल टोळो कहावै छै[2]। तठा पछै कितरैहेक दिने ऐ सोरठनू गया[3]। सेत्रूंजासूं कोस ४ सीहोर गांव छै, तठै जाय रह्या छै[4]। रावळ कहाड़ै छै[5]। भला रजपूत भूमिया छै। गांव ४०० मांहै इणांरो भोमियाचाराऱो ग्रास लागै छै[6]। सेत्रूंजो पिण गोहिलांरै छै[7]। पालीतांणै सिवो गोहिल छै, तिको जात करण आवै छै। तिणा कनै क्यूंही लेनै पछै सेत्रूंजै सिघनू चढण दे छै[8]। विरद इणांनू चारण भाट मारवारो दे छै[9]।

ग्रासरी विगत[10]—

सोरठरै देस एक ठोड़ा सीहोर, सेत्रूजासू कोस ४ छै तठै रावळ अखैराज; धोघरै परगनै इणांरो ग्रास[11] लागै।

एक ठोड़ लाठी, गांव ३६० में ग्रास लागै। लोलियांणो, अरजियांणो धंधुकाथी कोस १७।

सोरठ माहै देवके-पाटण सोमईयो महादेव वडो जोतलिंग हुतो,[12] तिको संमत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाड़ियो.[13] तठै गोहिल हमीर, अरजन भीवरा बेटा कांम आया, वडो नाव कियो[14]। तिणां साथै वेगटो भील पिण कांम आयो[15]।

••

1 तो ये रावलके पास गये। 2 गढ़के अंदर दक्षिण दिशामें वह स्थान अब भी गोहिल-टोला कहलाता है। 3 जिसके कितनेक दिनों बाद ये सोरठको चले गये। 4 वहां जाकर रहे हैं। 5 रावल कहलाता है। 6 चारसौं गांवोंमें इनका भूमिचारा ग्रास (कर) लगता है। 7 शत्रुंजय भी गोहिलोंके अधिकारमें है। 8 पालीताना सिवा गोहिलके अधिकारमें है, वह वहां जो यात्रा करनेको आते हैं उनसे कुछ कर लेकर फिर यात्री-सघको शत्रुंजय पर्वत पर चढ़ने देता है। 9 (सोरठमें जाने पर भी) चारण और भाट लोग इनको मारवाड़ीका (मारवाड़ियाका) ही विरुद देते हैं। 10 ग्रामका विवरण। 11 एक कर। 12 सौराष्ट्रमें देवपाटन स्थानमें सोमनाथ महादेव एक ज्योतिर्लिंग था। 13 जिसको अलाउद्दीन बादशाहने सम्वत् १३०० में जाकर उखाड़ लाया। 14 वहां पर भीमके बेटे गोहिल हमीर और अर्जुन काम आये, बड़ा नाम किया। 15 उनके साथमें वेगटा भील भी काम आया।

तरै पड़िहार गोहिल भेळा हुय वाहर चढिया,[1] सु गांव नाकोड़ै आपड़िया[2]। गायां तो कोट पोहती । हंसपाळ घोड़ो नांखियो सु प्रोळरा किवाड़ भागा[3] । तठै[4] पंवार माणस[5] ४०० कांम आया । मांणस ३०० गोहिल पड़िहार कांम आया । हंसपाळरो माथो तूट पड़ियो । हंसपाळ माथो पड़ियै पछै धड़ गायां ले वळियो[6] । गायां खेड आंणी[7] । पणहारियां कह्यो–"देखो माथा विण धड़ आवै छै[8] ।" तठै हंसपाळ पड़ियो[9] । पछै पड़िहार परणण आया[10]; फेरा २ लिया; तरै बूट बोली–"गोहिल थासू छूटा[11] ।" पड़िहारै कह्यो–"छूटा ।" तरै इण बूट कह्यो–"मैं तो थांनू वरजियो थो[12] पण थे मानियो नही । हमे गोहिलांसू खेड जाज्यो[13] । पड़िहारासूं मंडोवर जाज्यो[14] ।" इणां दोनांहीनू बूट श्राप देनै उड़ गई । उड़तीनू बूटरै मांटी हाथ घातियो सु एक लूगड़ो बूटरो हाथ आयो नै बूट उड़ गई[15] ।

वात

गोहिलां कनां[16] खेड राठोडां ली, तरै[17] गोहिल खेड छाड नै[18] एक वार कोटडारै देस वरियाहेड़ै गया । पछै उठाथी धाधळै मारे नै परा काढिया,[19] तरै कितराहेक[20] दिन सीतड़हाई जेसळमेरथी कोस १२ छै तठै जाय रह्या । पछै उठैही[21] राठोडां आगे रह न सकै । तरै जेसळमेररो धणी गोहिलांरै परणियो हुतो सु औ रावळ कनै

---

1 तब पडिहार और गोहिल दोनोने शामिल होकर पीछा किया । 2 मो गाव नाकोडामे उनको पकड लिया । 3 हसपालने अपना घोडा ऐसा डाला सो पोलके किंवाड टूट गये । 4 वहा । 5 मनुष्य । 6 हसपालका सिर कट कर पड जानेके बाद उसका धड गायोको लेकर लौटा । 7 गायोको खेडमे ले आया । 8 देखो, बिना सिरके धड आ रहा है । 9 (पनिहारिनोके ऐसा कहते ही घोडे परसे) हसपाल (का धड) वहाँ गिर गया । 10 फिर पडिहार विवाह करनेको आये । 11 तब बूट बोली, गोहिल तुमसे ऋणमुक्त हुए । 12 मैने तो तुम्हे पहले मना कर दिया था । 13 अब गोहिलोसे खेड़ छूट जाय । 14 पडिहारोसे मडोर छूट जाय । 15 उडती हुई को बूटके पतिने हाथ डाला सो बूटका एक वस्त्र उसके हाथ आया परन्तु बूट तो उड गई । 16 से, पाससे । 17 तब । 18 छोड कर । 19 पीछे वहासे भी धाधलोने मार कर निकाल दिया । 20 कितनेक । 21 वहा भी ।

गया[1]। तरै रावळ इणांनू केई दिन जेसळमेररा गढ़ ऊपर राखिया। तिको दिखण दिस गढमे श्रो अजेस गोहिल टोळो कहावै छै[2]। तठा पछै कितरैहेक दिने श्रै सोरठनू गया[3]। सेत्रूजासू कोस ४ सीहोर गांव छै, तठै जाय रह्या छै[4]। रावळ कहाड़ै छै[5]; भला रजपूत भूमिया छै। गांव ४०० मांहै उणांरो भोमियाचारारो ग्राम लागै छै[6]। सेत्रूंजो पिण गोहिलारै छै[7]। पालीतांणै सिवो गोहिल छै, तिको जात करण आवै छै। तिणां कनै क्यूंही लेनै पछै सेत्रूजै सिंघनू चढण दे छै[8]। विरद उणानू चारण भाट मारवारो दे छै[9]।

ग्रासरी विगत[10]—

सोरठरै देस एक ठोडा सीहोर, सेत्रूजासू कोस ४ छै तठै रावळ अखैराज; धोधरै परगनै इणांरो ग्रास[11] लागै।

एक ठोड लाठी, गांव ३६० मे ग्रास लागै। लोलियांणो, अरजियाणो धोधुकाथी कोस १७।

सोरठ माहै देवके-पाटण सोमईयो महादेव वडो जोतलिंग हुतो,[12] तिको समत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाडियो,[13] तठै गोहिल हमीर, अरजन भीवरा बेटा कांम आया, वडो नांव कियो[14]। तिणा साथै वेगडो भील पिण कांम आयो[15]।

**

1 सो ये रावलके पास गये। 2 गढके अदर दक्षिण दिशाका वह स्थान अब भी गोहिल-टोला कहलाता है। 3 जिसके कितनेक दिनो बाद ये सोरठको चले गये। 4 वहा जाकर रह हैं। 5 रावल कहलाता है। 6 चारसौ गावोमे उनका भूमिचारा ग्रास (कर) लगता है। 7 शत्रुंजय भी गोहिलोके अधिकारमे है। 8 पालीताना शिवा गोहिलके अधिकारमे है, वह वहा जो यात्रा करनेको आते हैं उनमे कुछ कर लेकर फिर यात्री-सघको शत्रुजय पर्वत पर चढने देता है। 9 (सोरठमे जाने पर भी) चारण और भाट लोग उनको मारवाड़ोका (मारवाड़ियोंका) ही विरुद देते हैं। 10 ग्रासका विवरण। 11 एक कर। 12 सौराष्ट्रमे देवपाटन स्थानमे सोमनाथ महादेव एक ज्योतिलिंग था। 13 जिसको अलाउद्दीन बादशाह सम्वत् १३०० मे जाकर उखाड लाया। 14 वहा पर भीमके बेटे गोहिल हमीर और अर्जुन काम आये, बडा नाम किया। 15 उनके साथमे वेगडा भील भी काम आया।

अथ पंवारांरी उतपत

आबू अनळकुंड वसिप्ट रिखेस्वर दैतांरै वधरै वास्ते च्यार जात रजपूत उपाया[1]—

१ पंवार ।
२ चहुवांण ।
३ पडिहार ।
४ सोळंकी ।

पंवारांरी पीढी—

१ पवार ।
२ परूरव ।
३ किलंग ।
४ इंद्र ।
५ गंध्रपसेन ।
६ राजा विक्रमादित ।
६ भरथरी ।
७ वीकमचित्र ।
८ सालवाहन ।
९ स्रतनख ।
१० गोदभ ।
११ गोपिंड ।
१२ महिपिंड ।
१३ राजा कारतन ।
१४ सहंम राजा ।
१५ राजा सिंघळसेन ।
१६ भोज धाररो धणी ।
१७ राजा वंध ।
१८ राजा उदैचंद ।

राजा उदैचदरा बेटा, आक १८ ।

१९ राजा रिणधवळ ।
१९ आल आबू धणी ।
१९ पाल आबू धणी । तिणरी औलादरा उमर जाळौररै देश छै[2] ।
१९ माधवदे सिद्धरावरै परणियो हुतो[3] । पछै पाटण आयो । तिणरा बेटा—
२० सूर । २० सांवळ ।
१९ जगदेव सिद्धरावरो चाकर, जिण कंकाळीनै माथो दियो[4] ।

---

1 आबूमे ऋषीश्वर वशिष्ठने दैत्योंका वध करनेके लिये अग्निकुंडसे चार जातिके राजपूतोंको उत्पन्न किया । 2 पाल आबूका स्वामी, इसकी औलादके जालोर प्रदेशके ऊमर गावमे हैं । 3 थी । 4 जगदेव सिद्धरावका चाकर, जिसने कंकालीको अपना सिर काट कर दे दिया था ।

जगदेवरो परवार, आंक १६

२० डाभ रिष। तिणरा पोतरा आगरै नजीक पंवार[1]।

२० गूगा। जगदेव माथो दियां पछै बेटा हुआ तिकै[2]।

२० कावा। रांमसेण तथा द्वारका कांनी[3]।

२० गैहलडो। कहै छै पैहली गैहलडांरी ठाकुराई खारी-खाबड़ हुती[4]।

डाभ रिपरी औलाद, आंक २०

२१ धोम रिप[5]।

२२ धरमदेव राजा, किराड़ू-धणी।

२३ धांधू।

२२ धरणी वराह, किराड़ू धणी।

२३ वाहड़। तिणरै घरै अपछरा थी[6]। अपछरारै पेटरो।

२४ सोढो।

२४ सांखलो।

२२ उपळराई किराड़ू छोड़ ओसियां वसियो। सचिवाय प्रसन हुइ माल वतायो। ओसियामे देहरी करायो[7]।

वात पंवारांरी

सोढा, सांखला पवारै मिळै[8]। पैहली इणांरो दादो धरणीवराह, वाहडमेर जूनो किराड़ू कहीजै, तिणरो धणी हुतो[9]। तिणरै नवै कोट मारवाड़रा हुता[10]। तिणरै वेटो वाहड़ हुवो। तिणसूं[11] आ धरती छूटी। एक वार वाहड़ रायधणपुर कनै[12] गांव झांझमो तठै जाय रह्यो। पछै वाहड़रो बेटो सोढो तो सूमरां कनै गयो, तिणनूं

1 डाभ ऋषि जिनके पोते आगराके पासमे रहने वाले पँवार हैं। 2,3,4 जगदेवके सिर देनेके बाद जो बेटे हुए उनमे एक गूगा, दूसरा कावा, जिसके वंशज रामसेन तथा द्वारकाकी ओर है और गैहलडो, जिसके वंशजोंके सबंधमे कहा जाता है कि पहिले इनकी ठकुराई खारी-खाबडमें थी। 5 धोम ऋषि। 6 वाहड जिसके घरमे अप्सरा थी और उसके पेटसे सोढा और सांखला हुए। 7 उपलराय किराडूको छोड कर ओसियामे जा बसा, सचिवाय माताने प्रसन्न होकर उसे धन बताया और उसने ओसियामे मंदिर बनवाया। 8 सोढा और सांखला दोनो शाखायें पँवारोमे मिलती हैं। 9 पहले इनका दादा धरणीवराह, जो अब जूना बाडमेर और किराडू कहा जाता है, उसका स्वामी था। 10 जिसके अधिकारमे मारवाडके नौ ही कोट थे। 11 उससे। 12 पास।

सूमरां रातो कोट दियो, ऊमरकोटसू कोस १४। नै तठा पछै[1] सोढा हमीरनू जांम तमाइची ऊमरकोट दियो। वाघ मारवाड़ मांहै पड़िहारां कनै आयो। वाघोरियै वसियो।

पीढियांरी विगत—

१ गंध्रपसेन।
२ अजैपाळ।
३ अजैसी।
४ वंधाइत।
५ वध।
६ धरणीवराह।
७ वाहड, तिणरै घरै अपछरा हुती। तिणरै पेट वेटा २—
८ सोढो, ८ सांखलो वाघ।

वाघ पंवार, तिणरी औलादरा सांखला हुवा[2]। तिण सांखलांरी दोय ठाकुराई सारीखी हुई। तिणरी विगत—

वाघ पंवार छहोटण, वाहड़मेर छोड़नै वाघोरियै आइ रह्यो। पड़िहार गैचंदरै घरै भुवा सुंदर हुती, तिण परसंग आयो। वाघोरियारो भाखर[3] दिखायो। इणरी भुवा खरच दै। पछै गैचदनूं रजपूते भखायो,[4] कह्यो–"तिणरी इसी दद्या दीसै छै,[5] थांनू मार धरती अै लेसी[6]।" तरै गैचंद इण ऊपर फौज मेली। वाघनू मारियो। घणा सांखला मारिया। मुंहतो सुगणो ऊवरियो[7]। वैरसी वाघावत पेट हुतो,[8] सु मुहतो सुगणो इणरी मानू लेनै अजमेर गयो। उठै गया पछै वैरसी वेगोहो जायो[9]। मोटो हुवो। अजमेर धणी था तिणनू मु॥ सुगणो वैरसीनू लेजाय मिळियो। घणा दिन चाकरी की। पछै मुजरो हुवो तरै कह्यो–"जांणै सो माग[10]।" तरै इण कह्यो–"म्हारो वाप गैचद विना खून[11] मारियो छै, तिणरी ऊपर करो[12], फौज दो। तरै फौज उणै[13] दी। तरै वैरसी मालाजीरी इंछना मनमे

1 जिसके बाद। 2 सांखला-वाघ, जिसकी औलादके सांखले हुए। 3 पहाड़। 4 बहकाया। 5 इसकी ऐसी हालत दीखती है। 6 तुमको मार करके तुम्हारी धरती ये ले लेंगे। 7 बच गया। 8 वाघावा बेटा वैरसी उस समय गर्भमें था। 9 वहां जानेके बाद जल्दी ही वैरसीका जन्म हो गया। 10 तेरी इच्छा हो सो माग। 11 अपराध। 12 उसके लिये सहायता करो। 13 उसने।

करी[1]–"म्हारै बापरो वैर वळै,[2] । गैचंद हाथ आवै तो हूं कँवळ-पूजा करनैं श्री सचियायजीनूं माथो चढ़ाऊं।" पछै सचियायजी आय सुपनैंमे हुकम दियो. वांसै[3] हाथ दिया नै कह्यो–"काळै वागै, काळी टोपी, वैहलरै[4] काळी खोळी, काळा बळद जोतरियां,[5] जिदारै[6] रूप कियां साम्हां मिळसी । स्रो गैचंद छै, तू मत चूकै; कूट मारै ।" पछै वैरसी मूंधियाड़ ऊपर फौज लेनै दोडियो । साम्हां उण रूप आयो, सु गैचंद मारियो । पछै ओसियां जात आयो[7] । आप एकंत देहुरो जडनैं कँवळपूजा करणी मांडी[8]। तरै[9] देवीजी हाथ झालियो,[10] कह्यो–"म्हे थांरी सेवा-पूजासौं[11] राजी हुवा; तोनै माथो बगसियो; तूं सोनारो माथो कर चाढ़ ।" आपरै हाथरो संख वैरसीनू दियो, कह्यो–"ओ संख वजायनैं सांखलो कहाय[12] ।"

पछै वैरसी आय रूंणवाय वसियो । मूंधियाड़रो कोट पड़िहारांरो उपाड़नैं सांखलै रूंणकोट करायो[13] ।

पीढियांरी विगत—

१ सांखलो वैरसी वाघरो ।
२ रांणो राजपाळ ।
३ छोहिल राजपाळरो ।
३ महिपाळ राजपाळरो । तिणरै वासला[14] जांगळवा ।
३ तेजपाळ राजपाळरो । तिणरै वेटा–
४ भोहो । जिण भोहारै बेटा–
५ उदग वडो रजपूत हुवो। राजा प्रथ्वीराज चहुवांणरा चाकर सांवतांमें[15] हुवो । मेड़तो पटै हुतो ।
५ देवराज भोहारो ।

---

1 तब वैरसीने अपने मनमें सचियाय माताजीका ध्यान करके अपनी इच्छा प्रकट की । 2 मेरे बापका वैर निकले । 3 पीछे । 4 बहलके । 5 काले बैल जुते हुए । 6 जिसका । 7 बादमे ओसियाकी यात्रा करनेको आया । 8 मंदिरको बंद करके एकान्तमे कमल पूजा करनी शुरू की । 9 तब । 10 पकड़ा । 11 से । 12 यह शंख बजा और सांखला प्रसिद्ध हो । 13 पड़िहारोंके अधीनस्थ मूंधियाड गांवका कोट गिरवा कर सांखलोने उससे रूणवायमे रूणकोट बनवाया । 14 पिछले वंशज । 15 सामंतोंमे ।

सांखलो छोहिल राजपाळोत । तिणरै वांसला रूग्णेचा[1] आंक ३ ।

४ पालणसी छोहिलरो । पातसाह आयो थो,[2]
५ मेहदो । तिणसू[3] लडाई हुई ।
६ हंसपाळ । पातसाह भागो । नगारा
७ सोढल । नीसांण पड़ाय लिया[4] ।
८ वीरम । तिणसू सांखला नादेत-
९ चाचग ऊपर मांडवरो नीसाणोत कहावै छै[5] ।

माखला चाचग वीरमोतरो परवार, आंक ९ ।

१० राणो सीहड़ चाचगोत[6] । निपट वडो रजपूत हूवो । तिणरै पंगळी बेटी हुई । तिणरै पेट धारू आनळोत वडो रजपूत हुवो[7] ।

कवित्त सीहडरो मेरसू मांमलो[8] कियो तिण साखरो[9]—

कांणजो कोपियो, लूस, अमणेर लियंतो ।
क्षुजडा[10]हथो दुभाळ,[11]रोस रोहिसै रत्तो ।।
वाळ जाळ बोरबौ. भरम पहाडां भग्गो ।
मचकोडै मेवडो, वळै वधनोर विलग्गो ।।
वधनोर गाज[12]आडोवळो, तोडै जडा तिलायली ।
साखलै रांण मुजडा[13]हथै, भांजी[14]सीहड भायली ।।

सीहडरा बेटा—

११ सालो सीहडरो । ११ लूणकरण ।
११ वछो सीहडरो । ११ रतनसी ।
११ हसो । ११ सुरजन ।
११ जैंतकरण । ११ देवराज ।

---

1 जिसके पीछे वाले रूग्णेचा कहलाते हैं । 2 चाचगके ऊपर माडवका बादशाह चढ कर आया था । 3 जिससे । 4 नगारे और निशान खोस लिये । 5 इसलिये माखले नादेत-नीसाणेत कहलाते है । 6 राणा सीहड चाचगका पुत्र । 7 जिसकी कोखसे आनलका पुत्र धारू बडा राजपूत हुआ । 8 युद्ध । 9 उसकी साक्षीका । 10 कटारे । 11 बडा वीर । 12 नाश करके । 13 कटारे । 14 तोड दी ।

११ कूभो ।
११ नाल्हो ।
११ विजो ।
११ मांडण ।

साले सीहडोतरो परवार, आंक ११ ।

१२ ऊधी सालारो, तिणरो परवार पीपाड़[1] ।
१३ मोटल ।
१४ भांण ।
१५ अखो ।
१६ सातल ।
१७ लखमण ।
१८ मांनो ।
१९ हदो । रा॥ प्रथीराजरै परधान ।
२० वलू ।
२१ वैरसल ।
१२ भोजराज सालारो । तिणरै वांसला खीवसरी तरफ[2] ।
१३ जैतसी रांणो ।
१४ रांणो मांडो जैतसीरो ।
१५ रांणो वीरनरसिंघ ।
१६ तेजसी ।
१७ रायपाळ ।
१८ अखो ।
१९ वीरमदे ।
२० कूंभो, हरदास महेसदासोतरै चाकर । भलो रजपूत थो ।
२१ गोवरधन ।

मांखलो वल्लू सीहडोत, आंक ११ ।

१२ देलो ।
१३ चूडराव ।
१४ मेहो ।
१५ काधळ ।
१६ जोधो ।
१४ सोम चूडावत ।
१५ अमरसी सोमावत । घणी आखड़ी वहतो[3] ।
१६ भीव ।
१७ वैरो ।
१८ खीदो ।
१९ हमीर ।
१९ करमसी ।
१९ नगराज ।
१७ कलो ।
१८ वीदो ।

---

1 सालाका पुत्र ऊदा, इसका परिवार पीपाडमे है । 2 सालाका पुत्र भोजराज, इसके वंशज खीवसरकी ओर हैं । 3 सोमाका पुत्र अमरसी, यह बहुत नियमोंका पालन कर अपना जीवन व्यतीत करता था ।

१९ मेंदो, रांणा उदैसिंघरै चाकर थो, गांव ८४। तांणो सोळंकी मलावाळो जागीरमें दियो थो[1]।
२१ डूंगरसी।
२१ तेजसीरा बेटा मेवाड़।
२२ दयाळदास। रु० १००००)रो पटो पावै।
२२ राजसी। रु.१००००)रो पटो पावै। वडो इतबारी रांणै जगत-सिंघजीरै हुवो[2]। रांणो मोकल रांणा राजपाळरै परणियो थो। तिणरो दोहितो रांणो कूंभो हुवो नै इणांरो दादो सांखलो करमसी वडो हर-भगत हुवो[3]। सु मेवाड़ इण परसग श्रै सांखला नै धधवाडिया चारण सांखलांरा उठै गया सु तिण दिनरा छै[4]।

सांखला सीहड़ रूणेचारा पोतरा ढूंढ़ाड़ कछवाहांरै चाकर,[5] आंक १०।

११ उदग।
१२ गजसी।
१३ मेहो।
१४ पूरो।
१५ वळकरन पूरारो। वडो रजपूत हुवो। राजा मांनसिंघरै चाकर थो। राजा मानसिंघरै नागोर हुई तद गांव ८४सू रूंण पटै दी थी।
१६ सांवळदास वळकरनरो।
१७ मनोहरदास। राजा गजसिंघजीरै जोधपुर वास वसियो[6]।
१८ स्यांमसिंघ मनोहर-दासरो।

सांखलो रतन सीहडोतरा रूणेचा जोधपुर चाकर,[7] आंक ११।

---

1 सोलंकी मल्लेवाला ताणा गांव भी जागीरमें दिया गया था। 2 राणा जगतसिंहके पास बड़ा विश्वासपात्र था। 3 राणा मोकल राजपालके यहां ब्याहा था, इसका दोहिता राणा कुंभा हुआ और इनका दादा सांखला करमसी बड़ा हरिभक्त हुआ। 4 इस प्रसंगसे ये सांखले और इन सांखलोंके धधवाडिया चारण मेवाडमें चले गये, उस दिनसे वे वहां हैं। 5 सांखला सीहड़ रूणेचाके पोते ढूंढाडमें कछवाहोंके चाकर हैं। 6 मनोहरदास, जोधपुरमें राजा गजसिंहजीके यहां जाकर बस गया। 7 सीहड़ रूणेचाका बेटा सांखला रतन जोधपुरमें चाकर है।

१२ महदसी ।
१३ आसल ।
१४ जगो ।
१५ बापो ।
१६ नरसिंघ ।
१७ गांगो ।
१८ रतनो ।
१९ करण ।
२० ऊदो ।
२१ सुंदर ।
१८ खीदो वैरारो । वैरो, भीव, अमर, सोमो, चूडराव, देल्हो, वछु रांगा सीहडरो । पाछलै पांनै वंसावळी छै[1] ।
१९ हमीर खींदावत ।
२० सावळदास हमीरोत ।
२१ आसो सांवळदासोत ।
२२ रामसिंघ आसावत ।
२३ कूभो । २३ गोरधन ।
२४ कचरो ।
२२ रूपसी आसावत ।
२३ मनोहर ।
२४ सादूळ ।
२३ दूदो ।
२४ राजसी ।
२३ कल्यांणदास ।
२२ सूजो । आसावत । रा॥ उदैसिंघ गोपाळदासोतरै वास । उजेण कांम आयो ।
२० दुरगो हमीररो ।
२१ नरहरदास दुरगावत ।
२३ गिरधर ।
२४ गोकळ । २४ आसो । २४ माधो ।
२३ चतुरभुज ।
२४ करन ।
२३ सुंदरदास ।
२१ सुरतांण दुरगावत ।
२२ खीवसी । गोपाळदासरै वास । मेरियोवास पटै[2]।
२३ खेतसी ।
२० भांनीदास हमीररो ।
२१ नारणदास । तोसीणो पटै।
२२ कल्यांणदास । रा॥ गिरधरदास साथै कांम आयो ।
२३ जगनाथ । २३ जगमाल । २३ कमो ।
२३ कचरो ।

---

1 इनकी वंशावली पिछले पन्नेमे है । 2 खीवसीका निवास गोपालदासके यहां और मेरियोवास गांव पट्टेमें ।

सांखला जांगलवा

१ वैरसी वाघरो । ओ सांखलो हुवो ।
२ रांणो राजपाळ वैरसीरो।
३ महिपाळ राजपाळरो ।
४ रायसी महिपाळरो ।

वात रायसी महिपाळोतरी

रायसी महिपाळोत रूण छाडिनै नीसरियो जांगळू[1] । चा।। प्रथीराजरी बैर[2] अजादे दहियांणी आ ठोड वसाई थी[3] तठै आंण गूढो करनै रयो[4] । ऊपर बरसात आयो, तरै क्यू ढाक-पळासियारा आसरा किया छै[5] । सु उठै जांगळूरा कोट नजीक गूढो छै तठै रहै छै, नै रूणरा विगाडनू दोडै छै[6] । नै अठै सांखलांरी वैरां[7] पांणीनै जाय सु दहियारा कँवर ४० तथा ५० भेळा हुवा फिरै छै । तिके बेहड़ानूं गिलोला वाहै छै,[8] सासता[9] बेहड़ा फोड़ै छै । बेर सखरी[10] देखै तिका वे कपूत कँवर थोकारै छै[11] । अे कहै छै[12]–"हूँ आ लेईस,[13] हूँ आ लेईस ।" सु गूढारा लोग सारी वात सांखला रायसीनू जाय कहै छै । सु रायसी राहवेधी[14] छै । रायसी धरती लेण ऊपर निजर राखै छै। सु सारा आपरा लोगानू कहै छै–"आपणो इसड़ोइज समै छै,[15] दाव देख चालणो[16] ।" तिण समै जांगळू माहै बांभण[17] एक केसो उपाधियो रहै छै सु तळाई जांगळूरी प्रोळरै मुहडै आगै करावण मतै छै[18]। सु ओ सदा दहियांनू कहै छै–"कहो तो हूं अठै तळाई कराऊं" सु दहिया करण न दे छै । सु ओ गाढो[19] दिलगीर छै, नै राहवेधी

---

1 महिपालका बेटा रायसी रूण छोड करके जांगलूको निकल गया । 2 स्त्री,पत्नी । 3 यह स्थान आबाद किया था । 4 वहां आकर गूढा (गुप्त स्थान) बना कर रहा । 5 वर्षा आई तब ढाक-पलास आदिके झोपडे बना लिये हैं । 6 और वहांसे रूणमें लूट-खसोट करने व डाके डालनेको जाते हैं । 7 स्त्रियें । 8 जो घडोंको गुलेलें मारते है । 9 निरंतर । 10 सुंदर । 11 अपनी (स्त्री) बनानेकी नीच कामना करते है । 12 ये कहते हैं । 13 मैं यह लूंगा । 14 दूरदर्शी । 15 अपना समय ऐसा ही है । 16 अवसर देख कर चलना । 17 ब्राह्मण । 18 जांगलूकी पोलके ठीक सामने ही एक तलाई करानेका विचार करता है । 19 अत्यंत ।

आदमी छै । पछै सांखलै दहियां सिरदारांनूं भायां-वेटां सारांनूं नाळेर ४० तथा ५० सांवठा दिया[1] । एक साहो थापियो[2] । पछै वे परणी-जण आया, मु जीमण[3] मांहै दारूमे[4] धतूरो घातनै[5] पायो, मु सारा वेमुध किया । पछै हेठा[6] पड़िया, तरै कूट मारिया । नै केसो उपाधियो ही साथै तो[7] इणनू ही मारण लागा । तरै इण कह्यो–"मोनूं मत मारो[8] । मनै उवारो, हूं थांहरै भलै कांम आडो आईस[9] ।" तरै इणा कह्यो–"म्हे थनै उवारियो, पिण तू किसै[10] कांम आईस, तिका वात म्हांनू[11] कहै ।" तरै इण कह्यो–"अै तो थे मारिया[12] पिण कोट किण भात लेस्यो ?" तरै इण सांखलै दीठो,[13] वांभण साची वात कही; तरै इणनू घणो हित कर पूछियो; तरै इण कह्यो–"मोनू थे गुरपदो[14] दो नै मोनू थे कोट आगै तळाई करण देज्यो ।" तरै सांखले केसै उपाधियै वात कही सु कबूल करी । इणसू सौस-सपत किया;[15] तरै केसै कह्यो–"हमै ढीलरो कांम नही[16]।" कह्यो–" रात थकी सेजवाळा[17] ५० तथा ६० छै मु वेगा जोतरो[18] । मांहै पाच-पांच रजपूत वैसो[19] । हूं किंवाड खोलाड देईस[20] ।" तरै सेजवाळा जूता, तरै केसै उपादियै प्रोळरै मूहडै आयनै प्रोळियारो नांव ले जगायो । कह्यो–"मोहरतरी वेळा टळी जाय छै,[21] प्रोळ खोलो, सेजवाळा वारणै ऊभा छै[22] ।" तरै उणै प्रोळ खोली । सेजवाळा सोह[23] मांहे आया । तरै रावळा वैहली माहिथा[24] कूद-कूद जीनसालीया उतरिया । दहियारा जिकै कोट मांहै हुता सु सोह कूट मारिया । सांखला राणा रायसीरी जागळूमे आण फिरी[25] । रायसी इण भांत जांगळू लीवी ।

---

1 पीछे साखलोने दहिया सरदारोको और उनके भाई-बेटे सबको एक साथ ४०-५० नारियल अपनी कन्याओंकी सगाई करनेके लिये दिये । 2 लग्नका दिन नक्की किया । 3 भोजन । 4 शराब । 5 डाल कर । 6 नीचे । 7 था । 8 मुझको मत मारो । 9 मैं तुम्हारे अच्छे काममे सहायक होऊगा । 10 कौनसे । 11 हमको । 12 इनको तो तुमने मार दिया । 13 देखा । 14 गुरुका पद । 15 इससे सौगद-शपथ लिये । 16 अब देरी करनेका काम नही । 17 महिलाओंकी वाहक गाडिया । 18 जल्दी जोत दो । 19 बैठ जाओ । 20 दूगा । 21 मुहूर्त टला जा रहा है । 22 वाहन बाहिर खडे है । 23 सब । 24 से । 25 राणा रायसी साखलेकी जागलूमे आन-दुहाई फिर गई ।

सांखला जांगलवा

१ वेरसी वाघरो । ओ सांखलो हुवो ।
२ राणो राजपाळ वैरसीरो।
३ महिपाळ राजपाळरो ।
४ रायसी महिपाळरो ।

वात रायसी महिपालोतरी

रायसी महिपाळोत रूण छाडिनै नीसरियो जांगळू[1] । च।। प्रथीराजरी वैर[2] अजादे दहियांणी आ ठोड़ वसाई थी[3] तठै आंण गूढो करनै रयो[4] । ऊपर बरसात आयो, तरै क्यू ढाक-पळासियारा आसरा किया छै[5] । सु उठै जांगळूरा कोट नजीक गूढो छै तठै रहै छै, नै रूणरा विगाडनू दोडै छै[6] । नै अठै सांखलांरी वैरां[7] पांणीनै जाय सु दहियांरा कँवर ४० तथा ५० भेळा हुवा फिरै छै । तिके वेहड़ानूं गिलोलां वाहै छै,[8] सासता[9] वेहड़ा फोड़ै छै । वैर सखरी[10] देखै तिका वे कपूत कँवर थोकारै छै[11] । अै कहै छै[12]–"हूँ आ लेईस,[13] हूँ आ लेईस ।" सु गूढारा लोग सारी वात सांखला रायसीनू जाय कहै छै । सु रायसी राहवेधी[14] छै । रायसी धरती लेण ऊपर निजर राखै छै। सु सारा आपरा लोगानू कहै छै–"आपणो इसड़ोइज समै छै,[15] दाव देख चालणो[16] ।" तिण समै जांगळू माहै वांभण[17] एक केसो उपाधियो रहै छै सु तळाई जांगळूरी प्रोळरै मुहडै आगै करावण मतै छै[18]। सु ओ सदा दहियांनू कहै छै–"कहो तो हूं अठै तळाई कराऊं" सु दहिया करण न दे छै । सु ओ गाढो[19] दिलगीर छै, नै राहवेधी

---

1 महिपालका बेटा रायसी रूण छोड करके जांगलूको निकल गया । 2 स्त्री,पत्नी । 3 यह स्थान आबाद किया था । 4 वहां आकर गूढा (गुप्त स्थान) बना कर रहा । 5 वर्षा आई तब ढाक-पलास आदिके झोपडे बना लिये हैं । 6 और वहांसे रूणमें लूट-खसोट करने व डाके डालनेको जाते है । 7 स्त्रियें । 8 जो घडोंको गुलेलें मारते है । 9 निरंतर । 10 सुंदर । 11 अपनी (स्त्री) बनानेकी नीच कामना करते है । 12 ये कहते हैं । 13 मैं यह लूंगा । 14 दूरदर्शी । 15 अपना समय ऐसा ही है । 16 अवसर देख कर चलना । 17 ब्राह्मण । 18 जांगलूकी पोलके ठीक सामने ही एक तलाई करानेका विचार करता है । 19 अत्यंत ।

आदमी छै । पछै सांखलै दहियां सिरदारांनूं भायां-बेटां सारांनूं नाळेर ४० तथा ५० सांवठा दिया[1] । एक साहो थापियो[2] । पछै वे परणीजण आया, सु जीमण[3] मांहे दारूमे[4] धतूरो घातनै[5] पायो, सु सारा बेमुध किया । पछै हेठा[6] पड़िया, तरै कूट मारिया । नै केसो उपाधियो ही साथै तो[7] इणनूं ही मारण लागा । तरै इण कह्यो–"मोनूं मत मारो[8] । मनै उबारो, हूं थांहरै भलै कांम आडो आईस[9] ।" तरै इणां कह्यो–"म्हे थनै उबारियो, पिण तू किसै[10] कांम आईस, तिका वात म्हांनूं[11] कहै ।" तरै इण कह्यो–"श्रै तो थे मारिया[12] पिण कोट किण भांत लेस्यो ?" तरै इण सांखलै दीठो,[13] बांभण साची वात कही; तरै इणनूं घणो हित कर पूछियो; तरै इण कह्यो–"मोनूं थे गुरपदो[14] दो नै मोनूं थे कोट आगै तळाई करण देज्यो ।" तरै सांखलै केसै उपाधियै वात कही सु कबूल करी । इणसूं सौस-सपत किया;[15] तरै केसै कह्यो–"हमै ढीलरो कांम नही[16] ।" कह्यो–" रात थकी सेजवाळा[17] ५० तथा ६० छै सु वेगा जोतरो[18] । मांहै पांच-पांच रजपूत वैसो[19] । हूं किंवाड खोलाइ देईस[20] ।" तरै सेजवाळा जूता, तरै केसै उपाधियै प्रोळरै मूहडै आयनै प्रोळियारो नाव ले जगायो । कह्यो–"मोहरतरी वेळा टळी जाय छै,[21] प्रोळ खोलो, सेजवाळा वारणै ऊभा छै[22] ।" तरै उणै प्रोळ खोली । सेजवाळा सोह[23] मांहै आया । तरै रावळा वैहली मांहिथा[24] कूद-कूद जीनसालीया उतरिया । दहियारा जिकै कोट मांहै हुता सु सोह कूट मारिया । सांखला राणा रायमीरी जागळूमे आण फिरी[25] । रायसी इण भांत जांगळू लीवी ।

---

1 पीछे सांखलोंने दहिया सरदारोंको और उनके भाई-बेटे सबको एक साथ ४०-५० नारियल अपनी कन्याओंकी सगाई करनेके लिये दिये । 2 लग्नका दिन नक्की किया । 3 भोजन । 4 शराब । 5 डाल कर । 6 नीचे । 7 था । 8 मुझको मत मारो । 9 मैं तुम्हारे अच्छे काममें सहायक होऊंगा । 10 कौनसे । 11 हमको । 12 इनको तो तुमने मार दिया । 13 देखा । 14 गुरुका पद । 15 इससे सौगंद-शपथ लिये । 16 अब देरी करनेका काम नहीं । 17 महिलाओंकी वाहक गाडियां । 18 जल्दी जोत दो । 19 बैठ जाओ । 20 दूंगा । 21 मुहूर्त टला जा रहा है । 22 वाहन बाहिर खडे है । 23 सब । 24 से । 25 राणा रायसी सांखलेकी जागलूमे आन-दुहाई फिर गई ।

इतरी पीढी जांगळू सांखलारै रही[1]।

१ रांणो रायसी ।
२ रांणो ग्रणखमी ।
३ रांणो खीवसी ।
४ रांणो कंवरसी । जिको सोतमे वैरमे खरला रजपूतांरी बेटी ग्रांधी भारमल तोत कर परणाई[2] । मु कंवरसी हथळेवो जोड़ियो, तरै भारमलनू ग्राखै सूझण लागो[3] । खरलांरी ठाकुराई पैहली तद छोहलै रिणधीरसर कुवीरोह कहीजै तठै हुती[4] । पूगळसू कोस १०, विकुपुरथी कोस १५ ।
५ रांणो राजसी कवरसीरो ।
६ करमसी हर-भगत हुवो[5]।
६ मूजो ।
७ ऊदो मूजावत ।
८ जैसिंघदे । जैसळमेर गयो । उणरै वांसला सावै छै[6] ।
८ पुनपाळ जांगळू धणी ।
६ माणकराव पुनपाळरो ।
१० नापो मांणकरावरो । जागळू धणी । तद वलोचै जोर दवाया, तरै राव जोधा कनै[7] जोधपुर ग्रायनै कंवर बीकानू जांगळू ले जाय धणी कियो । साखला चाकर हुवा ।
६ राणो ग्रावो राजसीरो । कवरसी, खीवसी ग्राक १०, तिणनू मूजै राजसीयोत धावै मारनै जागळू लीवी ।
७ गोपाळदे बेटो हुतो, तिको जोयां कनै हुतो[8]। ग्राबानू मूजै मारियो तद मूजेरै बेटो गोपाळदेनू उदै मूजावत

---

1 साखलोंकी इतनी पीढ़ी जागलूमे रही । 2 राणा कुंवरसी, जिसको सौतके वैरके कारण खरला राजपूतोंकी भारमली नामकी एक ग्रंधी लडकी ब्याह दी गई । 3 सो कुंवरसीके पाणिग्रहण करते ही भारमलीको ग्रांखोंसे दिखने लग गया । 4 उन दिनोंमे खरलोंकी ठकुराई छोहले-रिणधीरसरमे थी जो ग्रब कुवीरोह कहा जाता है । 5 करमसी हरिभक्त हुग्रा । 6 उसके पीछेके वंशज सावामे हैं । 7 पास । 8 जो जाईया राजपूतोंके पास था ।

उठै मारियो ।* ऊदैरी वैर मांगळियाणीनू आधांन[1] थो, सु धरमो वीठू इणांरो चारण ले नाठो पीहर[2] । मांगळियाणी कीलू करणोतरी वेटी हुती, मु एकण-पग खीवसर आयो[3] । उठै मांगळियांणी मैहराज जायो[4] ।

८ खीवो जसहड़रो ।

८ वीरम खावड़ियांणीरो ।

८ मैहराज मांगळियांणीरो । तठा पछै[5] मैहराज वरस १४ तथा १५ रो हुवो, तरै आपरा भाई रजपूत भेळा करनै जांगळू ऊपर गयो[6] । सु मूजा ऊदानै मारनै ढाकसरीरा कोहर मांहै नांखियो[7] । घणो साथ मूजै ऊदारो मारियो । घणो लोही वुहो[8] । लोहीरा वाहळा प्रोळरै बारै तांई आया[9] । पैहली दहिया मारिया था तदही[10] प्रोळ वारै लोही आयो तो[11] । सु मैहराज ऊजळ खत्री हुतो । इण जांगळू आदरी नहीं[12]; नै माणकरावरा वेटा जांगळू वसिया; नै मैहराज गोपाळदेरो पीहलाप, जोगीरा तळावथी कोस २ ऊगवणनू[13] छै, चूडासरसू कोस १, तठै वसियो, तठै मैहराजरा कराया तळाव ३ छै[14] ।

१ महिराजाणो तळाव ।

२ लूभासर तळाव ।

१ हरभूसर तळाव ।

केहेक[15] दिन सांखलो मैहराज पीहलाप रह्यो । पछै नागोररै गाव भूंडेल राव चूडासू मिळनै वसियो । गोगादेजी दलो जोईयो

1 गभ । 2 सो इनका चारण धरमा वीठू उसको लेकर उसके पीहर भाग गया । 3 वह बिना कहीं विश्राम लिये खीवसर आया । एकण-पग=१ बिना विश्राम, २ लगडा । 4 वहा मागलियाणीने मेहराजको जन्म दिया । 5 जिसके बाद । 6 जागलू पर चढ कर गया । 7 मूजा और ऊदाको मार करके ढाकसरीके एक कुंएमें डाल दिया । 8 बहुत रक्त बहा । 9 रक्तका प्रवाह पोलके बाहिर आया । 10 तब भी । 11 था । 12 इसने जागलूमें रहना स्वीकार नही किया । 13 पूर्व दिशा । 14 वहा मेहराजके कराये हुए तीन तालाब हैं । 15 कई एक ।

* यहा ऊदा नही, गोपाल्दे होना चाहिये ।

मारियो तद मैंहराजरो वेटो आलणसी साथै हुतो[1] । गोगादेजीरै पछै गोगादेजीनूं पद्रोलाई तळाई माथै[2] जोईयो धीरदे नै पूंगळरो राव राणगदे पोहता[3] । तठै आलणसी गोगादेजी साथै कांम आयो ।

मैंहराज गोपाळदेओतरा वेटा, आंक १२—

१३ हरभू पीर । तिणरा पोतरा वैहगटी[4] ।

१३ आल्हणसी रा।। गोगादेजी साथै कांम आयो ।

१३ लूभारा पोतरा मारवाड मांहै चीधड़सा[5] छै ।

१३ कूभो ।

१३ जोधो । तिणरा वांसला वैहगटी छै । मदा कहावै छै[6] ।

१३ रिणधीर ।

वात

राव चूडो वीरमोत मंडोवर घणो तपियो[7] । पछै तुरकांनूं मारनै नागोर लियो । पछै आप नागोर हीज राजथान कर रह्या छै । तिण दिन[8] सां।। मैंहराज गोपाळदेरो नागोर गाव भूडेल रहै छै, सु एक दिन राव अरड़कमल चूडावत सिकार रमण आयो हुतो, सु मैंहराजरै गाव उतरियो[9], सु मैंहराज गोठ की छै[10] । तठै मैंहराजनूं खबर छै, भाटी सादो रांणगदेवोत ओडीट मोहिलांरै परणीजसी[11], सु आ वात अरडकमल जाणै न छै; सु मैंहराजरा मुहडा मांहिसूं नीसर गयो[12]—

"वाभण पूत न वीसरै, ज्यूं विसहर काळै[13] ।
आल्हणसीह न वीसरै, मैंहराज मूछाळै[14] ।। १ ।।

तरै अरडकमलजी पूछियो—"थे मैंहराज सांखला कासूं कह्यो ?"

---

1 था । 2 ऊपर । 3 पहुंचे । 4 हरभू पीर, जिसके पोते बहेगटीमे रहते है । 5 अधिक अर्फीमके व्यसनी होनेसे असमर्थ अवस्था जैसे । 6 जोधाके वशज बहेगटीमे रहते हैं और मदा कहाते है । 7 वीरमके वेटे चूडेने मडोरमे बहुत दिन शासन किया । 8 उन दिनोमे । 9 ठहरा । 10 मेहराजने दावत दी है । 11 राणगदेवका बेटा सादा ओडीट मोहिलोके यहा व्याहेगा । 12 मेहराजके मुहमे निकल गया । 13 काला सांप । 14 वीर ।

तरै मेंहराज कह्यो—"कुही कहां नी[1]" तरै वळै अरडकमलजी हठ कर पूछियो, तरै मेंहराज कह्यो "थे ठाकुर; थांनै को आपरो दावो चीतां न आवै[2]; नै म्हे धररा धणी; म्हांरा पेट छोटा सु वात एक चीता आई[3]।" तरै अरड़कमलजी कह्यो—"किसी वात[4] ?" तरै मेंहराज कह्यो—"रा॥ गोगादे वीरमोत मारियो, तद राव राणंगदे विसीठगारी गोगादेजीसू कीवी थी[5], तद गोगादेजी कह्यो हुतो—"म्हारो दावो जोईयासू को नही;[6] म्हारा तीन सरदार पडिया; जोईयांरा सात सिरदार पड़िया; म्हारो कोई राठोड़ वैर मांगै तो राव रांणगदे कनै मांगज्यो। तद म्हारो बेटो आल्हणसी गोगादेजीरै साथै कांम आयो तो मू वा वात मोनूं याद आवै छै।" तरै अरड़कमल कह्यो—"तिका वात हमार क्यू चीत आई ? वे कठै हुवै[7]?" तरै मेंहराज कह्यो–"राव रांणगदेरो बेटो टीकाइत सादो ओडीट मोहिलांरै दिनां २ दोयनै परणीजसी।" तरै अरडकमल हेरू[8] मेलिया, नै आप असवार २००सू चढ खड़िया[9]। वीच नाहरां ४ चाररो सवण[10] हुवो। आ वात घणी छै. सु अरडकमलरी वात मांहै लिखी छै[11]। पछै सवण बोलावणनूं कूवौरै गैहलोत गोदारै गया नै उठै हेरू पाछो आयो, तरै अरडकमल चढ खडिया। सादो परणीजणनै चढ़ियो[12]। वांसासू[13] अरडकमलजी गाव आधीसर जसरासर नागोर बोकानेर वीच आपड़िया[14]। तठै एक वार सादो मोर घोड़ारो पराक्रम दिखावण वास्तै घोड़ो दोड़ाय नीसर गयो[15]। पछै पाछो फिर आयनै सादो कांम आयो। जेठी पाहू राव रांणगदेरै वडो रजपूत थो सु जुदो चालियो जातो थो सु तिणनू ईदा ऊगमडारा बेटा २ दोय आपडिया, तिणनै मारनै नीसरियो। सादा मारियारी खबर जेठी पाहूनू न हुई। पछै जेठी पूगळ गयो, तरै राव

---

1 कुछ भी नही कहना। 2 तुमको तो कोई अपना दावा (वैरका बदला) लेना नही आता। 3 हमारे छोटे पेटमे यह एक वात याद आ गई। 4 कौनसी वात ? 5 उस समय राव राणगदेवने गोगादेजीकी अप्रतिष्ठा की थी। 6 जोईयोंमे मेरा कोई दावा नही रहा। 7 वह वात इस समय क्यो याद आ गई और वे कहा है ? 8 गुप्तचर। 9 और खुद २०० सवारोके साथ चढ कर चल दिये। 10 शकुन। 11 यह प्रसग बडा है सो अरडकमलकी वातमे लिखा है। 12 सादा विवाह करनेको रवाना हुआ। 13 पीछेसे। 14 पीछे भाग कर पकड लिया। 15 निकल गया।

रांणगदे घणा ओळंभा[1] दिया । पछै सांखलो मैराज भूंडेल रहतो । राव चूडारी थाट[2] पण भूंडेल रहती । सु मैहराज वडो सवणी[3] । आगै खवर हुवै;[4] तरै हाथ आवै नहीं । पछै भाटियां कनै कोहेक[5] मैहराजरो चाकर राखसियो रजपूत गयो, तिण कह्यो– " हूं मैराजनूं मराइस[6] हेवै कटक खाचियो[7] । राव राणगदे नै पाहू जेठी छै । डेरो हुवै तठै आडो खाई खिणनै पाणीसूं भरैसूं सवण[8] बोलै । कहे–"आडा वाहण कनारै घोड़ा छै । पछै इण भांत करनै कटक आयो । सांखलै मैंहराजरै कटक देठाळै हुवो,[9] तरै बेटो काढियो । घोड़ी लांप चाढनै राखसियै सोमैनूं नागोर राव चूडा कनै बोलाऊ मेलियो थो[10] जु "मांहरी मदत करो ।" सोनातरा दैणां कबूल किया । इण भात करनै सोमै राखसियां रावजी चूडाजीनूं वाहर चाढिया । नागोरसूं कोस २० जाभवा घोड़ैरो गुढो हुतो, सु रावजी लूटण लागा; तरै इण कह्यो–"माहरो गुढो न लूटो तो म्है राव रांणगदे वतावां, रांणगदेनै माराऊँ[11] । पछै जांभरो गुढो न लूटियो । जाभ आगै करनै खडिया[12] । राव रांणगदे कोसै १० उठाथी[13] उतरियो थो तठाथी[14] पाखती खडनै[15] सामा घोड़ा जाकझोलनै आया[16] । राव राणगदे जाणियो––सोवत[17] आवै छै । नैड़ा आयनै घोडै चढिया नै कह्यो–"राव रांणगदे ! राव गोगादे मांगू[18] ।" इतरो कहिनै रांणगदेनै पाहू जेठी नै रावजी श्री चूडाजी मारियो । नै साखला मैराजनूं तो पैहलांई भाटी रांणगदे मारनै नीसरियो हुतो[19] ।

तठा पछै मैहराजरो बेटो हरभम भूंडेलसूं छाडनै फळौधीरै गाव चाखू, तिणसूं कोस ३, गाव सिरड़था[20] कोस ५ हरभमजाळ छै, तठै आण गाडा छोडिया[21] । तठै रांमदे पीर नै हरभमरै परसंग

---

1 उपालभ । 2 सेना । 3 शकुनी । 4 पहिलेसे मालूम हो जावे । 5 कोई एक । 6 मै मेहराजको मरवा दूगा । 7 उन्होने कटक चलाया । 8 शकुन । 9 साखले मेहराजको कटक दिखाई दिया । 10 राव चूडाके पास दूत भेजा था । 11 राणगदेको मरवा दू । 12 जाभको आगे करके चले । 13 जहामे । 14 वहामे । 15 पासमे चला कर । 16 तेजीमे आये । 17 घोडोका काफिला । 18 राव गोगादेका वैर मागता हूँ । 19 निकल गया था । 20 से । 21 वहा आकरके गाडोको छोडा ।

हुवो[1]। जोगी बाळनाथ रांमदे पीररै माथै हाथ दिया था। तिण ही[2] हरभम सांखलै माथै हाथ दिया। हरभम हथियार छोड़नै इण राहमें हुवो[3]। पछै लोलटै आय रह्यो। तठा पछै कितरेहेक दिने राव जोधाजी विखा[4] मांहै आया। सांखलै हरभम जीमाया नै आ दवा दी[5]–"इण मूंगां पेट मांहै थकां जितरी भूं घोड़ो फेरीस तितरी धरती थारा बेटा पोतरा भोगवसी[6]। पछै राव जोधैरै धरती हाथ आई। पछै राव जोधै हरभमनूं वैहगटी सांसण कर दीनी[7]। तिण वैहगटीमें हमै ही हरभमरा पोतरा रहै छै[8]।

सांखला मेहराज गोपाळदेओतरो परवार, आंक १२।

१३ हरभम पीर वडी करामातरो धणी हुवो। पीर रांमदे देहुरै गोर[9] ली, तरै कह्यो–"गोर १ म्हांरी गोररी पाखती[10] सांखला हरभमरै वास्तै संवार राखो[11]। आजथी दिनां ८ हरभमटी आइनै गोर लेसी[12]। पछै हरभू आय उठै गार लो।

१४ चूडो हरभमरो।

१५ पूजो। १५ कोजो। १५ बोजो।

पूजारो परवार—

१६ सीवो।

१७ रावत रायपाळ समत १६३५ विखा मांहै खड़चर थको विकू कोहर करमसियोत मारियो।

१८ ईसर।	१८ मेहाजळ। १८ ऊदो।
१९ सारग।	१९ रामदास मेहाजळोत।
२० उधरण वैहगटी।	१९ जगहथ।
१७ डूगर सिवारो।	१७ चाचो सिवारो।
१७ तोगो सिवारो।	१८ नेतो।

1 वहा रामदेव पीर और हरभमके मुलाकात हुई। 2 उसने ही। 3 हरभम शस्त्रोंको त्याग कर भक्तिकी ओर प्रेरित हुआ। 4 विपत्ति। 5 सांखले हरभमने उन्हे भोजन करवाया और दुआ दी। 6 इन मूगोंके पेटमे रहते जितनी दूरी तक घोडा चला सकेगा उतनी धरती तेरे बेटे-पोते भोगेंगे। 7 फिर राव जोधेने वहेंगटी गाव हरभमको शासनमे दिया। 8 उस वहेंगटीमे अब भी हरभमके पोते रहते हैं। 9 समाधि। 10 पासमे। 11 तैयार करके रखो। 12 आजसे ८ दिन बाद हरभम भी आकर समाधि लेगा।

१९ रांणो । १९ खेतसी ।

१९ दांमो । १९ दलो ।

१६ जांझण पूजारो ।

१७ कांन्हो ।

१८ गोपाळ । १८ करन ।

१८ हरि ।

१७ किसनो जाझणरो ।

१८ खंघारो । १८ राघो ।

१८ जैमल ।

१४ माडो हरभमरो टीकाई हुतो सु बूढो हुवो तरै आपरा भाई चूडानू आप टीको दियो[1] ।

१६ रायमल ।

१५ अभीहड ।

१७ जैमल, वेहगटी ।

१८ लालो ।

१९ वस्तो । १९ आणंद ।

१९ रिणमल ।

१४ सोभ हरभमरो ।

१५ जालाप ।

१६ तेजो ।

१७ देईदास । १७ खेतो वेंहगटी ।

पूजो राजारो । राजो, कँवरसी, खीवसी, अणखसी, मूजो, आंक ६—

७ ऊदो जांगळू धणी हुतो । तिणनू माखलै मेहराज मारियो ।

८ जैसिघदे । इणरी बहन रावळ करण जैसळमेररो धणी परणियो हुतो[2] । पछै इणरो बेटो खेतसी उठै गयो तरै गांव १ सावो दियो छो,[3] तठै हमै रहै छै[4] जैसळमेरसू कोस १२ ।

९ मोजदे ।

१० वेगू ।

११ सूरो । ११ वीरम ।

११ जैतकरण ।

जैतकरण, आक ११—

१२ दुसाझ ।

१३ सहसमल ।

१४ खेतो ।

१५ जैतो ।

१६ वैरसल ।

---

1 हरभमका बेटा गद्दी पर था सो जब वह बुड्ढा हुआ तो अपने भाई चूंडाको अपने हाथसे टीका दे दिया । 2 इसकी बहिन जैसलमेरके स्वामी रावल करनसे ब्याही थी । 3 था । 4 जहां अब रहता है ।

जैतो खेतारो, आंक १५—

१६ वैरसल ।
१७ दूदो ।
१८ जोगी ।
१७ गंगादास ।
१८ चांपो । १८ जेठो ।
१८ गोपो ।
१६ अखैराज ।
१७ कांन्ह । १७ लालो ।

१८ भोजराज ।
१६ जीवो ।
१७ करण ।
१८ मेहो । १८ राजो ।
८ पुनपाळ । श्री जांगळू धणी ।
६ मांणकराव ।
१० नापो ।

इतरी पीढी सांखलांरै रही । पछै राव चूडा ऊपर राव केलण रांणगदेरै वैर मुलतांणसू फौज ले आयो हुतो[1] । राव चूडो मारियो । तिण दावै सांखलो देवराज पण इण फौज मांहे हुतो । तिण वास्तै राव कांन्हो चूडावत जांगळू ऊपर आयो, तद इतरा सांखला कांम आया—

साखरो दूहो—

'सधर हुवा भड़ सांखला, ग्यो भाजै[2] भ्राझाळ[3] ।
वीर रतन ऊदो विजो, वच्छो नै पुनपाळ ॥१"

वात

जागळवां सांखलारै वारहठो वीठू चारण,[4] नै रूणोचा सांखलांरै चारण धधवाडिया अनै[5] जागळवारै बाभण उपाधिया, कूभार गिरधर, सूत्रधार चोहिल ।

नापो सांखलो मांणकरावरो बेटो राव जोधाजी कनै जायनै वीकाजी जोधावतनू ले आयो । जांगळू राठोड़ धणी हुवा, नै सांखला वडा इतवारी चाकर हुवा । गढरी कूची सदा सांखला नापारा पोतरारै हवाले हुवै छै[6] ।

---

1 आया था । 2 भाग गया । 3 बहादुर । 4 जांगलवा सांखलोंके बारहटका पद वीठू चारणोंको । 5 और । 6 गढकी चाबी हमेशा सांखला नापाके पोतोंके हवाले होती है।

१ नापो ।
२ रायपाळ ।
३ सुरजन ।
४ अखैराज ।
५ ईसरदास ।
६ गोयंददास । गढरी कूंची कनै[1] ।
६ रांमदास । ६ केसोदास । ६ नरसिंघदास ।

सांखलो महेस कलावत । बीकानेर भलो रजपूत हुवो । सुरताणीयं कंवर दलपत नै राजा रायसिंघरै साथ वेढ हुई तठै कांम आयो । तिणरै पीढियांरी खबर नही ।

सांखला नापारो कवित्त—

रवि अंगीरी रास सिंघ जाय कोरी सुत्तो ।
पडिया धोमारिख मास आसाढ निरत्तो ॥
ऊवांणो ईखियो इसो काकडा तणो उर ।
असुरां गुर नस्ट गोक आवियो सुरां गुर ॥
देहियै दीवारै दांन विध विरदे मोकळ राव दुवौ ।
तिण वार हुवौ नरपाळ तू मांणक रावउत माळवौ ॥१

जांगळवा पुनपाळरा पोतरा, अंक १—

२ सांडो ।
३ भोजो ।
४ अभो । चाटलौ पटै । कंवर भोपत मांडणोत साथै[2] ।
४ लूणो राव मांडणरै वास चाटलै कांम आयो[3] ।
४ भादो, लूणा साथै कांम आयो ।
४ तेजसी । रा॥ देवीदास जैतावत साथै मेड़तै कांम आयो ।
५ मांनसिंघ । ५ जोधो । ५ गोयंददास ।
३ कीतो सांडारो ।

इति सांखलांरी ख्यात संपूर्ण ।

---

1 गढकी चाबी इसके पासमें । 2 माडणके बेटे कुंवर भोपतके साथ प्रमावो चाटला गाव पट्टेमें । 3 लूणेका रहवास राव मांडणके यहा, चाटला गांवके युद्धमें काम आया ।

अथ सोढांरी ख्यात

पंवारांरी पैंतीस साख, तिणांमे[1] एक साख सोढांरी ।

१ धरणीवराह पंवारसू पीढी आगली सांखलांरै आद लिखी छै[2]—

२ छाहड धरणीवराहरो. तिणरै घरै अपछरा थी, तिणरै पेटरा बेटा दोय हुवा । तिणांरी[3] औलाद सोढा नै साखला ।

सोढांरी पीढी—

१ सोढो ।
२ चाचगदे ।
३ राजदे ।
४ जैमुख ।
५ जसहड़ ।
६ सोमेसर ।
८ धारावरीस ।
८ दुजणसाल । ८ आसराव ।
९ खीमरो ।
१० अवतारदे ।
११ थिरो ।
१२ हमीर ।
१३ वीसो ।
१४ तेजसी ।
१५ वीपो ।
१६ गागो ।
१७ पतो ।
१८ चंद्रसेण ।
१९ भोजराज ।
२० ईसरदास ।

७ धारावरीसरै दोय बेटा—
८ आसराव पारकररो धणी ।
८ दुजणसाल ऊमरकोट धणी ।
९ संग्रामसीरो परवार घणो छै ।
९ केलणरो परवार घणो छै ।
९ नांगड । ९ भांण ।
९ खीमरो दुजणसालरो ।
१० अवतारदे ।
१० घोघो । १० सतो ।

अवतारदे, आंक १०—

११ थिरो ।
११ कीतो जैसळमेर छै ।
११ गजूरा जैसळमेर छै ।
११ वीरधवळ ।

---

1 उनमे । 2 धरणीवराहसे पहलेकी पीढ़ियां साखलोंके प्रसंगमे लिखी हैं ।
3 उनकी ।

११ वीरमदेरा जोधपुर आंबेर छै[1]।

१२ हमीर थिरारो।

१३ वैरसी। १३ वरजांग

१३ वीसो। १३ ऊदो।

१२ रतो थिरारो।

सोढा हमीर थिरावतरो परवार, आंक १२—

वैरमी हमीरोतरो परवार, आंक १३—

१४ राजधर।

१५ देव।

१६ जोधो।

१७ रूपसी।

१८ कमो।

१९ रतनसी। इणरा बेटा आवेर चाकर छै।

२० सेरखांन मोरदो पटै, नरांणा कनै[2]।

२० सल्हैदी। २० हरीदास।

१५ गोयद राजधररो।

१६ गागो।

१७ सुरतांण।

१८ मुकंद।

१४ मांडण वैरसीरो।

१५ देवराज।

१६ कूभो।

१७ सिवराज।

१८ राणो रायमल कांगणी। खेतरो जूझार[3]।

१८ रतनसी सिवराजरो।

१८ कल्लो सिवराजरो।

१८ नैणसी सिवराजरो।

१८ मांणकराव सिवराजरो।

१९ ऊदो।

२० जोगीदास।

१९ वाघो।

१७ महिकरन कूभारो।

१८ भाखरसी।

१९ मांनसिंघ। १९ चापो। १९ रांमो।

२० महेस। २० राजधर। २० रायसिघ।

१८ सूजो महीकरणरो।

१९ राम।

११ गजू अवतारदेरो।

१२ मेळो गजूरो।

१३ डूगरसी मेळारो।

१४ खरहथ डूगरसीरो।

१५ सहसो खरहथरो।

१६ जोधो सहसारो।

१७ जोदो। १७ राजधर।

---

1 वीरमदेवके वंशज जोधपुर और आमेरमे हैं। 2 सेरखानको नरानाके पासवा मोरदा गाव पट्टेमे। 3 राणा रायमलका कागणीमे निवास। रणक्षेत्रका जूझार वीर।

१७ चांदराव ।
१७ मांडण ।
१८ जोगो मांडणरो ।
१८ जेठो मांडणरो । देवराजोतांमे वुडकियो कनोडियो वसायो[1] ।
१९ सामदास । १९ मांनो ।
१९ भांनो ।
१९ धनो ।
१९ मोहण ।
२० हरीदास ।
२० वैणो ।
१८ जैसो मांडणरो ।
१९ कचरो जाळीवाड़ पोकरणरो तथा द्रेग वसै छै[2] ।
२० मालण । २० आसो ।
२० सुंदर ।
१८ रांमो मांडणरो । द्रेग वसै छै ।
१९ वीरदास । १९ गोपो ।
सोभो ।

सोढो वीसो हमीररो, आंक १३ ।

कवित्त—सोढा तेजसी वीसावतरै वेटा १२ हुआ तिणांरो—

(१) देवीदास तुरंग सुपह (२) कांन्हो राजेसर
खड़गहथो[3] (३) खेतसी अनै (४) वळराज उनैकर ॥
(५) चांपो नै (६) रायमदन्न रूप रायां छळ राखण ।
(७) वीदो नै (८) सामंत वेर वडवार विचक्खण ॥
(९) महोकरण (१०) नरौ (११) रिणमल मुदै (१२) मेरो गुण सागर सुमत ।
तेगिया, तिलक[4] तेजळ[5] तवां[6] वारै वेटा विरदपत[7] ॥१॥

१३ वीसो हमीररो ।
१४ तेजसी वीसारो ।
१५ देवीदास । १५ कांन्हो ।
१५ खेतसी । १५ वळराज । १५ वीदो ।
१५ सांमत ।
१५ चांपो । १५ रायमल ।
१५ महीकरण । १५ नरो । १५ रिणमल ।
१५ मेरो ।

---

1 देवराजानोंमे वुडकिया कनोडियामे वसा । 2 कचरा पोकरनके जालीवाडा गावमें तथा द्रेग गावमे रहता है । 3 शस्त्रधारी । 4 वीर शिरोमणि । 5 सोढा तेजसी । 6 कहता हूं । 7 यशधारी ।

१५ कान्हो तेजसीरो ।
१६ वाघो । १६ चाचो ।
१६ वणवीर ।
१६ वणवीर कान्हारो ।
१७ हमीर ।
१८ गोयंद ।
१६ वीजो ।
२० रतनसी ।
२१ चांदराव ।
२० नांदो विजारो ।
२१ जगनाथ ।
२० उदैसिंघ । २० सूजो ।
२० दलो विजारो ।
१६ नराइण गोयंदरो ।
२० रांम नारणोत ।
२१ अखो । २१ जैमल ।
२१ दलपत । २१ भोपत ।
२१ पतो । २१ उदैकरण ।
२० वैरसी नारणोत । टीकाइत ।
२१ जीवण । २१ रांमो ।
२१ चादो नारणरो ।
२० महीकरण नारणरो ।
२० हरराज । २० चंदराज । २० गगदास ।
२० जोघो ।
१८ गांगो हमीररो ।
१६ साहिव ।
२० उदैसिंघ ।
१८ मांनो हमीररो ।
१८ सिखरो हमीररो ।
१८ राहिब हमीररो ।
१६ खंगार । १६ लूणो ।
१६ चाचो कान्हारो ।
१७ वीरमदे ।
१८ जैमल ।
१६ वांकीदास ।
२० माधोदास ।
२१ नारणदास । नागोररै गांव नैछवै[1] ।
२२ सांवळदास । २२ नाहरखांन ।
२० मांनो । २० जसवंत ।
१५ चांपो तेजसीरो टीकाइत । रांणो चांपो ऊमरकोट धणी ।
१६ रांणो गांगो चांपारो ऊमरकोट धणी ।
१७ रांणो पतो टीकाई ।
१७ रायसल । १७ नेतसी ।
१७ सुरतांण । १७ मेघराज ।
१७ मांनसिंघ । १७ रतनसी ।

---

1 नारायणदास नागोरके नैछवै गावमे रहता है ।

१७ वैरसल। १७ हदो। १७ भोजदे।

रांणो पतो गांगारो। ऊमरकोट टीकै, आंक १७—

१८ रांणो चंद्रसेण राजा सूरजसिंघरो सुसरो।
१९ रांणो भोजराज।
२० रांणो ईसरदास, ऊमरकोट टीको छो[1]। पछै संमत १७१० रावळ सबळसिंघ इणनूं परो काढनै जैसिंघनूं टीकै बैसांणियो[2]।
२१ हमीर।
२० अमरो भोजराजरो। महेवै रावळ भारमलरै वास। गांव भूखो पटै[3]।
२१ वैणो। २१ सूरजमल। २१ हरिदास।
२० जोगीदास। २० जसो।
२१ जगनाथ।
१७ मेघराज। गागारो।
१८ किसनदास। १८ भगवांन। १८ सांमदास। १८ भीम।

१९ बळभद्र।
१७ रतनसी गांगारो। रावळ मनोहरदासरो सुसरो। सूरजदे मनोहरदासरी वहू, तिका रतनसीरी बेटी। संमत १७२२ मुथराजीमे मुई[4]।
१७ मानसिंघ गांगारो।
१८ रांणो जोधो।
१९ जैसिंघदे रांणो, ऊमरकोट टीकै।
२० रांणो वीरमदे।
२१ रांणो राजसिंघ टीकाई।
१९ वीरमदे जोधारो।
२० रांणो जैतसी।
१९ माधोसिंघ जोधारो। भाटी केसरीसिंघ अचळदासोत मारियो। भाटी सुदरदासरै वैरमे[5]।
१९ गजसिंघ जोधारो।
१९ सूरजमल चापारो।

1,2 राणा ईसरदासको उमरकोटका टीका था, बादमे रावल सबलसिहने स० १७१०मे इसको निकाल कर जयसिंघको टीके बैठाया। 3 भोजराजका बेटा अमरा, महेवेमे रावल भारमलके यहा निवास और भूका गाव पट्टेमे। 4 गागाका बेटा रतनसी, रावल मनोहरदासका ससुरा। रतनसीकी बेटी सूरजदेवी जो मनोहरदासकी पत्नी, मथुराजीमे देवलोक हुई। 5 जोधाका बेटा माधोसिह, जिसे भाटी सुदरदासके वैरमे केसरीसिह अचलदासोतने मार दिया।

१७ करण ।
१८ खीवो ।
१९ किसनो । १९ भांनो ।
१९ भांण ।
२० महेस ।
१९ भोपत । १९ मेहाजळ ।
१८ ठाकुरसी करणरो ।
१९ रायसिंघ । १९ दुरजो ।
१९ महेस । १९ हर-राज ।
१९ जोगीदास । १९ अखैराज ।
१३ ऊदो हमीररो । हमीर, थिरो अवतारदेरो । इणरो परवार महेवैरै गोवल छै, नें के ऊमरकोट परवर गाव समंद कनै छै तठं छै[1] ।
१४ कूपो ।
१५ वैरसल ।
१६ महीरावण ।
१७ खेतसी । गोवल छै ।
१८ कानो । १८ भानो ।
१८ सादूळ । १८ मूजो ।
१८ लखो । १८ गोपाळ ।
१८ कानो खेतसीरो ।
१९ सूरो कांनारो ।
२० रायमल ।
२१ जैतो । २१ तेजो ।
१९ माधो कांनारो ।
२० रामो ।
१९ सादूळ खेतसीरो, बोहरावास ।
१९ अचळो ।
२० देवराज । २० सवळो ।
१८ मूजो खेतसीरो, गोवल छै ।
१९ सेखो । १९ आसो ।
१८ लखो खेतसीरो ।
१९ जेसो ।
२० अखैराज, उजेण कांम आयो । हरिदासरो चाकर[2] ।
२१ रांमसिंघ ।
१८ भानो खेतसीरो ।
१९ ऊदो भांनारो ।
२० सांगो ।
२१ भारमल । २१ जोधो ।
२० गोयंद ऊदारो ।
१९ भैरव ।
२० दलो । २० मेघराज ।
१९ दूदो भानारो ।

---

1 ऊदा हमीरका बेटा । हमीर और थिरा अवतारदेवके बेटे । इनका परिवार महेवेके गोवल गावमे है और कई उमरकोट प्रान्तका समुद्रके पास परवर गाव है वहा रहते हैं ।
2 अखैराज हरिदासका चाकर, उज्जैनकी लडाईमे काम आया ।

१७ नेतसी महरांवणरो ।
१८ परबत नेतसीरो, गोवल छै ।
१९ भोजो । १९ रामसिंघ ।
१९ भोपत । १९ खीवो ।
१८ भाखरसी वाहडमेर कांम आयो ।
१९ रावो भाखरसीरो ।
२० मनोहर गोवल छै ।
१७ लूणो महरांवणरो ऊमरकोट छै ।
१८ डूंगरसी लूणारो ।
१९ घडसी ।
२० माडण । २० नरसिंघ ।
११ वीरमदे अवतारदेरो ।
१२ तमाइची वीरमदेरो ।
१३ सतो ।
१४ कूंभो ।
१५ सहसो ।
१६ सामो ।
१७ मैहराज ।
१८ गोवरधन । १८ लाडखान । १८ सुदर ।
१३ देवराज तमाइचीरो ।
१४ सादो देवराजरो ।

१५ वनो सादारो ।
१६ सहसमल, उठै माहोमाह भायां मारियो, तद इणरो बेटो अड़वाल मारवाड़में आयो, रांणी लिखमी इणरी मासी थी, इण परसंग[1] ।
१७ अड़वाल ।
१८ महेस ।
१९ नेतसी ।
२० ईसरदास । खारियो सोजतरो पटै[2] ।
२१ गोवरधन ।
२२ खीवो खारियो पटै ।
२० नरहरदास ।
२१ रांमसिंघ ।
२२ कलो रांमसिंघरो ।
२१ गोकळ ।
२१ जीवो नरहरदासरो ।
१८ दूदो अडवाळरो ।
१९ भाण दूदारो ।
२० अमरो । २० दयाळ ।
२० भगवान ।
२१ दलो जाळोररो गांव पटै ।
१९ वेणीदास दूदारो ।

---

1 सहसमलको उसके भाइयोंने परस्परकी लडाईमे मार दिया, तब इसका बेटा अडवाल मारवाडमे चला आया, राव सूजाकी रानी लक्ष्मी इसकी मौसी लगती थी, इस प्रसगमे । 2 ईश्वरदासको सोजतका खारिया गाव पट्टेमे ।

२० गोपाळदास ।
१८ महेस अडवाळरो ।
१९ पतो । १९ हरिदास ।
१९ जैतो । १९ भोज ।
१५ भीवराज सादारो ।
१६ सायर ।
१७ जगमाल ।
१८ कवरो दंतीवाडै वसै ।
१६ मांडण भीवराजरो ।
१७ सूरो ।
१८ जगनाथ । अजमेररै गांव भांमोळाव रहै छै[1]
१४ सतो देवराजरो ।
१५ पीथमराव ।
१६ परवत ।
१७ सूजो ।
१८ जैमल ।
१९ उरजन ।
२० मांनो ।
२१ वरजांग देछूरै मठलै वसै ।

इति सोढांरी ख्यात सम्पूर्ण ।

••••••••••

1 जगन्नाथ अजमेरके भामोलाव गावमें रहता है ।

वात पारकर सोढांरी—पंवारै भिलै

धरणीवराह वाहड़मेर धणी हुवो। तिणरै बेटो छाहड़ हुवो। तिणरै घरै अपछरा हुती। तिणरै बेटा दोय २—सोढो नै वाघ। तिण वाघरा सांखला कहीजै[1]।

सोढो, तिणरी औलादरा सोढा पीढी—

१ धरणीवराह।
२ छाहड़।
३ सोढो।
४ चाचगदे।
५ राजदे।
६ जैभ्रम।
७ जसहड।
८ सोमेसर।
९ धारावरीस।
१० आसराव, पारकर धणी।
१० दुजणसळरा ऊमरकोट धणी[2]।

१ आसराव, आंक १०—
२ देवराज।
३ सलख।
४ देपो।
५ खंगार।
६ भीम।
७ वैरसल।
८ भाखरसी, वडो दातार।
९ गांगो।
१० अखो। १० चांदो।
११ मांणकराव।
१२ लूणो, देपो हमैं छै[3]।

चांदन सोढो पारकर वडो दातार हुवो। भाट बाळवनूं कोड दांन दियो[4]।

वात पारकररी

सैहर मैदान मांहै वसै छै, नै छोटी सी भाखरी[5] ऊपर सोढा चांदनरो करायो गढ छै। तठै राणो हुवै सु रहै[6]। गढ माहै अवारथ सखरी छै[7]। वावड़ी एक गढ मांहै पाणीरी छै, तिण गढ हेठै सैहर

---

1 उस वाघके वंशज सांखला कहलाते हैं। 2 दुजणमलके (दुर्जनमालके) वंशज उमरकोटके स्वामी। 3 लूणा और दीपा इस समय हैं। 4 पारकरमे चादन सोढा बडा दानी हुआ, भाट बालवको उसने एक करोडका दान दिया था। 5 पहाडी। 6 जो राणा होता है वह वहा रहता है। 7 गढमे इमारतें अच्छी हैं।

वसै छै[1] । सो आगै तो वडी ठोड हुती । वडी साहिबी हुती । तद सैहर वस्ती घणी हुती[2] । हमै ही जैतारण सारीखो सहर वसै छै[3] । मुदो वस्तीरो वांणियां ऊपर छै[4] । वडो अलियळ देस । चवदै चेढी गांव लागै । चेढी १री मांन ५६०, तिण चवदै चेढीरा गांव ७८४० हुवा । काळीझररो पहाड़ वडो, गांवसूं कोस···, पछम दिसा[5] लांवो कोस ५ । मांहै पांणी घणो, झाड़ घणा[6] । नास-भाजनू वडी माथा-रखी[7] । गांवसू पांवडा[8] १०० तळाव एक छै । तठै पांणी पीजै[9] । वावडी ६ तथा ७ गावरी पाखती[10] सखरी छै । पांणी मीठो । पुरसै १० तथा १२[11] । गांव घणा लागै, चवदै चेढीरा । पैहली तो घणा गाव वसता । हिमै[12] गांव १४० वसै छै । १००पारकररा धणियांरै । गांव ४० सोढा रांमरी मऊ वसै ।

पारकररी धरती इण भांतरी । जिका धरती ऊमरकोट छहोटण, मूराचंद । इण तरफ गांव कैरिया,[13] एक साख, खेती–बाजरी, मूग, मोठ, तिल । कूवै पाणी पुरसै २० मीठो । बीजी तरफ कछ दिसा, धरती कालार[14], तठै सर भरीजै, तठै ज्वार, गोहू[15] ।

पारकररी सीव इतरी ठोड़सू लागै[16]–

१ एकण तरफ कछरो बैसणो[17] । भुजनगर कोस ५०, कोस ४० ताई[18] पारकररी हद, गांव राणी पारकररो । १० कोस आगै भुजरी[19] ।

१ ऊमरकोट कोस ८० । ५० कोस ताई पारकररी । ३० आगै ऊमरकोटरी ।

---

1 जिस गढके नीचे शहर बसता है। 2 उस समय शहरमे वस्ती अधिक थी । 3 अब भी जैतारण जितनी बस्तीका शहर बसा हुआ है । 4 वस्तीका आधार बनियोंके ऊपर है । 5 पश्चिम दिशा । 6 वृक्ष बहुत । 7 भाग कर छिप जानेका अच्छा स्थान । 8 कदम । 9 जहा पानी पीते हैं । 10 पास । 11 दस तथा बारह पुरुष गहरा पानी (पुरुष = एक प्राचीन माप, दोनो हाथ सीधे फैलाने पर वक्षस्थल सहित जो लवाई आती है वह एक पुरुष कहलाती है । १२० अगुलका भी पुरुष माना जाता है।) 12 अब । 13 करील आदि कँटीले पेडो वाले । 14 खारी जमीन, कल्लर भूमि । 15 जहा बरसाती पानी इकट्ठा हो जाता है और उसमे ज्वार और गेहूं उत्पन्न होते हैं । 16 पारकरकी सीमा इतने स्थानो से लगती है । 17 एक ओर कच्छका बैठना (राज्य) । 18 तक । 19 दस कोस आगे भुजकी सीमा ।

१ सूराचंद कोस ४२ चाहुवांणांरी[1] । ३० कोस तांई पारकररी । १२ कोस आगै सूराचंदरी ।

१ एकण तरफ छहोटण कोस ६० । ४० पारकररी, २० कोस छहोटणरी ।

१ एकण तरफ दिखण वाव सूईगांव चहुवांणांरा कोस ५०[2] । २७ कोस तांई पाकररी, २३ कोस वाव सूईगांवरी ।

इति पारकररी ख्यात सम्पूरण ।

....

1 चौहानोंके सूराचद गावकी सीमा ४२ कोस । 2 एक ओर दक्षिण दिशामें चौहानोंके वाव और सूईगाव ५० कोस ।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

....

प्रकाशित ग्रन्थ

१–संस्कृत

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, सम्पादक–मीमासान्यायकेशरी पं० पट्टाभिराम शास्त्री, विद्यासागर। मूल्य–६.००

२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाई-जयसिंह-कारित। सम्पादक–स्व० पं० केदारनाथ, ज्योतिर्वित्। मूल्य–१.७५

३. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणीत, संपादक–म०म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी। मूल्य–१७ ५

४. तर्कसंग्रह, अन्नभट्ट, सम्पादक–डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम. ए, पी-एच. डी., मूल्य–३.००

५. कारकसंबधोद्योत, पं० रभसनन्दी, सम्पादक–डॉ हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी. एच-डी, मूल्य–१.७५

६ वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्ण-भट्ट सम्पादक–पं पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–२ ००

७. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक–डॉ हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी एच. डी.। मूल्य–२ ००

८ कृष्णगीति, कवि-सोमनाथ, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए, पी एच डी, डी. लिट। मूल्य–१ ७५

९ नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम ए., पी-एच. डी, डी. लिट। मूल्य–१ ७५

१०. शृङ्गारहारावली, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए, पी-एच. डी., डी लिट्। मूल्य–२.७५

११ राजविनोद महाकाव्य, महाकवि-उदयराज, सम्पादक–प. श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२ २५

१२. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक–केशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य–३.५०

१३ नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्ण, सम्पादक–प्रो रसिकलाल छोटालाल परीख, तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच डी., डी लिट्। मूल्य ३.७५

१४ उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दर-गणी-विरचित सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि। सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–४.७५

१५ दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक–पं० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–४.२५

१६. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथ विरचित, सम्पादक–पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। इसी ग्रंथकार की अपर कृति 'श्रीकृष्णलीलामृत' सहित। मूल्य–१.५०

१७. ईश्वरविलास-महाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित, सम्पादक–श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। मूल्य–११.५०

१८. रसदीर्घिका, कवि विद्याराम प्रणीत, सम्पादक–गोपालनारायण बहुरा, उपसंचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.००

१९. पद्यमुक्तावलि, कविकलानिधि कृष्ण भट्ट, सम्पादक–पं० मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य। मूल्य–४.००

२–राजस्थानी और हिन्दी

२० कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित, सम्पादक–प्रो. के. बी. व्यास, एम. ए.। मूल्य–१२.२५

२१. क्यामखां रासा, कविवर जान रचित, सम्पादक–डॉ दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा। मूल्य–४.७५

२२. लावारासा, चारण कविया गोपालदान विरचित, सम्पादक–श्री महताबचन्द खारैड। मूल्य–३.७५

२३ बांकीदासरी ख्यात, कविवर बांकीदास, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए.। मूल्य–५.५०

२४. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए.। मूल्य–२.२५

२५. कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित, सम्पादक–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–२.००

२६ जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–१.७५

२७. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पादक–उदैराजजी उज्ज्वल। मूल्य–१.७५

२८ राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची-भाग १। मूल्य–७.५०

२९. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसी कृत, सम्पादक–श्री बदरीप्रसाद साकरिया। मूल्य–८.५०

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

१. शकुनप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित	सम्पादक– मुनि श्रीजिनविजयजी
२. त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत	,, ,, ,,
३ करुणामृतप्रपा, ठक्कुर सोमेश्वर-विनिर्मित	,, ,, ,,
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंह विरचित	,, ,, ,,
५. पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्ण मिश्र रचित	,, ,, ,,

इन ग्रन्थोके अतिरिक्त अनेकानेक सस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रथोका सशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

'राजस्थान पुरातत्त्व' नामसे एक शोध पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है।